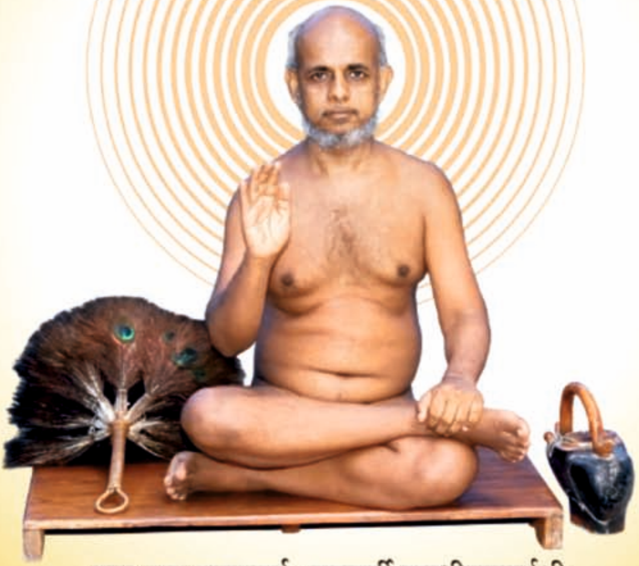

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

❊ जन्मदिवस 19–03–1971 ❊ मुनिदीक्षा–11–05–1989 ❊ आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

आओ! प्राकृत सीखें
भाग-०१

लेखक

परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
कस्तुरसूरीश्वर जी महाराज

सम्पादक

आचार्यदेव श्रीमद्विजय
रत्नसेनसूरि जी महाराज

प्रकाशक

दिव्य सन्देश प्रकाशन
मुम्बई (महाराष्ट्र)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

आओ !

प्राकृत सीखें

भाग- 1

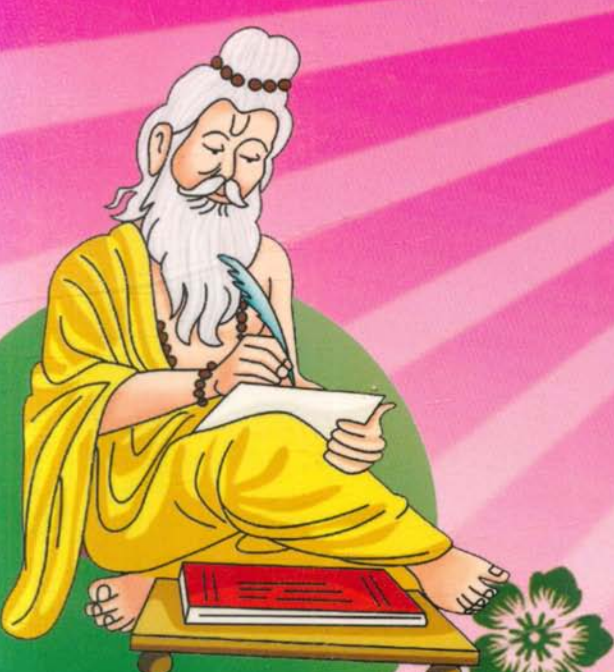

-: लेखक :-
परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
कस्तुरसूरीश्वरजी म.सा.

-: संपादक :-
परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

आओ ! प्राकृत सीखें
(भाग-I)

प्रणेता

परम पूज्य शासनसम्राट्, तीर्थोद्धारक भट्टारकाचार्य
श्रीमद् विजय नेमिसूरीश्वर पट्टालंकार परम पूज्य समयज्ञ, शान्तमूर्ति
श्रीमद् विजय विज्ञानसूरीश पट्टधर विद्वद्वर्य प्राकृत विशारद पूज्य
आचार्यदेव **श्रीमद् विजय कस्तुरसूरीश्वरजी महाराजा**

हिन्दी अनुवाद के संपादक

परम शासन प्रभावक, दीक्षा के दानवीर पूज्यपाद आचार्यदेव
श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा के तेजस्वी शिष्यरत्न
बीसवी सदी के महान्योगी नवकार साधक **पूज्य पंन्यास प्रवर**
श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य के चरम शिष्यरत्न प्रवचन प्रभावक
हिन्दी साहित्यकार पूज्य आचार्यदेव
श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी महाराजा

164

प्रकाशक
दिव्य संदेश प्रकाशन
205, सोना चेंबर्स,
507-509, जे.एस.एस. रोड,
चीरा बझार, सोनापुर के सामने,
मुंबई-400 002. **Tel. 022-2203 45 29**
Mobile : 9892069330

आवृत्ति : प्रथम • मूल्य : 125/- रुपये • विमोचन : दि. 18-10-2013
प्रतियाँ : 1000 • स्थल : सेसली पार्श्वनाथ तीर्थ, बाली (राज.)

आजीवन सदस्य योजना

आजीवन सदस्यता शुल्क - 2500/- रु.

- आप जैन धर्म के रहस्य - जैन इतिहास - जैन तत्त्वज्ञान - जैन आचार मार्ग, प्रेरणादायी कथाएँ आदि का अध्ययन करना चाहते हों तो आज ही आप दिव्य संदेश प्रकाशन मुम्बई की आजीवन सदस्यता प्राप्त कर लें। आजीवन सदस्यों को अध्यात्मयोगी निःस्पृह शिरोमणि स्व. पूज्यपाद पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकर विजयजी गणिवर्यश्री एवं उन्हीं के चरम शिष्यरत्न प्रवचन प्रभावक परम पूज्य *आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म. सा.* का प्रतिमास प्रकाशित अर्हद् दिव्य संदेश, उपलब्ध १० पुस्तके एवं भविष्य में प्रकाशित हिन्दी साहित्य घर बैठे पहुँचाया जाएगा। आप मुंबई या बेंगलोर के पते पर दिव्य संदेश प्रकाशन-मुंबई के नाम से चेक, ड्राफ्ट से रकम भर सकोगे।

प्राप्ति स्थान

1. चंदन एजेंसी M. 9820303451
607, चीरा बाजार, ग्राउंड फ्लोर,
मुंबई-400 002.
✆ R.: 2206 0674 O. 2205 6821
2. चेतन हसमुखलालजी मेहता
पवनकुंज, 303, A Wing,
नाकोड़ा हॉस्पिटल के पास,
भायंदर-401 101. ✆ 2814 0706
M. 9867058940
3. सुरेन्द्र गुरुजी
C/o. गुरुगौतम एंटरप्राइज,
14, रुक्मिणी बिल्डींग,
आदिनाथ जैन मंदिर,
चिकपेट, बेंगलुर-560 053.
M.08050911399, धीरज 934122279
4. श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर संघ
श्री सुरेशगुरुजी M. 98441 04021
नं.4, Old No. 38, फ्लोर,
रंगराव रोड, शंकरपुरम्,
बैंगलुर-560 004. (कर्नाटक)
राजेश मो. 9241672979

आजीवन सदस्यता शुल्क

Rs. 2500/- भिजवाने का पता एवं पुस्तक प्राप्ति स्थान :

(1) दिव्य संदेश प्रकाशन

C/o. **सुरेन्द्र जैन**, 205, सोना चेंबर्स, 507-509, जे.अेस.अेस. रोड, चीरा बझार, सोनपुर के सामने, मुंबई-2. **Tel. 022-2203 45 29, Mobile : 9892069330**

(2) दिव्य संदेश प्रचारक

प्रकाश बड़ोल्ला, 52, 3rd Cross, शंकरमाट रोड, शंकरपुरा,
बेंगलोर-560 004. ✆ (O.) 4124 7478 M. 8971230600

(3) राहुल वैद, C/o. अरिहंत मेटल कं., 4403, लोटन जाट गली,
पहारी धीरज, सदर बाजार, दिल्ली-110 006. M. 9810353108

प्रकाशक की कलम से

प्राकृतविशारद, शासनप्रभावक **स्व. पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय कस्तुरसूरीश्वरजी महाराज** द्वारा विरचित प्राकृत विज्ञान पाठमाला जो गुजराती भाषी वर्ग के लिए ***प्राकृत भाषा सीखने*** के लिए अति उपयोगी प्रकाशन है । हिन्दी भाषी विशाल वर्ग भी प्राकृत भाषा का अध्ययन कर पूर्वाचार्य महर्षियों के सदुपदेश से लाभान्वित हो सके, इसी पवित्र भावना से मरुधररत्न, हिन्दी साहित्यकार **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म. सा.** ने इस गुजराती प्रकाशन के हिन्दी अनुवाद का संपादन किया है ।

वर्तमान में गुजराती भाषाविद् साधु-साध्वीजी भगवंत इसी ***प्राकृत विज्ञान पाठमाला*** के आधार पर प्राकृत भाषा का अध्ययन करते है ।

हिन्दी भाषी वर्ग के लिए इस प्रकार के प्रकाशन की बहुत ही बडी कमी थी । अपने संयम जीवन के प्रारंभिक काल में **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म. सा.** ने भी इसी ***प्राकृत विज्ञान पाठमाला*** के आधार पर प्राकृत भाषा का अभ्यास किया था । गुजराती भाषा से अनभिज्ञ विद्यार्थियों के लिए इस साहित्य की कमी पूज्यश्री को अखरती थी । इस कमी की पूर्ति के लिए उनका पूरा पूरा लक्ष्य था ।

पूज्यश्री की प्रेरणा से **पू. सा. श्री अध्यात्मरेखाश्रीजी** ने **'प्राकृत विज्ञान पाठशाला'** के हिन्दी अनुवाद के लिए प्रयास किया । तत्पश्चात् पूज्य आचार्य श्री ने अतिव्यस्तता के बीच भी समय निकालकर उस प्रेस कॉपी का परिमार्जन किया । इसी के फलस्वरुप आज हम पाठकों के कर कमलों में **'आओ ! प्राकृत सीखें'** पुस्तक अर्पण करते हुए परम आनंद का अनुभव कर रहे है । हमारे हिन्दी पाठकों के । गोडवाड के गौरव, मरुभूमि के रत्न **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म. सा.** का परिचय देने की हमें कोई आवश्यकता नही है क्योंकि उनका साहित्य ही उनका 'परिचय' बन गया है ! **हिन्दी साहित्यकार के रुप में वे जगमशहुर है ।**

36 वर्षों के उनके निर्मल संयम जीवन में प्रथम बार ही उनका चातुर्मास गोडवाड की धन्यधरा उनकी जन्मभूमि बाली नगर में होने जा रहा है और उसी धरा पर उनके द्वारा हिन्दी भाषा में संपादित 164 वीं पुस्तक ***'आओ ! प्राकृत सीखे'*** का विमोचन होने जा रहा है । जो हमारे लिए गर्व की बात है ।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास हैं कि पूज्यश्री के पूर्व प्रकाशनों की भांति यह प्रकाशन भी लोकोपयोगी और उपकारक सिद्ध होगा ।

निवेदक

दिव्यसंदेश प्रकाशन ट्रस्ट मंडल

मिलापचंद सूरचंदजी चौहान – पिंडवाडा
सागरमल भभूतमलजी सोलंकी – लुणावा
रमेशकुमार ताराचंदजी (C.A.) – खिवांदी
प्रकाशचंद हरकचंदजी राठोड – बाली
सुरेन्द्रकुमार सोहनराजजी राठोड – बाली
ललितकुमार तेजराजजी राठोड – बाली

ग्रंथ प्रणेता की कलम से

विद्वद्वर्य पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजयकस्तुरसूरीश्वरजी महाराज

'प्राकृत विज्ञान पाठमाला' - (आओ ! प्राकृत सीखें) पुस्तक हाथ में आने पर बुद्धिशाली मानवी के मन में यह जिज्ञासा पैदा होना सहज है कि **'प्राकृत'** शब्द का क्या अर्थ हैं ? साहित्य के क्षेत्र में उसका क्या हिस्सा है ? अन्य भाषाओं के साथ उसका क्या संबंध है ? **'प्राकृत'** का अर्थ क्या ?

प्रकृति सिद्ध जो कोई वस्तु हो, उन सब को **'प्राकृत'** कहते है । **'प्राकृत'** शब्द का इतना विस्तृत अर्थ होने पर भी यहां भाषा प्रकरण में भाषा के साथ संबंधित **'प्राकृत'** शब्द लेना है अर्थात् प्रकृति सिद्ध जो भाषा, उसे प्राकृत कहते है ।

व्याकरण आदि से संस्कार नहीं पाए हुए दुनिया के प्राणी मात्र के सहज वचन व्यापार को प्रकृति कहते है । उसमें रही अथवा उसी भाषा को प्राकृत कहते है । प्राकृत भाषा के शब्द संस्कार दिए बिना भी आबाल-गोपाल द्वारा बोले जा सकते हैं ।

प्राकृत की व्युत्पत्तियाँ :- कवि रुद्रट कृत काव्यालंकार पर श्री नमि साधु विरचित टिप्पण में प्राकृत शब्द की दो प्रकार से व्युत्पत्ति की है ।

1) सकल जगज्जन्तूनां व्याकरणादिभिरनाहतः संस्कारः सहजो वचन व्यापारः प्रकृतिः तत्र भवं सैव वा प्राकृतम् ।

व्याकरण आदि से संस्कार नहीं पाया हुआ जगत् के सभी प्राणियों का स्वाभाविक वचन व्यापार प्रकृति कहलाता है । इस प्रकार की प्रकृति में हो उसे प्राकृत कहते है ।

2) आरिसवयणे सिद्धं देवाणं अद्धमागहा वाणी इत्यादि-वचनाद् वा प्राक् पूर्वं कृतं प्राक्कृतम् ।

आर्ष वचन में सिद्ध देवो की अर्धमागधी भाषा होती है । इत्यादि वचन से प्राक्कृत प्राक्-पूर्व में किया हो, उसे प्राकृत कहते है ।

प्राकृत की अन्य भी व्युत्पत्ति मिलती है । **'प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं-प्राकृतम्'** अथवा **प्रकृतीनां साधारणजनानामिदं प्राकृतम् ।** प्रकृति-स्वभाव से जो सिद्ध हो, उसे प्राकृत कहते है अथवा प्रकृति अर्थात् साधारण जन संबंधी भाषा को प्राकृत कहते है ।

प्राकृत साहित्य की बहुलता :- जैनों के परम पवित्र आगम (उत्तराध्ययन आदि कालिकश्रुत, दशवैकालिक आदि उत्कालिकश्रुत तथा आचारांग आदि ग्यारह अंगों की रचना में भी प्राकृत भाषा को पसंद किया है । इस पसंदगी में भी विशेष लाभ देखा गया है ।

आगम में आप्त वचन है –

मुत्तूण दिट्ठिवायं कालिय-उक्कालिय सिद्धंतं ।
थी-बालवायणत्थं पाइयमुइयं जिणवरेहिं ॥

अर्थ :- स्त्री जाति और क्षुल्लकवर्ग भी सरलता से वाचन का लाभ प्राप्त कर सके इस हेतु से दृष्टिवाद को छोडकर कालिक और उत्कालिक अंग रुप सिद्धांत, जिनेश्वर भगवंत ने प्राकृत में कहे है ।

'अद्धमागहाए भासाए भासति अरिहा' (औपपातिक सूत्र-5677)

अत्थं भासइ अरिहा, सुत्तं गंथंति गणहरा निउणा । (आवश्यक सूत्र)

'पोराणमद्धमागह भासानियमं हवइ सूत्तं' इत्यादि आगम वचन होने से जिनेश्वर देव अर्धमागधी भाषा में आगमार्थ कहते है और गणधर भगवंत सूत्र रचना करते है, फिर भी उनकी प्राकृतता अबाधित रहती है, क्योंकि अर्धमागधी भाषा को आर्ष प्राकृत मानी जाती है ।

प्राकृत में विवेचन साहित्य ग्रंथ :- आगमों पर निर्युक्तियाँ, भाष्य, चूर्णि आदि विवेचन के ग्रंथ प्राकृत भाषा में रचे गए है, जिनका जिनागमों के विवेचन-ग्रंथों में अग्रस्थान है, इतना ही नहीं, किंतु आगम ग्रंथ जितना महत्त्व उन्हे दिया गया है ।

अन्य जैनग्रंथ :- प्राकृत भाषा में जैनों के अनेक ग्रंथ रचे गए है । जैसे- प्रकरण ग्रंथ, कुलक, कथानक, चरित्र-ग्रंथ, प्रकीर्णक, अन्य अन्य विषय के ग्रंथ, वैद्यक, अष्टांग निमित्त तथा ज्योतिष आदि ।

जैन दर्शन की द्वादशांगी के बीज रुप तीन वचन, जो तीर्थंकर परमात्मा गणधर भगवंतों को प्रदान करते है, जिन्हे प्राप्तकर गणधर भगवंत द्वादशांगी की रचना करते हैं, जो **'त्रिपदी'** के नाम से जगत् में प्रसिद्ध है, उसकी भी रचना प्राकृत में ही है ।

'उप्पन्नेइ वा विगमेइ वा धुवेइ वा'

प्राकृत भाषा में गद्य व पद्य में सैकडों ग्रंथों की रचनो हुई है ।

जैसे - महावीरचरियं - श्री गुणचंद्रसूरिकृत - पद्यमय - ग्रंथप्रमाण 12000 श्लोक

पउम चरियं - श्री विमलसूरिकृत - पद्यमय - 10000 श्लोक

समराइच्च कहा - हरिभद्रसूरिकृत - गद्यमय 10000 श्लोक

सुरसुंदरीचरियं श्री धनेश्वरसाधुकृत - पद्यमय - 4000 श्लोक

इसके सिवाय सुपासनाहचरियं, कुमारपालचरित, सिरिसिरिवाल कहा, वसुदेव हिंडी आदि अनेक ग्रंथ प्राकृत भाषा की महत्ता सिद्ध करते है ।

जैनेतर प्राकृत ग्रंथ :- कविवत्सल हाल कृता - गाथा सप्तशती, प्रवरसेनकृत-सेतुबंध (रावण वहो) वाक्पतिराजकृत गउडवहो तथा महुमहविचय, राजशेखरकृत कर्पूरमंजरी सट्टक, आनंदवर्धनकृता विषम बाल लीला, भूषणभट्टपुत्रकृता लीलावती कथा, आदि काव्य प्राकृत में है ।

प्राकृत व्याकरण

जैन

1. चंद्रकृत-प्राकृत लक्षण
2. त्रिविक्रमदेवकृत-प्राकृतानुशासन
3. श्री हेमचन्द्रसूरिकृत-प्राकृत व्याकरण (सिद्धहेमशब्दानु शासन के आठवे अध्याय में प्राकृत आदि छ भाषाओं का बोध है ।

अजैन

1. पाणिनिकृत - प्राकृत लक्षण (जो हाल उपलब्ध नहीं है ।)
2. वररुचिकृत - प्राकृत प्रकाश
3. हृषीकेशकृत - प्राकृत व्याकरण
4. मार्कंडेयकृत - प्राकृत सर्वस्व
5. क्रमदीश्वरकृत - संक्षिप्तसार प्राकृत व्याकरण
6. लक्ष्मीधरकृत - षड् भाषा चन्द्रिका

प्राकृत कोष :- जन्म से ब्राह्मण होने पर भी सोच समझपूर्वक जैन धर्म का स्वीकार करनेवाले परमार्हत् महाकवि धनपाल विरचित पाइअलच्छी नाममाला तथा **कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्यकृत 'देशी नाममाला'** आदि प्राकृत शब्दों का सुंदर बोधवाले प्राकृत शब्दकोष है ।

प्राकृत छंद के ग्रंथ :- गाथा लक्षण, नंदिताद्य, सअंभू छंद, प्राकृत पिंगल, विरहांक कविकृत छंदोविचित तथा श्री हेमचन्द्राचार्यकृत छंदोनुशासन आदि ।

प्राकृत में से अन्य भाषाओं का जन्म :- एक ही वर्षा का जल स्थान भेद से विविध भेदवाला बनता है, उसी प्रकार एक ही प्राकृत भाषा स्थान भेद से अनेक संस्कृत आदि विविध भाषा भेद प्राप्त करती है ।

कविराज वाक्पतिराज **'गउडवहो'** नाम के प्राकृत काव्य में लिखते हैं-

'सयलाओ इमं वाया विसंति एत्तो य णेंति वायाओ'
एंति समुद्दं चिय, णेंति सायराओ च्चिय जलाइं ।

भावार्थ :- सभी प्रकार का पानी समुद्र में प्रवेश करता है और समुद्र में से निकलता है, उसी प्रकार सभी वाणी (भाषाएँ) प्राकृत में प्रवेश करती है और प्राकृत में से निकलती है ।

'यद् योनिः किल संस्कृतस्य' ये वचन बोलकर कवि राजशेखर कहते है- मैं विश्वासपूर्वक कहता हूँ कि प्राकृत भाषा, संस्कृत का उत्पत्तिस्थान है ।

कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्यजी भी स्वोपज्ञ काव्यानुशासन में जैनीवाणी की स्तुति करते हुए कहते है-

'सर्वभाषा परिणतां जैनीं वाचमुपास्महे'- सभी भाषाओं में परिणाम पानेवाली जैनी वाणी

(जो अर्धमागधी है और आर्ष प्राकृत कहलाती है) की हम उपासना करते हैं ।

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध होता है कि प्राकृत, संस्कार विशेष पाने से संस्कृत आदि अन्य भाषाओं के रुप में परिणत होती है ।

प्राकृत भाषा की विशेषताएं :- कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्रसूरिजी ने स्वोपज्ञ काव्यानुशासन में लिखा हैं-

अकृत्रिम स्वादुपदां, परमार्थाभिधायिनीम् ।
सर्व भाषा परिणतां, जैनीं वाचमुपास्पहे ।।

अकृत्रिम, पद-पद पर मधुरता धारण करनेवाली, परम अर्थ का प्रतिपादन करनेवाली और सभी भाषाओं में परिणाम पाई हुई जैनीवाणी की हम उपासना करते है ।

अकृत्रिमता :- व्याकरण आदि के संस्कार से निरपेक्ष स्वभावसिद्धता ।

स्वादुता :- श्रोतावर्ग के कर्णयुगल में मधुर रस पैदा करनेवाली ।

अकृत्रिम स्वादुता :- प्रकृति सिद्ध मधुरता या नैसर्गिक मधुर रस पोषकता ।

यायावरीय कवि राजशेखर बालरामायण में लिखते है-

'गिरः श्रव्या दिव्याः प्रकृतिमधुराः प्राकृत-धुराः ।

सुनने योग्य दिव्य और प्रकृति मधुर ऐसी प्राकृत आदि वाणी है ।

सरलता :- प्राकृत में रही सुबोधता, सुखग्राह्यता, बालादिबोधकारिता किसको आकर्षित नहीं करती है ।

सिद्धर्षि गणी ने उपमितिभवप्रपंचा कथा में पीठबंध श्लोक 51 में लिखा हैं-

बालानामपि सद्बोधकारिणी कर्णपेशला ।
तथापि प्राकृता भाषा, न तेषामपि भासते ।।

बालजीवों को सुंदर सद्बोध करानेवाली और कर्णप्रिय प्राकृत भाषा हैं, फिर भी दुर्विदग्धों को पसंद नहीं पडती है ।

कोमलता :- प्राकृत काव्य में रही सुकोमलता-मृदुता कमलदल का भान कराती है । यायावरीय राजशेखर ने कर्पूरमंजरी सट्टक में लिखा है-

परुसो सक्कअबंधो, पाइअबंधो वि होइ सुउमारो ।
पुरिसाणं महिलाणं जेत्तियमिहंतरं तेत्तियमिमाणं ।।

संस्कृत रचना कठोर होती है, जबकि प्राकृत रचना सुकुमार अर्थात् कोमल होती है । कठोरता और सुकुमारता में जितना अंतर पुरुष और स्त्री के बीच है, उतना अंतर इन दो भाषाओं के बीच जानना चाहिये ।

लाटप्रियता :- लाटदेश के लोगों को प्राकृत भाषा पर अपूर्व प्रेम था । यायावरीय **कवि राजशेखर** काव्यादर्श में कहते हैं-

पठन्ति लटभं लाटाः प्राकृतं संस्कृतद्विषः ।
जिह्वया ललितोल्लाप-लब्ध सौन्दर्यमुद्रया ।।

भावार्थ :- संस्कृतद्वेषी लाटदेशवासी लोग ललितं उल्लाप करने में सौंदर्य बिरुद को पाई जीभद्वारा सुंदर प्राकृत भाषा बोलते हैं ।

इससे सिद्ध होता है कि एक समय लाटदेश की विशिष्ट भाषा प्राकृत थी ।

उपसंहार :- उपरोक्त प्रमाणों से सुज्ञवाचक समझ गए होंगे कि सकलजनवल्लभ, अकृत्रिम, प्रकृतिवत्सल, स्वादु तथा आबालगोपाल, सुबोधकारिणी भाषा यदि कोई हो तो वह प्राकृत भाषा है ।

इस पवित्र आर्य देश की सबसे प्राचीन दो भाषाएं है - प्राकृत और संस्कृत । ये दो भाषाएं भारतवर्ष के

निर्मल नयन युगल है । दोनों का साहित्यक्षेत्र में अमाप योगदान हैं, फिर भी आर्य संस्कृति को समझने के लिए जितनी आवश्यकता संस्कृत की हैं, उससे भी अधिक आवश्यकता प्राकृत की है ।

बालक हो या बालिका, स्त्री हो या पुरुष, राजा हो या रंक, मूर्ख हो या पंडित - सभी को प्रिय व उपकार करनेवाली भाषा हो तो वह प्राकृत भाषा है ।

प्रस्तुत ग्रंथ की उपयोगिता :- समय परिवर्तनशील है । बीच समय में प्राकृतभाषा सीखने के साधन छिन्न भिन्न हो जाने से प्राकृत भाषा के अध्ययन में मंदता आ गई थी और संस्कृत भाषा की साधन सामग्री का सद्भाव होने से संस्कृत का प्रचार बढ गया था ।

परंतु अभी अभी साधुवर्ग में और हाईस्कूल कॉलेज में Second Language के रुप में प्राकृत का पठन पाठन चालू हुआ है, जिससे गृहस्थवर्ग में भी प्राकृत का अच्छा प्रचार हो रहा है ।

प्राकृत के अधिकाधिक प्रचार के लिए और विद्यार्थीवर्ग को सरलता से बोध हो सके इसके लिए मार्गोपदेशिका रुप पुस्तक की आवश्यकता थी । उसमें **परम पूज्य परमोपकारी समयज्ञ श्रीमद् गुरुराज (विजय विज्ञानसूरीश्वरजी म.सा.) श्री** की प्रेरणा से मैंने यह कार्य हाथ में लिया । उनकी असीम कृपा से **'प्राकृत विज्ञान पाठमाला'** तैयार हुई है, उसके लिए मैं उनका सदा ऋणी रहूंगा ।

इस पुस्तक का अध्ययनकर भव्यात्माएँ प्राकृत भाषा का सरल बोध प्राप्त कर उसका अधिकतम प्रचार-प्रसार करे । इस **'प्रासंगिक'** के आलेखन में **पं-लालचंद भगवानदास गांधी** द्वारा आलेखित **'प्राकृत भाषा की उपयोगिता'** का भी उपयोग किया गया है ।

शुभं भवतु

संपादक (हिन्दी आवृत्ति) की कलम से

विश्व में जितने भी धर्म है, उन धर्मों का मौलिक साहित्य किसी न किसी भाषा से जुडा हुआ है ।

क्रिश्चियन धर्म का मूलभूत साहित्य Bible अंग्रेजी भाषा में है । इस्लाम धर्म का मूलभूत साहित्य उर्दु भाषा में है । हिन्दुओं के मुख्य गुंथ वेद-पूराण-उपनिषद् आदि संस्कृत भाषा में है । बौद्धों के त्रिपीटक पाली भाषा में हैं, उसी प्रकार जैनों के मूल आगम वर्तमान में विद्यमान आचारांग आदि ग्यारह अंग प्राकृत भाषा में है, जबकि बारहवां अंग दृष्टिवाद संस्कृत भाषा में था ।

वर्तमान में श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ को सर्वमान्य 45 आगम प्राकृत भाषा में ही है । उन आगमों पर उपलब्ध निर्युक्तियाँ-भाष्य-चूर्णि आदि भी प्राकृत भाषा में ही है । हाँ ! उन आगमों के गंभीर रहस्यों को जानने समझने के लिए पूर्वाचार्य महर्षियों ने संस्कृत भाषा में टीकाओं की भी रचनाएं की है ।

वर्तमान में दो अंगों पर शीलांकाचार्य और नौ अंगों पर **अभयदेवसूरिजी म.** की टीकाएं संस्कृत भाषा में विद्यमान है ।

श्रावक जीवन के आचारप्रधान ग्रंथ भी प्राकृत भाषा में ही है सुबह-शाम करने योग्य प्रतिक्रमण के सभी सूत्रों की भाषा प्राकृत ही है । छ आवश्यक के सभी सूत्र प्राकृत भाषा में है ।

भागवती दीक्षा अंगीकार करने के बाद जिन **आवश्यक** और **दशवैकालिक** सूत्रौं के योगोद्वहन किए जाते है, उनकी भी भाषा **प्राकृत ही** है ।

बडे ही दु:ख की बात है कि जैनों के प्रधान सूत्र प्राकृत भाषा में होने पर भी उस भाषा को जानने समझनेवाले, श्रावक वर्ग में तो नहींवत् ही है । इस प्रकार प्राकृत भाषा का बोध साधु-साध्वी वर्ग तक सीमित हो गया है ।

भाषा के यथार्थ बोध के अभाव में जब वे सूत्र कंठस्थ किए जाते है तो या तो उनका सही उच्चारण नहीं हो पाता है- अथवा सही उच्चारण होने पर भी उनको बोलने में विशेष आनंद नहीं आता है ।

भाषा बोध के अभाव में प्रतिक्रमण आदि की क्रियाएं निरस बनती जा रही है। कहीं-कहीं क्रियाएं हो रही हैं, परंतु उसका आनंद चेहरे पर नजर नहीं आ रहा है।

तीर्थंकर परमात्मा की वाणी स्वरुप ये सूत्र शाश्वत सत्यों कां बोध करानेवाले होने पर भी भाषाबोध के अभाव में उन शाश्वत सत्यों के लाभ से वंचित रहे है।

जैन दर्शन का मौलिक साहित्य संस्कृत और प्राकृत भाषा में हैं, अतः जैन दर्शन के मर्म को जानना समझना हो तो संस्कृत और प्राकृत भाषा का बोध होना ही चाहिये।

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचंद्राचार्यजी ने सिद्धहेमशब्दानुशासनम् के आठवे अध्याय के रुप में प्राकृत व्याकरण की रचना की है, परंतु उस व्याकरण को जानने के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान होना जरुरी है।

संस्कृत भाषा को जाननेवाला ही उस व्याकरण को समझ सकता है, उसी व्याकरण के आधार पर **स्व. पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय कस्तुरसूरीश्वरजी महाराजा** ने गुजराती माध्यम से प्राकृत भाषा सीखने के लिए **'प्राकृत विज्ञान पाठमाला'** की रचना की थी। उस पुस्तक के आधार पर हजारों साधु-साध्वीजी भगवंतों ने प्राकृत भाषा का अभ्यास किया है।

गुजराती भाषा से अनभिज्ञ व्यक्ति भी प्राकृत भाषा सीख सके, इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर ही **'प्राकृत विज्ञान पाठमाला'** की यह हिन्दी आवृत्ति **'आओ ! प्राकृत सीखें'** के नाम से प्रकाशित हो रही है।

प्राकृत भाषा में जैन धर्म का अमूल्य खजाना है, उस खजाने से लाभान्वित होने के लिए प्राकृत भाषा का अभ्यास खूब जरुरी है।

प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी भाषी वर्ग को प्राकृत सीखने के लिए खूब उपयोगी बन सकेगी।

सभी भव्यात्माएँ प्राकृत भाषा का अध्ययनकर वीर प्रभु के बताएं शाश्वत सत्यों को अपने जीवन में आत्मसात् कर आत्मकल्याण के मार्ग में खूब खूब आगे बढे, इसी शुभ कामना के साथ !

निवेदक :

सुमेरपूर (राज.)	अध्यात्मयोगी पूज्यपाद
प्रतिष्ठा शुभदिन	**पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी**
दि. 4-5-2013 शनिवार	**गणिवर्य कृपाकांक्षी रत्नसेनसूरि**

परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय

रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. का संक्षिप्त परिचय

गृहस्थ नाम	: राजु (राजमल चोपडा)
माता का नाम	: चंपाबाई
पिता का नाम	: छगनराजजी गेनमलजी चोपडा
जन्मभूमि	: बाली (राज.)
जन्म तिथि	: भादो सुद-3, संवत् 2014 दि. 16-9-58
बचपन में धार्मिक अभ्यास	: पंच प्रतिक्रमण-नवस्मरण आदि
दीक्षा संकल्प (ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार)	: 18 जुन 1974
व्यवहारिक अभ्यास	: 1st year B.Com. (पार्श्वनाथ उम्मेद कॉलेज फालना-राज.)
दीक्षा दाता	: पू.पं. श्री हर्षविजयजी गणिवर्य
गुरुदेव	: अध्यात्मयोगी **पू. पंन्यास श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य**
दीक्षा दिन	: माघ शुक्ला 13, संवत् 2033 दिनांक 2-2-1977
समुदाय	: शासन प्रभावक पू.आ. श्री रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
दीक्षा दिन विशेषता	: भारत भर में लगभग 50 ऊपर दीक्षाएँ
108 मुमुक्षु वरघोडा	: 9 जनवरी 1977, मुंबई
दीक्षा स्थल	: न्याति नोहरा-बाली राज.
दीक्षा समय उम्र	: 18 वर्ष
प्रथम चातुर्मास	: संवत् 2033 पाटण पू.पं. श्री हर्षविजयजी के सानिध्य में

◆ **अभ्यास :** प्रकरण, भाष्य, 6 कर्मग्रंथ, कम्मपयडी, पंचसंग्रह, न्याय, काव्य, कोश, संस्कृत-प्राकृत व्याकरण, संस्कृत-प्राकृत साहित्य वाचन, ज्योतिष आगम वाचन आदि.

◆ **भाषा बोध :** हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, राजस्थानी, संस्कृत, प्राकृत, मराठी आदि

◆ **प्रथम वचन प्रारंभ :** फागुण सुदी 14, संवत् 2034 पाटण (गुजरात)

◆ **चातुर्मासिक प्रवचन प्रारंभ :** बाली संवत् 2038 (**पू.आ. श्री राजतिलकसूरीश्वरजी म.सा.** के सान्निध्य में)

◆ **चातुर्मासिक प्रवचन :** बाली, पाली (दो बार) रतलाम, अहमदाबाद (ज्ञानमंदिर), पाटण, सुरेन्द्रनगर, रानीगांव, पिंडवाडा, उदयपूर, जामनगर, अहमदाबाद (गिरधरनगर), थाणा, कल्याण, दादर (मुंबई), सायन (मुंबई), धूलिया, कराड, चिंचवड भायंदर, पूना, येरवडा, दीपक ज्योति टॉवर, श्रीपाल नगर, कर्जत, भिवंडी (दो बार) कल्याण (दो बार) रोहा, भायंदर, पालीताणा आदि

◆ **विहार क्षेत्र :** राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि

◆ **(छ'री पालित संघ में मार्गदर्शन-प्रवचन) :** बरलूट से शत्रुंजय, गोदन से जैसलमेर, वल्लभीपुर से पालीताणा, लुणावा से राणकपूर पंचतीर्थी

◆ **छ'री पालक निश्रादाता :** उदयपुर से केशरीयाजी, गिरधनगर से शंखेश्वर, धूलिया से नेर, कराड से कुंभोज, सोलापूर से बार्शी, भिवंडी से महावीर धाम, कर्जत से मानस मंदिर हस्तगिरि से शत्रुंजय गिरनार आदि

◆ **प्रथम पुस्तक आलेखन : ''वात्सल्य के महासागर''** संवत् 2038

◆ **प्रकाशित पुस्तकें :** (160) लगभग

◆ **संस्कृत साहित्य संपादन-सह संपादन :** सिद्ध हैमशब्दानुशासनम्-बृहदवृत्ति लघु न्यास सह, पांडवचरित्र आदि

◆ **अन्य संपादन :** भगवान पार्श्वनाथ की परंपरा का इतिहास-भाग 1-2-3

◆ **अनुवाद संपादन :** श्राद्धविधि, शांतसुधारस तथा पूज्य गुरूदेवश्री की 15 पुस्तकें, मंत्राधिराज आदि तथा विजयानंदसूरिजी कृत 'नवतत्व' ।

◆ **शिष्य-प्रशिष्य : स्व. मु. श्री उदयरत्नविजयजी, मुनि केवलरत्नविजयजी, मुनि कीर्तिरत्नविजयजी, मुनि शालिभद्रविजयजी म.**

मुनि प्रशांतरत्नविजयजी

◆ **उपधान निश्रा दाता :** कुर्ला, धुले, येरवडा, आदीश्वर धाम (दो), कर्जत, विक्रोली, मोहना, पालीताणा आदि...

गुरु वंदना

जैन शासन के महान् ज्योतिर्धर
पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रामचंद्रसूरीश्वरजी महाराज सा.

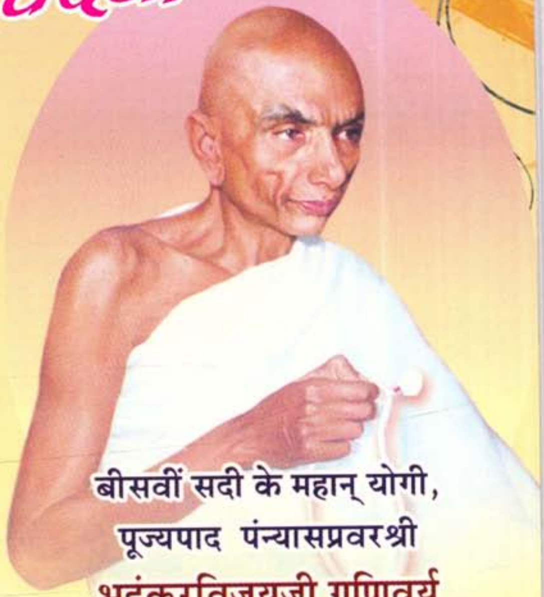

बीसवीं सदी के महान् योगी,
पूज्यपाद पंन्यासप्रवरश्री
भद्रंकरविजयजी गणिवर्य

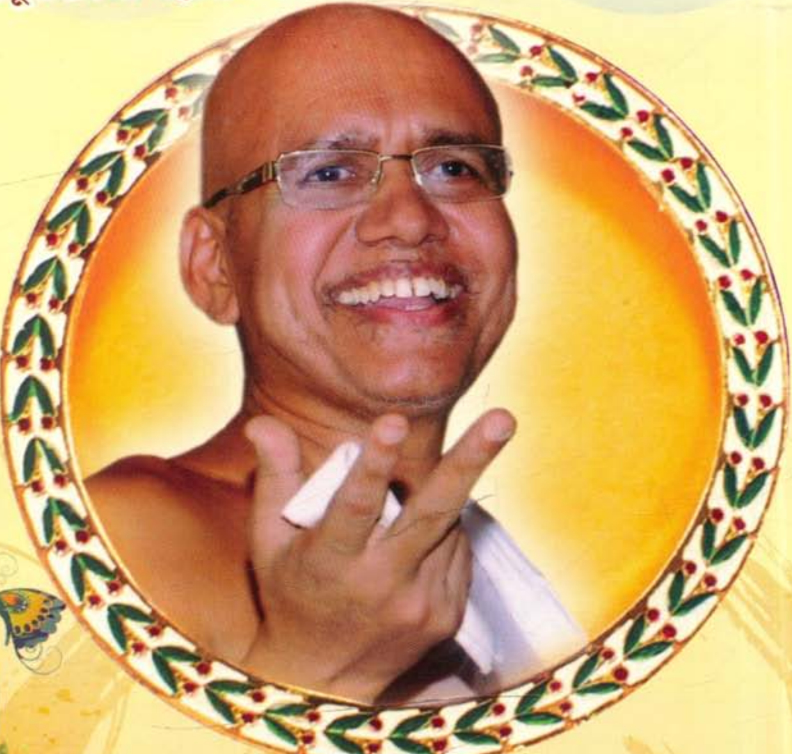

मरुधररत्न हिन्दी साहित्यकार
पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

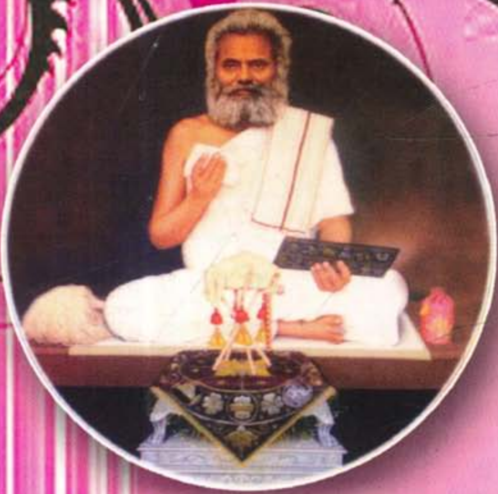

शासनसम्राट् पूज्य आचार्यदेव
श्रीमद् विजय **नेमीसूरीश्वरजी** महाराज सा.

शासन प्रभावक पूज्य आचार्यदेव
श्रीमद् विजय **विज्ञानसूरीश्वरजी** म.सा.

प्राकृत विशारद **प्राकृतिविज्ञान पाठभाला** के लेखक
पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
कस्तुरसूरीश्वरजी म.सा.

प्रकाशन सहयोगी

स्व. पिताजी जवेरचंदजी पू. माताजी सेकुबाई जवेरचंदजी

निवेदक

पुत्र : उदयराज, जयंतिलाल, बाबुलाल

पौत्र : रवीन्द्र, राकेश, भूपेन्द्र, तरुण, संजय, अमित, विक्रम

कोसेलाव- राज. निवासी-भायखला

शा. रतनचंदजी वागाजी गोलंक परिवार

लुणावा (राज.) मुंबई

शाश्वत परिवार-दीपक ज्योति टॉवर

कालाचोकी, मुंबई-४०० ०३३.

शा. वनेचंदजी पनेचंदजी श्रीश्रीमाल (पूना-साचोडी) आयोजित

चातुर्मास आराधक (साधारण खाते में से)

वि.सं. २०६८, कस्तुरधाम, पालीताणा,

प्रकाशन सहयोगी

शा. फूटरमलजी भीकमचंदजी

श्रीमती मेताबाई फूटरमलजी

निवेदक : डॉ. बस्तीमल, सुमेरमल, प्रकाश, मनोहर लाल

पत्ता : मनोहरलाल फूटरमलजी पालरेचा

रेनबो फार्मा, 13, M.T. Road, Opp. ESI Hospital, अपनावरम,

चेन्नाई-600 012. M. 9840868500

प्रकाशन सहयोगी

शा. सरेमलजी जावंतराजजी

श्रीमती चंपाबाई सरेमलजी

निवेदक

पुत्र : अशोककुमार सरेमलजी, पौत्र : परेश दीपक, प्रपौत्र : ध्वज, नव्या

फर्म : वी. मेलो एपेरल्स, 93, गोविंदप्पा स्ट्रीट, 1st Floor,

चेन्नाई-600 001. M. 9381008666

प्रवचन प्रभावक मरुधररत्न-हिन्दी साहित्यकार पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय

श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. का बहुरंगी-वैविध्यपूर्ण साहित्य

तत्त्वज्ञान विषयक	S.No.
1. जैन विज्ञान	38
2. चौदह गुणस्थान	96
3. आओ ! तत्त्वज्ञान सीखें	79
4. कर्म विज्ञान	102
5. नव तत्त्व-विवेचन	122
6. जीव विचार विवेचन	123
7. तीन-भाष्य	127
8. दंड़क-विवेचन	135
9. ध्यान साधना	153

प्रवचन साहित्य	S.No.
1. मानवता तब महक उठेगी	8
2. मानवता के दीप जलाएं	9
3. महाभारत और हमारी संस्कृति-भाग-1	18
4. महाभारत और हमारी संस्कृति-भाग-2	19
5. रामायण में संस्कृति का अमर संदेश-भाग-1	27
6. रामायण में संस्कृति का अमर संदेश-भाग-2	28
7. आओ ! श्रावक बने !	45
8. सफलता की सीढ़ियाँ	53
9. नवपद प्रवचन	56
10. श्रावक कर्तव्य-भाग-1	74
11. श्रावक कर्तव्य-भाग-2	75
12. प्रवचन रत्न	78
13. प्रवचन मोती	72
14. प्रवचन के बिखरे फूल	103
15. प्रवचनधारा	67
16. आनन्द की शोध	33
17. भाव श्रावक	85
18. पर्युषण अष्टाह्निका प्रवचन	97
19. कल्पसूत्र के हिन्दी प्रवचन	104
20. संतोषी नर-सदा सुखी	87
21. जैन पर्व-प्रवचन	115
22. गुणवान् बनों	126
23. विखुरलेले प्रवचन मोती	117
24. सुखी जीवन की चाबियाँ	137
25. पांच प्रवचन	138
26. जीवन शणगार प्रवचन	148
27. तीर्थ यात्रा	159

धारावाहिक कहानी	S.No.
1. कर्मन् की गत न्यारी	6
2. जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है	10
3. आग और पानी भाग-1-2	34-35
4. मनोहर कहानियाँ	50
5. ऐतिहासिक कहानियाँ	57
6. प्रेरक-कहानियाँ	91
7. सरस कहानियाँ	111
8. मधुर कहानियाँ	98
9. सरल कहानियाँ	142
10. तेजस्वी सितारें	58
11. जिनशासन के ज्योतिर्धर	81
12. महासतियों का जीवन संदेश	93
13. आदिनाथ शांतिनाथ चरित्र	105
14. पारस प्यारो लागे	99
15. शीतल नहीं छाया रे (गुज.)	25
16. आवो ! वार्ता कहुं (गुज.)	63
17. महान् चरित्र	129
18. प्रात:स्मरणीय महापुरुष-1	149
19. प्रात:स्मरणीय महापुरुष-2	150
20. प्रात:स्मरणीय महासतियाँ-1	151
21. प्रात:स्मरणीय महासतियाँ-2	152

युवा-युवति प्रेरक	S.No.
1. युवानो ! जागो	12
2. जीवन की मंगल यात्रा	17
3. तब चमक उठेगी युवा पीढी	20
4. युवा चेतना	23
5. युवा संदेश	26
6. जीवन निर्माण (विशेषांक)	30
7. The Message for the Youth	31
8. How to live true life ?	40
9. The Light of Humanity	21
10. Youth will Shine then	121

11 Duties towards Parents	95
12. यौवन-सुरक्षा विशेषांक	32
13. सन्नारी विशेषांक	59
14. माता-पिता	77
15. आहार: क्यों और कैसे ?	82
16. आहार विज्ञान	39
17. ब्रह्मचर्य	106
18. अमृत की बुंदे	64
19. क्रोध आबाद तो जीवन बरबाद	80
20. राग म्हणजे आग (मराठी)	108
21. आई वडीलांचे उपकार	92
22. अध्यात्माचा सुगंध	155

अनुवाद-विवेचनात्मक

	S.No.
1. सामायिक सूत्र विवेचना	2
2. चैत्यवंदन सूत्र विवेचना	3
3. आलोचना सूत्र विवेचना	4
4. श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र विवेचना	5
5. चेतन ! मोहनींद अब त्यागो	11
6. आनन्दघन चौबीसी विवेचना	7
7. अंखियाँ प्रभुदर्शन की प्यासी	22
8. श्रावक जीवन-दर्शन	29
9. भाव सामायिक	107
10. श्रीमद् आनंदघनजी पद विवेचन	94
11. भाव-चैत्यवंदन	120
12. विविध-पूजाएँ	125
13. भाव प्रतिक्रमण-भाग-1	132
14. भाव प्रतिक्रमण-भाग-2	133
15. श्रीपाल-रास और जीवन-चरित्र	134
16. आओ संस्कृत सीखें भाग-1	144
17. आओ संस्कृत सीखें भाग-2	145
18. श्रावक आचार दर्शक	154

विधि-विधान उपयोगी

	S.No.
1. भक्ति से मुक्ति	41
2. आओ ! प्रतिक्रमण करें	42
3. आओ ! श्रावक बने	45
4. हंस श्राद्धव्रत दीपिका	48
5. Chaitya-Vandan Sootra	52
6. विविध-देववंदन	55
7. आओ ! पौषध करें	71
8. प्रभु दर्शन सुख संपदा	84
9. आओ ! पूजा पढाएँ !	88
10. Panch Pratikraman Sootra	61
11. शत्रुंजय यात्रा	36
12. प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह	73
13. आओ ! उपधान-पौषध करें	109
14. विविध-तपमाला	128
15. आओ ! भावायात्रा करें	130
16. आओ ! पर्युषण-प्रतिक्रमण करें	136

अन्य प्रेरक साहित्य

	S.No.
1. वात्सल्य के महासागर	1
2. रिमझिम रिमझिम अमृत बरसे	15
3. अध्यात्मयोगी पूज्य गुरुदेव	44
4. बीसवीं सदी के महान् योगी	100
5. महान ज्योतिर्धर	86
6. मिच्छामि दुक्कडम्	60
7. क्षमापना	69
8. सवाल आपके जवाब हमारे	37
9. शंका और समाधान-1	66
10. शंका-समाधान-भाग-2	118
11. शंका-समाधान-भाग-3	147
12. जैनाचार विशेषांक	47
13. जीवन ने तुं जीवी जाण	62
14. धरती तीरथ'री	68
15. चिंतन रत्न	114
16. बीसवीं सदी के महान योगी की अमर-वाणी	101
17. महावीरवाणी	112
18. जैन शब्द कोश	157
19. नयादिन-नयासंदेश	158
20. महामंत्र की साधना	160

वैराग्यपोषक साहित्य

	S.No.
1. मृत्यु-महोत्सव	51
2. श्रमणाचार विशेषांक	54
3. सद्गुरु-उपासना	113
4. चिंतन-मोती	90
5. मृत्यु की मंगल यात्रा	16
6. प्रभो ! मन-मंदिर पधारो	110
7. शांत सुधारस-हिन्दी विवेचन भाग-1	13
7. शांत सुधारस-हिन्दी विवेचन भाग-2	14
9. भव आलोचना	124
10. वैराग्य शतक	140
11. इन्द्रिय पराजय शतक	156

अर्हं

॥ ॐ नमः श्री सिद्धचक्राय ॥

॥ परमगुरु-आचार्य महाराज-श्रीमद् विजयनेमिसूरीश्वर भगवदभ्यो नमः ॥

सूरिचक्रवर्ति-जगद्गुरु-शासनसम्राट्-भट्टारकाचार्य **श्रीविजयनेमिसूरीश्वर-**
पट्टालङ्कार-परमपूज्य-परमोपकारि-पूज्यपाद-आचार्यमहाराज-
श्रीविजय**विज्ञानसूरीश्वर**-पट्टधराचार्य श्रीविजय**कस्तूरसूरि** प्रणीता

॥ श्री प्राकृत विज्ञान पाठमाला ॥

दिव्वपहावो दीसइ, कलियाले जस्स अमियझरणाओ ।
सत्तफणंचिअसीसो, स जयउ ``**सेरीस**पासजिणो'' ॥1॥

पयाडिअसमत्तभावं, भविअन्नाणंधयारपयरहरं ।
सूरव्व जस्स नाणं, स पहू **वीरो** कुणउ भद्दं ॥2॥

एक्कारस गणवइणो, **गोयम**पमुहा जयन्ति सुयनिहिणो ।
स वि हेमचंद्रसूरि, जाओ कलियालसव्वण्णू ॥3॥

सिरिविजय**नेमिसूरि**, जुगप्पहाणो महं पसीएज्जा ।
जस्स सुहादिट्ठीए, असज्झकज्जाणि सिज्झन्ति ॥4॥

विन्नाणसूरिं सगुरुं च नच्चा, सुअं च सव्वण्णुपणीअतत्तं ।
पाइअविन्नाणसुपाढमालं, रएमि हं सीस**सुहंकरट्ठं** ॥5॥

वर्ण विज्ञान

+ स्वर

ह्रस्व	अ	इ	उ	०	०	ऋ	ऌ
दीर्घ	आ	ई	ऊ	ऐ	औ		
वर्ण विकार		ए,अय्	अव्	ए,अइ	ओ, अउ	अ,इ, उ,रि	इलि

. अनुस्वार

— पा. 5 नि. 3

स्वर ◆ 1. प्राकृत में **'ऋ'** स्वर का विकार **'अ'** होता है, किसी स्थान में **'इ-उ'** और **'रि'** भी होता है ।

उदा. **घयं** = घृतम् **मओ** = मृगः

किवा = कृपा **पुट्ठो** = स्पृष्टः **रिद्धि** = ऋद्धिः

2. **'ऌ'** स्वर का विकार **'इलि'** होता है ।

उदा. **किलिन्नं** = क्लृन्नम् **किलित्तं** = क्लृप्तम्

3. **'ऐ'** और **'औ'** का विकार क्रमशः **'ए'** और **'ओ'** होता है, किसी स्थान में **'अइ'** और **'अउ'** भी होता है ।

उदा. **सेन्नं-सइन्नं** = सैन्यम्, **तेलक्कं**-त्रैलौक्यम्,

कोमुई-पउरो = कौमुजी-पौरः

कैयवं-ए-कौरवा = कैतवम् अयि कौरवाः

ऐसे कुछ शब्दों में **ऐ-औ** का प्रयोग भी होता है ।

4. विसर्ग का प्रयोग नहीं होता है लेकिन **'अ'** के बाद विसर्ग हो तो **अ** सहित विसर्ग का **'ओ'** होता है ।

उदा. **सव्वो** = सर्वतः **पुरओ** = पुरतः **जओ** = यतः

□ व्यंजन

		स्थान
क वर्ग	क् ख् ग् घ् ङ्	कंठ्य
च वर्ग	च् छ् ज् झ् ञ्	तालव्य.
ट वर्ग	ट् ठ् ड् ढ् ण्	मूर्धन्य.
त वर्ग	त् थ् द् ध् न्	दन्त्य.
प वर्ग	प् फ् ब् भ् म्	ओष्ठ्य.
अर्धस्वर	य्	तालव्य.
	र्	मूर्धन्य.
	ल्	दन्त्य.
	व्	दन्तौष्ठ्य.
	स्	दन्त्य.
	ह्	कंठ्य.

□ **व्यंजन :–** 1. **ङ् – ञ्** ये दो व्यंजन स्वतन्त्र प्राकृत में नहीं आते हैं, लेकिन स्ववर्ग के साथ संयुक्त आते हैं ।

उदा. सङ्खो = शङ्खः, **लञ्छणं** = लाञ्छनम्

2. **'श'** और **'ष'** का **स** होता है ।

उदा. विसेसो = विशेषः, **सद्दो** = शब्दः

3. स्वररहित मात्र व्यंजन का प्रयोग नहीं होता है ।

उदा. राय = राजन्, **सरिया** = सरित्, **तमो** = तमस्.

4. प्राकृत में विजातीय संयुक्त व्यंजन नहीं होता है । लेकिन नियमानुसार दोनों में से एक का लोप होकर स्वजातीय संयुक्त व्यंजन बनता है ।

उदा. पक्क = पक्व, **अच्चण** = अर्चन, **इट्ठ** = इष्ट,

अण्णव = अर्णव, **सुत्त** = सुप्त, सूत्र, **कव्व** = काव्य आदि.

अपवाद :– म्ह–ण्ह–ल्ह–य्ह–द्र इन संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग प्राकृत में आता है ।

उदा. गिम्हो = ग्रीष्मः, **पण्हो** = प्रश्नः, **पल्हाओ** = प्रह्लादः,

गुय्हो = गुह्यः, **चंदो चंद्रो** = चन्द्रः वगैरह ।

प्राकृत में संयुक्त व्यंजन के परिवर्तन निम्नानुसार होते है।

परिवर्तन	संस्कृत	प्राकृत	परिवर्तन	संस्कृत	प्राकृत
क्त=क्क	मुक्त	मुक्क	च्य=च्च	अच्युत	अच्चुअ
क्य=क्क	वाक्य	वक्क	त्य=च्च	सत्य	सच्च
क्र=क्क	चक्र	चक्क	त्व=च्च	ज्ञात्वा	णच्चा
क्ल=क्क	विक्लव	विक्कव	र्च=च्च	अर्चना	अच्चणा
क्व=क्क	पक्व	पक्क	क्ष=च्छ	दक्ष	दच्छ
त्क=क्क	उत्कण्ठा	उक्कंठा	क्ष्म=च्छ	लक्ष्मी	लच्छी
र्क=क्क	अर्क	अक्क	छ्=च्छ	कृच्छ्र	किच्छ
ल्क=क्क	उल्का	उक्का	त्स=च्छ	वत्स	वच्छ
दु:ख=क्ख	दु:ख	दुक्ख	त्स्य=च्छ	मत्स्य	मच्छ
क्ष=क्ख	लक्षण	लक्खण	थ्य=च्छ	मिथ्या	मिच्छा
ख्य=क्ख	व्याख्यान	वक्खाण	प्स=च्छ	लिप्सा	लिच्छा
क्ष्य=क्ख	लक्ष्य	लक्ख	र्च्छ=च्छ	मूर्च्छा	मुच्छा
त्क्ष=क्ख	उत्क्षिप्त	उक्खित्त	श्च=च्छ	पश्चात्	पच्छा
त्ख=क्ख	उत्खात	उक्खाय	स्त=च्छ	विस्तीर्ण	विच्छिन्न
ष्क=क्ख	निष्क्रमण	निक्खमण	ज्य=ज्ज	आज्य	अज्ज
स्क=क्ख	प्रस्कंदन	पक्खंदण	ज्य=ज्ज	इज्या	इज्जा
स्ख=क्ख	प्रस्खलित	पक्खलिअ	ज्र=ज्ज	वज्र	वज्ज
ग्न=ग्ग	नग्न	नग्ग	ज्व=ज्ज	प्रज्वलन	पज्जलण
ग्म=ग्ग	युग्म	जुग्ग	ज्ञ=ज्ज	सर्वज्ञ	सव्वज्ज
ग्य=ग्ग	योग्य	जोग्ग	द्य=ज्ज	अद्य	अज्ज
ग्र=ग्ग	अग्र	अग्ग	ब्ज=ज्ज	अब्ज	अज्ज
ड्ग=ग्ग	खड्ग	खग्ग	य्य=ज्ज	शय्या	सेज्जा
द्ग=ग्ग	मुद्ग	मुग्ग	र्य=ज्ज	आर्या	अज्जा
र्ग=ग्ग	वर्ग	वग्ग	र्ज=ज्ज	वर्जन	वज्जण
ल्ग=ग्ग	वल्ग	वग्ग	र्ज्य=ज्ज	वर्ज्य	वज्ज
घ्न=ग्घ	विघ्न	विग्घ	ध्य=ज्झ	मध्य	मज्झ
घ्र=ग्घ	व्याघ्र	वग्घ	ध्व=ज्झ	बुद्ध्वा	बुज्झा
द्घ=ग्घ	उद्घाटित	उग्घाडिअ	ह्य=ज्झ	बाह्य	बज्झ
र्घ=ग्घ	अर्घ	अग्घ	त्त=ट्ट	पत्तन	पट्टण

परिवर्तन	संस्कृत	प्राकृत	परिवर्तन	संस्कृत	प्राकृत
र्त्त=ट्ट	नर्त्तकी	नट्टई	र्थ=त्थ	अर्थ	अत्थ
ष्ट=ट्ठ	कष्ट	कट्ठ	स्त=त्थ	हस्त	हत्थ
ष्ठ=ट्ठ	निष्ठुर	निट्ठुर	स्थ=त्थ	प्रस्थ	पत्थ
र्थ=ट्ठ	अर्थ	अट्ठ	द्र=द्द	रुद्र	रुद्द
र्त=ड्ड	गर्ता	गड्डा	द्व=द्द	प्रद्वेष	पद्देस
र्द=ड्ड	विच्छर्द	विच्छड्ड	ब्द=द्द	अब्द	अद्द
ढ्य=ड्ढ	आढ्य	अड्ढ	र्द=द्द	मर्दन	मद्दण
द्ध=ड्ढ	ऋद्धि	रिड्ढि	ग्ध=द्ध	दग्ध	दद्ध
र्ध=ड्ढ	वर्धमान	वड्ढमाण	ध्व=द्ध	अध्वन्	अद्ध
ज्ञ=ण्ण	प्राज्ञ	पण्ण	ब्ध=द्ध	अब्धि	अद्धि
ण्य=ण्ण	पुण्य	पुण्ण	र्ध=द्ध	वर्धमान	वद्धमाण
ण्व=ण्ण	कण्व	कण्ण	क्म=प्प	रुक्मिणी	रुप्पिणी
न्य=ण्ण	अन्य	अण्ण	त्प=प्प	उत्पल	उप्पल
न्व=ण्ण	अन्वर्थ	अण्णत्थ	त्म=प्प	आत्मन्	अप्प
म्न=ण्ण	प्रद्युम्न	पज्जुण्ण	प्य=प्प	प्राप्य	पप्प
र्ण=ण्ण	वर्ण	वण्ण	प्र=प्प	वप्र	वप्प
क्ष्ण=ण्ह	तीक्ष्ण	तिण्ह	प्ल=प्प	विप्लव	विप्पव
श्न=ण्ह	प्रश्न	पण्ह	र्प=प्प	अर्पण	अप्पण
ष्ण=ण्ह	उष्ण	उण्ह	ल्प=प्प	अल्प	अप्प
स्न=ण्ह	स्नाति	ण्हाइ	त्फ=प्फ	उत्फुल	उप्फुल
ह्न=ण्ह	मध्याह्न	मज्झण्ह	ष्प=फ	पुष्प	पुप्फ
ह्ण=ण्ह	पूर्वाह्ण	पुव्वण्ह	ष्फ=प्फ	निष्फल	निप्फल
क्त=त्त	मुक्त	मुत्त	स्प=प्फ	प्रस्पन्दन	पप्फंदण
त्न=त्त	यत्न	जत्त	स्फ=प्फ	प्रस्फोटित	पप्फोडिअ
त्म=त्त	आत्मा	अत्ता	द्ब=ब्ब	उद्बद्ध	उब्बद्ध
त्र=त्त	पात्र	पत्त	र्ब=ब्ब	निर्बल	निब्बल
त्व=त्त	सत्त्व	सत्त	र्ब=ब्ब	अर्बुद	अब्बुअ
प्त=त्त	प्राप्त	पत्त	ब्र=ब्ब	अब्रह्म	अब्बंभ
र्त=त्त	वार्ता	वत्ता	ग्भ=ब्भ	प्राग्भार	पब्भार
क्थ=त्थ	सिक्थ	सित्थ	द्भ=ब्भ	सद्भाव	सब्भाव
त्र=त्थ	यत्र	जत्थ			

परिवर्तन	संस्कृत	प्राकृत	परिवर्तन	संस्कृत	प्राकृत
भ्य=ब्भ	अभ्यास	अब्भास	ल्व=ल्ल	पल्वल	पल्लल
भ्र=ब्भ	अभ्र	अब्भ	ह्ल=ल्ल	प्रह्लाद	पल्हाअ
र्भ=ब्भ	गर्भ	गब्भ	द्व=व्व	उद्वर्तन	उव्वट्टण
ह्व=ब्भ	जिह्वा	जिब्भा	र्व=व्व	उर्वी	उव्वी
न्म=म्म	जन्मन्	जम्म	व्य=व्व	काव्य	कव्व
म्य=म्म	वाम्य	वम्म	व्र=व्व	प्रव्रज्या	पव्वज्जा
र्म=म्म	कर्मन्	कम्म	र्ष=स्स	ईर्षा	इस्सा
ल्म=म्म	गुल्म	गुम्म	श्म=स्स	रश्मि	रस्सि
द्म=म्म	पद्म	पोम्म	श्य=स्स	पश्यति	पस्सइ
क्ष्म=म्ह	पक्ष्मन्	पम्ह	श्य=स्स	लेश्या	लेस्सा
ष्म=म्ह	ग्रीष्म	गिम्ह	श्व=स्स	ईश्वर	इस्सर
स्म=म्ह	विस्मय	विम्हय	ष्य=स्स	शुष्यति	सुस्सइ
ह्म=म्ह	ब्राह्मण	बम्हण	ष्व=स्स	इष्वास	इस्सास
ह्य=य्ह	गुह्य	गुय्ह	स्य=स्स	कस्य	कस्स
र्य=ल्ल	पर्यस्त	पल्लत्थ	स्र=स्स	सहस्र	सहस्स
र्ल=ल्ल	निर्लज्ज	निल्लज्ज	स्व=स्स	तेजस्विन्	तेअस्सि
ल्य=ल्ल	कल्याण	कल्लाण			

शब्दों में स्वर के बाद असंयुक्त व्यंजनों के सामान्य परिवर्तन प्रायः निम्नानुसार होते हैं –

परिवर्तन	संस्कृत	प्राकृत	परिवर्तन	संस्कृत	प्राकृत
क=लुक् –	लोक=	लोअ	न= ण –	धन=	धण
क=ग –	लोक=	लोग	प्रारंभ में न का ण विकल्प से होता है		
क=य –	कनक=	कणय	नर= नर		
ख=ह –	मुख=	मुह	= णर		
ग=लुक् –	योग=	जोअ	प=लुक् –	रिपु=	रिउ
ग=य –	नगर=	नयर	प=व –	पाप=	पाव
घ=ह –	मेघ=	मेह	फ=भ –	सफल=	सभल
च=लुक् –	शची=	सई	फ=ह –	सफल=	सहल
च=य –	वचन=	वयण	ब=व –	सबल=	सवल

परिवर्तन	संस्कृत	प्राकृत	परिवर्तन	संस्कृत	प्राकृत
ज=लुक् –	राजीव=	राईव	भ=ह –	सभा=	सहा
ज=य –	रजत=	रयय	य=लुक् –	वियोग=	विओग
ट=ड –	नट=	नड	प्रारंभ में य का ज होता है–		
ठ=ढ –	मठ=	मढ	य=ज –	यम=	जम
ड=ल –	क्रीडति=	कीलइ		याति=	जाइ
त=लुक् –	पति=	पइ	किसी स्थान में र का ल होता है–		
त=य –	पात=	पाय			
थ=ह –	कथा=	कहा	र=ल –	दरिद्र=	दलिद्द
द=लुक् –	विदेश=	विएस	व=लुक् –	कवि=	कइ
द=य –	गदा=	गया	व=य –	लावण्य=	लायण्ण
ध=ह –	साधु=	साहु	श, ष =स –	शेष=	सेस
(लुक् अर्थात् लोप)				शब्द=	सद्द

सूचना

1. इस 'प्राकृत विज्ञान पाठमाला' में दिये हुए धातुओं और शब्दों के रूप तथा उनके नियम कलिकालसर्वज्ञ भगवान श्रीहेमचंद्राचार्य विरचित प्राकृत (सिद्धहेम व्याकरण के अष्टम अध्याय) व्याकरण के अनुसार हैं । नियम के बाद जो नंबर लिखें हैं वे प्राकृत व्याकरण सूत्र के नंबर हैं ।

2. संस्कृत में जैसे दस गण और उसमें परस्मैपदी-आत्मनेपदी और उभयपदी धातुएँ तथा उनके अलग- अलग प्रत्यय आते हैं, वैसे प्राकृत में नहीं हैं ।

3. प्राकृत में 1. वर्तमानकाल, 2. भूतकाल (ह्यस्तन-परोक्ष-अद्यतन भूत के बदले), 3. आज्ञार्थ-विध्यर्थ और 4. भविष्यकाल (श्वस्तन भविष्य और सामान्य भविष्य के बदले) तथा 5. क्रियातिपत्त्यर्थ इतने कालों का ही प्रयोग होता है ।

4. प्राकृत में द्विवचन की जगह बहुवचन का प्रयोग होता है । तब द्वित्व अर्थ बताने के लिए बहुवचनान्त नाम के साथ विभक्त्यन्त -'द्वि' शब्द का प्रयोग होता है. उदा. दोण्णि पुरिसा गच्छन्ति = दो पुरुष जाते हैं ।

5. प्राकृत में चतुर्थी विभक्ति के स्थान पर छठी विभक्ति होती है, लेकिन तादर्थ्य (उसके लिए) में संस्कृत की तरह चतुर्थी विभक्ति के एकवचन का प्रयोग होता है । उदा. आहाराय नयरं अडइ (आहाराय नगरमटति)

6. प्राकृत भाषा में धातुओं और शब्दों को तीन विभाग में बाँटा है ।

   1. + देश्य = महाराष्ट्र- विदर्भ- मगध इत्यादि देशों में प्रचलित ।

   2. तद्भव = संस्कृत पर से प्राकृत नियमानुसार सिद्ध ।

   3. तत्सम = संस्कृत के समान ।

देश्यधातु = **फुम** = फूंकना. **अवयास** = आलिंगन करना, **फुम्फुल्ल** = उठाना. **पिप्पड** = बकवास करना इत्यादि धातुएँ तथा आदेश धातुएँ

देश्यशब्द = **अत्थग्घ** = मध्यवर्ती. बीच में रहा हुआ.
चवल = चावल.
खउर = कलुषित.
थह = आश्रय, स्थान.
आहित्थ = गया हुआ.
लल्लक्क = भयंकर.
विड्डिर = आडम्बर इत्यादि शब्द.

तद्भवधातु = कह् (कथ्) पड् (पत्)
भम् (भ्रम्) बाह् (बाध्)
हण् (हन्) अप्प् (अर्प्)
अच्च् (अर्च) आदि

तद्भवशब्द = मयण (मदन) ओसढ (औषध)
भत्त (भक्त) विण्हु (विष्णु)
पहु (प्रभु) आदि

तत्समधातु = भण्-चल्-वंद्-वस्-हस्-लज्ज्-रम् आदि

तत्समशब्द = सिद्ध, कमल, बुद्धि, माला, विमल, वीर आदि

+ कलिकालसर्वज्ञ भगवान श्रीहेमचन्द्रसूरिजी ने देशी नाममाला में देश्य शब्दों का संग्रह किया है ।

पाठ - 1

वर्तमान काल - प्रथम पुरुष

प्रथम पुरुष एकवचन और	बहुवचन के प्रत्यय (३/१४१-१४४)
एकवचन	बहुवचन
मि (मि, ए)[२]	मो, मु, म (मस्-महे)

1. व्यञ्जनान्त धातुओं को पुरुषबोधक प्रत्यय के पहले **'अ'** प्रत्यय लगता है। (४/२३९) उदा. बोल्ल् अ मि =
2. प्रथम पुरुष के मि प्रत्यय के पहले **'अ'** का **'आ'** विकल्प से होता है। (३/१४४) उदा. बोल्लामि, बोल्लमि।
3. **मो, मु, म** प्रत्ययों के पहले **'अ'** का **'आ'** तथा **'इ'** विकल्प से होता है। (३/१५५) उदा. बोल्लामो, बोल्लिमो, बोल्लमो।
4. वर्तमानकाल के आगे बताये जानेवाले दूसरे और तीसरे पुरुष के **'से-ए'** प्रत्यय को छोड़कर सभी पुरुषबोधक प्रत्यय के पहले **'अ'** का **'ए'** होता है। (३/१५८)

   उदा. बोल्लेमि, बोल्लेमो, बोल्लेमु, बोल्लेम अथवा
   बोल्लामि, बोल्लामु आदि

प्रथम पुरुष के रूप

एकवचन	बहुवचन
भणामि	भणिमो, भणिमु, भणिम,
भणमि	भणामो, भणामु, भणाम,
भणेमि	भणमो, भणमु, भणम,
	भणेमो, भणेमु, भणेम.

टिप्पणी :- 1. प्राकृत में द्विवचन नहीं होता है, उसके स्थान पर बहुवचन का प्रयोग होता है। यह प्रयोग करते समय दु (द्वि) शब्द का प्रयोग होता है। उदा. अम्हे दोण्णि बोल्लिमो।

2. एकवचन में **'म्हि'** और बहुवचन में **'म्ह'** प्रत्यय का प्रयोग प्राकृत साहित्य में कहीं-कहीं दिखाई देता है। उदा. **भगवइ ! महापसाओ, ता एहि गच्छम्ह.**

(समराइच्च 8 वाँ भव)

धातु

कह् (कथ्) कहना.
गच्छ् (गम्-गच्छ) गमन करना, जाना.
चल् (चल्) चलना.
जाण्, **मुण्** (ज्ञा) जानना
जेम्, **भुंज्** (भुंज्) भोजन करना, खाना.
देक्ख् (दृश्) देखना.
नम्, **नव्** (नम्) नमन करना, नमस्कार करना.
पड् (पत्) गिरना, पतित होना.
पिव्, **पिज्ज्** (पा- पिब्) पीना, पान करना

पीड्, **पील्** (पीड्) पीड़ा करना, सताना, दुःख देना.
पुच्छ् (प्रच्छ्- पृच्छ्) पूछना.
बीह् (भी) डरना, भयभीत होना.
बोल्ल् (कथ्) बोलना.
बोह् (बोध्) बोध पाना, जानना.
भण् (भण्) पढ़ना.
भम् (भ्रम्) भटकना, भ्रमण करना.
रुव्, **रोव्** (रुद्) रोना, रुदन करना.
वस् (वस्) वसना, रहना.
हस् (हस्) हँसना.

हिन्दी में अनुवाद करें

1. कहामि
2. हसामु
3. गच्छेमि
4. वसामो
5. चलेम
6. रोवामि
7. पीलेमि
8. जाणमो
9. जेमामि
10. देक्खेमो
11. भणमु
12. नमामि
13. भणामि
14. वसेम
15. मुणेमु
16. भुंजामो
17. नवामु
18. पडेमो
19. रोवेमु
20. बोहामि
21. नमेमि
22. बोल्लेमि
23. बीहेमि
24. पुच्छामि
25. पीडेमु
26. बोल्लिमु
27. पिवामो
28. रुविमो

प्राकृत में अनुवाद करें –

1. (मैं) पूछता हूँ।
2. (मैं) सताता हूँ।
3. (हम) डरते हैं।
4. (मैं) पीता हूँ।
5. (हम) बोध पाते हैं।
6. (मैं) गिरता हूँ।
7. (मैं) पढ़ता हूँ।
8. (हम) नमन करते हैं।
9. (मैं) भ्रमण करता हूँ।
10. (मैं) देखता हूँ।
11. (हम) भोजन करते हैं।
12. (मैं) जानता हूँ।
13. (हम) रोते हैं।
14. (मैं) रहता हूँ।
15. (हम) चलते हैं।
16. (हम) जाते हैं।
17. (मैं) हँसता हूँ।
18. (हम) कहते हैं।
19. (हम) बोलते हैं।
20. (हम) रहते हैं।

पाठ - 2

वर्तमानकाल - द्वितीयपुरुष

एकवचन और बहुवचन के प्रत्यय (३/१४०-१४३)

एकवचन	**बहुवचन**
सि, से (सि-से)	ह, इत्था (थ-ध्वे)

1. जिस धातु के अन्त में **'अ'** हो उसे ही **'से'** प्रत्यय लगाया जाता है। (३/१४५)

   उदा. भण् अ = भण सि = भणसि, भणसे.

2. स्वर के बाद स्वर आए तो पूर्व के स्वर का प्रायः लोप होता है। (१/१०)
   उदा. भण् अ इत्था = भणित्था, **जिण इंदो** = जिणिंदो।

द्वितीय पुरुष के रूप

एकवचन	बहुवचन
भणसि, भणसे भणेसि	भणह, भणित्था, भणेह, भणेइत्था, भणाइत्था, भणेत्था

3. एक ही पद में दो स्वर साथ में आएँ तो संधि नहीं होती है।
   उदा. हसइ, हसइत्था, देवाओ,
   यह नियम कुछ स्थानों में नहीं लगता है अर्थात् एक पद में भी सन्धि होती है। **उदा. होहिइ** = होही. **बिइओ** = बीओ। प्राकृत में जहाँ सन्धि होती है वहाँ संस्कृत के नियमानुसार सन्धि करनी चाहिए अर्थात् सजातीय स्वर साथ में आये तो दोनों स्वर मिलकर दीर्घ स्वर बनता है।
   उदा. अ या आ के बाद अ या आ = आ, इ या ई के बाद इ-ई=ई, उ-ऊ के बाद उ-ऊ=ऊ, विषम आयवो = विषमायवो (विषमातपः), मुणि ईसरो = मुणीसरो (मुनीश्वरः), साऊ उअयं = साऊ अयं (स्वादूदकम्). अ या आ के बाद इ-ई या उ-ऊ आये तो दो स्वरों के स्थान पर पीछेवाले स्वर का गुण रखा जाता है।
   उदा. अ या **आ** के बाद **इ-ई = ए, अ** या **आ** के बाद **उ-ऊ = ओ** –, हस इत्था = हसेत्था, तित्थ ईसरो = तित्थेसरो = (तीर्थेश्वरः), गूढ उअरं = गूढोअरं = (गूढोदरम्).

इच्छ् (इच्छ्) इच्छा करना.
कंप् (कम्प्) काँपना, धूजना.
कर् (कृ) करना,
चिंत् (चिन्त्) चिन्तन करना, विचार करना.
चर् (चर्) चरना, चलना, फिरना.
निंद् (निन्द्) निन्दा करना.
पास् (दृश्) देखना.
भव् (भू-भव्) होना,
हव् }
हुव् } बनना.

4. **बुज्झ्** (बुध् - बुध्य) बोध होना, ज्ञान प्राप्त करना, जगना, समझना.
मुज्झ् (मुह् - मुह्य) मोह पाना, पागल होना, मोहित होना
रक्ख् (रक्ष्) रक्षण करना.
रम् (रम्) खेलना.
लज्ज् (लज्ज्) लज्जा पाना, शरमाना.
5. **वंद्** (वन्द्) वन्दन करना, नमन करना.
हण् (हन्) मारना.
6. **रुस्** (रुष्) रोष करना, खुश होना.
तूस् (तुष्) खुश होना, संतोष पाना.
दूस् (दुष्) दोषित करना.
पूस् (पुष्) पोषण करना.
सीस् (शिष्) भेद करना.
सीस् (कथ्) कहना.
सूस् (शुष्) सूख जाना, सूखाना.

4. शब्द के अन्दर '**ध्य**' और '**ह्य**' हो तो '**ज्झ**' होता है और प्रारम्भ में हो तो '**झ**' होता है ।

बुज्झइ (बुध्यति)	**सज्झाओ** (स्वाध्यायः)	**मुज्झइ** (मुह्यति)
सिज्झइ (सिध्यति)	**संझा** (सन्ध्या)	**नज्झइ** (नह्यति)
जुज्झइ (युध्यते)	**झाणं** (ध्यानम्)	**गुज्झं** (गुह्यम्)
विज्झइ (विध्यति)	**झायइ** (ध्यायति)	**सज्झं** (सह्यम्)

विशेष : ह्य का '**य्ह**' भी विकल्प से होता है । **उदा. गुय्हं** (गुह्यम्) सय्हं (सह्यम्)

5. आर्ष प्राकृत में 'वन्द्' धातु का प्र. पु. एकवचन में वंदे रूप संस्कृत की तरह सिद्ध होता है ।
उदा. उसभमजिअं च वंदे = ऋषभदेव और अजितनाथ को मैं वन्दन करता हूँ ।
भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं = श्री वर्धमानस्वामी को भक्तिपूर्वक वन्दन करता हूँ ।

6. **रुष् आदि धातुओं का स्वर प्राकृत में दीर्घ होता है** (४/२३६) तथा रुष्य- तुष्य आदि संस्कृत अंग के प्राकृत नियमानुसार **'य'** का लोप होने पर रुस्स्- तुस्स् -दुस्स्- पुस्स्- सिस्स्- सुस्स् आदि धातु भी सिद्ध होते हैं। उदा. रुस्सइ- तुस्सइ आदि ।

हिन्दी में अनुवाद करें

1. इच्छित्था	14. दूसेह	27. करित्था
2. करेसि	15. सीसित्था	28. पासित्था
3. चिंतसे	16. दूसेसि	29. नमेइत्था
4. पासेइत्था	17. रूसेइत्था	30. वंदह
5. मुज्झह	18. वंदसे	31. पुच्छेइत्था.
6. गच्छेसि	19. रमित्था	32. बोल्लह.
7. मुणह	20. मुज्झसे	33. भणेह.
8. देक्खेइत्था	21. कहित्था	34. रोवसे.
9. पडेह	22. चलसे	35. हसित्था.
10. सीससे	23. जेमेह	36. भणित्था.
11. रमेह	24. नमह	37. मुज्झेह.
12. वंदेइत्था	25. पिज्जसि	38. करसे.
13. रूसेसि	26. पासह	39. देक्खह.
		40. दूसित्था.

प्राकृत में अनुवाद करें

1. (तुम) काँप रहे हो ।	12. (तुम) बोलते हो ।	21. (तुम सब) पढ़ते हो ।
2. (तुम) कहते हो ।	13. (तुम) वन्दन करते हो ।	22. (तुम) देखते हो ।
3. (तुम) चलते हो ।	14. (तुम) पढ़ते हो ।	23. (तुम) भ्रमण करते हो ।
4. (तुम सब) चलते हो ।	15. (तुम सब) क्रोध करते हो ।	24. (तुम सब) रहते हो ।
5. (तुम सब) निन्दा करते हो ।	16. (तुम) रोते हो ।	25. (तुम) इच्छा करते हो ।
6. (तुम) भोजन करते हो ।	17. (तुम) निन्दा करते हो ।	26. (तुम सब) काँपते हो ।
7. (तुम) नमन करते हो ।	18. (तुम) हँसते हो ।	27. (तुम सब) बोलते हो ।
8. (तुम) मोहित होते हो ।	19. (तुम सब) पीड़ा करते हो ।	28. (तुम) पीड़ा करते हो ।
9. (तुम सब) पीते हो ।	20. (तुम) डरते हो ।	29. (तुम सब) हँसते हो ।
10. (तुम) खेलते हो ।		30. (तुम) गिरते हो ।
11. (तुम) पूछते हो ।		

पाठ - 3

वर्तमानकाल - तृतीयपुरुष

तृतीय पुरुष के प्रत्यय (३/१३९, १४२)

एकवचन	बहुवचन
इ, ए, [2] ति- ते (ति-ते)	[3] न्ति, न्ते, इरे, (अन्ति- अन्ते)

1. जिस धातु के अन्त में **'अ'** हो उसे ही **'ए'** प्रत्यय लगाया जाता है ।
   उदा. भण् अ = भण ए = भणए, भणइ, भणेइ ।

तृतीय पुरुष के रूप

एकवचन	बहुवचन
भणइ,	भणन्ति, भणन्ते, भणिरे,
भणेइ,	भणेन्ति, भणेन्ते, भणेइरे,
भणए	[4] भणिन्ति, भणिन्ते, भणइरे.

2. इन प्रत्ययों के प्रयोग प्राचीन कथाओं और चूर्णि आदि में बहुत जगह किये गये हैं।
3. पद के अन्दर रहे ङ्- ञ्- ण्- न् और म् का विकल्प से पूर्व के अक्षर पर अनुस्वार होता है । अनुस्वार न हो तो, बाद के व्यंजन के वर्ग का अनुनासिक होता है । (१/२५,४०)
   उदा. हसंति-हसन्ति (हसन्ति), **पंको-पङ्को**-(पङ्कः), **संझा-सञ्झा** (सन्ध्या), **संढो-सण्ढो** (षण्ढः), **चंदो-चन्दो**-(चन्द्रः), **कंपइ- कम्पइ** (कम्पते) ।
4. संयुक्त व्यंजन के पहले दीर्घस्वर हो तो प्रयोगानुसार प्रायः ह्रस्व होता है । (१/८४)
   उदा. भण् ए = भणे न्ति = भणिन्ति, इसी तरह भणिन्ते ।
   शब्द के अन्दर भी संयुक्त व्यंजन के पूर्व का स्वर ह्रस्व होता है । उदा.

अंबं (आम्रम्)	**मुणिंदो** (मुनीन्द्रः)	**निलुप्पलं** (नीलोत्पलम्)
अस्सं (आस्यम्)	**नरिंदो** (नरेन्द्रः)	**पुज्जं** (पूज्यम्)
तित्थं (तीर्थम्)	**चुण्णो** (चूर्णः)	

धातु

आदर् (आ+दृ) आदर करना.
किण् (क्री) खरीदना.
जम्म् (जन्) उत्पन्न होना .
धुव् (धू) धूजाना, हिलाना.
निज्झर् (क्षि) क्षय होना.
फास् / **फरिस्** } (स्पृश्- स्पर्श) स्पर्श करना, छूना.

10. **बव्** } (ब्रू) बोलना.	**जिण्** (जि) जीतना.
बुव् }	**थुण्** (स्तु) स्तुति करना.
रव (रु) शब्द करना, आवाज करना.	**धुण्** (धू) धुजाना, हिलाना.
वड्ढ् (वृध् - वर्ध्) बढ़ना.	**पुण्** (पू) पवित्र करना.
सुमर् } (स्मृ - स्मर्) स्मरण करना,	**लुण्** (लू) काटना.
सर् } संभारना.	**सुण्** (श्रु) सुनना.
हक्क् (नि + सिध्) निषेध करना.	**हुण्** (हु) होम करना.
11. **चिण्** (चि) इकट्ठा करना.	

5. आर्ष में बुव् धातु के बेमि, बेइ, बिंति, बुम इत्यादि रूप होते हैं ।
6. 'चि' आदि धातुओं को प्राकृत में पुरुषबोधक प्रत्ययों के पहले **'ण'** लगता है । (४/२४१) **उदा. चिणइ** (चिनोति) कुछ स्थानों में यह **'ण'** विकल्प से आता है । **उदा. जणइ, जिणई** (जयति)

हिन्दी में अनुवाद करें

1. आदरेइ	16. चिणए	31. हवइ
2. जम्मंति	17. थुणेइरे	32. बुज्झए
3. निज्झरए	18. पुणेइ	33. रक्खेन्ति
4. बविरे	19. सुणंति	34. लज्जन्ते
5. वड्ढिरे	20. बुवेइ	35. हणए
6. हक्कन्ते	21. कहेन्ति	36. तूसेइ
7. जिणेह	22. जाणन्ते	37. रुसन्ते
8. धुणन्ते	23. देक्खेइरे	38. थुणइ
9. सरित्था	24. पीडेइ	39. रोविमो
10. लुणिरे	25. बीहए	40. जिणसे
11. हुणन्ति	26. भणए	41. थुणित्था
12. धुणेइ	27. वसन्ते	42. बवेमि
13. फरिसिरे	28. इच्छन्ति	43. धुणेमो
14. रवेइ	29. करिरे	44. जिणेमो
15. सुमरेन्ति	30. चिंतह	

प्राकृत में अनुवाद करें

1. (वह) खरीदता है।
2. (वे) हिलाते हैं।
3. (वह) स्पर्श करता है।
4. (वे) शब्द करते हैं।
5. (वह) स्मरण करता है।
6. (वे) इकट्ठा करते हैं।
7. (वह) स्तुति करता है।
8. (वे) पवित्र करते हैं।
9. (वह) सुनता है।
10. (वे) आदर करते हैं।
11. (वह) उत्पन्न होता है।
12. (वे) क्षय होते हैं।
13. (वह) बोलता है।
14. (वह) बढ़ता है।
15. (वह) निषेध करता है।
16. (वे) जीतते हैं।
17. (वह) हिलाता है।
18. (वह) काँपता है।
19. (वह) खेलता है।
20. (वह) होम करता है।
21. (वह) जाता है।
22. (वह) खाता है।
23. (वह) नमस्कार करता है।
24. (वे) पूछते हैं।
25. (वे) पढ़ते हैं।
26. (वे) वन्दन करते हैं।
27. (वह) रोता है।
28. (वे) हँसते हैं।
29. (वे) काँपते हैं।
30. (वह) चरता है।
31. (वे) निन्दा करते हैं।
32. (वे) मोहित होते हैं।
33. (वह) पोषण करता है।
34. (वह) आवाज करता है।

पाठ - 4

सर्वनाम

उपयोगी युष्मद् इत्यादि सर्वनाम के तैयार रूप

(३/१-५, १०६, ९०, ९१, ८६, ५९)

	एकवचन		बहुवचन	
प्रथम पुरुष-	हं, अहं, (अहम्)	मैं	अम्ह, अम्हे, अम्हो (वयम्)	हम.
द्वितीय पुरुष-	तुं, तं, तुमं (त्वम्)	तू	तुब्भे, तुम्हे, तुज्झे (यूयम्)	तुम.
तृतीय पुरुष-	स, सो (सः)	वह	ते (ते)	वे.

1. वर्तमानकाल में **'अस्'** धातु का रूप सभी वचनों और सभी पुरुषों में ''**अत्थि**'' होता है ।
विशेष - **सि** प्रत्यय के साथ **'सि'** रूप सिद्ध होता है तथा मि, मो, म प्रत्ययों के साथ **म्हि, म्हो, म्ह** रूप होते हैं ।

2. अस् धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	म्हि, अत्थि	म्हो, म्ह, अत्थि
द्वि. पु.	सि, अत्थि	अत्थि
तृ. पु.	अत्थि	अत्थि

आर्ष प्राकृत में अस् धातु के रूप

	एकवचन.	बहुवचन
प्र. पु.	मि, अंसि	मो.
द्वि. पु.	सि.	ह.
तृ. पु.	अत्थि	संति

2. अस् धातु के संस्कृत तैयार रूपों में प्राकृत नियमानुसार परिवर्तन करके रूप बनते हैं, उदा. (३/१४६,१४७, १४८) उदा.

संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत
अस्मि	अम्हि	अस्ति	अत्थि
असि	असि	सन्ति	संति इत्यादि रूप बनते हैं ।

द्वि संख्यावाची शब्दों के उपयोगी तैयार रूप

प्र. द्वि. विभ. बहुवचन दुवे, दोण्णि, दुण्णि.
वेण्णि, विण्णि, दो , वे-बे. (द्वि- द्वौ) दो.

जाण् धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जाणमि,	जाणमो, जाणमु, जाणम
	जाणामि,	जाणामो, जाणामु, जाणाम
		जाणिमो, जाणिमु, जाणिम
	जाणेमि,	जाणेमो, जाणेमु, जाणेम
द्वितीय पुरुष	जाणसि,	जाणह, जाणित्था
	जाणेसि,	जाणेह, जाणेत्था
	जाणसे.	जाणइत्था
		जाणेइत्था
तृतीय पुरुष	जाणइ.	जाणन्ति, जाणन्ते, जाणिरे
	जाणेइ,	जाणेन्ति, जाणेन्ते, जाणेइरे
	जाणए.	जाणिन्ति, जाणिन्ते, जाणइरे, जाणेरे

धातु

अस् (अस्) होना.
अप्प् (अर्प्) अर्पण करना, भेंट देना.
अच्छ् (आस्) बैठना.
उज्झ् (उज्झ्) त्याग करना, छोड़ना.
कुप्प् (कुप्य्) कोप करना, क्रोध करना.
चय् (त्यज्) त्याग करना, छोड़ देना.
चिट्ठ्, **थक्क्** (स्था-तिष्ठ्) खड़ा रहना. स्थिर रहना.
चोप्पड् (म्रक्ष्) स्निग्ध करना, चुपड़ना, पोतना.
वोसिर् (वि+उत्+सृज्) त्याग करना, छोड़ना.
सन्नाम् (आ+दृ) आदर करना.
सलह्-सिलाह् (श्लाघ्) श्लाघा करना, प्रशंसा करना.
बंध् (बन्ध्) बाँधना, बन्धन करना
बाह् (बाध्) पीड़ा देना, दुःख देना.
भुल्ल्, **चुक्क्** (भ्रंश्) भ्रष्ट होना, भूल करना, गिरना, चूकना.
रंज् (रञ्ज्) रंगना, आसक्त होना.
वंच् (वञ्च्) ठगना, धोखा देना.
वच्च् (व्रज्) जाना.
वट्ट् (वृत्-वर्त्) वर्तन करना, होना.
वंछ् (वाञ्छ्) वांछा करना, इच्छा करना.
सह् (सह्) सहन करना.
साह् (कथ्) कहना.
साह् (साध्) साधना, सिद्ध करना.
सिव् (सिव्य्) सीना.

हिन्दी में अनुवाद करें

1. अहं वन्देमि ।
2. तुम्हे दोण्णि वड्ढित्था ।
3. ते कुप्पेन्ति ।
4. सो पडए ।
5. ते पिविरे ।
6. तुम्हे कहेइत्था ।
7. तुब्भे बीहेह ।
8. तुं भणेसि ।
9. स अप्पेइ ।
10. अम्हो अत्थि । [3]
11. अम्हे थक्किमु ।
12. स वट्टइ ।
13. हं वोसिरामि
14. ते नमिरे ।
15. अम्हे वन्दिमो ।
16. तुज्झे वन्देइत्था ।
17. तं वंछसे ।
18. सो इच्छइ ।
19. अम्हे बीहेमु ।
20. ते चरेन्ति ।
21. तं उज्झसे ।
22. ते दो किणेइरे ।
23. हं म्हि ।
24. ते दुण्णि रक्खंति ।
25. तुम्हे वे अत्थि ।
26. तुं सलहेसि ।
27. अम्हे अच्छामो ।
28. तुम्हे दु रुवेह ।
29. अम्हो फासामो ।
30. तुज्झे चुक्केइत्था ।
31. ते दो फासेइरे ।
32. हं चिट्ठेमि ।
33. अम्हे दुवे चयामो ।
34. ते तूसंति ।
35. अम्ह चिट्ठेमु ।
36. तुम्हे वंछेह ।
37. तुम्हे पूसेह ।
38. ते साहिन्ति ।
39. तुब्भे दुवे सहेइत्था

---

3. **'ए'** और **'ओ'** के बाद कोई भी स्वर आये तो सन्धि नहीं होती है ।
उदा. आलक्खिमो एण्हिं (आलक्ष्यामहे इदानीम्),
नहुल्लिहणे आबंधतीइ (नखोल्लेखने आबध्नन्त्याः) ।

प्राकृत में अनुवाद करें

1. तुम इच्छा करते हो ।
2. हम देखते हैं ।
3. वह सहन करता है ।
4. तुम सिद्ध करते हो ।
5. हम दो रक्षण करते हैं ।
6. तुम देते हो ।
7. हम त्याग करते हैं ।
8. तुम दोनों विचार करते हो ।
9. वे दो कहते हैं ।
10. तुम बैठते हो ।
11. तुम खड़े रहते हो ।
12. हम हँसते हैं ।
13. वे चुपड़ते हैं ।
14. मैं भोजन करता हूँ ।
15. तुम दो पीते हो ।
16. तुम नमस्कार करते हो ।
17. तू सीता है ।
18. हम दो हैं ।
19. मैं त्याग करता हूँ ।
20. वह देखता है ।
21. तू है ।
22. वे प्रशंसा करते हैं ।
23. तुम भटकते हो ।
24. वे रोष करते हैं ।
25. वे निन्दा करते हैं ।
26. तुम बोध पाते हो ।
27. तुम दोनों लड़ते हो ।
28. तुम दो हो ।
29. वह चुपड़ता है ।
30. हम भोजन करते हैं ।
31. तुम बाँधते हो ।
32. तुम क्षीण होते हो ।
33. वे दो काँपते हैं ।
34. तुम दुःख देते हो ।

पाठ - 5

स्वरान्त धातु

1. स्वरान्त धातुओं में पुरुषबोधक प्रत्यय लगाते समय प्रत्ययों के पहले **'अ'** प्रत्यय विकल्प से रखा जाता है । (४/२४०)

हो धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	होमि	होमो, होमु, होम.
द्वितीय पुरुष	होसि	होह, होइत्था.
तृतीय पुरुष	होइ	◆ होन्ति, होन्ते, होइरे.

'अ' प्रत्यय लगाने पर 'होअ' अंग के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	होअमि	होअमो, होअमु, होअम
	होआमि	होआमो, होआमु, होआम
	होएमि	होइमो, होइमु, होइम
		होएमो, होएमु, होएम
द्वितीय पुरुष	होअसि	होअह, होइत्था
	होएसि	होएह, होएत्था
	होअसे	होअइत्था
		होएइत्था
तृतीय पुरुष	होअइ	होअन्ति, होअन्ते, होइरे
	होएइ	होएन्ति, होएन्ते, होएइरे
	होअए	होइन्ति, होइन्ते, होअइरे

◆ टिप्पणी-पा. 3 नि. 4 नियम 1 में बताये अनुसार संयुक्त व्यंजन के पूर्व का स्वर ह्रस्व होता है तब **हो + न्ति** = हुन्ति, **जा+ न्ति** = जन्ति.

धातु

खा } (खाद्) खाना, भोजन करना.
खाय् }

गा (गै) गाना.

गिला (ग्लै) खिन्न होना, कुम्हलाना, मुरझाना.

जा (जन्) उत्पन्न होना.

जा (या) जाना, गमन करना.

झा (ध्यै) ध्यान करना.

ठा (स्था) खड़े रहना.

ण्हा (स्ना) स्नान करना.

2. दा (दा) दान देना, देना.

धा (धा) धारण करना.

भा (भा) प्रकाशित होना, चमकना.

पा (पा) पीना, पान करना.

मिला (म्लै) कुम्हलाना, मुरझाना. खिन्न होना.

हो (भू) होना.

3. जे (जि) जीतना

डे (डी) उड़ना

उड्डे (उड् + डी) उड़ना

ने (नी) ले जाना, रास्ता दिखाना

चव् (च्यु) गिरना, मरना, जन्मांतर में जाना.

ण्हव् (ह्नु) छुपाना.

सव् (सू) जन्म देना.

हव् (हु) होम करना.

जर् (जॄ) जीर्ण होना, बूढ़ा होना.

तर् (तॄ) तैरना.

धर् (धृ) धारणा करना.

वर् (वृ-वॄ) पसंद करना, चुनना.

सर् (सृ) सरकना, खिसकना, फिसलना.

हर् (हृ) हरण करना, हड़पना, ले जाना.

---

2. **दा** धातु में पुरुषबोधक प्रत्यय लगाते समय अन्त्य **आ** का किसी स्थान में ए होता है ।

   उदा. देइ, देन्ति, दिंति, देसि, देमि, देमु आदि रूप भी होते हैं।

3. संस्कृत में जिन धातुओं के अन्त में **इ, उ** या **ऋ** स्वर हो तो उन धातुओं के अन्त्य **इ** का **ए** और किसी स्थान में **अय्, उ** का **अव्** और **ऋ** का **अर्** होता है । (४/२३३, २३४, २३७) उदा.

इ का ए	उ का अव्	ऋ का अर्
ने (नी)	**ण्हव्** (ह्नु)	**कर्** (कृ)
डे (डी)	**चव्** (च्यु)	**धर्** (धृ)
जे } जि **जय्** }	**रव्** (रु)	**सर्** (सृ)

हिन्दी में अनुवाद करें–

1. अम्हे दोण्णि ठाएमो ।
2. अम्हो जेएमु ।
3. हं ठामि ।
4. अम्हे होएमो ।
5. अम्हे दुवे झामु ।
6. हं होमि ।
7. हं पामि ।
8. अहं झाएमि ।
9. सो होइ ।
10. तुम्हे दुण्णि झाएइत्था ।
11. ते ह्लोइरे ।
12. ते पान्ति ।
13. तुं झासि ।
14. हं ण्हाअमि ।
15. तुज्झे ठाएइत्था ।
16. तुम्हे विण्णि नेइत्था ।
17. तुं पाअसे ।
18. ते चवेइरे ।
19. हं जरेमि ।
20. अहं गामि ।
21. अम्हे वे ण्हाम ।
22. सो ण्हवेइ ।
23. अम्ह हवेमो ।
24. तुम्हे हरेह ।
25. स ण्हाएइ ।
26. हं जामि ।
27. अम्हे वरामो ।
28. अम्हे वे जाएमो ।
29. अम्हे दो गाइमु ।
30. ते सवेइरे ।

प्राकृत में अनुवाद करें

1. वे दो खड़े हैं ।
2. तुम जाते हो ।
3. वे दो गाते हैं ।
4. वे दो खिन्न होते हैं ।
5. वह खड़ा रहता है ।
6. वह जाता है ।
7. वह गाता है ।
8. मैं मुरझाता हूँ ।
9. वह ले जाता है ।
10. वे दो जाते हैं ।
11. हम दो पीते हैं ।
12. वे दो अपहरण करते हैं ।
13. तुम स्नान करते हो ।
14. तुम दो पीते हो ।
15. तुम खाते हो ।
16. वे देते हैं ।
17. हम दो धारण करते हैं ।
18. तुम दोनों देते हो ।
19. हम सब का च्यवन होता है ।
20. तुम दोनों खिसकते हो ।
21. तू होता है ।
22. तुम सब स्नान करते हो ।
23. हम कुम्हलाते हैं ।
24. वे ध्यान करते हैं ।
25. हम दो प्रकाशित होते हैं ।
26. तुम होते हो ।
27. तुम दो मुरझाते हो ।
28. तुम छिपाते हो ।
29. हम तैरते हैं ।
30. तुम सब गुस्सा करते हो ।
31. तुम उत्पन्न होते हो ।
32. वह चमकता है ।
33. मैं उत्पन्न होता हूँ ।

पाठ - 6

ज्ज - ज्जा प्रत्यय

1. वर्तमानकाल, भविष्यकाल और विध्यर्थ–आज्ञार्थ में धातुओं में सभी पुरुषबोधक प्रत्ययों के स्थान में **ज्ज** अथवा **ज्जा** विकल्प से रखा जाता है। (३/१७७)
2. ज्ज अथवा ज्जा प्रत्ययों के पहले **अ** हो तो अ के स्थान पर **ए** होता है। (३/१५९)

उदा. सर्वपुरुष और सर्ववचन में { **हस् + अ + ज्ज** = ◆ हसेज्ज, हसेज्जा. / **हो + ज्ज** = होज्ज, होज्जा.

अथवा हसइ, हसेन्ति आदि, होइ, होन्ति आदि

3. वर्तमानकाल, भविष्यकाल, विध्यर्थ और आज्ञार्थ में स्वरान्त धातुओं को पुरुषबोधक प्रत्यय लगाने के पहले **ज्ज** अथवा **ज्जा** विकल्प से लगता है। (३/१७८) **उदा. हो + इ** = होज्जइ, होज्जाइ.

होज्ज - होज्जा अंग के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	होज्जमि	होज्जमो, होज्जमु, होज्जम
	होज्जामि	होज्जामो, होज्जामु, होज्जाम
	होज्जेमि	होज्जिमो, होज्जिमु, होज्जिम
	होज्ज	होज्जेमो, होज्जेमु, होज्जेम
	होज्जा	होज्ज
		होज्जा.
द्वितीय पुरुष	होज्जसि	होज्जह, होज्जित्था
	होज्जासि	होज्जाह, होज्जेत्था
	होज्जेसि	होज्जेह, होज्जइत्था
	होज्जसे	होज्जेइत्था
		होज्जाइत्था
	होज्ज	होज्ज
	होज्जा	होज्जा

◆ पूर्वोक्त पा. 3 नि. 4 नियमानुसार ह्रस्व स्वर होता है तब हुज्ज, हुज्जा, हसिज्ज, हसिज्जा रूप भी होते हैं।

तृतीय पुरुष	होज्जइ होज्जाइ होज्जेइ होज्जए होज्ज, होज्जा	होज्जन्ति, होज्जन्ते, होज्जइरे. होज्जान्ति, होज्जान्ते, होज्जाइरे. होज्जेन्ति, होज्जेन्ते, होज्जेइरे. होज्जिन्ति, होज्जिन्ते, होज्जिरे, होज्ज, होज्जा

4. स्वरान्त धातुओं के पुरुषबोधक प्रत्ययों के पहले **'अ'** प्रत्यय लगाने पर बननेवाले रूप.

होअ + ज्ज = होएज्ज, **होअ + ज्जा** = होएज्जा.

5. **होएज्ज** ◆ और **होएज्जा अंग के रूप.**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	होएज्जमि होएज्जामि होएज्जेमि होएज्ज होएज्जा	होएज्जमो, होएज्जमु, होएज्जम, होएज्जामो, होएज्जामु, होएज्जाम, होएज्जिमो, होएज्जिमु, होएज्जिम, होएज्जेमो, होएज्जेमु, होएज्जेम, होएज्ज, होएज्जा.
द्वितीय पुरुष	होएज्जसि, होएज्जासि, होएज्जेसि, होएज्जसे, होएज्ज, होएज्जा	होएज्जह, होएज्जित्था, होएज्जाह, होएज्जेत्था, होएज्जेह, होएज्जइत्था, होएज्जेइत्था, होएज्जाइत्था. होएज्ज, होएज्जा.
तृतीय पुरुष	होएज्जइ, होएज्जाइ, होएज्जेइ, होएज्जए, होएज्ज, होएज्जा.	होएज्जन्ति, होएज्जन्ते, होएज्जइरे, होएज्जान्ति, होएज्जान्ते, होएज्जाइरे, होएज्जेन्ति, होएज्जेन्ते, होएज्जेइरे, होएज्जिन्ति, होएज्जिन्ते, होएज्जिरे, होएज्ज, होएज्जा.

◆ इन रूपों का उपयोग प्राकृत साहित्य में अतिअल्प स्थान में दिखाई देता है ।

जीव् धातु के रूप

सर्व पुरुष + सर्व वचन में – जीवेज्ज, जीवेज्जा

6. **ज्ज- ज्जा** न आए तब होमि, होअमि, होआमि, होएमि तथा जीवमि, जीवामि, जीवेमि आदि पूर्वोक्तानुसार रूप होते हैं।
7. शब्द की आदि में **त्य** का **च** और अन्दर हो तो **च्च** होता है लेकिन चैत्य शब्द में **त्य** का **च्च** नहीं होता है। (२/१३) उदा.

नच्चइ (नृत्यति)	**पच्चओ** (प्रत्ययः)
चयइ (त्यजति)	**सच्चं** (सत्यम्)
चाओ (त्यागः)	**चइत्तं** (चैत्यम्)

धातु

अच्च् (अर्च्) पूजा करना.
गरिह् (गर्ह्) निन्दा करना.
छज्ज्, **अग्घ**, **रेह्** (राज्) शोभा देना
जीव् (जीव्) जीना.
जुज्झ् (युध्- युध्य्) लड़ना.
डह् (दह्) जलना, जलाना.
तण्, **तड्ड्** (तन्) बिछाना, विस्तार करना.
मेल्ल्, **छड्ड्**, **मुय्** (मुच्- मुञ्च्) रखना, छोड़ना.
नस्स्, **नास्** (नश्- नश्य्) नष्ट होना.
नच्च् (नृत्-नृत्य्) नृत्य करना, नाचना.
सिंच् (सिञ्च्) छाँटना, सिंचन करना.
सोल्ल्, **पय्** (पच्) पकाना.
सिज्झ् (सिध्- सिध्य्) सिद्ध होना.
सड् (शद्) सड़ना, नष्ट होना.

हिन्दी में अनुवाद करें–

1. सो अच्छेज्ज।
2. स पिवेज्ज।
3. सो चुक्केज्जा।
4. तुं चिट्ठेज्जा।
5. अम्हे दो होज्जामो।
6. स बुज्झेज्जा।
7. अम्हे दुण्णि झाएज्जिमो।
8. ते दुवे नेएज्जेइरे।
9. तुम्हे नेएज्जाह।
10. अम्हे सोल्लेज्जा।
11. हं मिलाएज्जामि।
12. तुम्हे दो मिलाज्जइत्था।
13. तं गरिहेसि।
14. तुज्झे छड्डेज्जा।

15. सो पाएज्जइ ।
16. तुब्भे ठाज्ज ।
17. अम्हे बे मिलाज्जेमु ।
18. अहं करेज्जा ।
19. अहं ठाज्जेमि ।
20. सो पाज्जाइ ।
21. अम्हे जीवेज्ज ।
22. तुं जाएज्जसे ।
23. तुज्झे बे मिलाएज्जाइत्था ।
24. तुं गाज्जेसि ।
25. तुम्हे नच्चेज्जा ।
26. अहं छज्जेज्जा ।
27. ते नस्सेज्ज ।
28. तुज्झे पाएज्जाह ।
29. अम्हे सडेज्जा ।
30. तुम्हे दुवे डहेह ।

◆ प्राकृत में अनुवाद करें–

1. वे दो सिद्ध होते हैं ।
2. वह विस्तार करता है ।
3. हम पूजा करते हैं।
4. तुम दो छिड़कते हो ।
5. तुम उत्पन्न होते हो ।
6. वे खाते हैं ।
7. तुम खेद पाते हो।
8. तुम जीते हो ।
9. तुम दो युद्ध करते हो ।
10. तुम बोध पाते हो ।
11. तुम खड़े रहते हो ।
12. तुम सब ध्यान करते हो ।
13. मैं उत्पन्न होता हूँ ।
14. वह देता है ।
15. मैं चूक जाता हूँ ।
16. वह मुर्झाता है ।
17. तुम खड़े रहते हो ।
18. तुम चमकते हो ।
19. वे ले जाते हैं ।
20. तुम हड़पते हो ।
21. हम पीते हैं ।
22. वे गाते हैं ।
23. वह धारण करता है ।
24. तुम सब विचार करते हो ।
25. हम दो खिन्न होते हैं ।

◆ ये वाक्य ज्ज और ज्जा के प्रयोगसहित करें ।

स्वाध्याय

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो–

1. प्राकृत में स्वर और व्यंजन कितने हैं ?
2. ऋ, लृ, ऐ, औ इन स्वरों के विकार कैसे होते हैं ?
3. प्राकृत में विसर्ग का क्या होता है ?
4. 'ङ्' और 'ञ्' का प्रयोग कहाँ होता है ?
5. 'मि' और 'मो' प्रत्यय के पूर्व के 'अ' में क्या परिवर्तन होता है ?
6. 'से' और 'ए' प्रत्यय जिसको नहीं लगे वैसी कुछ धातुओं के रूप लिखें ।

7. निम्नलिखित रूप पहचानो–
जाणित्था, गच्छेन्ति, गच्छिंहिति, हसिरे, हुंति, हुज्ज, झंति, गच्छिज्ज, गच्छेज्जा ।
8. 'अस्' धातु के रूप बनाओ ।
9. व्यंजनान्त और स्वरान्त धातुओं के रूपों की विशेषता बताओ ।
10. पूर्व के स्वर का लोप कब होता है ? दृष्टांत सहित बताओ ।
11. 'ज्ज' और 'ज्जा' के पूर्व के 'अ' का क्या होता है ?
12. स्वरान्त और व्यंजनान्त धातुओं में 'ज्ज' और 'ज्जा' का उपयोग किस तरह होता है ? दृष्टान्त सहित बताओ ।
13. 'ने' और 'पुच्छ्' धातु के संपूर्ण रूप लिखें ।

उपसर्ग

नियम :

1. (अ) उ (उत् के अन्त्य व्यंजन का लोप होने पर) उपसर्ग + व्यंजन = व्यंजन द्वित्व Double होता है ।
उदा. उ + ठाइ = उट्ठाइ, **नि + झरेइ** = निज्झरेइ, **उ + धरइ** = उध्धरेइ, - उद्धरेइ ।
(ब) द्वित्व व्यंजन जो वर्ग का दूसरा अथवा चौथा अक्षर हो तो द्वित्व के प्रथम अक्षर का उसी वर्ग का (दूसरे का पहला और चौथे का तीसरा) अनुक्रम से रखा जाता है । (२/९०) उदा.
ख्ख = क्ख =, घ्घ = ग्घ, छ्छ = च्छ, झ्झ = ज्झ, ठ्ठ = ट्ठ (ट्ठ), ढ्ढ = ड्ढ, थ्थ = त्थ, ध्ध = द्ध, फ्फ = प्फ, भ्भ = ब्भ होता है ।
2. निर्, दुर् उपसर्ग के र् का विकल्प से लोप होता है, लोप न हो तब बादवाले व्यंजन का द्वित्व Double होता है और र् के बाद स्वर आये तो लोप नहीं होता है । (१/१३)
उदा. निर् + णेइ = निण्णेइ, **निर् + सहो** = निस्सहो, नीसहो, निसहो,
निर् + अंतर = निरंतरं, **दुर् + सहो** = दुस्सहो, दूसहो, दुसहो,
दुर् + उत्तरं = दुरुत्तरं, **दुर् + खिओ** = दुक्खिओ, दूहिओ. (दुःखितः)

उपसर्ग

उपसर्ग धातु के पहले रखे जाते है, वे (उपसर्ग) धातु के मूल अर्थ में परिवर्तन करके किसी स्थान में विशेष अर्थ, किसी स्थान में विपरीत अर्थ और किसी

स्थान में अलग अर्थ बताते हैं ।

1. अइ/अति-(अति) सीमा बाहर, अतिशय.

उदा. अइ + क्कम् = अइक्कमइ = वह सीमा के बाहर जाता है, वह उल्लंघन करता है ।

2. अहि/अधि-(अधि) ऊपर, अधिक, प्राप्त करना.

उदा. अहि + चिट्ठ = अहिचिट्ठइ = वह ऊपर बैठता है ।

अहि + गच्छ् = अहिगच्छइ = वह प्राप्त करता है ।

3. अणु (अनु) पीछे, समान, समीप ।

उदा. अणु + गच्छ् = अणुगच्छइ = वह पीछे जाता है ।

अणु + कर् = अणुकरइ = वह अनुकरण करता है ।

4. अभि/अहि-(अभि) सन्मुख, पास में.

उदा. अभि + गच्छ् = अभिगच्छइ = वह सन्मुख जाता है, वह पास में जाता है ।

5. अव/ओ-(अव) नीचे, तिरस्कार.

उदा. अव + यर् = अवयरइ, **ओ + यर्** = ओयरइ = वह नीचे उतरता है ।

अव + गण् = अवगणेइ = वह तिरस्कार करता है ।

6. आ-(आ) उल्टा, विपर्यय, मर्यादा.

उदा. आ + गच्छ् = आगच्छेइ = वह आता है ।

7. अव/अप/ओ-(अप) विपरीत, वापिस, उल्टा.

उदा. अव + क्कम् = अवक्कमइ, **ओ + क्कम्** = ओक्कमइ = वह वापस जाता है ।

अप + सर् = अपसरइ, **ओ + सर्** = ओसरइ = वह वापस हटता है ।

8. उ (उत्) ऊँचा, ऊपर.

उदा. उ + गच्छ् = उग्गच्छइ = वह ऊपर जाता है ।

उ + ठाइ = उट्ठाइ = वह उठता है ।

9. उव/ओ/उ-(उप) पास में, समीप.

उदा. उव + गच्छ् = उवगच्छइ, **ओ + गच्छ्** = ओगच्छइ,

उ + गच्छ् = उग्गच्छइ = वह समीप जाता है ।

10. नि/नु-(नि) अन्दर, नीचे.

उदा. नि + मज्ज् = निमज्जइ, **नु + मज्ज्** = नुमज्जइ = वह डूबता है ।

नि + वड् = निवडइ = वह नीचे गिरता है ।

11. परा/पला (परा) उल्टा, वापिस.

उदा. परा + जय् = पराजयइ = वह हारता है ।

परा + भव् = पराभवइ = वह पराभव करता है (हराता है) ।

पला + अय् = पलायइ = वह भागता है.

12. परि/पलि-(परि) चारों तरफ, विशेष, परिवर्तन होना.

उदा. परि + तूस् = परितूसइ = वह विशेष खुश होता है ।

परि + वट्ट् = परिवट्टइ = वह परिवर्तन करता है.

13. पडि/पति/परि/पइ-(प्रति) सामने, उल्टा.

उदा. पडि + भास् = पडिभासइ = वह सामने जवाब देता है ।

पइ + जाण् = पइजाणइ = वह प्रतिज्ञा करता है ।

14. प (प्र) आगे, प्रकर्ष.

उदा. प + या = पयाइ = वह आगे जाता है.

प + यास् = पयासेइ = वह विशेष चमकता है, प्रकाशित होता है ।

15. वि-(वि) विशेष, निषेध, विरोधार्थ.

उदा. वि + याण् = वियाणेइ = वह विशेष जानता है ।

वि + स्मर् = विस्सरइ/वीसरइ= वह भूलता है ।

वि + सिलिस् = विसिलिसइ = वह वियोग पाता है ।

16. सं- (सम्) अच्छी तरह.

उदा. सं + गच्छ् = संगच्छइ = वह अच्छी तरह मिलता है ।

17. निर्/नि/नी-(निर्) अवश्य,अधिकता, निषेध.

निर् + जिण् = निज्जिणेइ = वह अवश्य जीतता है ।

निर् + णे = निण्णेइ = वह अवश्य करता है ।

निर् + इक्ख् = निरिक्खेइ = वह निरीक्षण करता है, वह शोध करता है ।

18. दुर/दु/दू (दुर्) दुःख, दुष्टता अर्थ में

दुर् + लंघ् = दुल्लंघेइ = वह बड़ी मुश्किल से उल्लंघन करता है ।

दुर् + सह् = दुस्सहेइ / दूसहेइ = वह बड़ी मुश्किल से सहन करता है ।

दुर् + आयार = दुरायार= दुष्ट आचरण.

दुर् + आलोग = दुरालोग = बड़ी मुश्किल से दिखाई दे ऐसा ।

उपसर्गसहित उपयोगी धातु

अइ + चर् (अति + चर्) दोष लगाना, अतिचार लगाना.

अणु + जाण् (अनु + ज्ञा) आज्ञा देना.

अणु + सर् (अनु + सृ) अनुसरण करना

अहि + ज्ज् (अधि + इ) पढ़ना.

नि + ण्हव् (नि + ह्नु) छिपाना.

प + आव् = पाव् (प्र + आप्) प्राप्त करना.

प + विश् (प्र + विश्) प्रवेश करना.

प + हर् (प्र + हृ) प्रहार करना, मारना.

परा + वट्ट (परा + वर्त्) परिवर्तन होना, आवृत्ति करना.

परि + हर् (परि + हृ) त्याग करना.

वा + हर् (वि + आ + हृ) बोलना, बुलाना.

वि + उव्व् (वि + कृ) बनाना.

अहि + लस् (अभि + लस्) अभिलाषा करना, इच्छा करना.

आ + गच्छ् (आ + गम्-गच्छ्) आना.

आ + हर् (आ + हृ) आहार करना.

उ + ड्डे (उद् + डी) उड़ना.

वि + यस् (वि + कस्) विकास करना.

वि + लव् (वि + लप्) विलाप करना, रोना.

वि + लस् (वि + लस्) विलास करना, मौज करना.

वि + हर् (वि + हृ) विहार करना, आनंद करना.

सं + गच्छ् (सं + गम्-गच्छ्) मिलना, प्राप्त करना.

सं + हर् (सं + हृ) संहार करना.

हिन्दी में अनुवाद करें–

1. अम्हे विण्णि अहिलसेज्जा ।
2. सो निण्हवेइ ।
3. ते दो वाहरेज्ज ।
4. हं पविसेज्जा ।
5. अम्हे परावट्टिमो ।
6. तुज्झे वेण्णि अइयरेह ।
7. तुं अणुजाणेसि ।
8. तुम्हे दुण्णि निगच्छेइत्था ।
9. तुम्हे दोण्णि विलसेह ।
10. ते परावट्टिरे ।
11. ते विउव्वेन्ति ।
12. हं पावेज्ज ।
13. ते बे वियसेज्ज ।
14. तुज्झे अणुसरेह ।

प्राकृत में अनुवाद करें–

1. हम आनन्द करते हैं ।
2. तुम मिलते हो ।
3. तुम दो बुलाते हो ।
4. तुम प्रवेश करते हो ।
5. तू अभ्यास करता है ।
6. हम बनाते हैं।
7. वह आवृत्ति करता है ।
8. वे दो आज्ञा करते हैं ।
9. तुम प्राप्त करते हो ।
10. तुम छिपाते हो ।
11. वे दो अतिचार लगाते हैं ।
12. तुम अभिलाषा करते हो ।
13. वे आते हैं ।
14. तू निकलता है ।
15. तुम अनुसरण करते हो ।
16. हम दो आज्ञा करते हैं ।
17. हम मिलते हैं ।

पाठ - 7

अकारान्त नाम

पढमा और बीया विभक्ति प्रत्यय

(३/२, ४, ५, १२, १४, २५, २६)

पुंलिंग	एकवचन	बहुवचन
पढमा	ओ (ए)[2]	आ
बीया	म्	आ, ए
नपुंसकलिंग पढमा / बीया	म्	इं, इँ, णि (इ)

टिप्पणी :

1. प्राकृत भाषा में आठ विभक्तियों के लिए पढमा (प्रथमा), बीया (द्वितीया), तइया (तृतीया), चउत्थी (चतुर्थी), पंचमी (पञ्चमी), छट्ठी (षष्ठी), सत्तमी (सप्तमी) और संबोहण (संबोधन) इन शब्दों का प्रयोग होता है ।
2. अ कारांत पुंलिंग प्रथमा विभक्ति का **ए** प्रत्यय तथा दूसरे भी ऐसे कौंस में दिये हुए प्रत्ययों का आर्ष में ही प्रयोग होता है। उदा. समणे भयवं महावीरे (श्रमण भगवान महावीर)

नियम

1. अकारांत पुंलिंग में पंचमी विभक्ति सिवाय के स्वरादि प्रत्यय लगाने पर पूर्व के स्वर का लोप होता है । **उदा. जिण + ओ** = जिणो ।
2. (अ) पदान्तं में म् हो तो सभी जगह पूर्व के अक्षर पर अनुस्वार रखा जाता है । **उदा. जिणम्** = जिणं ।

   (ब) पदान्त म् के बाद स्वर हो तो पूर्व के अक्षर पर विकल्प से अनुस्वार रखा जाता है, जब अनुस्वार न हो तब म् बाद में रहे स्वर मे मिल जाता है । (१/२३, २४) **उदा. जिणम् + अजियं** = जिणं अजियं/जिणमजियं ।

   उसभं अजियं च वंदे = उसभमजियं च वंदे ।
3. नपुंसकलिंग मे **इं, इँ** और **णि** प्रत्यय लगाने से उसके पूर्व का स्वर दीर्घ होता है । (३/२६) **उदा. फल + इं** = फलाइं/फलाइँ/फलाणि ।

4. (अ). शब्द में स्वर के बाद असंयुक्त ``क-ग-च-ज-त-द-प-य अथवा व'' व्यंजन हो तो प्राकृत में इन व्यंजनों का लोप होता है ।

उदा. क-लोओ (लोकः)	**ज, त-रययं** (रजतम्)	**प-रिऊ** (रिपुः)
ग-नओ (नगः)	**त-जई** (यतिः)	**य-विओगो** (वियोगः)
च-सई (शची)	**द-गया** (गदा)	**व-लावण्णं** (लावण्यम्)

(ब). अ वर्ण के बाद **'प'** हो तो **प** का **व** होता है । **उदा. पावो** (पापः)

(क). अ वर्ण के बाद **अ** वर्ण हो तो **अ** का प्रायः **य** होता है ।

(१/१७७, १८०)

उदा. जणय (जनक) [जनक के क का लोप होकर उसके स्थान पर अ आने से अ का य हुआ]

अपवाद :- किसी स्थान में **क** का **ग** भी होता है ।

उदा. लोगो (लोकः), **सावगो** (श्रावकः)

5. व्यंजनसहित स्वर में से व्यंजन का लोप होने से शेष स्वर की पूर्वस्वर के साथ संधि नहीं होती है । (१/८)

उदा. निसाअरो (निशाचरः) **रयणिअरो** (रजनिचरः)

पयावई (प्रजापतिः)

अपवाद – किसी किसी स्थान में विकल्प से संधि होती है ।

उदा. कुंभआरो-कुंभारो (कुम्भकारः), **कविईसरो-कवीसरो** (कवीश्वरः), **सुउरिसो-सूरिसो** (सुपुरुषः), **लोहआरो, लोहारो** (लोहकारः) ।

6. शब्द में असंयुक्त **'न'** का **ण** होता है तथा आदि में **न** हो तो विकल्प से **ण** होता है । (१/२२८, २२९)

उदा. दाणं (दानम्), **धणं** (धनम्)

नाणं / **णाणं** } (ज्ञानम्)	**नरो** / **णरो** } (नरः)

7. नेत्त शब्द और उसके अर्थवाले शब्दों का पुंलिंग में भी विकल्प से प्रयोग होता है । (१/३३) उदा. नेत्ता-नेत्ताइं, नयणा-नयणाइं ।

8. प्राकृत में अन्त्य व्यंजन का लोप होता है– (१/११)

उदा. ताव (तावत्)	**जसो** (यशस्)
जाव (यावत्)	**तमो** (तमस्)
अप्प (आत्मन्)	**जय** } (जगत्)
कम्म (कर्मन्)	**जग** }

9. शब्द की आदि में **य** हो तो **ज** होता है तथा उपसर्ग के बाद **य** हो तो किसी स्थान में **ज** होता है– (१/२२४)

उदा. जसो (यशस्)	**संजमो** (संयमः)
जमो (यमः)	**संजोगो** (संयोगः)
जाइ (याति)	**अवजसो** (अपयशः)

10. (अ). जो शब्द अलग करने हों, उन प्रत्येक शब्द के अन्त में अथवा सभी शब्दों के अन्त में **च** अव्यय का प्रयोग होता है । उदा. फलं च पुप्फं च वत्थं च गिण्हइ अथवा फलं पुप्फं वत्थं च गिण्हइ ।

(ब). प्रायः अनुस्वार के बाद **च** का और स्वर के बाद **च** के स्थान पर **य-अ** का प्रयोग होता है ।

11. वृषादि धातुओं के **ऋ** का **अरि** होता है। (४/२३५) **उदा. वरिसइ** (वर्षति)

12. **य** वर्ण के पूर्व अथवा पश्चात् **अ** अथवा **आ** को छोड़कर कोई भी स्वर हो तो **य** वर्ण के स्थान में प्रायः **अ** होता है । (१/१८०)

उदा. आयरिय + ओ = आयरिओ, **(आचार्यः)**	**मय** - मओ, **(मदः)**
जणय - जणओ, **(जनकः)**	**भारिया**-भारिआ । **(भार्या)**

13. **इ** इत्यादि पुरुषबोधक प्रत्यय के बाद **स्वर** आये तो संधि नहीं होती है। (१/९) **उदा. होइ इह** (भवति इह) ।

जिण (जिन)

पुंलिंग	एकवचन	बहुवचन
प.	जिणो, जिणे	जिणा.
बी.	जिणं	जिणा, जिणे.
नपुंसकलिंग	**नाण** (ज्ञान)	
प. } बी. }	नाणं	नाणाइं, नाणाइँ, नाणाणि.

शब्दार्थ (पुंलिंग)

आइरिय / **आयरिय** } (आचार्य) आचार्य.

आयव (आतप) धूप.

आस (अश्व) घोड़ा.

उवज्झाय / **ऊज्झाय** / **ओज्झाय** } (उपाध्याय) उपाध्याय.

चोर (चौर) चोर.

जण (जन) जन, मनुष्य.

जणय (जनक) पिता.

जिण (जिन) रागद्वेषरहित, जिन, भगवान.
मय (मद) अभिमान, मद.
माहण / **बम्हण** (ब्राह्मण) ब्राह्मण.
मुक्ख / **मुरुक्ख** (मूर्ख) मूर्ख, अज्ञानी.
मोर (मयूर) मयूर.
रह (रथ) रथ.
तव (तपस्) तप.
तित्थयर (तीर्थंकर) तीर्थंकर.
देव (देव) देव.
दीव (दीप) दीपक.
पायव (पादप) वृक्ष.
पाव (पाप) पापी.
पुत्त (पुत्र) पुत्र.
पुरिस (पुरुष) पुरुष.
बाल (बाल) बालक, लड़का.
बुह (बुध) पण्डित.
मयण (मदन) कामदेव.
राम (राम) विशेषनाम.
वच्छ (वत्स) बालक, बछड़ा.
वच्छ (वृक्ष) वृक्ष, पौधा.
विओग (वियोग) वियोग, विरह.
समण (श्रमण) साधु, श्रमण.
सीस (शिष्य) शिष्य.

(नपुंसकलिंग)

अब्भ (अभ्र) मेघ, बादल.
कमल (कमल) कमल.
कल्लाण (कल्याण) कल्याण.
घर (गृह) घर.
जल (जल) जल, पानी.
जिणबिंब (जिनबिम्ब) जिनेश्वर की प्रतिमा.
नयर (नगर) नगर.
नाण (ज्ञान) ज्ञान.
दाण (दान) दान.
नच्च (नृत्य) नृत्य.
नट्ट (नाट्य) नाच.
नेत्र (नेत्र) आँख, नेत्र.
पण्ण (पर्ण) पत्ता.
पवयण (प्रवचन) आगम, सूत्र
पुत्थय / **पोत्थय** (पुस्तक) पुस्तक.
फुल्ल (फुल्ल) फूल.
भूसण (भूषण) आभूषण, गहना.
मुह (मुख) मुख.
रयय (रजत) चांदी.
वत्थ (वस्त्र) कपड़ा.
सिव (शिव) कल्याण, मंगल, मोक्ष.
सुह (सुख) सुख.
सुत्त (सूत्र) सूत्र, शास्त्र

सर्वनाम

त (तत्) वह.
ज (यत्) जो
क (किम्) कौन.
एअ-एत (एतत्) यह.
इम (इदम्) यह.
सव्व (सर्व) सर्व, सब, सभी
अन्न (अन्य) अन्य, दूसरा.

14. त और एअ का पुंलिंग प्रथमा एकवचन अनुक्रम से **स, सो** और **एस-एसो** रूप होता है ।
15. सभी सर्वनामों का प्रथमा बहुवचन **ए** प्रत्यय लगाने से होता है । उदा. सव्वे, के, एए इत्यादि.
16. **क** शब्द का नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन और द्वितीया एकवचन **'किं'** रूप होता है ।

शेष सभी अकारांत सर्वनामों के पुंलिंग और नपुंसकलिंग रूप अकारांत पुंलिंग और नपुंसकलिंग के समान ही होते हैं ।

कुछ रूपों में विशेषता है वह आगे (पाठ.24 में) बतायेंगे ।

अव्यय

अज्ज (अद्य) आज.	**च, य, अ,** (च) और
वि, पि (अपि) लेकिन.	**न** (न) नहीं.

17. अव्यय- सर्वलिंग, सर्ववचन और सर्वविभक्ति में समान होते हैं ।

धातु

वरिस् (वृष्) बरसना.	**उव + दिस्** (उप + दिश्) = उपदेश देना.
करिस् (कृष्) खेड़ना, खींचना, आकर्षण करना.	**गिण्ह्** (ग्रह्) ग्रहण करना.
दरिस् (दृश्) देखना.	**नमंस्** (नमस्य) नमस्कार करना.
धरिस् (धृष्) सामना करना.	**प-मज्ज्** (प्र + मृज्) साफ करना, संमार्जना करना.
मरिस् (मृश्) सोचना	**प-यास्** (प्र + काश्) प्रकाश देना.
मरिस् (मृष्) सहन करना.	**लह्** = (लभ्) पाना
हरिस् (हृष्) खुश होना.	

हिन्दी में अनुवाद करें–

1. देवा वि तं नमंसंति ।
2. मुरुक्खो बुहं निंदइ ।
3. देवा तित्थयरं जाणिन्ति ।
4. समणे नयरं विहरेइ ।
5. आयरिओ सीसे उवदिसइ ।
6. सो तं धरिसेइ ।
7. अब्भं वरिसेइ ।
8. मोरो नट्टं कुणेइ ।
9. पुरिसा जिणे वंदेइरे ।
10. दाणं तवो य भूषणम् ।

11. तुम्हे पवयणं किं जाणेह ?
12. घरं धणं रक्खेइ ।
13. सव्वो जणो कल्लाणमिच्छइ ।
14. रामो सिवं लहेइ ।
15. पावा सुहं न पावेन्ति ।
16. मयणो जणं बाहए ।
17. पुत्ता फुल्लाणि चिणंति ।
18. मुक्खो वत्थाइँ उज्झेइ ।
19. पण्णाइं पडेइरे ।
20. एसो मुहं पमज्जेइ ।
21. पयासेइ आइरिओ ।
22. धणं चोरेइ चोरो ।
23. आयवो जणे पीडेइ ।
24. देवा अब्भं विउव्विरे, जलं च सिंचेन्ति ।
25. रामो पण्णाइं डहेइ ।
26. स पोत्थयं गिण्हेइ, अहं च भूसणं गिण्हेमि ।
27. अहं पावं निंदेमि ।
28. रहो चलेइ ।
29. अम्हे नाणं इच्छामो ।
30. अम्हे वत्थाणि पमज्जेमो ।
31. जाइं जिणबिंबाइं ताइं सव्वाइं वंदामि ।

प्राकृत में अनुवाद करें–

1. मूर्ख लोग मोहित होते हैं ।
2. ज्ञान प्रकाशित होता है ।
3. कमल शोभा देता है ।
4. दो नेत्र देखते हैं ।
5. शिष्य ज्ञान पढ़ते हैं ।
6. दो वृक्ष गिरते हैं ।
7. घोड़े जल पीते हैं ।
8. देव तीर्थंकरों को नमस्कार करते हैं ।
9. राम पुस्तक का स्पर्श करता है ।
10. दो बालक आभूषण ले जाते हैं ।
11. उपाध्याय ज्ञान का उपदेश देते हैं ।
12. धन बढ़ता है ।
13. पंडित पुस्तकों को चाहते हैं और मूर्ख धन की इच्छा करते हैं।
14. वह सिद्ध होता है ।
15. पंडित मोक्ष प्राप्त करता है ।
16. मूर्ख लज्जित नहीं होते हैं ।
17. वियोग मनुष्य को दुःख देता है ।
18. साधु तप करते हैं ।
19. बालक वस्त्र को खींचता हैं ।
20. हम सूत्र का विचार करते हैं ।
21. पुत्र पिता को नमस्कार करते हैं ।
22. पानी सूखता है ।
23. बालक पानी पीता है ।
24. राम पापी को मारता है ।
25. पंडित रक्षण करते हैं ।
26. बालक डरते हैं ।
27. अभिमान लोगों को पीड़ा देता है ।

पाठ - 8

अकारान्त नाम

तइया और चउत्थी विभक्ति प्रत्यय

(१/६, ७, १३१, १३२)

पुंलिंग	एकवचन	बहुवचन
तइया	ण, णं	हि, हिँ, हिं
चउत्थी	◆य, (आए)	0

नपुंसकलिंग :- अकारान्त नपुंसक नामों के रूप प्रथम दो विभक्ति को छोड़कर शेष सभी विभक्तियों में अकारान्त पुंलिंग नामों के समान ही होते हैं ।

1. तृतीया एकवचन और बहुवचन तथा सप्तमी बहुवचन के प्रत्यय लगाने पर पहले के **अ** का **ए** होता है । (३/१४, १५)

   उदा. जिण + ण = जिणेण, जिणेणं.

   जिण + हि = जिणेहि, जिणेहिँ, जिणेहिं.

2. चतुर्थी एकवचन का **य** प्रत्यय लगाने पर पूर्व **अ** दीर्घ होता है ।

   उदा. जिण + य = जिणाय.

जिण (जिन)

पुंलिंग	एकवचन	बहुवचन
तइया	जिणेण, जिणेणं	जिणेहि, जिणेहिँ, जिणेहिं.
चउत्थी	जिणाय, जिणाए	

◆ चतुर्थी एकवचन में **य** प्रत्यय तादर्थ्य (उसके लिए.) अर्थ में विकल्प से लगता है । उस अर्थ को छोड़ एकवचन और बहुवचन में षष्ठी विभक्ति के प्रत्यय लगाये जाते हैं । [प्राकृत में चतुर्थी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति होती है ।]

नाण (ज्ञान)

नपुंसकलिंग	एकवचन	बहुवचन
तइया	नाणेणं, नाणेण,	नाणेहि, नाणेहिँ, नाणेहिं,
चउत्थी	नाणाय, नाणाए	

3. वह (वध) शब्द से चतुर्थी एकवचन में **'आइ आए'** प्रत्यय विकल्प से लगता है । उदा. वहाइ, वहाए, वहाय.

4. शब्द के अन्दर स्वर के बाद असंयुक्त **ख-घ-थ-ध** और **भ** का **ह** होता है तथा **ट** का **ड, ठ** का **ढ, ड** का **ल, प** का **व, फ** का **भ, ह** और **ब** का **व** प्रायः होता है तथा **श-ष** का स होता है ।

उदा. ख - मुहं (मुखम्)	**ड - गरुलो** (गरुडः)
घ - मेहो (मेघः)	**प - उवमा** (उपमा)
थ - नाहो (नाथः)	**फ - सभरी- सहरी** (शफरी)
ध - साहू (साधुः)	**ब - सवलो** (शबलः)
भ - सहा (सभा)	**श** } **सेसो** (शेषः)
ट - घडो (घटः)	**ष** } **विसेसो** (विशेषः)
ठ - मढो (मठः)	
धातु में - कह् (कथ्)	**अड्** (अट्)
बोह् (बोध्)	**लह्** (लभ्)
सोह् (शोभ्)	**खिव्** (क्षिप्)
पील् (पीड्)	

5. शब्द के अंदर रहे **न्म** का **म्म** नित्य और **ग्म** का **म्म** विकल्प से होता है । (२/६१, ६२)

उदा. जम्मो (जन्मन्)	**जुम्मं** } (युग्मम्)	**तिम्मं** } (तिग्मम्)
वम्महो (मन्मथः)	**जुग्गं** }	**तिग्गं** }

6. शब्द के अन्दर रहे अनुस्वार के बाद वर्गीय व्यंजन हो तो अनुस्वार का उस वर्ग का अनुनासिक विकल्प से होता है । (१/३०)

उदा. ङ् - अंगारो - अङ्गारो (अङ्गारः)	ण् - दंडो - दण्डो (दण्डः)
ङ् - संघो - सङ्घो (सङ्घः)	न् - चंदो - चन्दो (चन्द्रः)
ङ् - संखो - सङ्खो (शङ्खः)	म् - कंपइ - कम्पइ (कम्पते)
ञ् - कंचुओ - कञ्चुओ (कञ्चुकः)	म् - बंभणो - बम्भणो (ब्राह्मणः)

7. शब्द के अन्दर रहे **स्प** और **ष्प** का **प्फ** होता है तथा प्रारंभ में **फ** होता है । (२/५३)

उदा. ष्प - पुप्फं (पुष्पम्)	**स्प - फासो** (स्पर्शः)
ष्प - निप्फावो (निष्पापः)	**स्प - फंदणं** (स्पन्दनम्)
स्प - बिहप्फइ (बृहस्पतिः)	**स्प - फद्धा** (स्पर्धा)

8. निषेध बताने हेतु व्यंजनादि शब्द के आरंभ में **अ** और स्वरादि शब्द के आरंभ में **अण** रखा जाता है।

उदा. न लोगो = अलोगो (अलोकः), **न आयारो** = अणायारो (अनाचारः)

न सच्चं = असच्चं (असत्यम्) **न एगो** = अणेगो (अनेकः)

शब्दार्थ (पुंलिंग)

अवमाण (अपमान) अपमान, तिरस्कार.

अलोग (अलोक) अलोक, निर्जन.

आयार (आचार) आचार.

उज्जम (उद्यम) उद्यम, मेहनत.

उवएस (उपदेश) उपदेश.

कुढार (कुठार) कुल्हाड़ा

कोह (क्रोध) क्रोध, गुस्सा.

चंद (चन्द्र) चन्द्र.

जिणेसर / **जिणीसर** (जिनेश्वर) जिनेश्वर.

जम्म (जन्मन्) जन्म.

देह पुं. नपुं. (देह) शरीर, देह

धम्म (धर्म) धर्म, फर्ज.

नाय (न्याय) न्याय, नीति.

नरिंद / **नरिन्द** (नरेन्द्र) राजा.

निरय / **नरय** (नरक) नारकी, नरक

बहिर (बधिर)

बंभण (ब्राह्मण) ब्राह्मण.

भाव (भाव) भाव.

मणोरह (मनोरथ) मनोरथ.

महिवाल (महिपाल) राजा.

मिग / **मअ** (मृग) हरिण.

मुहर (मुखर) वाचाल.

मुक्ख / **मोक्ख** (मोक्ष) मोक्ष.

मेह (मेघ) बादल.

रोस (रोष) क्रोध.

लोग (लोक) लोक.

वह (वध) वध.

वम्मह (मन्मथ) कामदेव.

वाह (व्याध) शिकारी.

विणय (विनय) विनय, विवेक.

वीयराग (वीतराग) रागरहित.

वीर (सम) वीर, पराक्रमी.

संघ (सङ्घ) संघ, समुदाय, श्रमणादि चतुर्विध संघ.

सज्जण (सज्जन) अच्छा व्यक्ति.

सढ (शठ), कपटी.

सयायार (सदाचार) उत्तम आचार, पवित्र आचरण.

सहाव (स्वभाव) स्वभाव, प्रकृति.

सर (शर) बाण.

सग्ग (स्वर्ग) देवलोक, स्वर्ग.

सावग (श्रावक) श्रावक.

सिद्ध (सिद्ध) सिद्ध भगवान, सिद्ध पुरुष.

हत्थ (हस्त) हाथ.

नपुंसकलिंग

ओसढ (औषध) औषध, दवा.	**दुरिय** (दुरित) पाप.
कज्ज (कार्य) काम, कार्य.	**पंकअ** (पङ्कज) कमल.
कट्ठ (काष्ट) लकड़ी.	**पाव** (पाप) पाप.
गयण (गगन) आकाश.	**पुण्ण** (पुण्य) पुण्य, धर्म, पवित्र.
तत्त (तत्त्व) रहस्य, परमार्थ.	**पुप्फ** (पुष्प) फूल.
तलाय (तडाग) तालाब, जलाशय.	**वक्क** (वाक्य) वाक्य.
तित्थ / **तूह** (तीर्थ) तीर्थ, पवित्र स्थान.	**रज्ज** (राज्य) राज्य.
थोत्त (स्तोत्र) स्तोत्र.	**सत्थ** (शास्त्र) आगम.
दुक्ख / **दुह** (दुःख) दुःख.	**सत्थ** (शस्त्र) शस्त्र.
	सील (शील) शील, उत्तम आचरण.

विशेषण

अप्पकेर (आत्मीय) अपना.	**सहल** / **सभल** (सफल) सफल, फलवान.
अणेग (अनेक) एक से ज्यादा.	**फरुष** (परुष) कठिन, कर्कश.
एग - एअ / **एक - एक्क** (एक) एक.	**रहिअ** (रहित) रहित, वर्जित.
परम (सम) उत्कृष्ट, श्रेष्ठ	

9. विशेषण को विशेष्य के ही जाति, वचन और विभक्ति लगते हैं।

अव्यय

अपि - अवि (अपि) लेकिन, भी.	**विणा** (विना) सिवाय, रहित, छोड़कर.
अहि (अभि) ओर, पास में.	**सव्वत्थ** / **सव्वहि** / **सव्वह** (सर्वत्र) सब जगह.
कया (कदा) कब.	**सह** (सम) सहित.
णाइं / **अण** (न) नहीं.	**सद्धिं** (सार्द्धम्) सहित.
पइ (प्रति) तरफ, पास में.	

10. **अपि** या **अवि** अव्यय किसी भी पद के पश्चात् हो तो उसके प्रारंभ के अ का विकल्प से लोप होता है। (१/४१)

उदा. तं अपि - तंपि (तदपि).
किं अपि - किंपि (किमपि)

केणवि / **केण अवि** केनापि.

जब लोप न हो तब विकल्प से संधि होती है-

तमवि (तदपि)	**केणावि** (केनापि)
किमवि (किमपि)	**देवा अवि - देवावि** (देवा अपि).

11. **विणा** अव्यय के योग में दूसरी, तीसरी और पाँचवीं विभक्ति रखी जाती है । **सह** अव्यय और उस अर्थवाले दूसरे अव्यय जिस नाम के साथ जुड़ते हैं, वह नाम तीसरी विभक्ति में रखा जाता है ।
उदा. धम्मं विणा सुहं न लहेज्ज ।
नाणेण सह समणा सोहंते ।

12. जिस अव्यय के अन्त में **त्र** हो तो उसके बदले **हि-ह-त्थ** होता है । (२/१६१)
उदा. जहि, जह, जत्थ (यत्र) **कहि, कह, कत्थ** (कुत्र)
तहि, तह, तत्थ (तत्र) **अन्नहि, अन्नह, अन्नत्थ** (अन्यत्र)

धातु

अड्, **अट्** (अट्) भटकना,	**छिंद्** (छिन्द्) छेदना.
अग्घ (अर्घ) किंमत करना, आदर करना.	**पीण्** (प्रीण्) खुश करना.
पेक्ख्, **पिक्ख्** (प्र + ईक्ष्) देखना.	**धाव्**, **धाय्**, **धा** (धाव्) दौड़ना.
खिव् (क्षिप्) फेंकना.	**लह्** (लभ्) प्राप्त करना.
जय् (यत्) यत्न करना.	**सोह्** (शोभ्) शोभा देना.

हिन्दी में अनुवाद करें–

1. जो एगं जाणेइ सो सव्वं जाणइ । 2. जो सव्वं जाणए सो एगं जाणेइ ।
3. बुहा बुहे पिक्खन्ति किं मुरुक्खो ? 4. णाइं करेमि रोसं।
5. धणं दाणेण सहलं होइ । 6. समणा मोक्खाय जएन्ते ।
7. बहिरो किमवि न सुणेइ । 8. समणा नाणेण तवेण सीलेण य छज्जन्ते ।
9. सावगो अज्ज पंकएहिं जिणे अच्चेज्ज ।
10. जणो कुढारेण कट्ठाइं छिंदइ । 11. पावो वहाइ जणं धाएइ ।
12. आयरिआ सीसेहिं सह विहरेइरे ।
13. उज्जमेण सिज्झंति कज्जाणि न मणोरहेहिं ।
14. रोगा ओसढेण नस्संते ।

15. सीसा आइरिए विणएण वंदिरे ।
16. सज्जणा कयाइ अप्पकेरं सहावं न छड्डिरे ।
17. वाहो मिगे सरेहिं पहरेइ । 18. सीलेण सोहए देहो, न वि भूसणेहिं ।
19. धणेण रहिओ जणो सव्वत्थ अवमाणं पावेज्ज ।
20. बुहो फरुसेहिं वक्केहिं कंपि न पीलेइ । 21. भावेण सव्वे सिद्धे नमिमो ।
22. वीयराग नाणेण लोगमलोगं च मुणेइरे । 23. संघो तित्थं अडइ ।
24. आयारो परमो धम्मो, आयारो परमो तवो ।
आयारो परमं नाणं, आयारेण न होइ किं? ॥

प्राकृत में अनुवाद करें–

1. काम व्यक्ति को दुःख देता है ।
2. चन्द्र से आकाश शोभा देता है ।
3. जन्म से ब्राह्मण नहीं होता है, लेकिन आचरण से होता है ।
4. लोभ व्यक्ति को परेशान (हैरान) करता है ।
5. राजा नीतिपूर्वक राज्य करते हैं ।
6. पाप से मनुष्य नरक में जाता है और धर्म से स्वर्ग में जाता है ।
7. मयूर बादल से खुश होते हैं ।
8. तुम दोनों नृत्य के साथ गाते हो।
9. (दो) हाथों से तुम पुष्प ग्रहण करते हो।
10. साधु ज्ञान बिना सुख प्राप्त नहीं करते हैं ।
11. हम स्तोत्रों से जिनेश्वर की स्तुति करते हैं ।
12. कपटी सज्जनों की निन्दा करता है ।
13. उपाध्याय सूत्रों का उपदेश देते हैं ।
14. मूर्ख दीपक से वस्त्र जलाते हैं ।
15. हम पुष्पों द्वारा जिनबिम्ब की पूजा करते हैं ।
16. मनुष्य धर्म द्वारा सर्वत्र सुख प्राप्त करता है ।
17. पण्डित भी मूर्खों को खुश नहीं कर सकता है ।
18. साधु काम, क्रोध और लोभ को जीतते हैं ।
19. वीर शस्त्रों को फेंकता है ।
20. हम दो संघ के साथ तीर्थ की ओर जा रहे हैं ।
21. वाचाल मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता है ।
22. *जो तत्त्व को जानता है वह पण्डित है ।*

पाठ - 9

अकारान्त नाम

पंचमी और छठी विभक्ति प्रत्यय (३/८, ९, १०, ६)

पुंलिंग	एकवचन	बहुवचन
पंचमी	त्तो, ओ, उ, ◆ (तो-तु), हि, हिन्तो, 0 (लुक्)	त्तो, ओ, उ, (तो-तु) हि, हिन्तो, सुन्तो, एहि, एहिन्तो, एसुन्तो.
छठी	स्स	ण, णं

नपुंसकलिंग - पुंलिंगवत्

1. त्तो और एकारादि प्रत्ययों को छोड़कर पंचमी विभक्ति के सभी प्रत्यय लगाने पर पूर्व के **अ** का **आ** होता है । (३/१२, १३)
   उदा. देव + ओ = देवाओ, **देव + हिन्तो** = देवाहिन्तो, **देव + त्तो** = देवत्तो.
2. एकारादि प्रत्ययों के पूर्व में रहे **अ** का लोप होता है । (३/१५)
   उदा. देव + एहि = देवेहि.
3. छठी विभक्ति बहुवचन के प्रत्यय लगाने पर पूर्व **अ, इ, उ** दीर्घ होते हैं । (३/१२) **उदा. देव + णं** = देवाणं.

रूप - पुंलिंग = जिण (जिन)

	एकवचन	बहुवचन
पंचमी	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणाहिन्तो, जिणा.	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणाहिन्तो, जिणासुन्तो, जिणेहि, जिणेहिन्तो, जिणेसुन्तो
छठी	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं.

◆ **तो-तु इन** प्रत्ययवाले पंचमी के रूपों का वसुदेवहिण्डि आदि प्राकृत कहानियों में तथा सूत्रों की चूर्णि आदि में बहुल प्रयोग किया गया है ।

नपुंसकलिंग नाण (ज्ञान)

पंचमी-	नाणत्तो, नाणाओ, नाणाउ,	नाणत्तो, नाणाओ, नाणाउ, नाणाहि, नाणाहिन्तो, नाणासुन्तो,

छठी-	नाणाहि, नाणाहिन्तो, नाणा. नाणस्स	नाणेहि, नाणेहिन्तो, नाणेसुन्तो. नाणाण, नाणाणं.

4. संयुक्त व्यंजन का प्रथम अक्षर **क्-ग्-ट्-ड्-त्-द्-प्-य्-श्-ष्-स्** और ⨯ **क-⨯ प** हो तो लोप होता है, लोप के पश्चात् शेष व्यंजन तथा संयुक्त व्यंजन, के स्थान पर हुआ आदेशभूत व्यंजन जो शब्द की आदि में न हो तो द्वित्व होता है, (द्वित्व हुआ व्यंजन वर्गीय दूसरा या चौथा व्यंजन हो तो द्वित्व के प्रथम व्यंजन के स्थान पर क्रमशः वर्गीय पहला और तीसरा व्यंजन रखा जाता है। (उपसर्ग नि.1 ब देखो.) (२/७७, ८९, ९०, ९२, ९३)
अपवाद :- दीर्घस्वर तथा अनुस्वार के बाद शेषव्यंजन तथा आदेशभूत व्यंजन द्वित्व नहीं होता है। **र-ह** किसी भी स्थान में द्वित्व नहीं होते हैं।

उदा.

क् - भुत्तं (भुक्तम्)	ष् - निट्ठुरो (निष्ठुरः)
ग् - दुद्धं (दुग्धम्)	स् - नेहो (स्नेहः)
ट् - छप्पओ (षट्पदः)	⨯ - क - दुक्खं (दुःखम्)
ड् - खग्गो (खड्गः)	⨯ - प - अन्तप्पाओ (अन्तःपातः)
त् - उप्पलं (उत्पलम्)	दीर्घस्वर - फासो (स्पर्शः)
द् - मोग्गरो (मुद्गरः)	अनुस्वार - संझा (सन्ध्या)
प् - सुत्तो (सुप्तः)	र - बम्हचेरं (ब्रह्मचर्यम्)
श् - निच्चलो (निश्चलः)	ह - विहलो (विह्वलः)

आदेशभूत व्यंजन - **क्ष** का **ख जक्खो (यक्षः), खओ (क्षयः),** संखओ (संक्षयः)

5. संयुक्त व्यंजन के अन्त में **म्- न्- य्- ल्- व्- ब्- र्-** हो तथा संयुक्त व्यंजन का प्रथम व्यंजन **ल्- व्- ब्- र्** हो तो उसका लोप होता है। (जहाँ दोनों व्यंजनों का लोप होता हो वहाँ प्रयोगानुसार दो में से एक का लोप करना.) (३/७८/७९)
उदा. कव्वं (काव्यम्), पक्कं (पक्वम्), सण्हं-लण्हं (श्लक्ष्णम्), दारं-वारं (द्वारम्).

म् - सरो (स्मरः)	व् - पक्कं (पक्वम्)
न् - नग्गो (नग्नः)	ब् - सद्दो (शब्दः)
य् - वाहो (व्याधः)	र् - चक्कं (चक्रम्)
ल् - सण्हं (श्लक्ष्णम्)	र् - अक्को (अर्कः)
ल् - वक्कलं (वल्कलम्)	र् - वग्गो (वर्गः)

6. **य्-र्-व्-श्-ष्-स्** ये व्यंजन **श- ष- स** के साथ आगे या पीछे जुड़े हों तो उस व्यंजन का पूर्वोक्त (पा.9,नि.4-5) नियमानुसार प्रायः लोप होता है तथा पूर्व का ह्रस्व स्वर दीर्घ होता है। (१/४३)

उदा.

श्य - आवासयं (आवश्यकम्)	ष्य - सीसो (शिष्यः)
श्य - नासइ (नश्यति)	र्ष - कासओ (कर्षकः)
श्र - वीसामो (विश्रामः)	ष्व - वीसुं (विष्वक्)
र्श - संफासो (संस्पर्शः)	ष्ष - नीसित्तो (निष्षिक्तः)
श्व - आसो (अश्वः)	स्य - सासं (शस्यम्)
श्व - वीस्ससइ (विश्वसिति)	स्र - वीसंभो (विस्रम्भः)
श्श - मणासिला (मनश्शिला)	स्व - विकासरो (विकस्वरः)
	स्स - नीस्सहो (निस्सहः)

7. रुच्च् धातु के योग मे जिसको पसन्द हो उस शब्द को छठी विभक्ति लगती है।

उदा. बालाणं दुद्धं रुच्चइ।

शब्दार्थ (पुंलिंग)

अजीव (अजीव) अजीव, जड़.
अट्ठ / **अत्थ** (अर्थ) धन, वस्तु, कारण, पदार्थ, अर्थ.
आणंद (आनन्द) विशेषनाम.
छप्पअ (षट्पद) भ्रमर.
जीव (जीव) जीव.
दप्प (दर्प) अभिमान.
धम्मिअ (धार्मिक) धर्मीजन.
नेह (स्नेह) स्नेह, प्रेम, प्रीति.
पव्वय (पर्वत) पर्वत.
पच्छायाव (पश्चात्ताप) पश्चाताप. अनुताप.
मग्ग (मार्ग) रास्ता, मार्ग.
मंदर (मन्दर) मेरुपर्वत.
मणूस (मनुष्य) मनुष्य.
मुणिंद (मुनीन्द्र) आचार्य, मुनिवर.
वग्घ (व्याघ्र) बाघ, व्याघ्र.
वग्ग (वर्ग) समूह, वर्ग.
विणास (विनाश) नाश.
संफास (संस्पर्श) स्पर्श, छूना.
सद्द (शब्द) शब्द, आवाज.
सप्प (सर्प) साँप.
संतोस (संतोष) संतोष.
सिंघ-सीह (सिंह) शेर.

नपुंसकलिंग

अज्झयण (अध्ययन) अध्ययन.
आवासय / **आवस्सय** (आवश्यक) अवश्य करने योग्य नित्यकर्म, धर्मानुष्ठान.

उप्पल (उत्पल) कमल.

कम्म (कर्मन्) काम, कर्म, ज्ञानावरणीय आदि कर्म.

कव्व (काव्य) काव्य.

चरण (चरण) चारित्र.

चरित्त (चरित्र) चरित्र, वृत्तान्त.

दंसण (दर्शन) चक्षु, देखना, सम्यग्दर्शन, मत, धर्मशास्त्र.

दइव (दैव) दैव, भाग्य, अदृष्ट.

दुद्ध (दुग्ध) दूध.

धन्न (धान्य) अनाज.

फल (फल) फल.

मूल (मूल) मूलकारण, आदिकारण, मूल.

वयण (वचन) वचन.

सुत्त (सूत्र) सूत्र.

सम्मत्त (सम्यक्त्व) सम्यग्दर्शन, सत्यतत्त्व पर श्रद्धा रखना.

सोक्ख (सौख्य) सुख.

हिअअ, **हिअ** (हृदय) हृदय, मन.

हरण (सम) हरण करना, ले जाना.

विशेषण

अणाबाह (अनाबाध) पीड़ारहित.

गुरुअ, **गरुअ** (गुरुक) बड़ा, ज्यादा, भारी.

दीण (दीन) गरीब.

नग्ग (नग्न) वस्त्ररहित.

निच्चल (निश्चल) स्थिर, अचल, दृढ़.

निट्ठुर (निष्ठुर) घातकी, निर्दय.

पक्क (पक्व) पका हुआ.

पयासग (प्रकाशक) प्रकाश करनेवाला, प्रकाशक.

महुर (मधुर) मधुर, सुन्दर.

मूढ (मूढ) मोहित, मूर्ख, अज्ञानी.

वराय (वराक) गरीब, दीन.

विविह (विविध) बहुविध, अनेक प्रकार का, अलग-अलग जाति का

विरुद्ध (विरुद्ध) विपरीत, प्रतिकूल.

सुत्त (सुप्त) सोया हुआ.

8. अव्यय में **आ** का **अ** विकल्प से होता है। (१/६७)

उदा. अहव-अहवा (अथवा) व-वा (वा)
जह-जहा (यथा) ह-हा (हा)
तह-तहा (तथा)

9. नमो अव्यय के योग में छठी विभक्ति रखी जाती है।

उदा. नमो जिणाणं (नमो जिनेभ्यः)

अव्यय

अईव (अतीव) बहुत, ज्यादा, अतिशय

उ (उ) विस्मय, निन्दा, तिरस्कार.

कासइ (कस्यचित्) किसी का.

जह, **जहा** (यथा) जिस तरह, जैसे.

तह } (तथा) उस तरह, वैसे.
तहा }

धि, धी (धिक्) धिक्, धिक्कारवचन.

धिद्धी (धिक् धिक्) धिक्कार हो।

नमो (नमस्) नमस्कार, नमन.

पुण, पुणा, पुणाइ (पुनर्) फिर से,

मिच्छा (मिथ्या) असत्य, व्यर्थ, निकम्मा.

व-वा (वा) अथवा, कि, या.

संपइ (सम्प्रति) अभी, अब

सव्वया (सर्वदा) हमेशा, सदा.

सइ-सया (सदा) सदा, हमेशा.

सुट्ठु (सुष्टु) अच्छा, अच्छी तरह.

धातु

अइक्कम् (अति + क्रम्) उल्लंघन करना, मर्यादा बाहर जाना.

अवेक्ख् } (अप + ईक्ष्) अपेक्षा रखना:
अविक्ख् } गर्ज करना.

खम् (क्षम्) क्षमा करना, माफी मांगना, सहन करना.

डर् (त्रस्) डरना.

निस्सर् } (निस्सर्) निकलना.
नीहर् }

परिक्ख् } (परि + ईक्ष्) परीक्षा करना.
परिच्छ् } तलाश करना.

रुच्च् } (रुच्) इच्छा करना, पसन्द आना.
रोय् }

वक्खाण् (व्याख्यानय) व्याख्यान करना, स्पष्ट समझाना.

वीसस् } (वि + श्वस्) विश्वास करना.
विस्सस् } भरोसा करना.

विक्किण् } (वि + क्री) बेचना.
विक्के }

विढव् } (अर्ज्) प्राप्त करना, उपार्जन
अज्ज् } करना, पैदा करना.

सद्दह् (श्रद् + धा) श्रद्धा करना.

समायर् (सम् + आ + चर्) करना, आचरण करना.

हिन्दी में अनुवाद करें–

1. नमो सिद्धाणं । 2. नमो उवज्झायाणं ।
3. समणा सव्वय च्चिअ आवासयं कम्मं समायरंति ।
4. जह छप्पआ उप्पलाणं रसं पिबिरे, ताइं च न पीलंति, तह समणा संति ।
5. जो खमइ सो धम्मं सुट्ठु आराहेइ।
6. बुहो नरिंदस्स संतोसाय कव्वाइं रएइ । 7. अईव नेहो दुहस्स मूलमत्थि ।
8. धम्मस्स फलमिच्छंति धम्मं नेच्छंति मणूसा ।
9. समणो सावगाणं जिणेसराणं चरित्तं वक्खाणेइ ।
10. बालो सप्पस्स दंसणेण डरइ, किं पुण संफासेण ! ।
11. मुणिंदो सीसाणं सुत्ताणमट्ठं उवदिसइ ।
12. नाणं तत्ताणं पयासगं होइ । 13. धम्मो कासइ न रोएइ ? ।

14. निट्ठुरो पावेहिंतो धम्मं वंछइ । 15. आणंदो सावगो दंसणत्तो न कया चलइ ।
16. पव्वयाणं मंदरो निच्चलो अत्थि ।
17. सो पमाया सुत्तं पुत्तं पहरेइ । अड्डाए गामाओ गाममडंति बंभणा ।
18. तस्स वच्छस्स पक्काइं फलाणि अईव महुराणि संति ।
19. धम्मिओ सइ दीणाणं जणाणं धन्नाइं देइ ।
20. जस्स धम्मो व अड्डो अत्थि तं नरं सव्वे अविक्खिरे ।
21. सो नग्गो भमइ, जणेहिंतो वि न लज्जए।
22. धम्मो सुहाणं मूलं, दप्पो मूलं विणासस्स ।
23. धिद्धी मूढा जीवा, कुणंति गुरुए मणोरहे विविहे ।
24. विणया णाणं णाणाओ, दंसणं दंसणाहि चरणं च ।
चरणाहिंतो मुक्खो, मोक्खे सोक्खं अणाबाहं ॥2॥

प्राकृत में अनुवाद करें–

1. सज्जन पुरुष पापियों का विश्वास नहीं करते हैं ।
2. शेर की आवाज से मनुष्यों के हृदय कम्पित होते हैं ।
3. साधुओं के समुदाय जिनेश्वर के साथ मोक्ष में जाते हैं ।
4. मूर्ख चारित्र की श्रद्धा नहीं करते हैं ।
5. जीव और अजीवों को प्रकाश करनेवाला क्या है ?
6. जो चारित्र की श्रद्धा करता है, वह भाव से श्रावक है ।
7. वह घर से निकलता है और साधु बनता है ।
8. पश्चात्ताप से पाप नष्ट होते हैं ।
9. शिष्य उपाध्याय के पास अध्ययन पढ़ते हैं ।
10. जो न्यायमार्ग का उल्लंघन करता है, वह दुःख पाता है।
11. राजा काव्यों से पंडितों की परीक्षा करता है ।
12. व्याघ्र से मनुष्य डरता है । 13. संघ धर्म के विरुद्ध सहन नहीं करता है ।
14. धार्मिक व्यक्ति पापों से डरता है ।
15. किसी का धन हरण करना पाप है।
16. जो जिनवचन का उल्लंघन करते हैं, वे सुख प्राप्त नहीं करते हैं ।
17. तू विनय से अच्छी तरह शोभा देता है ।
18. उसको धिक्कार हो क्योंकि वह सब की निन्दा करता है ।
19. वह धान्य बेचता है और बहुत द्रव्य कमाता है ।
20. तू उसकी व्यर्थ ही निन्दा करता है ।
21. शिष्य हमेशा (सदा) सूत्रों के अध्ययनों की आवृत्ति करते हैं ।
22. बालक को दूध पसंद आता है ।

पाठ - 10

अकारान्त नाम

सत्तमी विभक्ति तथा संबोहण प्रत्यय (३/११, ३८, ४, १२)

पुंलिंग	एकवचन	बहुवचन
सत्तमी	ए, म्मि (सि)	सु, सुं.
संबोहण	ओ, आ, 0, (ए)	आ.

नपुंसकलिंग - पुंलिंगवत्

1. **सि** प्रत्यय लगने पर पूर्व के अक्षर पर अनुस्वार रखा जाता है।
   उदा. समणंसि (श्रमणे) घरंसि (गृहे).
2. नपुंसकलिंग में संबोधन एकवचन में मूल रूप ही होता है तथा बहुवचन भी प्रथमा आदि के रूपों के समान ही होते हैं।

जिण (जिन)

सत्तमी	जिणे, जिणम्मि, जिणंसि.	जिणेसु, जिणेसुं.
संबोहण	हे जिण, जिणो, जिणा, जिणे.	जिणा.

नाण (ज्ञान)

सत्तमी	नाणे, नाणम्मि, नाणंसि.	नाणेसु, नाणेसुं.
संबोहण	हे नाण.	नाणाइं, नाणाइँ, नाणाणि.

3. सर्वनाम के रूप-विस्तार से आगे कहेंगे लेकिन जिन रूपों में विशेष परिवर्तन नहीं है वे रूप यहाँ दिये जाते हैं। सर्वनाम शब्दों के रूप और प्रत्यय अकारान्त पुंलिंग और नपुंसकलिंग के समान हैं परन्तु प्रथमा बहुवचन में **ए** प्रत्यय और सप्तमी एकवचन में **स्सि, म्मि, त्थ, हिं** प्रत्यय लगाये जाते हैं तथा षष्ठी बहुवचन में एसिं प्रत्यय विकल्प से लगाया जाता है।
   अपवाद :- इम (इदम्) और एअ (एतद्) सर्वनाम को सप्तमी एकवचन का **हिं** प्रत्यय नहीं लगता है। (३/५८, ५९, ६०, ६१)
   उदा. पढमा बहुव - सव्वे, छठी बहुव. - सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं, सत्तमी एकव. सव्वस्सिं, सव्वम्मिं, सव्वत्थ, सव्वहिं, सव्वंसि।

अकारान्त पुंलिंग- 'देव' शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प.	देवो, देवे.	देवा.
बी.	देवं	देवे, देवा.
त.	देवेण, देवेणं	देवेहि, देवेहिँ, देवेहिं.
च.	देवस्स, देवाय, देवाए	देवाण, देवाणं.
पं.	देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि, देवाहिन्तो, देवा	देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि, देवाहिन्तो, देवासुन्तो, देवेहि, देवेहिन्तो, देवेसुन्तो.
छ.	देवस्स	देवाण, देवाणं
स.	देवे, देवम्मि, देवंसि	देवेसु, देवेसुं
सं.	हे देव, देवो, देवा, देवे.	देवा.

अकारान्त पुंलिंग 'सव्व' शब्द के रूप

प.	सव्वो, सव्वे	सव्वे
बी.	सव्वं	सव्वे, सव्वा.
त.	सव्वेण, सव्वेणं	सव्वेहि, सव्वेहिँ, सव्वेहिं
च.	सव्वस्स, सव्वाए	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
पं.	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ. सव्वाहि, सव्वाहिन्तो सव्वा	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो, सव्वेहि, सव्वेहिन्तो, सव्वेसुन्तो.
छ.	सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं.
स.	सव्वस्सिं, सव्वम्मिं, सव्वत्थ, सव्वहिं, सव्वंसि	सव्वेसु, सव्वेसुं.
सं.	हे सव्व, सव्वो, सव्वा, सव्वे.	सव्वे.

नपुंसकलिंग वण (वन)

प. बी.	वणं	वणाइं, वणाइँ, वणाणि.
सं.	वण	वणाइं, वणाइँ, वणाणि.

शेष पुंलिंगवत्

सव्व (सर्व)

प. } बी. }	सव्वं	सव्वाइं, सव्वाइँ, सव्वाणि.

तृतीया वि. शेष पुंलिंगवत्

त (तद्) सर्वनाम के रूप

पुंलिंग	एकवचन	बहुवचन
प.	स, सो, से	ते,
बी.	तं,	ते, ता.
त.	तेण, तेणं	तेहि, तेहिँ, तेहिं.
च.	तस्स, ताए	तेसिं, ताण, ताणं.
पं.	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो,	तत्तो, ताओ, ताउ. ताहि, ताहिन्तो, तासुन्तो, तेहि, तेहिन्तो, तेसुन्तो.
छ.	तस्स	तेसिं, ताण, ताणं.
स.	◆ तस्सिं, तम्मि, तत्थ, तहिं, तंसि.	तेसु, तेसुं.

नपुंसकलिंग

प. } बी. }	तं	ताइं, ताइँ, ताणि.

शेष पुंलिंगवत्

पुंलिंग एअ-एत (एतद्)

प.	एस, एसो, एसे,	एए.
बी.	एअं,	एए, एआ.
त.	एएण, एएणं,	एएहि, एएहिं, एएहिं,
स.	एअस्सिं, एअम्मि, • एत्थ, एअंसि,	एएसु, एएसुं.

शेष 'त' सर्वनामवत्

◆ त (तद्) इत्यादि सर्वनामों के संबोधन रूप नहीं होते हैं।

• **'त्थ'** प्रत्यय के पूर्व **एअ** के **अ** का लोप होता है। उदा. एअ + त्थ = एत्थ.

नपुंसकलिंग	प. बी. एअं	एआइं, एआइँ, एआणि.

शेष पुंलिंगवत्

पुंलिंग ज (यत्)		**नपुंसकलिंग ज (यत्)**	
एकव.	**बहुव.**	**एकव.**	**बहुव.**
प.–जो, जे	जे.	प. } जं	जाइं, जाइँ, जाणि.
बी.–जं,	जे, जा.	बी. }	
शेष 'त' सर्वनामवत्		शेष पुंलिंगवत्	
क (किम्)		**क (किम्)**	
प.–को, के	के	प. } कं	काइं, काइँ, काणि.
बी.–कं,	के, का.	बी. }	
शेष 'त' सर्वनामवत्		शेष पुंलिंगवत्	
इम (इदम्)		**इम (इदम्)**	
प. इमो. इमे	इमे	प. } इमं	इमाइं, इमाइँ,
बी. इमं	इमे, इमा.	बी. }	इमाणि.
स. इमस्सि,	इमेसु.		
इमम्मि,	इमेसुं		
इमत्थ,	इमंसि.		
शेष 'त' सर्वनामवत्		शेष पुंलिंगवत्	

4. संज्ञावाचक शब्द **के** अन्दर **ष्क** और **स्क** का **क्ख** होता है और प्रारंभ में हो तो **ख** होता है। (२/४)

उदा. ष्क - पोक्खरं (पुष्करम्) | **स्क - अवक्खंदो** (अवस्कन्दः)
ष्क - निक्खं (निष्कम्) | **स्क - खंधो** (स्कन्धः)

5. शब्द के अन्दर **क्ष** का **क्ख** और कुछ स्थानों में **च्छ- ज्झ** भी होता है और प्रारंभ में हो तो **ख- छ- झ** होता है। (२/३)

उदा. खओ (क्षयः) | **सरिच्छो** (सदृक्षः)
खीरं } (क्षीरम्) | **खीणं** }
छीरं } | **छीणं** } (क्षीणम्)
रिच्छो } (ऋक्षः) | **झीणं** }
रिक्खो } | **वच्छो** (वृक्षः)

6. (अ) शब्द के प्रारंभ में (व्यंजन के बाद) **ऋ** हो तो **अ** होता है, प्रारंभ में मात्र **ऋ** हो तो **रि** होता है।

(ब) कृपा इत्यादि शब्दों में **ऋ** का **इ**, ऋतु इत्यादि शब्दों में **ऋ** का **उ** और दृश के **दृ** का **रि** होता है।

(क) ऋण-ऋजु-ऋषभ-ऋतु-ऋषि इन शब्दों में **ऋ** का विकल्प से रि होता है तथा वृषभ के **व** का **उ** विकल्प से होता है। (१/१२६, १२८, १३१, १४०, १४१, १४२)

उदा. घयं (घृतम्)	**हियर्य** (हृदयम्)
कयं (कृतम्)	**उऊ** (ऋतुः)
रिच्छो (ऋक्षः)	**पुड्डो** (स्पृष्टः)
रिद्धी (ऋद्धिः)	**सरिसो** (सदृशः)
किवा (कृपा)	
विकल्प से = रिणं - अणं (ऋणम्)	**रिऊ - उऊ** (ऋतुः)
रिजू - उज्जू (ऋजुः)	**रिसी - इसी** (ऋषिः)
रिसहो - उसहो (ऋषभः)	**उसहो - वसहो** (वृषभः)

7. शब्द के अन्दर **द्य, य्य, र्य** हो तो **ज्ज** होता है और प्रारंभ में हो तो **ज** होता है। (१/२४५, २/२४)

उदा. द्य - मज्जं (मद्यम्)	**य्य - सेज्जा** (शय्या)	**र्य - कज्जं** (कार्यम्)
द्य - वेज्जो (वैद्यः)	**र्य - भज्जा** (भार्या)	**र्य - पज्जाओ** (पर्यायः)
प्रारम्भ में-द्य-जोअए (द्योतते)		

8. ह्रस्व स्वर के बाद **थ्य, श्च, त्स, प्स** हो तो प्रयोगानुसार **च्छ** होता है। (२/२१)

उदा. पच्छं (पथ्यम्)	**उच्छाहो** (उत्साहः)
मिच्छा (मिथ्या)	**संवच्छरो** (संवत्सरः)
अच्छेरं (आश्चर्यम्)	**लिच्छइ** (लिप्सति)
पच्छा (पश्चात्)	**जुउच्छइ** (जुगुप्सति)

9. शब्द के अन्दर **ह्व** का **ब्भ** विकल्प से होता है।

उदा. जिब्भा (जिह्वा)

जीहा

10. जिसके ऊपर क्रोध, द्रोह वगैरह किया जाता है उस शब्द को छठी विभक्ति रखी जाती है।

शब्दार्थ (पुंलिंग)

अणत्थ } = (अनर्थ) नुकसान,
अणट्ठ } हानि.
आइच्च (आदित्य) सूर्य
इंदियचोर=(इन्द्रियचौर) इन्द्रियरूप चोर.
उच्छाह = (उत्साह) उत्साह, आनन्द.
काउसग्ग = (कायोत्सर्ग) काया का त्याग.
खंध = (स्कन्ध) कन्धा.
खमासमण (क्षमाश्रमण) क्षमाप्रधान मुनि, साधु.
गुण = (गुण) गुण, सद्गुण.
जक्ख (यक्ष) यक्ष.
पंडिअ (पंडित) पंडित.
परोवयार (परोपकार) परोपकार.
विसय (विषय) इन्द्रियों के शब्दादि विषय.
वियार (विचार) विचार.

पच्चूस } (प्रत्यूष) प्रात:काल, सुबह का
पच्चूह } समय.
पज्जाय (पर्याय) पर्याय, रूपान्तर, अनुक्रम.
पाणाइवाय (प्राणातिपात) जीवहिंसा.
पाउस (प्रावृष्) वर्षाऋतु, चातुर्मास.
भव (भव) भव, संसार.
भार (भार) भार, बोझा.
मण (मनस्) मन.
मच्छर (मत्सर) ईर्ष्या, द्वेष.
मअंक } (मृगाङ्क) चन्द्र.
मिअंक }
रिच्छ } (ऋक्ष)
रिक्ख }
वेज्ज (वैद्य) वैद,
सूर (शूर) शूर, पराक्रमी.

(नपुंसकलिंग)

अच्चण (अर्चन) पूजा, पूजा करना.
अच्छेर (आश्चर्य) विस्मय, चमत्कार.
उज्जाण (उद्यान) बगीचा, उद्यान.
घर (गृह) घर.
चइत्त (चैत्य) जिनमन्दिर,
चेइअ जिनमूर्ति.
चरणधण (चरणधन) चारित्ररूपीधन.
झाण (ध्यान) ध्यान.
नक्खत्त (नक्षत्र) नक्षत्र.
मंस } (मांस) मांस
मांस }
मज्ज (मद्य) मद्य, दारु, मदिरा.
मत्थय (मस्तक) मस्तक

वच्छल्ल (वात्सल्य) स्नेह, प्रेम, वत्सलता.
वक्खाण (व्याख्यान) प्रशंसा.
वुड्ढत्तण (वृद्धत्व) वृद्धावस्था, बुढ़ापा.
सच्च (सत्य) सत्य, यथार्थवचन.
साहज्ज } (साहाय्य) मदद, सहायता
साहेज्ज }
सामाइअ (सामायिक) सामायिक. (पाप व्यापार का त्याग करके दो घड़ी समता में रहना).
सुवण्ण (सुवर्ण) सोना.
सिहर (शिखर) शिखर.

विशेषण

अहिय (अधिक) ज्यादा, अत्यन्त.
उज्जय (उद्यत) तत्पर.
खीण, **छीण**, **झीण** (क्षीण) जीर्ण, पुराना, दुर्बल.
जारिस (यादृश) जैसा, जिस प्रकार का.
तारिस (तादृश) वैसा.
थिअ (स्थित) रहा हुआ, स्थिर हुआ.
निक्कारण (निष्कारण) प्रयोजनरहित. कारण बिना.
लुंठिअ (लुण्ठित) छीना हुआ, लूटा हुआ.
सरिच्छ, **सरिक्ख** (सदृश) समान.
निम्मलयर (निर्मलतर) अतिशय निर्मल.
निच्च (नित्य) अविनश्वर, शाश्वत.
पयासयर (प्रकाशकर) प्रकाश करनेवाला.
पच्छ (पथ्य) हितकारी वस्तु.
पसत्त (प्रसक्त) प्रसक्त, आसक्त.
मइरामउम्मत्त (मदिरामदोन्मत्त) दारु के मद से उन्मत्त बना हुआ.
वच्छल (वत्सल) रागवान, स्नेही.
विब्भल, **विहल** (विह्वल) विह्वल, मोहित
रुक्क, **रुग्ग** (रुग्ण) रोगी.
सोहण (शोभन) सुन्दर.
साहम्मिअ (साधर्मिक) समान धर्मवाला.

अव्यय

अवस्सं (अवश्यं) जरूर, अवश्य
अत्थ, **एत्थ** (अत्र) यहाँ.
मिव, पिव, विव, व्व, व, विअ, इव (इव) जिस तरह,
णइ, चेअ, चिअ, च्च, च्चिअ, च्चेअ, एव (एव) निर्णय, निश्चित अर्थ में
इह (इह) यहाँ.
इअ, त्ति, ति, इइ (इति) इस तरह, यह.
अओ (अतः) इस कारण से,
जत्थ, जहि, जह (यत्र) जहाँ.
तत्थ, तहि, तह (तत्र) वहाँ.
कत्थ, कहि, कह (कुत्र) कहाँ.
पच्छा (पश्चात्) बाद में.
दिवा, **दिआ** (दिवा) दिन.

धातु

उववज्ज् (उप + पद्य) उत्पन्न होना, पैदा होना.
आणे (आ + नी) ले जाना, लाना.
कुज्झ् (क्रुध् + क्रुध्य) क्रोध करना.
खल् (स्खल्) रोकना,
पसंस् (प्र + शंस्) प्रशंसा करना.

भुंज् (भुञ्) खाना, भोजन करना.	**विज्ज्** (विद्य) होना.
उवभुंज् (उप + भुञ्) उपभोग करना,	**उवसम्** (उप + शम्) शान्त होना.
मज्ज् / **मच्च्** (माद्य) मद करना.	**परिचय** / **परिच्चय्** (परि + त्यज्) त्याग करना.

हिन्दी में अनुवाद करें

1. हे खमासमण ! हं मत्थएण वंदामि ।
2. सव्वेसु धम्मेसु जत्थ पाणाइवाओ न विज्जइ, सो धम्मो सोहणो होइ ।
3. जक्खो समणाणं साहज्जं कुणेइ ।
4. वुड्ढत्तणे वि मूढाणं नराणं विसया न उवसमन्ते ।
5. पच्चूसे सो उज्जाणं जाइ, तत्थ थिआइं
   पुप्फाइं जिणिंदाणमच्चणाय घरं आणेइ ।
6. समणा चेइएसु निच्चं वच्चिरे, देवे य वंदंति ।
7. देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ।
8. मिच्छा तं पुत्ताणं कुज्झसि । जो धणस्स मएण मज्जइ, सो भवमडइ ।
9. पावाणं कम्माणं खयाए ठामि काउसग्गं ।
10. मज्जम्मि मंसम्मि य पसत्ता मणुसा निरयं वच्चन्ति ।
11. नक्खत्ताणं मिअंको जोअइ ।
12. परोवयारो पुण्णाय, पावाय अन्नस्स
    पीलणं, इअ नाणं जस्स हिए सो धम्मिओ + त्ति ।
13. मूढो हं, त्तो कत्थ गच्छामि, कहिं चिट्ठामि, कस्स कहेमि, कस्स रूसेमि ।
14. जीवा पावेहिं कज्जेहिं निरयंसि उववज्जिरे ।
15. चंदेसु ◆ निम्मलयरा आइच्चेसु अ अहियं पयासयरा तित्थयरा हुंति ।
16. खमासमणा सव्वया नाणम्मि तवंसि झाणे य उज्जया संति ।

\+ वाक्य के प्रारंभ में **इति** के बदले **इअ** रखा जाता है । जैसे कि-'इअ नाणं जस्स हियए', *किसी स्थान में* **इइ** *भी आता है*, पदान्त में स्वर के बाद **इति** के बदले **त्ति** रखा जाता है, लेकिन पदान्त में स्वर न हो तो **'ति'** रखा जाता है । (१/४२, ९१)

उदा. तहत्ति (तथेति)	जुत्तंति (युक्तमिति)
पिओत्ति (प्रियइति)	किंति (किमिति)

◆ पंचमी विभक्ति के बदले कुछ स्थानों में सप्तमी विभक्ति भी रखी जाती है ।
उदा. अंतेउरे रमिउं आगओ राया (अन्तःपुराद् **रन्त्वाऽऽगतोः** राजा)

17. जारिसो जणो होइ तस्स मित्तो वि तारिसो विज्जइ ।

18. जो पच्छं न भुंजइ, तस्स वेज्जो किं कुणइ ? ।

• 19. अम्हेत्थ पुण्णाणं पावाणं च कम्माणं फलं उवभुंजिमो ।

20. नच्चइ गायइ पहसइ, पणमइ परिचयइ वत्थं पि ।
तूसइ रूसइ निक्कारणं पि मइरामउम्मत्तो ॥1॥

21. स च्चिय सूरो सो चेव, पंडिओ तं पसंसिमो निच्चं ।
इंदियचोरेहिं सया, न लुंटिअं जस्स चरणधणं ॥2॥

प्राकृत मे अनुवाद करें

1. गुणो में द्वेष अनर्थ के लिये होता है ।
2. सुवर्ण का पर्याय आभूषण है ।
3. मन्दिर के शिखर पर मयुर नृत्य करता है ।
4. आनन्द श्रावक सम्यक्त्व में निश्चल है ।
5. मनुष्य पाप का फल देखता है, फिर भी धर्म नहीं कर पाता है इससे बढकर अन्य आश्चर्य क्या ?
6. बालक प्रभात में पिता को नमस्कार करता है, उसके बाद अपना अध्ययन करता है ।
7. विह्वल मनुष्य को कार्य मे उत्साह नहीं होता है ।
8. इस बाग में वृक्ष पर सुन्दर फल है ।
9. वृद्धावस्था में शरीर जीर्ण होता है ।
10. जो पथ्य का सेवन करता है वह बीमार नहीं होता है ।
11. आचार्य तीर्थंकर समान कहलाते हैं ।
12. साधर्मिकों का वात्सल्य इस लोक में धर्म और परलोक में मोक्ष प्रदान करता है ।
13. मेघ पर्वत पर बरसता है ।
14. साधु प्रवचन में जिनेश्वरों के चरित्र कहते हैं ।
15. मैं मार्ग में भालू देखता हूँ ।
16. हे मूर्ख ! तुम गरीबों को क्यों हैरान (परेशान) करते हो?
17. तुम दुर्जनों के वचनों पर विश्वास रखते हो इसलिए दुःखी होते हो ।

• सर्वनाम या अव्यय के बाद सर्वनाम या अव्यय हो तो बाद के सर्वनाम या अव्यय के आद्य स्वर का प्रायः लोप होता है । (१/४०)

उदा. अम्हे + एत्थ = अम्हेत्थ (वयमत्र)	जइ + अहं = जइहं (यद्यहम्)
अज्ज + एत्थ = अज्जत्थ (अद्यात्र)	सो + इमो = सोमो (सोयम्)

पाठ - 11

इकारान्त और उकारान्त पुंलिंग तथा नपुंसकलिंग नाम

पढमा, बीआ और तइआ विभक्ति प्रत्यय

(३/४९, २०, ५, १८, २२, २४, ७, २५, २६)

		एकवचन	बहुवचन
इकारान्त	पढमा	- 0	अउ, अओ, णो, ई.
पुंलिंग	बीआ	- म्	णो, ई.
	तइआ	- णा	हि, हिँ, हिं

1. उकारान्त नामों के प्रत्यय भी इकारान्त नामों के समान ही हैं लेकिन प्रथमा और द्वितीया बहुवचन में **ई** प्रत्यय के स्थान में उ प्रत्यय लगाया जाता है तथा प्रथमा बहुवचन में **अवो** प्रत्यय भी लगाया जाता है । (२/२१)
2. प्रथमा एकवचन, तृतीया बहुवचन और पंचमी के **त्तो, णो** को छोड़कर एकवचन तथा बहुवचन के प्रत्यय, षष्ठी और सप्तमी बहुवचन प्रत्ययों के पूर्व के इ-उ दीर्घ होते हैं । (३/१६, २२)
   उदा. मुणी, गुरू
3. प्रथमा, द्वितीया और संबोधन बहुवचन में **णो** को छोड़कर शेष प्रत्यय लगाने पर पूर्व स्वर का लोप होता है । **उदा.**–

प. बहु. - गिरि + अउ = गिरउ,	भाणु + अवो = भाणवो.
प. बहु. - गिरि + अओ = गिरओ,	भाणु + अउ = भाणउ.
प. बहु. - गिरि + ई = गिरी,	भाणु + ऊ = भाणू
बी. बहु. - गिरि + ई = गिरी.	भाणु + ऊ = भाणू.

4. इकारान्त और उकारान्त नपुंसकलिंग प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के प्रत्यय अकारान्त नपुंसकलिंग के समान हैं और तृतीया विभक्ति से इकारान्त और उकारान्त पुंलिंग के समान हैं ।

मुणि (मुनि)

पुंलिंग	एकवचन	बहुवचन
प.	मुणी	मुणउ, मुणओ, मुणिणो, मुणी.
बी.	मुणिं	मुणिणो, मुणी.
त.	मुणिणा	मुणीहि, मुणीहिँ, मुणीहिं.

साहु (साधु)

प.	साहू	◆ साहवो, साहउ, साहओ, साहुणो, साहू.
बी.	साहुं	साहुणो, साहू.
त.	साहुणा	साहूहि, साहूहिँ, साहूहिं.

दहि(दधि)

नपुंसकलिंग	एकवचन	बहुवचन
प. } बी. }	● दहिं	दहीइं, दहीइँ, दहीणि.
त.	दहिणा	दहीहि, दहीहिँ, दहीहिं

महु (मधु)

	एकवचन	बहुवचन
प. } बी. }	महुं	महूइं, महूइँ, महूणि.
त.	महुणा	महूहि, महूहिँ, महूहिं.

5. **इन्** अन्तवाले शब्दों के अन्त्य व्यंजन **न्** का लोप होने पर उसके रूप इकारान्त नाम के समान होते हैं ।

   उदा. जोगि (योगिन्)

6. शब्द के अन्दर **म्न** और **ज्ञ** का **ण्ण** या **न्न** होता है तथा प्रारम्भ में **न** या **ण** होता है । (२/४२, ८३)

   उदा. पज्जुण्णो, **पज्जुन्नो** (प्रद्युम्नः) | **विण्णाणं**, **विन्नाणं** (विज्ञानम्) | **नाणं**, **णाणं** (ज्ञानम्)

◆ आर्ष प्राकृत में प्रथमा और द्वितीया बहुवचन में **अवे** प्रत्यय का प्रयोग भी दिखाई देता है । उदा. गुरु + अवे = गुरवे, बहवे- साहवे आदि ।
उदा. **ताव य तत्थारण्णे गिद्धो दट्ठूण साहवे सहसा ।।** इति पउमचरिए (इतने में उस जंगल में गिद्ध पक्षी ने साधुओं को देखकर जल्दी.)

● संस्कृत में सिद्ध प्रयोग पर से दहि-महु (दधि-मधु) आदि भी होते हैं, किसी स्थान में दहिँ, महुँ वगैरह प्रयोग भी होते हैं ।

अपवाद :- ज्ञ (ज् ञ्) के ञ् का विकल्प से लोप भी होता है ।

पज्जा / **पण्णा** (प्रज्ञा)	**अज्जा** / **अण्णा** (आज्ञा)	**मणोज्जं** / **मणोण्णं** (मनोज्ञम्)

'अभिज्ञ' इत्यादि शब्दों में **ज्ञ** का **ण्ण** होता है तब अन्त्य **अ** का **उ** होता है। अहिण्णु (अभिज्ञ), कयण्णु (कृतज्ञ), जब **ण्ण** नहीं होता है तब उपर्युक्त नियमानुसार ञ् का लोप होकर अहिज्ज (अभिज्ञ), सवज्ज (सर्वज्ञ) इत्यादि होते हैं । 'अभिज्ञ' आदि शब्द होने से 'प्राज्ञ' आदि शब्दों में अन्त्य **अ** का **उ** नहीं होता है ।

उदा. पण्णो, पज्जो (प्राज्ञः).

7. शब्द के अन्दर **श्म, ष्म, स्म, ह्म** का **म्ह** होता है तथा पक्ष्म शब्द के **क्ष्म** का भी **म्ह** होता है । किसी स्थान में **ह्म** का **म्म** भी होता है । (२/७४)

उदा. **श्म - कम्हारा** (कश्मीराः)
ष्म - गिम्हो (ग्रीष्मः)
स्म - विम्हओ (विस्मयः)
ह्म - बम्हा (ब्रह्मा)
बम्हणो / **बम्भणो** (ब्राह्मणः)

ह्म - बम्हचेरं / **बम्मचेरं** (ब्रह्मचर्यम्)
क्ष्म - पम्हो (पक्ष्म)
किसी स्थान में म्ह नहीं होता है ।
रस्सी (रश्मिः)
सरो (स्मरः)

शब्दार्थ (पुंलिंग)

आएस (आदेश) हुकम, आज्ञा
इंदु (इन्दु) चन्द्र
ईसर (ईश्वर) ईश्वर
कइ / **कवि** (कवि) कवि
गुरु (गुरु) गुरु, ज्येष्ठ
जइ (यति) यति, साधु
जोगि (योगिन्) योगी
तित्थुद्धार (तीर्थोद्धार) तीर्थ का उद्धार
निवइ (नृपति) राजा
पज्जुण्ण (प्रद्युम्न) कामदेव, कृष्ण का पुत्र
पमाअ (प्रमाद) प्रमाद, भूल जाना
पाणि (प्राणिन्) प्राणी, जीव
बंधु (बन्धु) बंधु, मित्र
भिक्खु (भिक्षु) साधु
मंति (मन्त्रिन्) मंत्री
मुणि (मुनि) मुनि
रिसि (ऋषि) ऋषि
वाहि (व्याधि) रोग, पीड़ा
विम्हअ (विस्मय) आश्चर्य
संसग्ग (संसर्ग) संग, संबंध
साहु (साधु) साधु, मोक्षमार्ग की साधना करनेवाले
सूरि (सूरि) आचार्य

(नपुंसकलिंग)

अमिअ, **अमय** (अमृत) अमृत
अंसु (अश्रु) आँसू
तारग (तारक) तारा
दहि (दधि) दही
पडिक्कमण (प्रतिक्रमण) आवश्यक कार्य, क्रियाविशेष
बम्हचेर, **बम्हचरिअ**, **बंभचेर** (ब्रह्मचर्य) ब्रह्मचर्य.
भोयण (भोजन) भोजन
मज्झ (मध्य) बीच में, अन्दर,
महु (मधु) मधु
रण्ण, **अरण्ण** (अरण्य) जंगल, वन, अरण्य
वारि (वारि) पानी
सासण (शासन) आगम, शास्त्र, शिक्षा, आज्ञा, शासन.

(पुंलिंग + नपुंसकलिंग)

मंत (मन्त्र) मंत्र, विचार, गुप्त बात.
मित्त (मित्र) मित्र,

विशेषण

अजिण्ण (अजीर्ण) अजीर्ण, अपच
अम्हारिस (अस्मादृश) हमारे जैसे
अरहंत, **अरिहंत**, **अरुहंत** (अर्हत्) पूज्य, तीर्थंकर
अहिण्णु (अभिज्ञ) कुशल, पंडित
कय, **कड** (कृत) किया हुआ
कयण्णु (कृतज्ञ) उपकार को जाननेवाला
कायव्व (कर्तव्य) करने योग्य
दिंत (ददत्) देता
धन्न (धन्य) धन्य, प्रशंसा करने योग्य
पहावग (प्रभावक) प्रभावना करनेवाला, उन्नति करनेवाला
पालग (पालक) पालन करनेवाला
मणोज्ज, **मणोण्ण** (मनोज्ञ) सुन्दर
विरहिअ (विरहित) रहित
सव्वण्णु (सर्वज्ञ) सर्वज्ञ भगवान, सब जाननेवाले

अव्यय

अहुणा (अधुना) अभी, हाल
कह, **कहं** (कथम्) कैसे, किस तरह
तओ (ततः) उसके बाद, उस कारण से

धातु

अव-गण् (अव+गण्) अपमान करना, अवगणना करनी	**फाल्** / **फाड्** (पाटय्) फाड़ना, चीरना
अवणे (अप+नी) दूर करना, खिसकाना	**मंत्** (मन्त्र्) विचार करना
चड् / **आ-रोह्** / **आ-रुह्** (आ+रोह्) चढ़ना, आरोहण करना	**नि-मंत्** (नि+मंत्र्) निमंत्रण देना
	वीसर् / **विस्सर्** (वि+स्मृ) भूल जाना
उद्धर (उद्+धर्) उद्धार करना	**वण्ण्** (वर्ण्) वर्णन करना,
चक्ख् (आ-स्वाद) स्वाद लेना	**सेव्** (सेव्) सेवा करना
पाल् (पाल्) पालन करना	

हिन्दी में अनुवाद करें

1. अरिहंता सव्वण्णवो भवंति ।
2. कयण्णुणा सह संसग्गो सइ कायव्वो ।
3. छप्पआ महुं चक्खेज्जा ।
4. सूरओ जिणिंदस्स सासणस्स पहावगा संति ।
5. गुरुणो सीसाणं सुत्ताणमट्ठमुवदिसंति ।
6. अहिण्णू सत्थाणमत्थेसु न मुज्झन्ति ।
7. जइणो मणोज्जेसु उज्जाणेसु झाणं समायरन्ति ।
8. साहवो तत्तेसुं विम्हयं न पावेइरे ।
9. सूरी साहूहिं सह आवासयाइं कम्माइं कुणइ ।
10. साहुणो पमाआ सुत्ताणि वीसरेज्ज ।
11. मुणी धम्मस्स तत्ताइं सूरिं पुच्छंति ।
12. साहू गुरुहिं सह गामाओ गामं विहरंते ।
13. कइणो नरिंदस्स गुणे वण्णेइरे ।
14. दुक्खेसु साहेज्जं जे कुणंति ते बंधवो अत्थि ।
15. तुं अंसूणि किं मुंचसि ? ।
16. अज्जिणे ओसढं वारि ।
17. भोयणस्स मज्झम्मि वारि अमयं ।
18. सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू ।

19. पज्जुण्णो जणे डहइ ।

20. निवई मंतीहिं सद्धिं रज्जस्स मंतं मंतेइ ।

21. निवइणो मणोण्णेहिं कव्वेहिं तूसंति ।

22. धन्नाणं चेव गुरुणो आएसं दिंति ।

23. धम्मो बंधू अ मित्तो अ, धम्मो य परमो गुरु ।
नराणं पालगो धम्मो, धम्मो रक्खइ पाणिणो ॥1॥

24. दाणेण विणा न साहू, न हुंति साहूहिं विरहिअं तित्थं ।
दाणं दिंतेण तओ, तित्थुद्धारो कओ होइ ॥2॥

प्राकृत में अनुवाद करें—

1. मुनि शास्त्र में पण्डित होते हैं ।
2. तुम सदा साधुओं के साथ प्रतिक्रमण करते हो ।
3. मैं मद का त्याग करता हूँ ।
4. योगी जंगल में रहते हैं और काम को जीतते हैं ।
5. मुनि उत्कृष्ट ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं ।
6. पण्डित रोग से खिन्न नहीं होते हैं ।
7. वैद्य रोगों को दूर करते हैं ।
8. मैं स्तोत्रों द्वारा सर्वज्ञ भगवंत की स्तुति करता हूँ ।
9. ताराओं के बीच चन्द्रमा शोभा देता है ।
10. राजा दुर्जनों (धूर्तों) को दण्ड देते हैं और सज्जनों का पालन करते हैं ।
11. भौंमरों को मधु पसंद है ।
12. वह सदा प्रभात काल में उद्यान में जाता है और आचार्यों तथा साधुओं को वन्दन करता है ।
13. साधु कभी भी पाप में प्रवृत्ति नहीं करते हैं ।
14. ऋषि मन्त्र द्वारा आकाश में उड़ते हैं ।
15. मेघ पानी बरसाता है ।
16. चन्द्र दिन में शोभा नहीं देता है ।
17. बालक दही खाता है ।
18. गुरु हमारे जैसे पापियों का भी उद्धार करते हैं ।

पाठ - 12

(चालू) इकारान्त, उकारान्त पुंलिंग तथा नपुंसकलिंग नाम चउत्थी, पंचमी और छठी विभक्ति प्रत्यय

(३/२३, ८, ९, १०, ६)

	एकवचन	बहुवचन
च.	णो, स्स	ण, णं
पं.	णो, त्तो, ओ, उ, हिन्तो	त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो
छ.	णो, स्स	ण, णं

रूप

मुणि (मुनि)

च.	मुणिणो, मुणिस्स	मुणीण, मुणीणं
पं.	मुणिणो, मुणित्तो, मुणीओ, मुणीउ, मुणीहिन्तो	मुणित्तो, मुणीओ, मुणीउ मुणीहिन्तो, मुणीसुन्तो
छ.	मुणिणो, मुणिस्स	मुणीण, मुणीणं

साहु (साधु)

च.	साहुणो, साहुस्स	साहूण, साहूणं
पं.	साहुणो, साहुत्तो, साहूओ, साहूउ, साहूहिन्तो	साहुत्तो, साहूओ, साहूउ साहूहिन्तो, साहूसुन्तो
छ.	साहुणो, साहूस्स	साहूण, साहूणं

दहि (दधि)

च.	दहिणो, दहिस्स,	दहीण, दहीणं
पं.	दहिणो, दहित्तो, दहीओ, दहीउ, दहीहिन्तो	दहित्तो, दहीओ, दहीउ, दहीहिन्तो, दहीसुन्तो
छ.	दहिणो, दहिस्स	दहीण, दहीणं

चतुर्थी एकवचन संस्कृत अनुसार मुणये (मुनये), साहवे (साधवे), वारिणे (वारिणे), महुणे (मधुने) आदि रूप भी होते हैं।

महु (मधु)

च.	महुणो, महुस्स	महूण, महूणं
पं.	महुणो, महुत्तो, महूओ, महूउ, महूहिन्तो,	महुत्तो, महूओ, महूउ, महूहिन्तो, महूसुन्तो
छ.	महुणो, महुस्स	महूण, महूणं

1. जिन शब्दों में **श्न-ष्ण-स्न-ह्न-ह्ण-क्ष्ण** हो तो उसका ण्ह होता है, सूक्ष्म शब्द के **क्ष्म** का **ण्ह** होता है और **ह्ल** का **ल्ह** होता है ।

उदा. **श्न-पण्हो** (प्रश्नः) | **ह्ण-पुव्वण्हो** (पूर्वाह्णः)
ष्ण-जिण्हू (जिष्णुः) | **क्ष्ण-सण्हं** (श्लक्ष्णम्)
स्न-जोण्हा (ज्योत्स्ना) | **क्ष्म-सण्हं** (सूक्ष्मम्)
स्न-ण्हाइ (स्नाति) | **ह्ल-पह्लाओ** (प्रह्लादः)
ह्न-जण्हू (जह्नुः) | **ह्ल-आल्हाओ** (आह्लादः)

2. शब्द के अन्दर **स्त** हो तो **त्थ** होता है और प्रारम्भ में **स्त** हो तो **थ** होता है । (२/४५)

उदा. **हत्थो** (हस्तः) | **थोत्तं** (स्तोत्रम्)
नत्थि (नास्ति) | **थुई** (स्तुतिः)

अपवाद - समस्त और स्तम्ब शब्द में **स्त** का **त्थ** अथवा **थ** नहीं होता है । उदा. समत्तो (समस्तः), तम्बो (स्तम्बः)

3. अनुस्वार के बाद **ह** आये तो **ह** का **घ** विकल्प से होता है । (१/२६४) उदा. सिंघो-सीहो (सिंहः), संघारो-संहारो (संहारः) **अपवाद** - कुछ स्थानों में अनुस्वार न हो तो भी **ह** का **घ** होता है । दाघो (दाहः) ।

शब्दार्थ (पुंलिंग)

अंगार, **अंगाल**, **इंगार**, **इंगाल** = (अङ्गार) अंगार
अवरण्ह (अपराह्ण) = दिन का अन्तिम प्रहर
अवराह (अपराध) = गुनाह, अपराध
कण्ह, किण्ह = (कृष्ण) वासुदेव
कवि (कपि) = बंदर
केवलि (केवलिन्) = केवलज्ञानी, सर्वज्ञ
गणि (गणिन्) = गणधर, गणी
गोयम (गौतम) = श्री महावीरस्वामी के प्रथम गणधर, गौतम
जंतु (जन्तु) = प्राणी, जीव

झुणि (ध्वनि) = शब्द
तरु (तरू) = वृक्ष
नमोक्कार = नमुक्कार (नमस्कार) नमन, प्रणाम, नमस्कार
निमेस (निमेष) = पलक
नेमि (नेमि) = नेमिनाथ, बाईसवें तीर्थंकर का नाम
पण्ह (प्रश्न) = प्रश्न
पयास (प्रकाश) = प्रकाश
पराभव (पराभव) = पराभव, हार
पसाय (प्रसाद) = मेहरबानी, कृपा, दया
पहु (प्रभु) = प्रभु, स्वामी
मच्चु (मृत्यु) = मृत्यु, मौत
मज्झण्ह (मध्याह्न) = दिन का मध्य भाग
मन्नु (मन्यु) = क्रोध
रिउ (रिपु) = शत्रु, दुश्मन
वण्हि (वह्नि) = अग्नि
विण्हु (विष्णु) = वासुदेव का नाम
सत्तु (शत्रु) = शत्रु, दुश्मन
संति (शान्ति) = शांतिनाथ, सोलहवें तीर्थंकर का नाम
संहार, संघार (संहार) = संहार, नाश करना
सिसु (शिशु) = बालक
हत्थि (हस्तिन्) = हाथी

(नपुंसकलिंग)

चंदण (चन्दन) = चंदन
जुद्ध (युद्ध) = युद्ध

(पुंलिंग + नपुंसकलिंग)

अच्छि (अक्षि) = आँख
जीवाउ (जीवातु) = जीवन, औषध

विशेषण

अण्णाणि (अज्ञानिन्) = अज्ञानी, मूर्ख
कामसम (कामसम) = काम समान
कोवसम (कोपसम) = क्रोध समान
जरागहिअ (जरागृहीत) = वृद्ध, बुढ़ापा, बुढ़ापे से घिरा हुआ
तिक्ख, तिण्ह (तीक्ष्ण) = तीखा, धारदार, तीक्ष्ण
पर (पर) = अन्य, श्रेष्ट, दूसरा
पुज्ज (पूज्य) = पूजा करने योग्य
बहु, बहुअ (बहु) = अधिक, ज्यादा, बहुत
भगवंत, भयवंत (भगवन्) = ऐश्वर्यवान, भगवान
भव्व (भव्य) = भव्य जीव, योग्य, सुन्दर
मंद (मन्द) = धीरे, थोड़ा, आलसी
महुर (मधुर) = अच्छा, मीठा
मोहसम (मोहसम) = मोह समान, अज्ञान समान

रत्त (रक्त) = रंगा हुआ, लाल, आसक्त	**लहु, लहुअ (लघु)** = तुच्छ, छोटा, **समीव (समीप)** = नजदीक, पास में

अव्यय

अन्नह, अन्नहा (अन्यथा) = विपरीत, उल्टा **किंतु (किन्तु)** = लेकिन **नत्थि (नास्ति)** = नहीं **बाहिं, बाहिरं (बहिस्)** = बाहर	**मणयं, मणियं, मणा (मनाक्)** = अल्प, थोड़ा

धातु

गण् (गण्) गिनना	**अव+मन्** (अव+मन्) अपमान करना

हिन्दी में अनुवाद करें–

1. सव्वण्णूणं अरिहंताणं भगवंताणं इक्को वि नमोक्कारो भवं छिंदेइ ।
2. जरागहिआ जंतुणो तं नत्थि, जं पराभवं न पावंति ।
3. आणंदो संतिस्स चेइए नच्चं करेज्जा ।
4. पच्चूसे भाणुणो पयासो रत्तो हवइ ।
5. नमो पुज्जाणं केवलीणं गुरूणं च ।
6. पंडिआ मच्चुणो णेव बीहंति ।
7. तुम्हे गुरूओ विणा सुत्तस्स अट्ठाइं न लहेह ।
8. जंतूण जीवाउं वारिमत्थि ।
9. रण्णे सिंघाणं हत्थीणं च जुद्धं होइ ।
10. केवली महुरेण झुणिणो पाणीण धम्ममुवइसइ ।
11. सूरिणो अवराहेण साहूणं कुज्झंति ।
12. अण्णाणिणो केवलिणो वयणं अवमन्नंति ।
13. निवईहिन्तो कवओ बहुधणं लहेइरे ।
14. अम्हे पहुणो पसाएण जीवामो ।
15. जइणो मणयं पि कासइ मन्नुं न कुणिज्जा ।
16. अंगाराणं कज्जेण चंदणस्स तरूं को डहेइ ?

17. मच्चुस्स सो पमाओ, जं जीवो जियँइ निमेसंपि ।
18. गिम्हस्स मज्झण्हे भाणुस्स तावो अईव तिक्खो होइ, पुव्वण्हे अवरण्हे य मंदो होइ ।
19. गोयमाओ गणिणो पण्हाणमुत्तरं जाणिमो ।
20. गुरुस्स विणएण मुरुक्खो वि पंडिओ होइ ।
21. नत्थि कामसमो वाही, नत्थि मोहसमो रिऊ ।
नत्थि कोवसमो वण्ही, नत्थि नाणा परं सुहं ।।1।।

प्राकृत में अनुवाद करें–

1. शिष्य गुरु को प्रश्न पूछते हैं ।
2. हम सर्वज्ञ भगवंत के पास धर्म सुनते हैं ।
3. अज्ञानियों से पंडित डरते हैं ।
4. मैं सदा पुष्पों से शांतिनाथ भगवान की पूजा करता हूँ ।
5. वह तीक्ष्ण शस्त्र से शत्रु (दुश्मन) को मारता है ।
6. शांति (जिनेश्वर) के ध्यान से कल्याण होता है ।
7. आलस प्राणियों का भयंकर दुश्मन है, लेकिन वीर पुरुष उसको जीतते हैं ।
8. केवली के वचन असत्य नहीं होते हैं ।
9. कृष्ण नेमि (जिनेश्वर) से सम्यक्त्व प्राप्त करते हैं ।
10. भौंरे मधु के लिए घूमते हैं ।
11. सैनिक राजा से द्रव्य की आशा रखते हैं ।
12. सिंह की आवाज से मनुष्यों का हृदय कम्पित होता है ।
13. चन्द्र का प्रकाश मन को आनंद देता है ।
14. बन्दर वृक्ष के पके हुए फल खाते हैं ।
15. हम गुरु के पास धर्म सुनते हैं ।
16. मनुष्य व्याधि से बहुत घबराते हैं ।
17. बालकों को प्रभु का पूजन पसन्द आता है ।
18. सिंह हाथियों को फाड़ते हैं ।
19. साधु शास्त्र का अपमान नहीं करते हैं ।
20. हाथियों से सिंह नहीं डरते हैं ।

• जियइ-देश्य धातु होने से ह्रस्व हुआ है, अन्यथा जीयइ प्रयोग होता है ।

पाठ - 13

(चालू) इकारान्त, उकारान्त पुंलिंग तथा नपुंसकलिंग नाम सत्तमी विभक्ति तथा संबोहण प्रत्यय (३/११, ३८, ३७, २६, ८८)

	एकवचन	बहुवचन
स.	म्मि, (सि)	सु,सुं
सं.	0	प्रथमा अनुसार

1. संबोधन एकवचन में अन्त्य स्वर विकल्प से दीर्घ होता है ।
2. नपुंसकलिंग संबोधन एकवचन में मूल रूप ही रहता है तथा बहुवचन में प्रथमा विभक्ति के रूप के समान ही है ।
3. अदस् शब्द का प्राकृत में **अमु** आदेश होता है और उसके रूप उकारान्त नाम के समान होते हैं ।

मुणि (मुनि)

स.	मुणिम्मि, मुणिंसि	मुणीसु, मुणीसुं
सं.	हे मुणी, मुणि	मुणउ, मुणओ, मुणिणो, मुणी

साहु (साधु)

स.	साहुम्मि, साहुंसि	साहूसु, साहूसुं
सं.	हे साहू, साहु	साहवो, साहउ, साहओ, साहुणो, साहू

दहि (दधि)

स.	दहिम्मि, दहिंसि	दहीसु, दहीसुं
सं.	हे दहि	दहीइं, दहीइँ, दहीणि

महु (मधु)

स.	महुम्मि, महुंसि	महूसु, महूसुं
सं.	हे महु	महूइं, महूइँ, महूणि

अमु (अदस्) पुंलिंग

प.	अमू	अमवो, अमउ, अमओ, अमुणो, अमू
बी.	अमुं	अमुणो, अमू

शेष रूप 'साहु' वत् (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प. बी.	अमुं शेष रूप पुंलिंगवत्	अमूइं, अमूइँ, अमूणि

सम्पूर्ण रूप नेमि (पुंलिंग)

प.	नेमी	नेमउ, नेमओ, नेमिणो, नेमी
बी.	नेमिं	नेमिणो, नेमी
त.	नेमिणा	नेमीहि, नेमीहिँ, नेमीहिं
च.	नेमिणो, नेमिस्स	नेमीण, नेमीणं
पं.	नेमिणो, नेमित्तो, नेमीओ, नेमीउ, नेमीहिन्तो	नेमित्तो, नेमीओ, नेमीउ नेमीहिन्तो, नेमीसुन्तो
छ.	नेमिणो, नेमिस्स	नेमीण, नेमीणं
स.	नेमिम्मि, नेमिंसि	नेमीसु, नेमीसुं
सं.	हे नेमी, नेमि	नेमउ, नेमओ, नेमिणो, नेमी

गुरु

प.	गुरू	गुरवो, गुरउ, गुरओ, गुरुणो, गुरू
बी.	गुरुं	गुरुणो, गुरू
त.	गुरुणा	गुरूहि, गुरूहिँ, गुरूहिं
च.	गुरुणो, गुरुस्स	गुरूण, गुरूणं
पं.	गुरुणो, गुरुत्तो, गुरूओ, गुरूउ, गुरूहिन्तो	गुरुत्तो, गुरूओ, गुरूउ, गुरूहिन्तो, गुरूसुन्तो
छ.	गुरुणो, गुरुस्स	गुरूण, गुरूणं
स.	गुरुम्मि, गुरुंसि	गुरूसु, गुरूसुं
सं.	गुरू, गुरु	गुरवो, गुरउ, गुरओ, गुरुणो, गुरू

वारि (नपुंसकलिंग)

प. बी.	वारिं	वारीइं, वारीइँ, वारीणि

शेष 'नेमि' वत्

सं.	हे वारि	हे वारीइं, वारीइँ, वारीणि

अंसु (अश्रु)

प. बी.	अंसुं	अंसूइं, अंसूइँ, अंसूणि

शेष 'गुरु' वत्

सं.	अंसु	अंसूइं, अंसूइँ, अंसूणि

शब्दार्थ (पुंलिंग)

अइसय (अतिशय) = अतिशय
अग्गि (अग्नि) = अग्नि, आग
असुर (असुर) = असुर, राक्षस
असुरिंद (असुरेन्द्र) = राक्षसों के स्वामी
इंद (इन्द्र) = इन्द्र
कंठ (कण्ठ) = गर्दन, गला
खण (क्षण) = समय, कालविशेष, क्षण
गरुल (गरुड) = पक्षिराज
गिरि (गिरि) = पर्वत
जिअलोअ / जिअलोग = (जीवलोक) दुनिया, संसार
जोह (योध) सैनिक, सिपाही
दोस (दोष) दुर्गुण, दोष
पक्खि (पक्षिन्) पक्षी
पसु (पशु) पशु
पाय (पात) गिरना, पतन
पाणि (पाणि) हाथ
मच्छ (मत्स्य) मछली
महावीर (महावीर) = चौबीसवें तीर्थंकर का नाम, महावीर
महुस्सव, महूसव, महोसव, महोच्छव (महोत्सव) = बड़ा उत्सव
मेरु (मेरु) = मेरुपर्वत
राग (राग) = राग, स्नेह
वज्जपाणि (वज्रपाणि) = इन्द्र
वाउ (वायु) = वायु, पवन, हवा
विज्जत्थि (विद्यार्थिन्) = विद्यार्थी, विद्या का अर्थी
विंझ (विन्ध्य) = विन्ध्याचल पर्वत
सक्क (शक्र) = इन्द्र
सत्तुंजय (शत्रुञ्जय) = सिद्धाचल तीर्थ
सर (सरस्) = सरोवर
सिद्धगिरि (सिद्धगिरि) = सिद्धाचल पर्वत, सिद्धगिरि
हरि (हरि) = इन्द्र, विष्णु
हार (हार) = माला, हार

नपुंसकलिंग

कल्ल (कल्य) गतदिन, पिछला दिन, आगामी दिन
जीविअ (जीवित) = जीवन
दव्व (द्रव्य) = धन, द्रव्य, संपत्ति
परमपय (परमपद) = उत्तम स्थान, मोक्ष
रक्खण (रक्षण) = रक्षण
विन्नाण (विज्ञान) = सद्बोध, कला, ज्ञान
वैरग्ग (वैराग्य) = वैराग्य, विराग
सरूव (स्वरूप) = स्वरूप

पुंलिंग + नपुंसकलिंग

चक्खु (चक्षुष्) = आँख, नेत्र
दिवस, दिवह (दिवस) = दिन, दिवस
पभाय, पहाय (प्रभात) = प्रातःकाल, सुबह
वज्ज, वइर (वज्र) वज्र, हीरा, इन्द्र का शस्त्र
विसयविस (विषयविष) = विषयरूपी जहर

विशेषण

अच्चंत (अत्यंत) = ज्यादा, अधिक
असार (असार) = साररहित, असार
आसन्न (आसन्न) = समीप, नजदीक
उत्तम, उत्तिम (उत्तम) = श्रेष्ठ, सुन्दर
किवण (कृपण) = कंजूस, लोभी
गुणी (गुणिन्) = गुणवान
दिग्घ, दीह, दीहर (दीर्घ) = दीर्घ, लम्बा
नायव्व (ज्ञातव्य) = जानने योग्य
पुव्व, पुरिम (पूर्व) = पहला, आगे का, पूर्व, अगला, प्राचीन
रहस्स (रहस्य) = गुप्त, गुह्य, एकान्त
वर (वर) = श्रेष्ठ, उत्तम

अव्यय

अन्नहि, अन्नह, अन्नत्थ (अन्यत्र) दूसरी जगह
एक्कसि, एक्कसिअं, एक्कइआ, एगया (एकदा) एक दिन, किसी समय
एण्हिं एत्ताहे, इदाणिं (णि), दाणि दाणिं दाणीं (इदानीम्) अभी
सम्मं (सम्यग्) अच्छी तरह
नउण, नउणाइ, नउणा (न पुनः) फिर से नहिं

धातु

चय्, **तर्**, **सक्क** **(शक्)** = शक्तिमान होना	**परि + हा**, **परि + धा** **(परि+धा)** = धारण करना, = पहिनना
चय् (त्यज्) = त्याग करना	**पूय्**, **पूज्** **(पूजय्)** = पूजन करना
जग्ग्, **जागर्** **(जागृ)** = जागना	**बुक्क् (गर्ज्)** = गर्जना करना, गाजना
जाय् (याच्) = मांगना	**भर् (भृ)** = भरना
ढिक्क् (गर्ज्) = बैल का गर्जना	**विराय् (वि + राज्)** = शोभा देना

हिन्दी में अनुवाद करें–

1. जोहा सत्तूसु सत्थाणि मेल्लिन्ति ।
2. विज्जत्थिणो पभाए पुव्वं चिअ जग्गंति ।
3. सीसा गुरुम्मि वच्छला हवंति ।
4. पक्खिणो तरूसुं वसंति ।
5. मुणिंसि परमं नाणमत्थि ।
6. जओ हरी पाणिम्मि वज्जं धरेइ तओ लोआ तं वज्जपाणि त्ति वयंति ।
7. सव्वण्णुणा जिणिंदेण समो न अन्नो देवो ।
8. सिद्धगिरिणा समं न अन्नं तित्थं ।
9. मेरुम्मि असुरा, असुरिंदा, देवा, देविंदा य पहुणो महावीरस्स जम्मस्स महोसवं कुणन्ति ।
10. पक्खीसु के उत्तमा संति ।
11. अग्गिंसि पाओ वरं, न उण सीलेण विरहियाणं जीविअं ।
12. साहूणं सच्चं सीलं तवो य भूसणमत्थि ।
13. मूढा पाणिणो इमस्स असारस्स संसारस्स सरूवं न जाणिज्ज ।
14. जं कल्ले कायव्वं तं अज्ज च्चिअ कायव्वं ।
15. अमूसुं तरूसुं कवी वसंति ।
16. हे सिसु ! तं दहिंसि बहुं आसत्तो सि ।

17. साहवो परोवयाराय नयराओ नयरंसि विहरेइरे ।

18. वसहो वसहं पासेइ ढिक्कइ अ ।

19. जणेसु साहू उत्तमा अत्थि ।

20. हत्थिणो विंझम्मि वसंति ।

21. हे सिसु ! तुं सम्मं अज्झयणं न अहिज्जेसि ।

22. अन्नाणीसुं सुत्ताणं रहस्सं न चिट्ठइ ।

23. गिम्हे दिग्घा दिवसा हुविरे ।

24. सिसू तं जणए वच्छलोसि ।

25. जो दोसे चयइ सो सव्वत्थ तरइ ।

26. गुणीसुं चेअ गुणिणो रज्जंति नागुणीसु ।

27. * सव्वेसु पाणीसुं तित्थयरा उत्तिमा संति ।

28. जं पहूणं रोएइ, तं चेव कुणंति सेवगा निच्चं ।

29. सच्चं सुअं पि सीलं, विन्नाणं तह तवं पि वेरग्गं ।
वच्चइ खणेण सव्वं, विसयविसेण जईणं पि ॥1॥

30. जह जह दोसो विरमइ, जह X विसएहि होइ वेरग्गं ।
तह तह वि नायव्वं, आसन्नं चिअ परमपयं ॥2॥

31. धन्नो सो जिअलोए, गुरवो निवसंति जस्स हिअयंमि ।
धन्नाणं वि सो धन्नो, गुरूण हिअए वसइ जो उ ॥3॥

प्राकृत में अनुवाद करें–

1. बालक कण्ठ में हार धारण करते हैं ।
2. इन्द्र देवों को तीर्थंकर के अतिशय कहते हैं ।
3. वह शहद में बहुत आसक्त है ।
4. सर्वज्ञ में जो गुण होते हैं वे गुण दूसरों में नहीं होते हैं ।
5. उस पर्वत पर जहाँ गुरु रहते हैं वहाँ मैं रहता हूँ ।

---

* ऐसे वाक्यों में छट्ठी या सप्तमी विभक्ति रखी जाती है ।

X पंचमी के स्थान पर तृतीया विभक्ति भी होती है । उदा. चोरेण बीहइ (चौराद् बिभेति)

6. गुरुओं का विनय करने से विद्यार्थियों में ज्ञान बढ़ता है ।
7. जैसे पशुओं में सिंह, पक्षियों में बाज पक्षी, मनुष्यों में राजा और देवों में इन्द्र उत्तम है, वैसे सभी धर्मों में जीवों का रक्षण उत्तम है ।
8. पक्षियों में उत्तम पक्षी कौन है ?
9. इस पानी में बहुत मछलियाँ हैं ।
10. अभी मैं शत्रुओं से लड़ता हूँ ।
11. प्राणियों को जीवन देनेवाला धर्म है ।
12. पर्वतों में मेरु उत्तम है ।
13. पण्डित अज्ञानियों का विश्वास नहीं करते हैं ।
14. मनुष्य तालाब में से जल भरता है ।
15. हे बालको ! तुम कहाँ जाते हो ?
16. हम सिद्धाचल जाते हैं ।
17. सरोवर के पानी में कमल है ।
18. साधु शत्रु से डरते नहीं हैं ।
19. भिक्षु कंजूस के पास द्रव्य मांगते हैं ।
20. बालक चन्द्र के दर्शन से नेत्र में आनन्द प्राप्त करते हैं ।
21. साधुओं को मृत्यु का भय नहीं होता है ।
22. मुनियों को गौतम गणधर के प्रति अत्यन्त राग है ।

पाठ - 14

भूतकाल

प्रत्यय

1. **व्यंजनान्त धातु** = सर्वपुरुष सर्ववचन - ईअ
2. **स्वरान्त धातु** = सर्वपुरुष सर्ववचन - * सी, ही, हीअ } (३/१६३,१६२)
3. **आर्ष प्राकृत में धातु के अंग को** = सर्वपुरुष और सर्ववचन में **त्था, त्थ** और **सु** प्रत्यय लगते हैं। ये प्रत्यय जोड़ते समय, पहले **अ** हो तो उसका **'इ'** होता है। (४/२१४)

1. व्यंजनांत धातुओं को सर्वपुरुष और सर्ववचन में **ईअ** प्रत्यय लगाया जाता है।

उदा. हस् + ईअ = हसीअ　　**पड् + ईअ** = पडीअ
कर् + ईअ = करीअ　　**बोह् + ईअ** = बोहीअ
वंद् + ईअ = वंदीअ

2. स्वरान्त धातुओं को सर्वपुरुष और सर्ववचन में **सी, ही** और **हीअ** प्रत्यय लगाया जाता है तथा प्रत्ययों के पूर्व विकल्प से **अ** लगता है।

उदा. ने + सी = नेसी　　**विकल्पपक्षे - नेअ + सी** = नेअसी
ने + ही = नेही　　**नेअ + ही** = नेअही
ने + हीअ = नेहीअ　　**नेअ + हीअ** = नेअहीअ
हो + सी = होसी,
हो + ही = होही,
हो + हीअ = होहीअ

3. व्यञनान्त धातुओं को **ए** प्रत्यय लगाकर सी, **ही** आदि का प्रयोग प्राकृत साहित्य में दिखाई देता है। उदा. सुण् + ए + सी = सुणेसी। किं इदाणिं रोदसि, मम तदा न सुणेसी (वासुदेव. पृ. २९-११)
4. प्राकृत में **कृ** धातु का **'का'** बनता है।

उदा. सर्वपुरुष - सर्ववचन - कासी, काही, काहीअ.

- प्राकृत में ह्यस्तन भूतकाल, परोक्ष भूतकाल अथवा अद्यतन भूतकाल के स्थान पर सामान्यतः भूतकाल के ही प्रत्यय लगाये जाते हैं।

* इस प्रत्यय का स्वर कुछ स्थानों में ह्रस्व भी होता है।

5. आर्ष प्राकृत में सर्वपुरुष सर्ववचन में धातु के अंग को **त्था, त्थ** और + **सु** प्रत्यय लगाया जाता है ।

त्था, त्थ और **सु** प्रत्यय लगाने पर पूर्व **अ** का **इ** होता है । (४/२१४)

उदा. कह + त्था = कहित्था	**हस + त्था** = हसित्था
नेअ + त्था = नेइत्था	**जिण + त्था** = जिणित्था

6. सु प्रत्यय लगाने पर पूर्व के अक्षर पर अनुस्वार रखा जाता है–

उदा. कह + सु = कहिंसु	**हस + सु** = हसिंसु
ने + सु = नेंसु	**जिण + सु** = जिणिंसु
नेअ + सु = नेइंसु	

इसी प्रकार –

बुह - बोहित्था,	बोहिंसु
हो - होत्था,	होंसु
हव् - हवित्था,	हविंसु
मिला - मिलाइत्था,	मिलाइंसु
उवे (उप + इ) उवेइत्था,	उवेंसु, उवेइंसु

उदा. रायगिहे नयरे सेणिओ नाम राया होत्था. (एकव.)

समणस्स भगवओ महावीरस्स एगारह गणहरा होत्था (बहुव.)

7. **सु** प्रत्यय लगाने पर कुछ स्थानों में धातु के पहले '**अ**' लगता है ।

उदा. कह + सु = अकहिंसु	**भव + सु** = अभविंसु
कर + सु = अकरिंसु	**जय + सु** = अजइंसु

अकहिंसु जिणो जयंतीए (एकव.)

किं अरिहंता गणहरदेवा वा सक्कयसिद्धंतकरणे असमत्था अभविंसु ? पाइअभासाए सिद्धंतं अकरिंसु (बहुव.) (सम्यक्त्वसप्ततिकावृत्तौ)

अस् धातु के रूप (३/१६४)

सर्वपुरुष }
सर्ववचन } आसि, अहेसि

- संस्कृत सिद्ध प्रयोग से होनेवाले आर्ष रूप

  ब्रू = अब्बवी । (अब्रवीत्) तृ. पु. एकवचन

+ **सु** प्रत्यय लगाने पर कुछ स्थानों में पूर्व **अ** का **ए** भी होता है । उदा. परिकहेंसु (बृह. गा. 4685) उदीरेंसु, निज्जरेंसु (भगवती-शत-१, उद्देशा-३, सूत्र-२८

कृ = अकासी / अकासि । (अकार्षीत्) तृ. पु. एकवचन
वच् = अवोच (अवोचत्) तृ. पु. एकवचन
भू = अभू (हू) (अभूत) तृ. पु. एकवचन
अस् = आसी (आसीत्) तृ. पु. एकवचन
अस् = आसिमो, आसिमु (आस्म) प्र. पु. बहुवचन
दृश् = अदृक्खु (अद्राक्षुः) तृ. पु. एकवचन

8. शब्द के अन्दर **ष्ट** का **ट्ठ** होता है और प्रारम्भ में **ष्ट** का **ठ** होता है। (२/३२,३४)

उदा. पुट्ठो (स्पृष्टः) **कट्ठं** (कष्टम्) **अणिट्ठं** (अनिष्टम्)

अपवाद - उष्ट्र, इष्टा और संदृष्ट इन शब्दों में ष्ट का ट्ठ नहीं होता है।

उदा. उट्टो (उष्ट्रः) **इट्टा** (इष्टा) **संदट्टो** (संदृष्टः)

9. सरअ (शरद), पाउस (प्रावृष), तरणि (तरणि) इन शब्दों का प्रयोग पुंलिंग में होता है। (१/३१)

शब्दार्थ (पुंलिंग)

अभयकुमार (अभयकुमार) = श्रेणिक राजा का पुत्र अभयकुमार
अमर (अमर) = अमर, देव
उसभ, उसह, (ऋषभ, वृषभ) = प्रथम जिनेश्वर का नाम, ऋषभदेव
काल (काल) = समय, काल
केसरि (केसरिन्) = सिंह
गणहर (गणधर) = गणधर
घड (घट) = घड़ा
जइणधम्म (जैनधर्म) = जिनेश्वर का धर्म
जय (जय) = जय, जीत
जिणिंद, जिणंद (जिनेन्द्र) = जिनेन्द्र, तीर्थंकर
जीवियंत (जीवितान्त) = प्राणों का नाश
दुज्जण (दुर्जन) = दुर्जन, दुष्ट
देस (देश) = देश
धअ, झअ (ध्वज) = ध्वज
नय (नय) = नय, नीति
नरवइ (नरपति) = राजा
पवण (पवन) = पवन, वायु
पहिअ (पथिक) = मुसाफिर
पारेवअ, पारावअ (पारावत) = कबूतर
भव्वजीव (भव्यजीव) = भव्यजीव
रावण (रावण) = विशेषनाम, रावण
वसह (वृषभ) = बैल
वीसाम, विस्साम (विश्राम)=विश्रान्ति, विराम
सड्ढ (श्राद्ध) = श्रावक, श्रद्धालु
सरअ (शरद) = शरदऋतु
ससंक (शशाङ्क) = चन्द्र
संजम (संयम) = संयम, चारित्र, पाप से विरति
सीयाल (शीतकाल) = शीतऋतु
सेणिअ (श्रेणिक) = मगधदेश के राजा का नाम
हालिअ (हालिक) = किसान

नपुंसकलिंग

जाल (जाल) = जाल, पाश

दंसणमेत्त, दंसणमत्त (दर्शनमात्र) = देखने मात्र से

देववंदण (देववन्दन) = देववन्दन, जिनेश्वर को नमनक्रिया

नाम (नामन्) = नाम, संज्ञा

पढण (पठन) = पढ़ना

रायगिह (राजगृह) = राजगृह नगर

वेयावच्च, वेयावडिय (वैयावृत्य) = सेवा, शुश्रूषा

संसारचक्क (संसारचक्र) = संसाररूपी चक्र

सोत्त (श्रोत्र) = कर्ण, कान

पुंलिंग + नपुंसकलिंग

परक्कम, पराकम (पराक्रम) = शक्ति, सामर्थ्य, बल

वरिस, वास (वर्ष) = बारिस, मेघ, भारत आदि क्षेत्र, संवत्सर, साल

नपुंसकलिंग + स्त्रीलिंग

हेट्ठ, हिट्ठ (अधस्) = नीचे

विशेषण

करुणाजुअ (करुणायुत) = दया से व्याप्त

दत्त, दिण्ण (दत्त) = दिया हुआ

दाहिणिल्ल (दक्खिणिल्ल

दाक्षिणात्य) = दक्षिण दिशा का

दुहिअ, दुक्खिअ (दुःखित) = दुःखी, पीड़ित

धम्मिट्ठ (धर्मिष्ठ) = धर्मपरायण, धर्मवान

पढम (प्रथम) = प्रथम, पहला, आद्य

पावासु, पवासु, पवासि = (प्रवासिन्) मुसाफिर, प्रवासी

विसम (विषम) = उग्र, प्रचण्ड, सख्त

सडिअ (शटित) = सड़ा हुआ

साउ (स्वादु) = मधुर, स्वादिष्ट

सुहि (सुखिन्) = सुखी

अव्यय

अणंतखुत्तो (अनंतकृत्वस्) = अनंतबार

अहवा, अहव (अथवा) = या, अथवा, कि

जइ (यदि) = जो

पुरा (पुरस्) = पहले

सहसा (सहसा) = अचानक, तुरन्त, एकदम

धातु

कुण् (कृ) = करना	**ववस् (वि+अव्+सो)** = प्रयत्न करना, व्यवसाय करना
पढ् (पठ्) = पढ़ना	**विस्सम्, वीसम् (वि+श्रम्)** = विश्राम करना
रय् (रच्) = रचना करना,	**सह् (राज्)** = शोभा देना
वा + गर् (वि+आ+कृ) = कहना, बोलना, प्रतिपादन करना	

हिन्दी में अनुवाद करें–

1. गोयमो गणहरो पहुं महावीरं धम्मस्स अधम्मस्स य फलं पुच्छीअ ।
2. पच्चुसे साहुणो पुरिमं देववंदणं समायरीअ, पच्छा य सत्थाणि पढीअ ।
3. रायगिहे नयरे सेणिओ नाम नरवई होत्था, तस्स पुत्तो अभयकुमारो नाम आसि, सो य विन्नाणे अईव पंडिओ हुवीअ ।
4. गिम्हे काले विसमेण आयवेण हालिओ दुक्खिओ होसी ।
5. अज्ज च्च कुंभारो बहू घडे कासी ।
6. सरए ससंको जणस्स हिए आणंदं काहीअ ।
7. सीयाले मयंकस्स पयासो सीयलो अहेसि ।
8. बालो जणयस्स विओएण दुहिओ अभू ।
9. नेहेण सो अच्चंतं दुक्खं पावीअ ।
10. तित्थयराणं उसहो पढमो होत्था ।
11. नाणेण दंसणेण संजमेण तवेण य साहवो सोहिंसु ।
12. ते जिणिंदं अदक्खु, दंसणमेत्तेण य सम्मत्तं चरित्तं च लहीअ ।
13. जो जारिसं ववसेज्ज फलं पि सो तारिसं लहेज्ज ।
14. निट्ठुरो जणो सुत्ते वि जणे खग्गेण पहरीअ ।
15. धम्मो धम्मिट्ठं पुरिसं सग्गं नेसी ।
16. नरिंदो देसस्स जएण तुसीअ ।
17. पक्खी उज्जाणे तरूसुं महुरं सद्दं कुणीअ ।
18. स अवोच तुं अधम्मं काही, तेण दुहं लहीअ ।
19. पुरा अम्हे दुवे बंधुणो आसिमो ।
20. अम्हो मग्गे साऊणि फलाइं जेमीअ ।
21. स अपढणेण मुक्खो होत्था ।
22. स तह नरिंद सेवित्था जहा बहुं दव्वं तस्स होही ।

23. पारेवओ सडिअं धन्नं कया वि न खाएज्जा ।
24. केसरी अद्य उज्जाणे वसीअ इअ सो अब्बवी ।
25. गणहरा सुत्ताणि रइंसु ।
26. जिणीसरो अड्डं वागरित्था ।
27. बंभचेरेण बंभणा जाइंसु ।
28. सोत्तं सुएणं न हि कुण्डलेण, दाणेण पाणी न य भूसणेण ।
देहो सहेइ करुणाजुआणं परोवयारेण न चंदणेण ।।

प्राकृत में अनुवाद करें–

1. अमृत पीया लेकिन अमर नहीं हुआ ।
2. पराक्रम से शत्रुओं को जीता ।
3. मुसाफिरों ने वृक्ष के नीचे विश्रान्ति ली ।
4. राम ने गुरु के आदेश का अनुसरण किया इसलिए सुखी हुआ है ।
5. मुसाफिर ने किसान को रास्ता पूछा ।
6. दक्षिण दिशा का पवन बारिस लाया ।
7. सज्जन दुर्जन के जाल में फँसा ।
8. उसने प्राणों के नष्ट होने पर भी अदत्त ग्रहण नहीं किया ।
9. जैन धर्म में जैसा तत्त्वों का ज्ञान देखा, वैसा अन्य में नहीं देखा ।
10. सुख और दुःख इस संसार चक्र में अनंतबार जीव ने भुगता है, उसमें आश्चर्य क्या ?
11. तुमने पाप से बचाया अतः तुम्हारे जैसा दूसरा उत्तम कौन हो ?
12. रावण ने नीति का उल्लंघन किया, इस कारण वह मृत्यु पाया ।
13. पंडित मृत्यु से नहीं डरे ।
14. शिष्यों ने गुरु के पास ज्ञान ग्रहण किया ।
15. बहुत से भव्य जीवों ने तीर्थंकर की पूजा से नित्य सुख प्राप्त किया ।
16. तुम दोनों प्रभात में कहाँ रहे ?
17. हम इस नगर में रहते हैं ।
18. हमें प्रभु महावीर से धर्म प्राप्त हुआ ।
19. यहाँ धर्म वही, जो धन और सुख का कारण है ।
20. उनमें ज्ञान था इसलिए उनको पूजा गया ।
21. तुम गुरु की वैयावृत्य से खूब होशियार हुए ।
22. वह नगर के बाहर गया और उसने भालुओं का युद्ध देखा ।
23. मंदिर के ध्वज पर मैंने मयूर देखा ।

पाठ - 15

आज्ञार्थ और विध्यर्थ

आज्ञार्थ और विध्यर्थ के प्रत्यय समान ही हैं ।

(३/१७६, १७३, १७४, १७५)

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	मु	मो
द्वि. पु.	हि, सु, इज्जसु, इज्जहि, इज्जे, 0 (लुक्)	ह
तृ. पु.	उ, (तु), (ए)	न्तु

1. आज्ञा, आशा, प्रार्थना, आशीर्वाद, योग्यता, उपदेश, शक्यता, संभव, धर्म आदि अर्थ में आज्ञार्थ और विध्यर्थ का प्रयोग होता है ।
2. ये (उपर्युक्त) प्रत्यय लगाने पर पूर्व में **अ** हो तो **अ** का **ए** विकल्प से होता है । (३/१५८)

   उदा. जाण् + अ + मु = जाणेमु-जाणमु
3. •**इज्जसु, इज्जहि, इज्जे, 0 (लुक्)** ये प्रत्यय अकारान्त अंगवाले धातुओं को ही लगते हैं । (३/१७५)

   उदा. गच्छ् + अ + इज्जसु = गच्छिज्जसु, गच्छिज्जहि, गच्छिज्जे, गच्छ.
4. आर्ष प्राकृत में दूसरे पुरुष एकवचन में **इज्जसि, इज्जासि, इज्जाहि** प्रत्यय भी लगाये जाते हैं । (३/१६५)

   उदा. गच्छ् + अ + इज्जसि = गच्छिज्जसि, गच्छेज्जसि, गच्छिज्जासि, गच्छेज्जासि, गच्छिज्जाहि, गच्छेज्जाहि आदि रूप होते हैं ।
5. **हि** प्रत्यय लगाने पर पूर्व का स्वर दीर्घ भी होता है ।

   उदा. गच्छ + हि = गच्छाहि, **पढ + हि** = पढाहि
6. **ह** प्रत्यय लगाने पर **ज्जा** आगम विकल्प से रखा जाता है ।

   उदा. गच्छेज्जाह अथवा गच्छेह

स्वरान्त धातुओं को भी विकल्प से **'अ'** प्रत्यय लगाकर तथा छठे पाठ में दिये हुए **ज्ज, ज्जा** के नियम ध्यान में रखकर विध्यर्थ-आज्ञार्थ के रूप करें ।

• आर्ष में 'इज्जासु' प्रत्यय भी आता है – गच्छिज्जासु.

हस्

	एकवचन	बहुवचन
प्र.पु.	हसमु, हसामु, हसिमु, हसेमु	हसमो, हसामो, हसिमो, हसेमो
द्वि.पु.	हसहि, हसेहि, हससु, हसेसु, हसिज्जसु, हसेज्जसु, हसिज्जहि, हसेज्जहि, हसिज्जे, हसेज्जे, हस, हसे	हसह, हसेह

आर्ष में -

[हसिज्जसि, हसेज्जसि, हसिज्जासि, हसेज्जासि, हसिज्जाहि, हसेज्जाहि, हसाहि]	हसिज्जाह, हसेज्जाह

तृ.पु.	हसउ, हसेउ, हसए, हसे,	हसन्तु, हसेन्तु, हसिन्तु

सर्वपुरुष सर्ववचन = हसेज्ज, हसेज्जा, हसिज्ज, हसिज्जा

ने [नी]

प्र.पु.	नेमु	नेमो
द्वि.पु.	नेहि, नेसु, [नेइज्जसि, नेइज्जासि, नेइज्जाहि]	नेह [नेज्जाह]
तृ.पु.	नेउ	नेन्तु, निन्तु

दा - दे

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	देमु	देमो
द्वितीय पुरुष	देहि, देसु, [देइज्जसि, देइज्जासि, देइज्जाहि]	देह देज्जाह
तृतीय पुरुष	देउ	देन्तु, दिन्तु

अ प्रत्यय लगाने के बाद ने + अ = नेअ अंग के रूप

प्रथम पुरुष	नेअमु, नेआमु, नेइमु, नेएमु	नेअमो, नेआमो, नेइमो, नेएमो,
द्वितीय	नेअहि, नेएहि नेअसु, नेएसु नेइज्जसु, नेएज्जसु, नेइज्जहि, नेएज्जहि, नेइज्जे, नेएज्जे, नेअ, नेए [नेइज्जसि, नेएज्जसि, नेइज्जासि, नेएज्जासि, नेइज्जाहि, नेएज्जाहि, नेआहि]	नेअह, नेएह नेइज्जाह, नेएज्जाह
तृतीय पुरुष	नेअउ, नेएउ, नेअए	नेअन्तु, नेएन्तु, नेइन्तु

पुरुषबोधक प्रत्यय के पूर्व ज्ज-ज्जा लगाने के बाद - नेज्ज-नेज्जा अंग के रूप

प्रथम पुरुष	नेज्जमु, नेज्जामु, नेज्जिमु, नेज्जेमु, नेज्ज, नेज्जा	नेज्जमो, नेज्जामो, नेज्जिमो, नेज्जेमो, नेज्ज, नेज्जा

द्वितीय पुरुष	नेज्जहि, नेज्जाहि, नेज्जेहि, नेज्जसु, नेज्जासु, नेज्जेसु, नेज्जिज्जसु, नेज्जेज्जसु, नेज्जिज्जहि, नेज्जेज्जहि, नेज्जिज्जे, नेज्जेज्जे	नेज्जह, नेज्जाह, नेज्जेह,
	नेज्ज, नेज्जा,	नेज्ज, नेज्जा,
	[नेज्जिज्जसि, नेज्जेज्जसि, नेज्जिज्जासि, नेज्जेज्जासि, नेज्जिज्जाहि, नेज्जेज्जाहि, नेज्जाहि]	नेज्जिज्जाह, नेज्जेज्जाह,
तृतीय पुरुष	नेज्जउ, नेज्जाउ, नेज्जेउ, नेज्जए, नेज्जे,	नेज्जन्तु, नेज्जान्तु, नेज्जिन्तु, नेज्जेन्तु,
	नेज्ज, नेज्जा	नेज्ज, नेज्जा

स्वरान्त धातु में ज्ज-ज्जा के पूर्व अ कार आता है तब नेएज्ज - नेएज्जा अंग के रूप

प्रथम पुरुष	नेएज्जमु, नेएज्जामु, नेएज्जिमु, नेएज्जेमु, नेएज्ज, नेएज्जा	नेएज्जमो, नेएज्जामो, नेएज्जिमो, नेएज्जेमो, नेएज्ज, नेएज्जा

इसी प्रकार द्वितीय और तृतीय पुरुष के रूप करें ।

7. विध्यर्थ में **'ज्ज'** अंगवाले धातु को सर्वपुरुष सर्ववचन में **'इ'** प्रत्यय भी लगाया जाता है । उदा.

सर्वपुरुष सर्ववचन	होज्ज + इ = होज्जइ, होज्जा + इ = होज्जाइ, हसेज्ज + इ = हसेज्जइ,	होएज्ज + इ = होएज्जइ, होएज्जा + इ = होएज्जाइ, हसेज्जा + इ = हसेज्जाइ

8. संस्कृत के तैयार आज्ञार्थ और विध्यर्थ के रूपों में प्राकृत नियमानुसार परिवर्तन होकर निम्नलिखित रूपों का भी प्रयोग होता है । उदा.

समायरे (समाचरेत्)	तृ.पु. एकवचन	**वज्जए** (वर्जयेत्)	तृ.पु. एकव.
चरे (चरेत्)	तृ.पु. एकवचन	**लभे** (लभेत्)	तृ.पु. एकव.
पढे (पढेत्)	तृ.पु. एकवचन	**निवारए** (निवारयेत्)	तृ.पु. एकव.
सिया (स्यात्)	तृ.पु. एकवचन	**बूया** (ब्रूयात्)	तृ.पु. एकव.
कुज्जा (कुर्यात्)	तृ.पु. एकवचन	**बूहि** (ब्रूहि)	द्वि.पु. एकव.
अत्थु (अस्तु)	तृ.पु. एकवचन	**संतु** (सन्तु)	तृ.पु. एकव.

9. शब्द के अन्दर **औ** हो तो **ओ** होता है, पौर वगैरह शब्दों में **औ** का **अउ** होता है तथा गौरव शब्द में **औ** का **आ** और **अउ** होता है। (१/१५९, १६२)

उदा.	**जोव्वणं** (यौवनम्)	**पउरा** (पौराः)
	कोसिओ (कौशिकः)	**पउरिसं** (पौरुषम्)
	कोसंबी (कौशाम्बी)	**मउणं** (मौनम्)
	गारवं, गउरवं (गौरवम्)	

10. शब्द के अन्दर **ऐ** का **ए** होता है तथा दैत्यादि शब्दों में **ऐ** का **अइ** होता है। (१/१४८, १५१)

उदा.	**सेला** (शैला)	**दइच्चो** (दैत्यः)
	सेन्नं (सैन्यम्)	**अइसरिअं** (ऐश्वर्यम्)
	तेलुक्कं (त्रैलोक्यम्)	**वइएसो** (वैदेशः)
	एरावणो (ऐरावणः)	**सइरं** (स्वैरम्)
		चइत्तं (चैत्यम्)

(**दैत्यादि** = दैत्य, ऐश्वर्य, कैलास, चैत्य, भैरव, वैजवन, वैदेश, वैदेह, वैदर्भ, वैश्वानर, वैशाख, वैशाल, वैश्रवण, वैशम्पायन, वैतालिक, स्वैर और चैत्य।)

11. शब्द के अन्दर **र्ह** संयुक्त व्यंजन हो तो अन्त्य **ह** के पूर्व इ रखा जाता है। (२/१०४)

उदा. **अरिहंतो** (अर्हन्) **गरिहा** (गर्हा)

12. शब्द के अन्दर **र्त्त** का **ट्ट** होता है – (२/३०)

उदा.	**पयट्टइ** (प्रवर्तते)	**नट्टओ** (नर्त्तकः)
	संवट्टिअं (संवर्तितम्)	**केवट्टो** (केवर्त्तः)

अपवाद - धूर्त आदि शब्दों में **र्त्त** का **ट्ट** नहीं होता है –

उदा. धुत्तो (धूर्त:)   **कित्ती** (कीर्ति:)

[**धूर्त आदि** = धूर्त, कीर्ति, आवर्तमान, मूर्त और मुहूर्त ।]

शब्दार्थ (पुंलिंग)

अमयरस (अमृतरस) = सुधारस, अमृत का रस

उज्जोग (उद्योग) = प्रयत्न, उद्यम

गव्व (गर्व) = मान, अभिमान

घण (घन) = मेघ, बादल

जलण (ज्वलन) = अग्नि

नायपुत्त, नायउत्त (ज्ञातपुत्र) = महावीर भगवान का नाम, ज्ञातपुत्र

निव (नृप) = राजा

पक्ख (पक्ष) = अर्धमास,

पाय (पाद) = पैर, श्लोक का चौथा भाग

पायड, पयड (प्रकट) = प्रकट, खुला

पिय (प्रिय) = पति, स्वामी

भव (भव) = संसार

मुसावाय, मूसावाय, मोसावाय (मृषावाद) = असत्यभाषण, = झूठ बोलना

वावार (व्यापार) = व्यापार, व्यवसाय

विज्जाहर (विद्याधर) = विद्याधर, विद्यावान

विरोह (विरोध) = विरुद्धता

विहव (विभव) = समृद्धि, ऐश्वर्य

वेसवण, वेसमण (वैश्रवण) = कुबेर

नपुंसकलिंग

अवज्झाण (अपध्यान) = दुर्ध्यान, दुष्ट चिंतन

गिह (गृह) = घर

गोविसाण (गोविषाण) = गाय का सींग

चिंतण (चिन्तन) = सोचना

जोव्वण (यौवन) = तारुण्य, युवानी

वागरण, वायरण, वारण (व्याकरण)=व्याकरण शास्त्र, उपदेश, विशेषकथन, उत्तर

समायरण (समाचरण) = आचरण करना

(पुंलिंग + नपुंसकलिंग)

गुण (गुण) = गुण

पय (पद) = विभक्ति अंतवाला शब्द, पद, शब्दसमूह

भप्प, भस्स (भस्मन्) = भस्म, राख

विमाण (विमान) = विमान, विद्याधर, देव का वाहन

विस (विष) = विष, जहर

सिलोगद्ध (श्लोकार्ध) = श्लोक का आधा भाग

विशेषण

अपुव्व / **अउव्व** (**अपूर्व**) = अद्वितीय, नया	**परलोयहिअ (परलोकहित)** = परलोक में हित करनेवाला
खल (खल) = दुर्जन, अधम पुरुष	**पिय (प्रिय)** = प्रिय, प्यारा
गव्विअ (गर्वित) = अभिमानी	**विहवि (विभविन्)** = समृद्धिवाला
जइण (जैन) = जिनसंबंधी, जैन, जिनेश्वर का भक्त	**हिय (हित)** = हितकर

अव्यय

चिरं (चिरम्) = दीर्घकाल पर्यन्त, लम्बे समय तक	**माइं** / **मा** (**मा**) = निषेध अर्थ में, नकार
नाम (नाम) = वाक्यालंकार, पादपूर्ति, संभावना अर्थ में, आमंत्रण अर्थ में	**मुहा (मुधा)** = व्यर्थ, निकम्मा,
नवरि / **नवर** / **नवरं** = (केवल) केवल, मात्र	**सिक्खिउं (हेत्वर्थ कृदन्त) (शिक्षितुम्)** = पढ़ने हेतु

धातु

अरिह् (अर्ह्) = लायक होना, योग्य होना, पूजा करना	कर्म का क्षय करना, नाश करना
उज्जम् (उद् + यम्) = उद्यम करना, प्रयत्न करना	**पवट्ट** / **पयट्ट** (**प्र + वृत् = वर्त्**) = प्रवृत्ति करना, प्रवर्तना
उवज्ज् (उत् +पद्य) = उत्पन्न होना	**पमज्ज् (प्र + मद्) प्रमाद करना** =भूलना
आ-दिस् (आ + दिश्) = आदेश करना, कहना	**भज्ज् (भ्रस्ज्)** = भूंजना, जलाना
निज्जर् (नि + जृ = जर्) = क्षय करना,	**मर् (मृ)** = मरना
	वि + रम् (वि + रम्) = रुकना, विराम पाना

हिन्दी में अनुवाद करें–

1. तुम्हे एत्थ चिट्ठेह, वीरं जिणं अम्हे अच्चेमो ।
2. सच्चं बोलिज्जा ।
3. धम्मं समायरे ।
4. उज्जमेण विणा धणं न लहेमु ।

5. सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू ।
6. जो गुरुकुले निच्चं वसेज्ज, सो सिक्खणं अरिहेइ ।
7. मुसावायं न वएज्जसि ।
8. तुं नयं न चयिज्जे ।
9. जइ तुम्हे विज्जत्थिणो अत्थि, तया सुहं चएह पढणे य उज्जमह ।
10. अहं दुद्धं पासी, तुम्हे वि पिवेह ।
11. तुब्भे साहूणं समीवं हियाइं वयणाइं सुणिज्जाह, अहंपि सुणामु ।
12. भवाओ विरत्ताणं पुरिसाणं गिहे वासो किं रोएज्जा ? ।
13. जइणं सासणं चिरं जयउ ।
14. आइरिआ दीहं कालं जिणिंतु ।
15. नायपुत्तो तित्थं पवट्टेउ ।
16. तुं अकज्जं न कुणेज्जसु, सच्चं च वइज्जहि ।
17. गुरूणं विणएण वेयावडिएण य नाणं पढे ।
18. अत्थो च्चिअ परिवड्ढउ, जेण गुणा पायडा हुंति ।
19. जइ सिवं इच्छेह, तया कामेहिन्तो विरमेज्ज ।
20. सज्जणे तुम्हे मा निन्देह ।
21. पाणीणं अप्पकेरं नाणं दंसणं चरित्तं च अत्थि, न अन्नं किं पि ? तओ तेहिं चिय संसारा पारं वच्चेह ।
22. सढेसु माइं वीससेज्जइ ।
23. सज्जणेहिं सद्धिं विरोहं कया वि न कुज्जा ।
24. हे ईसर ! अम्हारिसे पावे जणे रक्ख रक्खेहि ।
25. पाणिवहो धम्माय न सिया ।
26. कासइ न वीससे ।
27. सच्चं पियं च परलोयहियं च वएज्जा नरा ।
28. जइ न हुज्जइ आयरिआ, को तया जाणिज्ज सत्थस्स सारं ? ।
29. होज्जा जले वि जलणो, होज्जा खीरं पि गोविसाणाओ ।
अमयरसो वि विसाओ, न य पाणिवहा हवइ धम्मो ॥1॥
30. वरिसंतु घणा मा वा, मरंतु रिउणो अहं निवो होज्जा ।
सो जिणउ परो भज्जउ, एवं चिंतणमवज्झाणं ॥2॥
31. गुणिणो गुणेहिं विहवेहि, विहविणो होंतु गव्विआ नाम ।
दोसेहि नवरि गव्वो, खलाण मग्गो च्चिअ अउव्वो ॥3॥

32. जइ वि दिवसेण पयं, धरेह पक्खेण वा सिलोगद्धं ।
उज्जोगं मा मुंचह, जइ इच्छह सिक्खिउं नाणं ।।4।।

33. कुणउ तवं पालउ, संजमं पढउ सयलसत्थाइं ।
जाव न झायइ जीवो, ताव न मुक्खो जिणो भणइ ।।5।।

प्राकृत में अनुवाद करें–

1. प्रभात में स्तोत्रों द्वारा प्रभु की स्तुति करनी चाहिए और बाद में अध्ययन करना चाहिए ।
2. व्यापार की तरह मनुष्य को हमेशा धर्म में भी उद्यम करना चाहिए ।
3. विद्याधर विमानों द्वारा गमन करें ।
4. इन्द्र ने कुबेर को हुकम किया कि ज्ञातपुत्र के घर द्रव्य की वृष्टि करो ।
5. तुम धर्म से जीओ और सत्य से सुखी बनो ।
6. गुरु के आदेश का उल्लंघन नहीं करना चाहिए ।
7. हे बालक ! तू व्यर्थ ही राख में घी मत डाल ।
8. तुम्हें उपाध्याय के पास व्याकरण सीखना चाहिए ।
9. जवानी में धर्म करना चाहिए ।
10. करणीय कार्य में प्रमाद नहीं करना चाहिए ।
11. साधुओं को दिन में ही विहार करना चाहिए ।
12. तू व्यर्थ कोप न कर, हित को सुन ।
13. तुम पंडित हो इसलिए तत्त्वों का विचार करो ।
14. लोभ को संतोष द्वारा छोड़ ।
15. सभी तीर्थों में शत्रुंजय तीर्थ उत्तम है इसलिए तू वहाँ जा, कल्याण कर और पापों का क्षय कर ।
16. संतोष में जैसा सुख है वैसा सुख अन्य में नहीं है इसलिए संतोष धारण करना चाहिए ।
17. जीव वृद्धावस्था में धर्म करने के लिए समर्थ नहीं होता है ।
18. अच्छी तरह से पका हुआ अनाज खाना चाहिए ।
19. प्रतिदिन जिनेश्वर का दर्शन और गुरु का उपदेश सुनना चाहिए ।
20. जो संसार से तारनेवाला है उस ईश्वर की निन्दा मत कर ।

पाठ 16

आकारान्त ह्रस्व तथा दीर्घ इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग नाम प्रत्यय

(३/२९, २७, १८, ७, ६, ९, ५, १२४, १/२७)

	एकवचन	बहुवचन
प.	0	उ, ओ, 0
बी.	म्	उ, ओ, 0
त.	अ, आ, इ, ए	हि, हिँ, हिं
च.	अ, आ, इ, ए	ण, णं
पं.	अ, आ, इ, ए, त्तो, ओ, उ, हिन्तो	त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो
छ.	अ, आ, इ, ए	ण, णं
स.	अ, आ, इ, ए	सु, सुं
सं.	0	उ, ओ, 0

1. **म्** और **त्तो** प्रत्यय के पूर्व दीर्घस्वर हो तो ह्रस्व होता है। (३/३६)
   उदा. माला + म् = मालं, **नई + म्** = नइं, **वहू + म्** = वहुं
2. तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी और सप्तमी विभक्ति का **आ** प्रत्यय, आकारान्त स्त्रीलिंग नामों को नहीं लगता है। (३/३०)
   उदा. मालाअ, मालाइ, मालाए
3. **म्** और **त्तो** के अतिरिक्त सभी विभक्ति के प्रत्ययों के पूर्व ह्रस्व स्वर हो तो दीर्घ होता है। (३/४२)
   उदा. प. बहुव. मइ + ओ = मईओ, मईउ, मई
   पं. एकव. मईअ, मईआ, मईइ, मईए,
   मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो
4. दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिंग नामों को प्रथमा एकवचन में तथा प्रथमा और द्वितीया बहुवचन में **आ** प्रत्यय भी लगाया जाता है। (३/२७)
   उदा. प. एकव. नई, नईआ
   प. बहुव. / बी. बहुव. } नईओ, नईउ, नई, नईआ

5. जो नाम मूल से आकारान्त हैं उनके संबोधन एकवचन में अन्त्य **आ** का **ए** विकल्प से होता है। (३/४१)

उदा. हे माले, हे माला

6. ह्रस्व इकारान्त और उकारान्त नामों के संबोधन एकवचन में विकल्प से अन्त्य स्वर दीर्घ होता है। (३/४२)

उदा. हे मई, हे मइ

हे धेणू, हे धेणु

7. दीर्घ ईकारान्त और ऊकारान्त नामों के संबोधन एकवचन में अन्त्य **ई-ऊ** ह्रस्व होते हैं। (३/३८)

उदा. हे नइ, हे वहु

रूप

आकारान्त स्त्रीलिंग रमा (रमा) - रमा

	एकवचन	बहुवचन
प.	रमा	रमाओ, रमाउ, रमा
बी.	रमं	रमाओ, रमाउ, रमा
त.	रमाअ, रमाइ, रमाए	रमाहि, रमाहिँ, रमाहिं
च. छ.	रमाअ, रमाइ, रमाए	रमाण, रमाणं
पं.	रमाअ, रमाइ, रमाए, रमत्तो, रमाओ, रमाउ, रमाहिन्तो	रमत्तो, रमाओ, रमाउ, रमाहिन्तो, रमासुन्तो
स.	रमाअ, रमाइ, रमाए	रमासु, रमासुं
सं.	हे रमे, हे रमा	रमाओ, रमाउ, रमा

इकारान्त स्त्रीलिंग बुद्धि (बुद्धि) - बुद्धि

प.	बुद्धी	बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धी
बी.	बुद्धिं	बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धी
त.	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए	बुद्धीहि, बुद्धीहिँ, बुद्धीहिं
च. छ.	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए	बुद्धीण, बुद्धीणं
पं.	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए बुद्धित्तो, बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धीहिन्तो	बुद्धित्तो, बुद्धीओ, बुद्धीउ बुद्धीहिन्तो, बुद्धीसुन्तो

स.	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए	बुद्धीसु, बुद्धीसुं
सं.	हे बुद्धि, बुद्धी	बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धी

उकारान्त स्त्रीलिंग धेणु (धेनु) - गाय

प.	धेणू	धेणूओ, धेणूउ, धेणू
बी.	धेणुं	धेणूओ, धेणूउ, धेणू
त.	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूहि, धेणूहिँ, धेणूहिं
च. छ.	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूण, धेणूणं
पं.	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिन्तो	धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिन्तो, धेणूसुन्तो
स.	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूसु, धेणूसुं
सं.	हे धेणू, धेणु	धेणूओ, धेणूउ, धेणू

ईकारान्त स्त्रीलिंग इत्थी (स्त्री) - स्त्री

प.	इत्थी, इत्थीआ	इत्थीओ, इत्थीउ, इत्थी, इत्थीआ
बी.	इत्थिं	इत्थीओ, इत्थीउ, इत्थी, इत्थीआ
त.	इत्थीअ, इत्थीआ, इत्थीइ, इत्थीए	इत्थीहि, इत्थीहिँ, इत्थीहिं
च. छ.	इत्थीअ, इत्थीआ, इत्थीइ, इत्थीए	इत्थीण, इत्थीणं
पं.	इत्थीअ, इत्थीआ, इत्थीइ, इत्थीए, इत्थित्तो, इत्थीओ, इत्थीउ इत्थीहिन्तो	इत्थित्तो, इत्थीओ, इत्थीउ, इत्थीहिन्तो, इत्थीसुन्तो
स.	इत्थीअ, इत्थीआ, इत्थीइ, इत्थीए	इत्थीसु, इत्थीसुं
सं.	इत्थि	इत्थीओ, इत्थीउ, इत्थी, इत्थीआ

ऊकारान्त स्त्रीलिंग सासू (श्वश्रु) - सासु

प.	सासू	सासूओ, सासूउ, सासू
बी.	सासुं	सासूओ, सासूउ, सासू
त.	सासूअ, सासूआ, सासूइ, सासूए	सासूहि, सासूहिँ, सासूहिं

च. छ.	सासूअ, सासूआ, सासूइ, सासूए	सासूण, सासूणं
पं.	सासूअ, सासूआ, सासूइ, सासूए सासुत्तो, सासूओ, सासूउ, सासूहिन्तो	सासुत्तो, सासूओ, सासूउ सासूहिन्तो, सासूसुन्तो
स.	सासूअ, सासूआ, सासूइ, सासूए	सासूसु, सासूसुं
सं.	हे सासु	सासूओ, सासूउ, सासू

सर्वनाम के स्त्रीलिंग शब्द

ता (तत्)	**इमा** (इदम्)
जा (यत्)	**सव्वा** (सर्वा)
का (किम्)	**अन्ना** (अन्या)
एआ-एता (एतद्)	

\+ इन सर्वनामों के स्त्रीलिंग रूप आकारान्त स्त्रीलिंग नाम के समान ही होते हैं।

8. ता और एता का प्र. एकवचन क्रमशः **सा** और **एसा** होता है । (३/३३)

9. ता का ती, जा का जी, का का की, एआ का एई और इमा का इमी-इस प्रकार शब्द मानकर ईकारान्त स्त्रीलिंग के समान विकल्प से भी रूप होते हैं, किन्तु ती, जी और की के प्र. द्वि. एकवचन और षष्ठी बहुव. में रूप नहीं होते हैं । (३/८६)

(ये रूप आगे पाठ 24 में विस्तारपूर्वक बतायेंगे, संक्षेप में निम्नलिखित हैं)

सव्वा (सर्वा) - सभी

	एकवचन	बहुवचन
प.	सव्वा	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा
बी.	सव्वं	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा
त.	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वाहि, सव्वाहिँ, सव्वाहिं

शेष रमावत्

ता - ती (तद्) - वह

	एकवचन	बहुवचन
प.	सा	ताओ, ताउ, ता तीओ, तीउ, ती, तीआ
बी.	तं	ताओ, ताउ, ता तीओ, तीउ, ती, तीआ

त.	ताअ, ताइ, ताए तीअ, तीआ, तीइ, तीए	ताहि, ताहिँ, ताहिं तीहि, तीहिँ, तीहिं
च. छ.	ताअ, ताइ, ताए तीअ, तीआ, तीइ, तीए	ताण, ताणं

शेष रमा और इत्थी वत्

जा - जी (यत्) जो

प.	जा	जाओ, जाउ, जा जीओ, जीउ, जी, जीआ
बी.	जं	जाओ, जाउ, जा जीओ, जीउ, जी, जीआ
त.	जाअ, जाइ, जाए जीअ, जीआ, जीइ, जीए	जाहि, जाहिँ, जाहिं जीहि, जीहिँ, जीहिं
च. छ.	जाअ, जाइ, जाए जीअ, जीआ, जीइ, जीए	जाण, जाणं

शेष ता - ती वत्

का - की (किम्) - कौन

प.	का	काओ, काउ, का कीओ, कीउ, की, कीआ
बी.	कं	काओ, काउ, का कीओ, कीउ, की, कीआ
त.	काअ, काइ, काए कीअ, कीआ, कीइ, कीए	काहि, काहिँ, काहिं कीहि, कीहिँ, कीहिं
च. छ.	काअ, काइ, काए कीअ, कीआ, कीइ, कीए	काण, काणं

शेष ता - ती वत्

एआ - एई (एतद्) - यह

प.	एसा	एआओ, एआउ, एआ एईओ, एईउ, एई, एईआ
बी.	एअं, एइं	एआओ, एआउ, एआ, एईओ, एईउ, एई, एईआ
त.	एआअ, एआइ, एआए, एईअ, एईआ, एईइ, एईए	एआहि, एआहिँ, एआहिं, एईहि, एईहिँ, एईहिं
च. छ.	एआअ, एआइ, एआए, एईअ, एईआ, एईइ, एईए	एआण, एआणं एईण, एईणं

शेष ता - ती वत्

इमा - इमी (इदम्) - यह

प.	इमा, इमी, इमीआ	इमाओ, इमाउ, इमा, इमीओ, इमीउ, इमी, इमीआ
बी.	इमं, इमिं	इमाओ, इमाउ, इमा, इमीओ, इमीउ, इमी, इमीआ
त.	इमाअ, इमाइ, इमाए, इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए	इमाहि, इमाहिँ, इमाहिं, इमीहि, इमीहिँ, इमीहिं
च. छ.	इमाअ, इमाइ, इमाए, इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए	इमाण, इमाणं, इमीण, इमीणं

शेष ता - ती

10. **ड्म** और **क्म** का **प्प** होता है। (२/५२)

उदा. कुप्पलं (कुड्मलम्), **रुप्पिणी** (रुक्मिणी)

11. शब्द के अन्दर **र्श** अथवा **र्ष** संयुक्त व्यंजन हो तो संयुक्त के अन्त्य व्यंजन **श-ष** के पूर्व में इ आगम विकल्प से रखा जाता है तथा तप्त, वज्र शब्द में भी संयुक्त अन्त्य व्यंजन के पूर्व **इ** आगम विकल्प से रखा जाता है। (२/१०५)

उदा. आयरिसो / **आयंसो** } (आदर्श:) | **दरिसणं** / **दंसणं** } (दर्शनम्)

वरिसं } (वर्षम्)	**तविअं** } (तप्तम्)
वासं	**तत्तं**
वारिसा } (वर्षा)	**वइरं** } (वज्रम्)
वासा	**वज्जं**

12. श्री, ह्री, कृत्स्न, क्रिया इन शब्दों में संयुक्त अन्त्य व्यंजन के पूर्व **इ** रखी जाती है। (२/१०८)

उदा. सिरी (श्री:)	**कसिणो** (कृत्स्न:)
हिरी (ह्री)	**किरिया** (क्रिया)

13. संस्कृत में आनेवाले **तस्** प्रत्यय के स्थान पर **त्तो - दो** प्रत्यय विकल्प से लगता है, **त्तो - दो** न हो तब अकार सहित विसर्ग हो तो पूर्व स्वर और व्यंजनसहित विसर्ग का **ओ** होता है। (१/२७, २/१६०, ३/३२)

उदा. जत्तो, जदो, जओ (यत:)	**अन्नत्तो, अन्नदो, अन्नओ** (अन्यत:)
कत्तो, कदो, कओ (कुत:)	**पुरओ** (पुरत:)
तत्तो, तदो, तओ (तत:)	**मग्गओ** (मार्गत:)
सव्वत्तो, सव्वदो, सव्वओ (सर्वत:)	

14. विशेषण नाम का स्त्रीलिंग शब्द के अन्त में **आ** अथवा **ई** लगाने पर बनता है किन्तु अकारान्त विशेषण नामों का स्त्रीलिंग प्राय: **आ** लगाने पर बनता है, कुछ स्थानों में **ई** भी लगता है।

उदा. पिय-पिया, पिआ (प्रिया)	**तारिस-तारिसा, तारिसी** (तादृशी)
निच्च-निच्चा (नित्या)	**हसमाण-हसमाणा, हसमाणी** (हसमाना)
वल्लह-वल्लहा (वल्लभा)	**हसंत-हसंता, हसंती** (हसन्ती)
सरिस-सरिसा सरिसी (सदृशी)	

शब्दार्थ (स्त्रीलिंग)

अवरा (अपरा) = पश्चिम दिशा	**इत्थी, थी (स्त्री)** = स्त्री, नारी
आणा (आज्ञा) = आदेश, हुकम, आज्ञा	**उत्तरा (उत्तरा)** = उत्तरदिशा
आवया (आपद्-आपदा) = आपत्ति, पीड़ा	**कला (कला)** = कला
	कहा (कथा) = कहानी
इड्ढि } **(ऋद्धि)** = वैभव, ऐश्वर्य, समृद्धि	**कामधेणु (कामधेनु)** = कामधेनु गाय
रिद्धि	**किवा (कृपा)** = दया

कोसा (कोश्या) = वेश्या का नाम
गंगा (गंगा) = गंगा नदी
छुहा (क्षुध्) = क्षुधा, भूख
छुहा (सुधा) = अमृत
छाही } **(छाया)** = धूप का अभाव,
छाया } प्रतिबिम्ब, छाया
जउँणा (यमुना) = नदी का नाम
जिब्भा } **(जिह्वा)** = जीभ
जीहा }
जोण्हा (ज्योत्स्ना) = चन्द्रप्रकाश
तीण्हा (तृष्णा) = स्पृहा, वांछा, पिपासा, प्यास
थुइ (स्तुति) = स्तवना, गुणकीर्तन
दया (दया) = दया, अनुकम्पा, करुणा
दाढा (दंष्ट्रा) = दाढ़
दाहिणा (दक्षिणा) = दक्षिणदिशा
दिसा (दिश्-दिशा) = पूर्वादि दिशा
दोवई (द्रौपदी) = पांडवों की पत्नी
धिइ (धृति) = धीरज, धैर्य, धीरता
नारी (नारी) = स्त्री
नीइ (नीति) = न्याय, उचित व्यवहार
निसा (निशा) = रात्रि
पइण्णा (प्रतिज्ञा) = प्रतिज्ञा, नियम
पण्णा (प्रज्ञा) = बुद्धि
पवित्तया (पवित्रता) = पवित्रता
पडिमा (प्रतिमा) = प्रतिमा, मूर्ति, प्रतिबिम्ब
पिच्छी (पृथ्वी) = पृथ्वी, भूमि
पुढवी } **(पृथिवी)** = पृथ्वी
पुहवी }
पुव्वा (पूर्वा) = पूर्व दिशा
बहिणी } **(भगिनी)** = बहन
भइणी }
बालिआ (बालिका) = बालिका, लड़की
बाहा (बाहु) हाथ, भुजा
बुद्धि (बुद्धि) = बुद्धि
भज्जा (भार्या) = भार्या, पत्नी
मज्जाया (मर्यादा) = सीमा, हद,
मट्टिआ (मृत्तिका) = मिट्टी
महासई (महासती) = परमशीलवती स्त्री
रुप्पिणी (रुक्मिणी) = कृष्ण की स्त्री
लच्छी (लक्ष्मी) = लक्ष्मी
लया (लता) = लता, बेल
वणस्सइ } **(वनस्पति)** = वनस्पति,
वणप्फइ } हरियाली
वत्ता (वार्ता) = कहानी
वरिसा } **(वर्षा)** = चातुर्मास, वर्षावास
वासा }
वसहि } **(वसति)** = स्थान, आश्रय
वसइ }
वहू (वधू) = नारी, बहू, पुत्र की पत्नी
वियणा } **(वेदना)** = दुःख, पीड़ा
वेयणा }
विज्जा (विद्या) = विद्या, शास्त्रज्ञान
वुड्ढि (वृद्धि) = वृद्धि, बढ़ौती, प्रगति
वेसा (वेश्या) = वेश्या
सज्जा } **(शय्या)** = शयन, गद्दी
सेज्जा }
सन्ना (संज्ञा) = चेष्टा, ज्ञान

सरस्सई (सरस्वती) = वाणी देवी, सरस्वती देवी

समाहि (समाधि) = चित्त की स्वस्थता, मन की शान्ति

सासू (श्वश्रू) = सास

सिक्खा (शिक्षा) = शिक्षण, दण्ड

सुण्हा / सुसा / ण्हुसा } **(स्नुषा)** = पुत्रवधू

सिरी (श्री) = लक्ष्मी

सुहा (सुधा) = अमृत

सेणा (सेना) = सेना, सैन्य, लश्कर

सेवा (सेवा) = सेवा, भक्ति

हिरी (ह्रीरी) = लज्जा, शर्म

(पुलिंग)

अत्थ (अस्त) अस्ताचल पर्वत

अहि (अहि) सर्प, साँप

आहार (आधार) आधार, आलम्बन, आश्रय

कुमर / कुमार } (कुमार) कुमार

दुज्जोहण (दुर्योधन) विशेषनाम, दुर्योधन

पंडव (पांडव) पाण्डव, पाण्डु के पुत्र

पहाव (प्रभाव) = प्रभाव, शक्ति, सामर्थ्य

बाहु (बाहु) = हाथ, भुजा

रक्खस (राक्षस) = राक्षस

विक्कम (विक्रम) = विक्रमराजा

विवाअ (विवाद) = चर्चा, वाग्युद्ध, वादविवाद

सिमि(वि)ण / सुमि(वि)ण } **(स्वप्न)** = स्वप्न

हेमचन्द (हेमचन्द्र) = श्री हेमचन्द्रसूरिजी

(नपुंसकलिंग)

अत्थ (अस्त) = अंतर्धान, मृत्यु

असाय (अशात) = दुःख, पीड़ा

उग / उदग } = (उदक) पानी

दाहिणपास (दक्षिणपार्श्व) = दाहिनी ओर

देवालय (देवालय) = देव का मन्दिर

सवण (श्रवण) = सुनना

साय (शात) = सुख

पुंलिंग + नपुंसकलिंग

आगास (आकाश) = आकाश

विसेस (विशेष) = विशेष, प्रकार, भेद

विशेषण

अउल्ल }
अतुल्ल } **(अतुल्य)** = असाधारण

किण्ह (कृष्ण) = श्यामवर्णवाला, काला

गिहासत्त (गृहासक्त) = घर में आसक्त

जाय (जात) = उत्पन्न हुआ

दढ (दृढ) = मजबूत, निश्चल, समर्थ

दव्वलुद्ध (द्रव्यलुब्ध) द्रव्य में लोभी

निय (निज) = अपना

पउण (प्रगुण) = होशियार

पत्थिअ (प्रार्थित) = मांगा हुआ, प्रार्थना किया हुआ

मांसभोइ (मांसभोजिन्) = मांस खानेवाला

माणि (मानिन्) = अभिमानी

वसीहूअ (वशीभूत) = वश हुआ

वाम (वाम) = बाँया, प्रतिकूल

विसाल (विशाल) = बड़ा

सत्त (सक्त) = आसक्त

समाण (समान) = सदृश, तुल्य, समान

समीहिअ (समीहित) = इष्ट, वांछित

सार (सार) = श्रेष्ठ, उत्तम

सुक्क (शुक्ल) = शुक्ल, शुक्ल = सफेद वर्णवाला, सफेद

अव्यय

उ }
तु } **(तु)** = समुच्चय, अवधारण, किन्तु, निश्चय, प्रशंसा, पादपूर्ति

उअ (पश्य) = 'तू देख' इस अर्थ में

उवरि-रिं }
अवरि-रिं } **(उपरि)** = ऊर्ध्व, ऊपर

जओ }
जदो }
जत्तो } **(यतः)** = जिससे, जिस कारण से, जिस तरफ से

जइणा }
जया } **(यदा)** = जब

पाओ }
पायसो }
पाएण }
पाएणं } **(प्रायस्)** = ज्यादातर, अधिकतर, शायद प्रायः

पुरा (पुरा) पूर्व, पहले

मुसा }
मूसा }
मोसा } **(मृषा)** = असत्य, झूठा

धातु

आइग्घ् (आ + घ्रा) = सूंघना

आढव् (आ + रम्) = शुरू करना

आ + राह् (आ + राध्) = आराधना करना, उपासना करना

उट्ठ }
उट्ठा } **(उत् + स्था)** = उठना

गिज्झ् (गृध्-गृध्य) = आसक्त होना

उद्दाल् (आ + छिद्) = छीनना

उदे (उद् + इ) उदय होना

उव्विव् (उद् + विज्) = उद्वेग पाना, कम्पना, कंटालना, खिन्न होना

ए (इ) = जाना

कुप्प् (कुप्-कुप्य) = कोप करना

पहुप्प् (प्र + भू) = समर्थ होना

गंद् / **गंथ्** **(ग्रन्थ्)** = गूँथना, रचना करनी, बनाना

जण् (जनय्) = उत्पन्न करना, पैदा करना

झर् (क्षर्) = झरना, टपकना

पलोट्ट (प्र + लुट्) = लोटना, सोना

पारं-गच्छ् (पारङ्गच्छ्) = पार पाना, पूरा करना

लुह् (मृज्) = साफ करना

वसीकर / **वसीकुण्** **(वशी + कृ)** = वश करना

वह् (वह्) = वहन करना, ले जाना

हिंस् (हिंस्) = हिंसा करना

हिन्दी में अनुवाद करें–

1. जस्स जओ आइच्चो उदेइ, सा तस्स होइ पुव्वा दिसा, जत्तो अ अत्थमेइ सा उ अवरा दिसा नायव्वा, दाहिणपासम्मि य दाहिणा दिसा, उत्तरा य वामेण ।
2. किवाए विणा को धम्मो ?
3. पंडवाणं सेणाइ दुज्जोहणस्स सेणाए सह जुज्झं होत्था, तम्मि जुद्धे पंडवाणं जयो आसि ।
4. कोसा वेसा सव्वासु कलासु निउणा, नच्चम्मि उ विसेसेण कुसला ।
5. सव्वा कला धम्मकला जएइ ।
6. सव्वा कहा धम्मकहा जिणेइ ।
7. जस्स जीहा वसीहूआ, सो परमो पुरिसो ।
8. नारीओ जोण्हाए रमेन्ति ।
9. छुहाए समाणा वेयणा नत्थि ।
10. पंडवाणं भज्जा दोवई सव्वासु इत्थीसु उत्तिमा महासई अहेसि ।
11. वणस्सईणं पि सन्ना अत्थि तओ दगं मट्टिआण रसं च आहरेज्जा ।
12. सज्जणा पइण्णाहिंतो कहं पि न चलन्ति ।
13. इत्थीओ सज्जाहिन्तो उट्ठन्ति, आवासयाइं च किच्चाइं कुणन्ति ।
14. सासूए ण्हूसाए उवरिं, बहूइ य सासूअ अवरिं, अईव पीई अत्थि ।

15. दिवहो निसं, निसा य दिणं अणुसरेइ ।
16. जणा रिद्धिए गव्विड्डा पाएण हवंति ।
17. जोव्वणं असारं, लच्छी वि असारा, संसारो असारो, तओ धम्मम्मि मइं दढं कुज्जा ।
18. थी एगाए बाहाए भारं नेहीअ ।
19. कामे सत्ताओ इत्थीओ कुलं सीलं च न रक्खन्ति ।
20. उअ थीणं सरूवं, संसारा य उव्विवेसु ।
21. जो संघस्स आणं अइक्कमेइ, सो सिक्खं अरिहे ।
22. जउँणाए उदगं किण्हं, गंगाअ य दगं सुक्कमत्थि ।
23. हेमचंदो सरस्सइं देविं आराहीअ ।
24. सासू वहूणं देवालए गमणाय कहेइ ।
25. जो हिरिं, नीइं, धीइं च धरेइ, सो सिरिं लहेइ ।
26. अहिणो दाढाए विसं झरेइ ।
27. तिण्हा आगासेण समा विसाला ।
28. तरुस्स छाहीए थीओ गाणं काहीअ ।
29. विक्कमो निवो पिच्छीए सुट्टु पालगो आसि ।
30. कुमारो सव्वासु कलासु पहुप्पइ ।
31. पहुणो महावीरस्स अतुल्लाए सेवाए गोयमो गणहरो संसारं तरीअ ।
32. धन्नाओ ताओ बालिआऊ, जाहिं सुमिणे वि न पत्थिओ अन्नो पुरिसो ।

प्राकृत में अनुवाद करें–

1. बड़ों की मर्यादा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए ।
2. चोर ने ब्राह्मण की लक्ष्मी छीन ली ।
3. पुत्र की बहू सास के सभी कार्य विनयपूर्वक करती है ।
4. जब व्यक्ति की बुद्धि नष्ट होती है तब उसके साथ बुद्धि और धीरता भी नष्ट होती है ।
5. धर्मीजन धन की वृद्धि में धर्म का त्याग नहीं करता है ।
6. सरस्वती और लक्ष्मी (सिरि) के विवाद में कौन जीते ?

7. मनुष्य पीड़ा में बहुत मोहित होता है ।
8. सभी प्राणी सुख (साय) की इच्छा करते हैं और दुःख (असाय) की इच्छा नहीं करते हैं।
9. उत्तम पुरुष जिस कार्य का आरंभ करते हैं, उसको जरूर पूरा करते हैं।
10. ग्रीष्म ऋतु में सभी पशु, वृक्षों की छाया में विश्रान्ति लेते हैं ।
11. दक्षिण दिशा में चोर गये ।
12. सभी जगह सुखियों को सुख और दुःखियों को दुःख होता है ।
13. मैं जिनेश्वर की प्रतिमाओं की स्तुतियों द्वारा स्तुति करता हूँ ।
14. साँप जीभ द्वारा दूध पीते हैं ।
15. स्त्रियाँ बाग में घूमती हैं और पुष्पों को सूंघती हैं ।
16. उसने तीर्थंकरों की कहानियों द्वारा बोध पाया ।
17. पहले पृथ्वी पर बहुत राक्षस थें ।
18. दुर्जन की जीभ में अमृत है लेकिन हृदय में विष है ।
19. मैंने बहनों को बहुत धन दिया ।
20. कृष्ण की स्त्री रुक्मिणी का पुत्र प्रद्युम्न है ।
21. सास बहू पर कोप करती है ।
22. वर्षावास में मुनि एक ही स्थान (वसहि) में रहते हैं ।
23. रात्रि में स्त्रियाँ चन्द्र के प्रकाश में नृत्य करती हैं ।
24. प्रभु की सेवा और कृपा से कल्याण होता है ।
25. साधु प्राणान्त में भी असत्य नहीं बोलते हैं ।
26. बालक गद्दी पर लेटता है ।
27. स्त्री, लता और पंडित आश्रय बिना शोभा नहीं देते हैं ।

पाठ 17

भविष्यकाल

प्रत्यय (३/१६६, १६७, १६८, १६९)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्सं, स्सामि, हामि, हिमि	स्सामो, हामो, हिमो, स्सामु, हामु, हिमु, स्साम, हाम, हिम, हिस्सा, हित्था
द्वितीय पुरुष	हिसि, हिसे	हित्था, हिह
तृतीय पुरुष	हिइ, हिए	हिन्ति, हिन्ते, हिरे

1. **भविष्यकाल** - आनेवाला समय (काल) अर्थात् जो क्रिया होनेवाली है वह बताते हैं-

   उदा. रामो गामं गमिहिइ = राम गाँव में जायेगा ।

   अज्ज नयरं गच्छिस्सं = आज मैं नगर में जाऊंगा ।

2. आर्ष प्राकृत में द्वितीय और तृतीय पुरुष में निम्नलिखित प्रत्ययों का भी प्रयोग किया जाता है ।

प्र. पु.	स्ससि, स्ससे	स्सह
द्वि. पु.	स्सइ, स्सए	स्सन्ति, स्सन्ते

3. ये प्रत्यय लगाने पर पूर्व **अ** का **इ** अथवा **ए** होता है ।

हस् धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	हसिस्सं, हसेस्सं, हसिस्सामि, हसेस्सामि, हसिहामि, हसेहामि, हसिहिमि, हसेहिमि	हसिस्सामो-मु-म, हसिहामो-मु-म, हसिहिमो-मु-म, हसिहिस्सा, हसिहित्था, हसेस्सामो-मु-म, हसेहामो-मु-म,

		हसेहिमो-मु-म, हसेहिस्सा, हसेहित्था
द्वि. पु.	हसिहिसि, हसिहिसे, हसेहिसि, हसेहिसे, हसिस्ससि, हसेस्ससे, हसेस्ससि, हसेस्ससे	हसिहित्था, हसिहिह, हसेहित्था, हसेहिह, हसिस्सह, हसेस्सह
तृ. पु.	हसिहिइ, हसिहिए, हसेहिइ, हसेहिए, हसिस्सइ, हसिस्सए, हसेस्सइ, हसेस्सए	हसिहिन्ति-न्ते, हसिहिरे, हसेहिन्ति-न्ते, हसेइरे, हसिस्सन्ति-न्ते, हसेस्सन्ति-न्ते

ज्ज, ज्जा लगाने के बाद -

सर्वपुरुष } हसेज्ज, हसेज्जा,
सर्ववचन } हसिज्ज, हसिज्जा

ने धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नेस्सं, नेस्सामि, नेहामि, नेहिमि	नेस्सामो, मु-म, नेहामो-मु-म, नेहिमो-मु-म, नेहिस्सा, नेहित्था
द्वि. पु.	नेहिसि, नेहिसे, नेस्ससि, नेस्ससे	नेहित्था, नेहिह, नेस्सह
तृ. पु.	नेहिइ, नेहिए, नेस्सइ, नेस्सए	नेहिन्ति-न्ते, नेहिरे, नेस्सन्ति, नेस्सन्ते

+ पुरुषबोधक प्रत्ययों के पूर्व **अ** लगाने के बाद-

नेअ अंग के रूप

प्र. पु. एकवचन - नेइस्सं, नेइस्सामि, नेइहामि, नेइहिमि,
नेएस्सं, नेएस्सामि, नेएहामि, नेएहिमि

इसी तरह सर्वपुरुष सर्ववचन में रूप बनाने चाहिए ।

+ प्रत्ययों के पूर्व और स्थान में ज्ज, ज्जा लगाने के बाद –

नेज्ज-नेज्जा के रूप

नेज्जस्सं, नेज्जस्सामि, नेज्जहामि, नेज्जाहामि, नेज्जहिमि, नेज्जाहिमि, नेज्ज, नेज्जा आदि रूप बनते हैं।

नेएज्ज-नेएज्जा अंग के रूप

प्र. पु. एकवचन - नेएज्जस्सं, नेएज्जस्सामि, नेएज्जहामि, नेएज्जाहामि, नेएज्जहिमि, नेएज्जाहिमि, नेएज्ज, नेएज्जा आदि रूप बनते हैं।

इसी तरह सर्वपुरुष सर्ववचन में रूप बनाने चाहिए।

4. कर् धातु का भविष्यकाल में 'का' आदेश विकल्प से होता है, आदेश न हो तब तो प्रथम पुरुष एकवचन में काहं रूप विकल्प से होता है। इसी प्रकार दा धातु का भी दाहं रूप विकल्प से होता है।

का (कृ) के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	काहं, कास्सं कास्सामि, काहामि, काहिमि	कास्सामो-मु-म, काहामो-मु-म, काहिमो-मु-म काहिस्सा, काहित्था
द्वि. पु.	काहिसि, काहिसे	काहित्था, काहिह
तृ. पु.	काहिइ, काहिए, काही	काहिन्ति-न्ते, काहिरे

5. संयुक्त व्यंजन के पूर्व 'उ' का 'ओ' होता है और 'इ' का 'ए' विकल्प से होता है।

उदा. **पोक्खरं (पुष्करम्)** **वेण्हू, विण्हू (विष्णुः)**
पोत्थओ (पुस्तकः) **धम्मेल्लं, धम्मिल्लं (धम्मिल्लम्)**
मोण्डं (मुण्डम्) **पेण्डं, पिण्डं (पिण्डम्)**

अपवाद : किसी स्थान में 'ए' नहीं होता है। उदा. चिंता (चिन्ता)

कर् (कृ)

प्र. पु.	करिस्सं, करिस्सामि, करेस्सं, करेस्सामि	करिहामि, करिहिमि, करेहामि, करेहिमि

वगैरह रूप हस् धातु के अनुसार जानने चाहिए ।

दा

प्र. पु.	दाहं, दास्सं, दास्सामि, दाहामि, दाहिमि	दास्सामो-मु-म, दाहामो-मु-म, दाहिमो-मु-म, दाहिस्सा, दाहित्था
द्वि. पु.	दाहिसि, दाहिसे, दास्ससि, दास्ससे	दाहित्था, दाहिह, दास्सह
तृ. पु.	दाहिइ-दाहिए, दाही, दास्सइ, दास्सए	दाहिन्ति-न्ते, दाहिरे, दास्सन्ति-न्ते

षड़ भाषा में प्रथम पुरुष एकवचन में **हिस्सं** प्रत्यय भी लगता है ।
उदा. हसिहिस्सं, नेहिस्सं, करिहिस्सं, होहिस्सं (षड्० २-६-३३)

शब्दार्थ (पुंलिंग)

आलाव (आलाप) = सूत्र का आलावा
उज्जयंत (उज्जयन्त) = गिरनार पर्वत
कलि (कलि) = कलियुग, कलह, झगड़ा
गीयत्थ / गीयड्ड (गीतार्थ) = साधु की सामाचारी जाननेवाले साधु
गोवाल (गोपाल) = गोपाल
जटिल (जटिल) = तापस, जटाधारी
तावस (तापस) = तापस, योगी
पारद्धि (पापर्धि) = शिकारी
भिच्च (भृत्य) = नौकर, कर्मचारी, सेवक
मक्कड (मर्कट) = बन्दर
लोद्धअ (लुब्धक) = शिकारी
लोह (लोभ) = लोभ, तृष्णा
सत्थ (सार्थ) = सार्थ, मुसाफिरों का समूह
समय (समय) = काल, समय, अवसर
साण (श्वन्) = कुत्ता
सामि (स्वामिन्) = स्वामी, मालिक
सिरिवद्धमाण (श्रीवर्धमान) = चौबीसवें जिनेश्वर, श्रीमहावीर

(नपुंसकलिंग)

आसण (आसन) = आसन, बैठने योग्य चीज
गाण (गान) = गाना, गीत
चच्चर (चत्वर) = चौटा, बाजार
तिहुअण / तिहुवण (त्रिभुवन) = तीन लोक
दव्व / दविअ (द्रव्य) = द्रव्य, धन, संपत्ति
भय (भय) = भय, भीति,
वाणिज्ज (वाणिज्य) = व्यापार
समोसरण / समवसरण (समवसरण) = समवसरण
सरोअ (सरोज) = कमल

(पुंलिंग + नपुंसकलिंग)

आगमत्थ (आगमार्थ) = सूत्रांर्थ, आगम का अर्थ
सर (सरस्) = सरोवर
सिद्धालय (सिद्धालय) = सिद्धों का मंदिर, सिद्धालय

(स्त्रीलिंग)

अच्चणा (अर्चना) = पूजा
अच्चा (अर्चा) = पूजा, सत्कार
अवण्णा (अवज्ञा) = अपमान, अवगणना, तिरस्कार
कन्ना (कन्या) = कन्या
खंति (क्षान्ति) = क्रोध का अभाव, शान्ति, क्षमा
खमा (क्षमा) = क्रोध का अभाव, शान्ति, माफी
गरिहा (गर्हा) = पाप की निन्दा
चमेडा-ला / चवेडा-ला (चपेटा) = थप्पड़, तमाचा
चिंता (चिन्ता) = चिन्ता, विचार
जीवदया (जीवदया) = जीवों की दया
जीवहिंसा (जीवहिंसा) = जीव का वध, जीव का नाश करना
दिक्खा (दीक्षा) = दीक्षा, प्रव्रज्या, संन्यास
देसविरइ (देशविरति) = देश से पाँचों नियमों का पालन, अल्पांशे पापोंका त्याग
धेणु (धेनु) = गाय
नई (नदी) = नदी, सरिता
नावा (नौ) = नौका, वाहन
निंदा (निन्दा) = निन्दा
पया (प्रजा) = प्रजा, संतति
पाढसाला (पाठशाला) = पाठशाला
पीइ (प्रीति) = प्रेम
पुण्णिमा, (पूर्णिमा) = पूनम, पूर्णिमा
बोहि (बोधि) = शुद्ध धर्म की प्राप्ति
भत्ति (भक्ति) = भक्ति, सेवा,
मइ (मति) = बुद्धि

मक्खिआ / **मच्छिआ** (**मक्षिका**) = मक्खी

माया (माया) = माया, कपट, छल

माला (माला) = माला

रत्ति / **राइ** (**रात्रि**) = रात्रि

रिउ / **उउ** (**ऋतु**) = वसन्तादि ऋतु

वणिया / **विलया** (**वनिता**) = स्त्री

वीणा (वीणा) = वीणा, एक प्रकार का वाजिंत्र

संकला (शृङ्खला) = बेड़ी, जंजीर, सांकल

समिद्धि / **सामिद्धि** (**समृद्धि**) = आबादी, प्रगति

सलाहा (श्लाघा) = प्रशंसा

सव्वविरइ (सर्वविरति) = पाँचों महाव्रतों का पालन, सभी पापव्यापारों का त्याग

साहा (शाखा) = वृक्ष की शाखा, डाली

विशेषण

अणुपत्त (अनुप्राप्त) = प्राप्त किया हुआ

उग्ग (उग्र) = तीव्र, प्रबल

कुडुंबि (कुटुम्बिन्) = कुटुम्बवाला, गृहस्थ

चाइ (त्यागिन्) = दानी, त्यागी

थिर (स्थिर) = निश्चल, स्थिर

दुहि (दुःखिन्) = दुःखी

धणि (धनिन्) = धनवान

पविट्ठ (प्रविष्ट) = प्रवेश किया हुआ

लोद्धअ (लुब्धक) = लोभी, लम्पट

वावारि (व्यापारिन्) = व्यापारी

वियाररहिअ (विकाररहित) = विकाररहित

सुमिणतुल्ल / **सुविणतुल्ल** (**स्वप्नतुल्य**) = स्वप्नसमान

सुहि (सुखिन्) = सुखी

अव्यय

अदुव / **अदुवा** / **अदु** (**दे.**) = कि, अथवा

उदाहु / **उयाहु** (**उताहु**) = अथवा, कि,

णु / **नु** (**नु**) = वितर्क, प्रश्न, हेतु, पश्चात्ताप

कए / **कएण-णं** (**कृते**) = के लिए, निमित्त,

तो (तदा) = तब, उस समय

पए (प्रगे) = प्रभात में

पुरओ (पुरतस्) = आगे

धातु

कीड् } **(क्रीड)** = क्रीड़ा करना, **कील्**	**दुह** } **(दुह)** = दोहना **दोह्**
गण् **(गण्)** = गिनना	**नास्** **(नाशय्)** = नाश करना
गल् **(गल्)** = गलना, सड़ना, नष्ट होना, समाप्त होना, झरना	**मन्न्** **(मन्-मन्य)** = मानना, विचारना
	मग्ग् **(मार्गय्)** = ढूंढना, मांगना
डस् } **(दंश्)** = डंक मारना, डँसना **डंस्**	**बुक्क्** } **(भष्)** = भौंकना **भस्**
णिमज्ज् } **(निमज्ज्)** = डूबना **णुमज्ज्**	**लिह** } **(लिह्)** = चाटना **लेह्**

हिन्दी में अनुवाद करें–

1. अज्ज साहवो नयराओ विहरिस्सन्ति ।
2. गोवाला पए धेणूओ दोहिहिन्ति ।
3. अहं सीसाणमुवएसं करिस्सं ।
4. मक्खिआ महुं लेहिस्सइ ।
5. पारद्धिणो अरण्णे वच्चिहिन्ते, तहिं च वीणाए झुणिणा हरिणीओ वसीकरिस्सन्ते, पच्छा य ताओ हिंसिहिरे ।
6. तुं रण्णे जाज्जाहिसे, तया सिंघो चवेडाए पहरेहिए ।
7. लोद्धओ मोग्गरेण जणेण हणीअ ।
8. तुम्हे गुरु भत्तीए सेवेह, ताणं किवाए कल्लाणं भविस्सइ ।
9. कन्नाओ अज्ज पहुणो पुरओ नच्चिस्सन्ति, गाणं च काहिन्ति ।
10. उज्जाणे अज्ज जाइस्सामो, तत्थ य सरंसि जायाइं सरोयाणि जिणिंदाणं अच्चणाए गिण्हिहिस्सा ।
11. अज्ज अहं तत्ताणं चिंताए रत्ति नेस्सं ।
12. तं कज्जं काहिसि तो दव्वं दाहं ।
13. कालिम्मि नरिंदा धम्मेण पयं न पालिहिरे ।
14. जइ सो दुज्जणो *होही, तया परस्स निंदाए तूसेहिइ ।

* एक पद में कभी-कभी सन्धि होती है । (पा.2.नि.3)

उदा. काहिइ-काही, होहिइ-होही, दाहिइ-दाही

15. पुत्ताणं सलाहं न काहं ।
16. तीए मालाए सप्पो अत्थि, जइ मालं फासिहिसे तया सो डहिस्सइ ।
17. कल्ले पुण्णिमाए मयंको अईव विराइहिइ ।
18. विज्जत्थिणो अज्झयणाय पाढसालं जाज्जाहिरे ।
19. अहुणा अम्हे पवयणस्स आलावे गणिहित्था ।
20. अम्हे वाणिज्जेण धणिणो होइहिमो, तुम्हे नाणेण पंडिआ होस्सह ।
21. धम्मेण नरा सग्गं सिवं वा लहिस्सन्ति ।
22. अज्ज समोसरणे सिरिवद्धमाणो जिणिंदो देसणं काही, तत्थ य बहुणो भव्वा बोहिं अदुव देसविरइं अदुवा सव्वविरइं च गिण्हेहिरे ।
23. जइ तुम्हे सुत्ताणि भणेज्जा तया गीयड्डा होज्जाहित्था ।
24. कल्लम्मि धम्मं काहामि त्ति सुविणतुल्लमि जियलोए को णु मन्नइ ? ।
25. जिणधम्माओ अन्नह सम्मं जीवदयं न पासेस्सह ।
26. कलिम्मि पविट्ठे मुणीणं, आगमत्था गलिहिन्ति ।
आयरिआ वि सीसाणं, सम्मं सुअं न दाहिंति ॥1॥
27. नरवइणो कुडुंबिणा सह जुज्झिस्सन्ति ।
28. जे जिणपडिमं, सिद्धालयं वा पूइस्सन्ति ताणं घरं थिरं होही ।
29. न वि अत्थि न वि होही, पाएण तिहुवणम्मि सो जीवो ।
जो जुव्वणमणुपत्तो, वियाररहिओ सया होइ ॥1॥

प्राकृत में अनुवाद करें–

1. तुम पापों की निन्दा करोगे तो सुखी होंगे ।
2. हम नौका में बैठेंगे और सरोवर में क्रीड़ा करेंगे ।
3. हम स्वामी के लिए माला गूंथेंगे ।
4. वह लोभी है इसलिए ब्राह्मणों को धन नहीं देगा ।
5. स्वप्न में चन्द्र ने मुख में प्रवेश किया इसलिए तू राज्य पायेगा ।
6. बोधि के लिए हम जिनेश्वर के चरित्र सुनेंगे ।
7. गिरनार में बहुत वनस्पतियाँ हैं । जब मैं वहाँ जाऊँगा तब देखूँगा ।

8. वह त्यागी है, इस कारण गरीबों को दान देगा ।
9. वह तापस है, इसलिए फलों का आहार करेगा ।
10. तुम क्षमा धारण करोगे तो दुर्जन क्या करेगा ? ।
11. वसंत ऋतु में नगर के लोग उद्यान में घूमने जायेंगे तब वह कन्या सखियों के साथ अवश्य आयेगी ।
12. तापस वन में उग्र तप करता है और तप के प्रभाव से इन्द्र की ऋद्धि प्राप्त करेगा ।
13. तुम बड़ों की सेवा करोगे तो सुखी होंगे ।
14. आप सार्थ के साथ विहार करोगे तो जंगल में भय नहीं रहेगा ।
15. मैं संसार के दुःखों से डरता हूँ, इस कारण दीक्षा ग्रहण करूंगा ।
16. तुम जीवहिंसा मत करो, अन्यथा दुःखी होंगे ।
17. क्रोध प्रेम का नाश करता है, माया मित्रता को नष्ट करती है, मान विनय का नाश करता है और लोभ सभी गुणों का नाश करता है, इस कारण उनका त्याग करेंगे ।
18. चोर दक्षिणदिशा में गये हैं किन्तु उनकी अवश्य तलाश करूंगा ।
19. तू सरोवर में जायेगा तो अवश्य डूब जायेगा ।
20. वह कुत्ता भौंकेगा किन्तु काटेगा नहीं ।
21. जीवदया समान धर्म नहीं है और जीवहिंसा समान अधर्म नहीं है ।

पाठ 18

(चालू) भविष्यकाल और क्रियातिपत्त्यर्थ और ऋकारान्त नाम

'सोच्छ' आदि दश धातु (३/१७१,१७२)

संस्कृत प्राकृत	संस्कृत प्राकृत
श्रु = सोच्छ् - सुनना	**मुच्** = मोच्छ् - रखना, छोड़ना
गम् = गच्छ् - जाना	**वच्** = वोच्छ् - बोलना
रुद् = रोच्छ् - रोना	**छिद्** = छेच्छ् - छेदना
विद् = वेच्छ् - जानना	**भिद्** = भेच्छ् - भेदना, भेद करना
दृश् = दच्छ् - देखना	**भुज्** = भोच्छ् - खाना,

1. सोच्छ आदि उपर्युक्त दश धातुओं के रूप बनाते समय भविष्यकाल के प्रत्ययों में से **हि** का विकल्प से लोप होता है ।
   उदा. सोच्छ + हिइ = सोच्छिइ, सोच्छिहिइ ।
2. उपर्युक्त दश धातुओं में प्र. पु. एकवचन के रूप में धातु के अन्त में विकल्प से अनुस्वार रखा जाता है –
   उदा. सोच्छं, सोच्छिस्सं ।

गच्छ् के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छं गच्छिस्सं, गच्छेस्सं, गच्छिस्सामि, गच्छेस्सामि, गच्छिहामि, गच्छेहामि, गच्छिमि, गच्छेमि, गच्छिहिमि, गच्छेहिमि	गच्छिस्सामो, गच्छिहामो, गच्छिमो, गच्छिहिमो, गच्छिस्सामु, गच्छिहामु, गच्छिमु, गच्छिहिमु, गच्छिस्साम, गच्छिहाम, गच्छिम, गच्छिहिम, गच्छिहिस्सा, गच्छिहित्था अ का ए होता है तब **गच्छेस्सामो** वगैरह रूप बनते हैं ।

द्वि. पु.	गच्छिसि, गच्छेसि, गच्छिहिसि, गच्छेहिसि, गच्छिसे, गच्छेसे, गच्छिहिसे, गच्छेहिसे	गच्छित्था, गच्छेत्था, गच्छिहित्था, गच्छेहित्था, गच्छिह, गच्छेह, गच्छिहिह, गच्छेहिह,
तृ. पु.	गच्छिइ, गच्छेइ, गच्छिहिइ, गच्छेहिइ, गच्छिए, गच्छेए, गच्छिहिए, गच्छेहिए	गच्छिन्ति, गच्छेन्ति, गच्छिहिन्ति, गच्छेहिन्ति, गच्छिन्ते, गच्छेन्ते, गच्छिहिन्ते, गच्छेहिन्ते, गच्छिरे, गच्छेरे, गच्छिहिरे, गच्छेहिरे

ज्ज-ज्जा प्रत्ययसहित रूप

गच्छिज्ज - गच्छिज्जा

प्रथम पुरुष	गच्छिज्जिस्सं गच्छिज्जिस्सामि गच्छिज्जिहामि गच्छिज्जिहिमि	गच्छिज्जिस्सामो - मु - म गच्छिज्जिहामो - मु - म गच्छिज्जिहिमो - मु - म गच्छिज्जिहिस्सा गच्छिज्जिहित्था
द्वितीय पुरुष	गच्छिज्जिहिसि - से	गच्छिज्जिहित्था, गच्छिज्जिहिह
तृतीय पुरुष	गच्छिज्जिहिइ - ए	गच्छिज्जिहिन्ति - न्ते गच्छिज्जिहिरे

सर्वपुरुष
सर्ववचन } गच्छिज्ज - गच्छिज्जा

क्रियातिपत्त्यर्थ

तैयार प्रत्यय

क्रियातिपत्त्यर्थ	एकवचन	बहुवचन
पुंलिंग	न्तो, माणो	न्ता, माणा
स्त्रीलिंग	न्ती, माणी	न्तीओ, माणीओ,
	न्ता, माणा	न्ताओ, माणाओ
नपुंसकलिंग	न्तं, माणं	न्ताइं, माणाइं
सर्वपुरुष	ज्ज, ज्जा	
सर्ववचन		

विशेष्य के लिंग अनुसार प्रथमा एकवचन और बहुवचन के उन-उन लिंग के प्रत्यय **'न्त-+माण'** को लगाने से उपर्युक्त प्रत्यय बनते हैं तथा सर्वपुरुष-सर्ववचन में **ज्ज-ज्जा** प्रत्यय धातु को लगाने से क्रियातिपत्त्यर्थ के रूप बनते हैं । (३/१८०)

3. **क्रियातिपत्त्यर्थ** - क्रिया की अतिपत्ति (निष्फलता) सूचित होती है । 'अमुक कार्य हुआ होता तो अमुक कार्य होता' लेकिन पहला कार्य नहीं हुआ इसलिए उसके ऊपर आधार रखनेवाला दूसरा कार्य भी नहीं हुआ । इस प्रकार क्रिया की निष्फलता सूचित होती है । (३/१७९)
4. **क्रियातिपत्त्यर्थ** - जब संकेत या शर्त पूरी नहीं हुई हो ऐसे सांकेतिक वाक्यों में प्रयुक्त होता है ।

   उदा. जइ सो विज्जं भणन्तो, ता सुही होन्तो-यदि उसने विद्या प्राप्त की होती तो वह सुखी होता ।
5. प्राकृत रूपावतार में क्रियातिपत्त्यर्थ के **न्त-माण** प्रत्यय के पूर्व **अ** का **इ-ए** किया है । **उदा.** हसिंतो, हसेंतो, हसिमाणं, हसेमाणं वगैरह ।
6. आर्ष में **न्तो-माणो** के स्थान पर **न्ते-माणे** प्रत्यय भी लगता है ।

   उदा. हसन्ते, हसमाणे, होन्ते, हुन्ते, होमाणे ।

+ **'माण'** प्रत्ययान्तवाले प्रयोग प्राकृत साहित्य में बहुत ही अल्प दिखाई देते हैं ।

X प्राकृत साहित्य में से उद्धृत क्रियातिपत्त्यर्थ के तीनों लिंग के

उदा. पुं. एकव. : जइ तुमं संपइमं न **मुंचंतो,** तो हं मंसगिद्धगिद्धाइयाण भक्खं

हुंतो । पूजाष्टक (पृ.२४, गा.४६) जो तूने मुझे अब नहीं छोड़ा होता, तो मैं मांस में आसक्त इत्यादि पक्षीयों का भोजन बनता ।

पुं.बहुव. : ते पुण जइ अन्नोन्नं **पासंता**, तया तत्थ न **विसंता** । (बृह० गा. ३४२७) उन्होंने जो परस्पर एक दूसरे को देखा होता, तो वहाँ प्रवेश नहीं करते ।

पुं. एकव. बहुव. जइ तस्स गुणा **हुंता**, ता नूणं जणो वि (तं) **सलहंतो** । (संवेग० शा० पृ. ३७, गा.९८) जो उन्नमें गुण होते, तो निश्चय लोग भी उसकी प्रशंसा करते । **पु.एकव. बहुव.** जइअज्ज पहु ! तए हं विणासिओ हुंतो, तो केत्तियमेत्ता पुत्ता मज्झ जणयस्स हुंता । (पू.पृ.२९, गा. ९९) हे स्वामिन् ! जो तुम्हारे द्वारा आज मेरा विनाश किया गया होता, तो मेरे पिताजी के कितने पुत्र होते ? (अर्थात् एक भी नहीं होता ।)

पुं. एकव. स्त्री. एकव. : जइ (तुम्ह) तणयं हं न **हरावंतो**, ता मे सुया **मरंती** । (पू.पृ. ३८, गा-२४) जो मैंने तुम्हारे पुत्र का अपहरण नहीं करवाया होता, तो मेरी पुत्री मर जाती ।

पुं. एकव. स्त्री. एकव. : *एयंमि मसे* ***अच्छंते***, *(ता) एसा पडिमा अईव अब्भुदयहेऊ* सप्पभावा **हुंता** । (तीर्थकल्प पृ.२४) जो इस में (प्रतिमा में) काला चिह्न=डाघ होता तो यह प्रतिमा अत्यन्त अभ्युदय में कारणभूत और प्रभावशाली होती ।

पुं. एकव. नपुं. एकव. : जइ नवरं जीवाकुल लोगो न दिट्ठो **हुंतो**, तो सुंदर **हुंतं** । (निशीथ. भा. १, पृ.पू) जो जीवों से व्याप्त जगत् देखा होता, तो अच्छा होता ।

पुं. एकव. नपुं. एकव. : जइ पढममेव सो तुम्हेहिं नियत्तिओ **होंतो**, ता जुत्तं **हुंतं** । (महा. नि.पृ.९८, गा. ९९) जो पहले से ही वह तुम्हारे द्वारा वापिस लौटाया (भिजवाया=return किया) होता, तो योग्य होता ।

पुं. एकव. नपुं. एकव. : जइ मूले वि रोसुप्पायणं **करेंतो**, ता, जुत्ततरं **हुंतं** । (महा.पृ.९) जो प्रारम्भ में ही रोस की उत्पत्ति=गुस्सा किया होता, तो ज्यादा अच्छा होता । जइ हं **नागच्छंतो**, ता एक्कमवि पावं न मे **हुंतं** । (पूजा. पृ.२१, गा.१३) जो मैं नहीं आया होता, तो मुझे एक भी पाप नहीं लगता ।

स्त्री. एकवचन -- जइ गब्भाओ **पडंता**, बालत्तेवावि जइ ममा **होंता** ।
ता किं मज्झ निमित्ते, होज्ज इमा आवया तुज्झ ?

(करुणरस कदंबक पृ. ३३ (यदि मेरा गर्भपात हो गया होता अथवा बाल्यावस्था में ही मर गई होती तो क्या मेरे निमित्त से तुझे यह आपत्ति होती ?)

स्त्री. एक. / **पु. एक.** — जइ हं तं **पुच्छंती**, तो सो तइया वि मह **पयासंतो ।**
(पूजा-पृ.३७ गथा. ७५) (यदि मैने उसे पूछा होता तो उसने मुझे उसी समय बताया होता ।)

स्त्री. एक. / **नं. एक.** — जइ वल्लहजणे मणो जाइ, तहा जइ तणू वि **वच्चंती**
ता नूण कस्सइ तव्विरहविहूरत्तं न **हुंतं ।**
(पू.पृ. ३१ गाथा ७५) (जिस प्रकार प्रिय मनुष्य के विषय में मन जाता है, उसी प्रकार यदि शरीर भी गया होता तो उसके विरह से व्याकुलता किसी को नहीं होती ।)

नपु. एक. / **पु. बहु.** — *जइ पुण दुगंछिएसु कुलेसु एयाण जण्णमिह* ***हुंतं,*** *ता*
कह जयएक्कपुज्जा ***ठायंता*** *तग्गिहे मुणिणो ।*
(संवेग, पृ.१६३ गाथा ६१) (यदि ३ यहां निंदित कुलों में उनका जन्म हुआ होता तो जगत् में अजोड रुप से पूजनीय ऐसे मुनि उनके घर में कैसे रहते ?)

जइ सव्वण्णूहिं तिकालदरिसीहिं सव्व सुकरं दिट्ठं हुंतं
तो णं अम्हारिसा कापुरिसा सुहं **करेंतो ।**
(निशीथ भाग १, पृ. ५) (यदि त्रिकालदर्शी सर्वज्ञों ने सबकुछ सरलता से हो जाय ऐसा देखा होता तो हमारे जैसे कायर पुरुष सरलता से कर लेते)

स्त्री. एक. / **न. ए. पु.ए.** — होज्ज न संझा होज्जा, न निसा तिमिरं पि
जइ न **होमाणं,** ता **होंता** कह अम्हे, इअ संपइ पंसुलालावो ।
(कुमारपाल चरित स. ५ गा. १०५) यदि संध्या नहीं हुई होती, यदि रात्रि नहीं हुई होती तो हम कैसे होते (हमारी क्या दशा होती) इस प्रकार अभी पांसुला-दुराचारी स्त्रियों का वचन है ।)

रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिंग-	**हस्** - हसन्तो, हसमाणो	हसन्ता, हसमाणा
	हो - होन्तो, हुन्तो, होमाणो	होन्ता, हुन्ता, होमाणा
स्त्रीलिंग-	**हस्** - हसन्ती, हसमाणी	हसन्तीओ, हसमाणीओ

	हसन्ता, हसमाणा	हसन्ताओ, हसमाणाओ
	हो - होन्ती, हुन्ती	होन्तीओ, हुन्तीओ,
	होन्ता, हुन्ता,	होन्ताओ, हुन्ताओ
	होमाणी, होमाणा	होमाणीओ, होमाणाओ
नपुंसक-	**हस्** - हसन्तं, हसमाणं	हसन्ताइं, हसमाणाइं,
	होन्तं, हुन्तं, होमाणं	होन्ताइं, हुन्ताइं, होमाणाइं

हो + अ = होअ अंग के रूप

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
होअन्तो, होअन्ता होअमाणो, होअमाणा	होअन्ती, होअन्ता होअमाणी, होअमाणा	होअन्तं, होअन्ताइं, होअमाणं, होअमाणाइं

ज्ज - ज्जा प्रत्ययसहित रूप

सर्वपुरुष } हसेज्ज, हसेज्जा
सर्ववचन } होज्ज, होज्जा, होएज्ज, होएज्जा

ऋकारान्त नाम

प्राकृत में ऋ स्वर का प्रयोग नहीं होता है। इस कारण ऋकारान्त शब्दों में थोड़े परिवर्तन के साथ निम्नानुसार रूप बनते हैं –

7. (1) संस्कृत संबंधवाचक ऋकारान्त शब्दों के अन्त्य ऋ का अर होता है। **उदा. पिअर** (पितृ), **जामाअर** (जामातृ)

(2) विशेषणवाचक ऋकारान्त शब्दों के अन्त्य ऋ का आर होता है। **उदा. कत्तार** (कर्तृ), **दायार** (दातृ)

(3) तत्पश्चात् उपर्युक्त शब्द अकारान्त बनने से उनके पुंलिंग और नपुंसकलिंग में रूप अकारान्त पुंलिंग और नपुंसकलिंग के समान बनते हैं। (३/४५-४७)

उदा. पिआ, पिअरो (पितृ) प्रथमा एकवचन

कत्तारं (कर्तृ) प्रथमा-द्वितीया एकवचन

8. प्रथमा, द्वितीया एकवचन को छोड़कर सभी विभक्तियों में ऋकारान्त शब्द के अन्त्य **ऋ** का **उ** भी होता है और उनके रूप उकारान्त पुंलिंग

और नपुंसकलिंग के समान बनते हैं । (३/४४)

उदा. पिउ (पितृ), **कत्तु** (कर्तृ), **दाउ** (दातृ)

9. पुंलिंग प्रथमा एकवचन में **ऋ** का **आ** विकल्प से होता है । (३/४८)

उदा. पिआ (पिता), **कत्ता** (कर्ता), **दाया** (दाता)

10. (1) संबंधवाचक ऋकारान्त शब्दों के संबोधन एकवचन में अन्त्य **ऋ** का **अ** और अरं होता है । (३/३९)

उदा. हे पिअ !, हे पिअरं ! (पितृ)

(2) विशेषणवाचक ऋकारान्त शब्दों के संबोधन एकवचन में अन्त्य **ऋ** का **अ** विकल्प से होता है ।

उदा. हे कत्त ! (कर्तृ), **हे दाय !** (दातृ)

11. आर्ष में छठी विभक्ति एकवचन में **ए** प्रत्यय भी लगता है ।

उदा. पिउए, भाउए आदि

अकारान्त पुंलिंग रूप
पिअर, पिउ (पितृ)-पिता

	एकवचन	**बहुवचन**
पढमा	पिआ, पिअरो	पिअरा पिअवो, पिअउ, पिअओ, पिउणो, पिऊ
बीआ	पिअरं	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ
तइआ	पिअरेण-णं पिउणा	पिअरेहि-हिँ-हिं, पिऊहि-पिऊहिँ-हिं
च. छ.	पिअरस्स पिउणो, पिउस्स	पिअराण-णं पिऊण-णं
पंचमी	पिअरत्तो, पिअराओ पिअराउ-हि-हिन्तो, पिअरा, पिउणो, पिउत्तो, पिऊओ-उ-हिन्तो	पिअरत्तो, पिअराओ, पिअराउ-हि-हिन्तो-सुन्तो, पिअरेहि-हिन्तो-सुन्तो, पिउत्तो, पिऊओ-उ-हिन्तो-सुन्तो

सत्तमी	पिअरे, पिअरम्मि,	पिअरेसु-सुं,
	पिअरंसि,	
	पिउम्मि, पिउंसि	पिऊसु-सुं,
संबोहण	हे पिअ, पिअरं,	पिअरा,
	पिअर, पिअरो	पिअवो, पिअउ-ओ,
		पिउणो, पिऊ

(पुंलिंग) कत्तार-कत्तु (कर्तृ)-करनेवाला

	एकवचन	बहुवचन
प.	कत्ता, कत्तारो,	कत्तारा,
		कत्तवो, कत्तउ, कत्तओ,
		कत्तुणो, कत्तू
बी.	कत्तारं	कत्तारे, कत्तारा,
		कत्तुणो, कत्तू
त.	कत्तारेण-णं	कत्तारेहि-हिँ-हिं,
	कत्तुणा	कत्तूहि-हिँ-हिं
च. छ.	कत्तारस्स,	कत्ताराण-णं,
	कत्तुणो, कत्तुस्स	कत्तूण-णं
पं.	कत्तारत्तो, कत्ताराओ,	कत्तारत्तो, कत्ताराओ,
	कत्ताराउ-हि-हिन्तो,	कत्ताराउ-हि-हिन्तो-सुन्तो,
	कत्तारा	कत्तारेहि-हिन्तो-सुन्तो,
	कत्तुणो, कत्तुत्तो,	कत्तुत्तो, कत्तूओ-उ-
	कत्तूओ-उ-हिन्तो	हिन्तो-सुन्तो
स.	कत्तारे, कत्तारम्मि,	कत्तारेसु-सुं.
	कत्तारंसि,	
	कत्तुम्मि, कत्तुंसि	कत्तूसु-सुं.
सं.	हे कत्त, कत्तार,	कत्तारा,
	कत्तारो	कत्तवो, कत्तउ-ओ,
		कत्तुणो, कत्तू

(नपुंसकलिंग) कत्तार-कत्तु (कर्तृ)

प. } बी. }	कत्तारं	कत्ताराइं, कत्ताराइँ, कत्ताराणि, कत्तूइं, कत्तूइँ, कत्तूणि
सं.	हे कत्त, हे कत्तार	कत्ताराइं कत्ताराइँ, कत्ताराणि, कत्तूइं, कत्तूइँ, कत्तूणि

शेष पुंलिंगवत्

दायार-दाउ (दातृ) दाता, देनेवाला

प. } बी. }	दायारं	दायाराइं, दायाराइँ, दायाराणि, दाऊइं, दाऊइँ, दाऊणि
सं.	हे दाय, हे दायार	दायाराइं, दायाराइँ, दायाराणि, दाऊइं, दाऊइँ, दाऊणि

शेष पुंलिंगवत्

12. ऋकारान्त स्त्रीलिंग में संबंधवाचक शब्दों में निम्नानुसार परिवर्तन होता है – (३/३५)

दुहिआ, **धूआ**, **धीआ** } **(दुहितृ)** = पुत्री, लड़की

णणंदा (ननान्दृ) = ननद

पिउसिया, **पिउच्छा** } **(पितृष्वसृ)** = पिता की बहन, बूआ

माउसिआ, **माउच्छा** } **(मातृष्वसृ)** = मौसी, माँ की बहन

माअरा, **माआ**, **माउ** } **(मातृ)** = माता, माँ

ससा, **सुसा** } **(स्वसृ)** = बहन

13. उपर्युक्त शब्द आकारांत स्त्रीलिंग बनने से इनके रूप आकारान्त स्त्रीलिंग नाम के समान ही होते हैं, माउ शब्द के रूप उकारान्त स्त्रीलिंग नाम के समान होते हैं किन्तु प्रथमा, द्वितीया एकवचन में माउ शब्द का प्रयोग नहीं होता है।

उदा. माऊओ, माऊउ, माऊ प्रथमा बहुवचन

14. मातृ शब्द का किसी स्थान में '**माइ**' ऐसा शब्द सिद्ध होने से ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिंग के समान रूप भी होते हैं।

उदा. प. बहुव. } माईओ, माईउ, माई
बी. बहुव. }
छ. बहुव. माईण, माईणं

15. ये स्त्रीलिंग मूल से आकारान्त न होने के कारण संबोधन एकवचन में हे माआ, हे माअरा, हे ससा आदि रूप होते हैं।

आकारान्त स्त्रीलिंग रूप

माआ-माअरा-माउ (मातृ)-माता, माँ

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प.	माआ माअरा	माआओ, माआउ, माआ, माअराओ, माअराउ, माअरा, माऊओ, माऊउ, माऊ
बी.	माअं, माअरं	माआओ, माआउ, माआ, माअराओ, माअराउ, माअरा, माऊओ, माऊउ, माऊ
त.	माआअ, माआइ, माआए, माअराअ, माअराइ, माअराए, माऊअ, माऊआ, माऊइ, माऊए	माआहि-हिँ-हिं, माअराहि-हिँ-हिं, माऊहि-हिँ-हिं
च. छ.	माआअ, माआइ, माआए, माअराअ, माअराइ, माअराए, माऊअ, माऊआ, माऊइ, माऊए	माआण-णं, माअराण-णं, माऊण-णं

पं.	माआअ, माआइ, माआए, माअत्तो, माआओ-उ-हिन्तो, माअराअ, माअराइ, माअराए, माअरत्तो, माअराओ-उ-हिन्तो,	माअत्तो, माआओ-उ- हिन्तो-सुन्तो, माअरत्तो, माअराओ-उ-हिन्तो- सुन्तो
	माऊअ, माऊआ, माऊइ, माऊए माउत्तो-माऊओ-उ-हिन्तो	माउत्तो, माऊओ-उ-हिन्तो-सुन्तो
स.	माआअ, माआइ, माआए, माअराअ, माअराइ, माअराए, माऊअ, माऊआ, माऊइ, माऊए	माआसु-सुं, माअरासु-सुं, माऊसु-सुं.
सं.	हे माआ, हे माअरा	माआओ, माआउ, माआ, माअराओ, माअराउ, माअरा, माऊओ, माऊउ, माऊ

ससा (स्वसृ) बहन

	एकवचन	बहुवचन
प.	ससा	ससाओ, ससाउ, ससा
बी.	ससं	ससाओ, ससाउ, ससा
त.	ससाअ, ससाइ, ससाए	ससाहि-हिँ-हिं
च. छ.	ससाअ, ससाइ, ससाए	ससाण-णं
पं.	ससाअ, ससाइ, ससाए, ससत्तो, ससाओ, ससाउ, ससाहिन्तो	ससत्तो, ससाओ, ससाउ, ससाहिन्तो, ससासुन्तो
स.	ससाअ, ससाइ, ससाए	ससासु-सुं
सं.	हे ससा	ससाओ, ससाउ, ससा

शब्दार्थ (पुंलिंग)

अक्क (अर्क) = सूर्य
असोगचन्द (अशोकचन्द्र) = श्रेणिक के पुत्र का नाम, दूसरा नाम कोणिक
अहिमन्नु, **अहिमञु**, **अहिमज्जु** (अभिमन्यु), विशेषनाम, अर्जुन का पुत्र, अभिमन्यु
आसम (आश्रम) = आश्रम, तापस का स्थान
कउरव (कौरव) = कुरुराजा के वंशज, कौरव
जामायर, **जामाउ** (**जामातृ**) = दामाद
जीवाइ (जीवादि) = जीव-अजीव आदि नौ तत्त्व
पहिअ (पथिक, पान्थ) = मुसाफिर
पिअर, **पिउ** (**पितृ**) = पिता
भत्तार, **भतु** (**भर्तृ**) = स्वामी, पति
भायर, भाउ, (भ्रातृ) = भाई, बन्धु
लक्खण (लक्ष्मण) = राम का भाई, लक्ष्मण
लेह (लेख) = लेख
वासुदेव (वासुदेव) = वासुदेव
सच्चवय (सत्यवद) = सत्य बोलनेवाला, सत्यवादी
सिद्धत्थ (सिद्धार्थ) = सिद्धार्थ राजा, भगवान महावीर के पिता का नाम
हरअ, द्रह (ह्रद) = तालाब, बड़ा सरोवर

(नपुंसकलिंग)

अग्ग (अग्र) = आगे, शिखर
आयारंग (आचाराङ्ग) = आचारांग सूत्र, बारह अंगों में से प्रथम अंग का नाम
चीवंदण (चैत्यवंदन) चैत्यवंदन
चोज्ज (चोद्य) = आश्चर्य, प्रश्न
तत्तनाण (तत्त्वज्ञान) = जीवादि तत्त्वों का ज्ञान
परिमाण (परिमाण) = मान, माप
बंधण (बन्धन) = बेड़ी, बाँधना
भाल (भाल) = ललाट
भूयहिअ (भूतहित) = जीवों का उपकार
भोयण (भोजन) = भोजन
लक्खण (लक्षण) = लक्षण, चिह्न
ललाड, **णडाल** (**ललाट**) = भाल, ललाट
सगास (सकाश) = समीप, पास में
सरण (शरण) = शरण, आश्रय
सरोरुह (सरोरुह) = कमल

(पुंलिंग + नपुंसकलिंग)

परदार (परदार) = परस्त्री
माहप्प (माहात्म्य) = महिमा, प्रभाव, बडप्पन
सत, **सय** (**शत**) = सौ की संख्या
सकम्म (स्वकर्म) = अपना कर्म

सयसहस्स (शतसहस्र) = लाख, सौ बार हजार

सीस (शीर्ष) = मस्तक

(स्त्रीलिंग)

जत्ता (यात्रा) = यात्रा, तीर्थयात्रा

जाया (जाया) = स्त्री

तत्तवत्ता (तत्त्ववार्ता) = तत्त्वोंकी बात

तिसला (त्रिशला) = प्रभु महावीर की माता

दुहिआ, धुआ, धीआ (दुहितृ) = पुत्री, लड़की

देवाणंदा (देवानंदा) विशेषनाम, महावीर प्रभु की माता का नाम, देवानंदा

णणंदा (ननान्दृ) ननन्द, ननद

पडिवया, पाडिवया (प्रतिपत्) एकम तिथि, पड़वा

पिउसिया, पिउच्छा (पितृष्वसृ) बूआ, फूफी

पिवासा (पिपासा) = तृषा, प्यास

माआ, माअरा, माउ, माइ (मातृ) = माता, माँ

माउसिआ, माउच्छा (मातृष्वसृ) = मासी

विवत्ति (विपत्ति) = दु:ख

ससा, सुसा (स्वसृ) = बहन

सेत्तुजी, सेत्तुंजी (शत्रुअयी) = शत्रुंजी, एक नदी का नाम

सोहा (शोभा) = शोभा, दीप्ति

विशेषण

एरिस (ईदृश) = ऐसा, ऐसी रीति का

कत्तार, कत्तु (कर्तृ) = कर्ता, करनेवाला

णायार, णाउ (ज्ञातृ) = ज्ञाता, जाननेवाला

णेय (ज्ञेय) = जानने लायक

थोक्क, थोव, थेव (स्तोक) = अल्प, थोड़ा

दायार, दाउ (दातृ) = दातार, देनेवाला

धायार, धाउ (धातृ) = धारण करनेवाला, विधाता, पालन करनेवाला, ब्रह्मा

निप्फल (निष्फल) = निरर्थक, फलरहित

नेमित्तिअ (नैमित्तिक) = निमित्त शास्त्र जाननेवाला, ज्योतिषी

परप्पर, परोप्पर, परुप्पर (परस्पर) = अन्योन्य, एक दूसरे को

पालग (पालक) = पालन करनेवाला

भट्ठ (भ्रष्ट) = भ्रष्ट, पतित	**वत्तार / वत्तु (वक्तृ)** = वक्ता, बोलनेवाला
भमंत (भ्रमत्) = घूमता	**विरूव (विरूप)** = कुरूप, खराब रूप
भत्तार / भत्तु (भर्तृ) = भर्ता, पोषण करनेवाला	**विसमिसिअ (विषमिश्रित)** = जहरवाला
मिसिअ (मिश्रित) = मिश्रण किया हुआ	**वीयराग (वीतराग)** = रागरहित
रअ (रत) = आसक्त	

धातु

अल्ली (आ + ली) = आश्रय करना, आलिंगन करना, प्रवेश करना	**पउस्स् / पउस् (प्र + द्विष्)** = द्वेष करना
कंख् / मह् (काङ्क्ष्) = चाहना,	**पल्लोट्ट / पल्हत्थ् (पर्यस्)** = फेंकना
घोट्ट (पा) = पीना	**रुंभ् / रुंध् (रुध्)** = रोकना
निगिण्ह् / नग्गह् (नि + ग्रह्) = पकड़ना, रोकना, शिक्षा करना	**सिणिज्झ (स्निह्य)** = स्नेह करना
निवड् (नि + पत्) = गिरना	

अव्यय

अंत-अंतो (अन्तर्) = अन्दर, बीच में	**झडित्ति-झडत्ति-झत्ति (झटिति)** = जल्दी
अम्मो (दे.) = आश्चर्य	**तहिं (तत्र)** = वहाँ
अहो (अहो) = विस्मय, आश्चर्य, शोक	**तहवि (तथापि)** = तो भी
किर-इर-हिर-किल (किल) = निश्चय, संभावना, संशय	**सणियं (शनैस्)** = धीरे-धीरे

हिन्दी में अनुवाद करें–

1. हं वच्छाणं पण्णाणि छेच्छं ।
2. अम्हे साहुणो सगासे तत्ताइं सोच्छिस्सामो ।
3. जइ माआ जत्ताए गच्छिइ तो वच्छो दुहिआ य रोच्छिहिन्ति ।
4. अम्हे किर सच्चं वोच्छिस्सामो ।
5. सव्वण्णू झत्ति सिवं गच्छिहिरे ।
6. हं सत्तुंजयं गच्छिस्सं, तहिं गिरिस्स सोहं दच्छं, तह सेत्तुंजीए नईए ण्हाहिस्सं, पच्छा य तित्थयराणं पडिमाओ चन्दणेण पुप्फेहिं च

अच्चिहिमि, गिरिणो य माहप्पं सोच्छिमि, पावाइं च कम्माइं छेच्छिहिमि, जीविअं च सहलं करिस्सं ।

7. जइ असोगचंदो नरिंदो दिसासु परिमाणं कुणंतो ता निरए नेव निवडन्तो ।
8. सो आयारंगं भणेज्जा ता गीयत्थो होन्तो ।
9. जइ हं सत्तुं निगिण्हन्तो, तया एरिसं दुहं अहुणा किं लहमाणो ?
10. जइ धम्मस्स फलं हविज्ज तया परलोगे सुहं लहेज्जा ।
11. *साहम्मिआणं वच्छलं सइ कुज्जा त्ति वीयरागस्स आणा ।*
12. *तिसला देवी देवाणंदा य माहणी पहुणो महावीरस्स माऊओ आसि ।*
13. सिरिवद्धमाणस्स पिआ सिद्धत्थो नरिंदो होत्था ।
14. पुव्वण्हे अक्कस्स तावो थोवो, मज्झण्हे य अईव तिक्खो, अवरण्हे अ थोक्को अइ थेवो वा ।
15. सकम्मेहिं इह संसारे भमंताणं जन्तूणं सरणं माआ पिआ माअरा भाउणो सुसा धूआ अ न हवन्ति, एक्को एव धम्मो सरणं ।
16. जो बाहिरं पासेइ, सो मूढो, अंतो पासेइ सो पंडिओ णेओ ।
17. पिउणो ससा पिउसिअ त्ति, तह माउए य ससा माउसिआ इइ कहेइ ।
18. नणंदा भाउस्स जायाए सिणिज्झइ ।
19. धूआ माअरं पिअरं च सिलेसइ ।
20. रामस्स वासुदेवस्स य पिअरम्मि माऊसुं य परा भत्ती अत्थि ।
21. सासू जामाऊणं पडिवयाए पाहुडं दाहिन्ति ।
22. जा नारी भत्तारम्मि पउस्सेइ सा सुहं न पावेइ ।
23. कुलबालियाणं भत्तवो चेव देवा ।
24. माआ धूआणं पुत्ताणं च बहुं धणं अप्पेइ ।
25. जे नरा भत्तुणमाएसे न वट्टन्ते ते दुहिणो हवन्ति ।
26. आवयासु जे सहेज्जा हुंति ते च्च भाउणो ।
27. धूआए माआए य परूप्परं अईव नेहो अत्थि ।
28. सासूणं जामाउणो अईव पिआ हवन्ति ।
29. अहं माअराए य पिउणा य भायरेहिं च ससाहिं च सह सिद्धगिरिस्स जत्ताए जाएज्जा ।
30. दायाराणं मज्झे कण्णो निवो पढमो होत्था ।
31. रामस्स भाया लक्खणो निएण चक्केण रावणस्स सीसं छिन्दीअ ।

32. सतेसु जायते सूरो, सहस्सेसु य पंडिओ ।
वत्ता सयसहस्सेसु, दाया जायति वा न वा ॥

33. इंदियाणं जए सूरो, धम्मं चरति पंडिओ ।
वत्ता सच्चवओ होइ, दाया भूयहिए रओ ॥

प्राकृत में अनुवाद करें–

1. यदि उसने जहरवाला भोजन किया होता तो वह मृत्यु प्राप्त करता ।
2. यदि तुमने जिनेश्वर के चरित्र सुने होते तो धर्म प्राप्त करते ।
3. अभिमन्यु जिन्दा होता तो कौरवों की पूरी सेना को जीत लेता ।
4. यदि उसको तत्त्वों का ज्ञान होता तो वह धर्म प्राप्त करता ।
5. यदि आप उस समय बंधन में से छोड़ते तो मैं सत्य बोलता ।
6. रावण ने परस्त्री का त्याग किया होता तो वह नहीं मरता ।
7. ज्ञाता के पास उसने तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त किया ।
8. मैं तालाब में से कमल लूंगा और माता और बहन को दूंगा ।
9. माता और पिता के साथ जिनालय में जाऊँगा और चैत्यवंदन करूंगा ।
10. लक्ष्मण के भाई राम ने दीक्षा ली और मोक्ष प्राप्त किया ।
11. बहू को ननन्द पर अतिस्नेह है ।
12. गरीबों को पालनेवाले थोड़े ही होते हैं ।
13. विधाता के लेख का कोई भी उल्लंघन नहीं करता है ।
14. कुरूप बालकों पर माता का अतीव स्नेह होता है ।
15. जैसे बधिरों (बहरों) के आगे गायन निष्फल है वैसे मूर्ख पुरुषों के आगे तत्त्वों की बातें निष्फल हैं ।
16. प्रतिदिन बहुत प्राणी मरते हैं, तो भी अज्ञानी 'हम मरनेवाले नहीं हैं' ऐसा मानते हैं, इससे दूसरा आश्चर्य क्या है ?
17. निमित्त को जाननेवाले ने उसके ललाट में अच्छे लक्षण देखे और कहा कि तुम राजा बनोगे ।
18. वह वेश्या में आसक्त नहीं होता तो धर्म से पतित नहीं होता ।
19. मूर्ख भी धीरे-धीरे उद्यम करने से होशियार बनता है ।

पाठ 19

कर्मणि रूप और भावे रूप

प्रत्यय - ईअ (ईय), इज्ज

1. धातु को **ईअ (ईय)** अथवा **इज्ज** प्रत्यय लगाकर तैयार अंग को काल के पुरुषबोधक प्रत्यय लगाने से कर्मणि या भावे रूप बनते हैं । (३/१६०)
2. भविष्यकाल, क्रियातिपत्त्यर्थ आदि के कर्मणि या भावे रूप कर्तरि के समान ही होते हैं । (४/२४१ त: ४/२५७)
3. जो धातु सकर्मक हो तो कर्मणि प्रयोग और अकर्मक (कर्मरहित) हो तो भावेप्रयोग होता है ।

   अकर्मक धातु = लज्जित होना, खड़ा रहना, होना, जागना, बढ़ना, जीर्ण होना, भय पाना, जीना, मरना, सोना, प्रकाशित होना और खेलना, इस अर्थवाले धातु अकर्मक जानने चाहिए, इनसे अतिरिक्त अर्थवाले धातु सकर्मक जानने चाहिए ।
4. कर्मणिप्रयोग में कर्ता तृतीया और कर्म प्रथमा विभक्ति में आता है तथा कर्म के अनुसार क्रियापद रखा जाता है ।

   उदा. कर्तरि-**कुंभारो घडं कुणइ** = कुंभार घट करता है (बनाता है)

   कर्मणि-**कुंभारेण घडो कुणीअइ** = कुंभार द्वारा घट बनाया जाता है ।

   कर्तरि-**रामो जिणे अच्चेइ** = राम जिनेश्वरों को पूजता है ।

   कर्मणि-**रामेण जिणा अच्चिज्जंति** = राम द्वारा जिनेश्वर पूजे जाते है ।
5. भावे प्रयोग में कर्ता तृतीया विभक्ति में आता है, कर्म नहीं होता है और क्रियापद तृतीयपुरुष एकवचन में रखा जाता है ।

   उदा. कर्तरि-**बालो जग्गइ** = बालक जगता है ।

   कर्मणि-**बालेण जग्गिज्जइ** = बालक द्वारा जगा जाता है ।

   कर्तरि-**वच्छा रमंति** = बालक खेलते हैं ।

   कर्मणि-**वच्छेहिं रमिज्जइ** = बालकों द्वारा खेला जाता है ।

कर्मणि-भावे अंग

हस् + ईअ = हसीअ	हो + ईअ = होईअ
हस् + इज्ज = हसिज्ज	हो + इज्ज = होइज्ज
पढ् + ईअ = पढीअ	ने + ईअ = नेईअ
पढ् + इज्ज = पढिज्ज	ने + इज्ज = नेइज्ज
बोल्ल् + ईअ = बोल्लीअ	ठा + ईअ = ठाईअ
बोल्ल् + इज्ज = बोल्लिज्ज	ठा + इज्ज = ठाइज्ज
कंप् + ईअ = कंपीअ	झा + ईअ = झाईअ
कंप् + इज्ज = कंपिज्ज	झा + इज्ज = झाइज्ज
देक्ख् + ईअ = देक्खीअ	ण्हा + ईअ = ण्हाईअ
देक्ख् + इज्ज = देक्खिज्ज	ण्हा + इज्ज = ण्हाइज्ज

इस प्रकार अंग बनाकर पुरुषबोधक प्रत्यय लगाने पर कर्मणि-भावे रूप बनते हैं।

वर्तमानकाल

व्यंजनान्त धातु = पढीअ, पढिज्ज - **पढ् (पठ्)** = पढ़ना

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पढीअमि	पढीअमो - मु - म
	पढीआमि	पढीआमो - मु - म
	पढीज्जमि	पढीइमो - मु - म
	पढीज्जामि	पढिज्जमो - मु - म
		पढिज्जामो - मु - म
		पढिज्जिमो - मु - म
द्वितीय पुरुष	पढीअसि, पढीअसे	पढीइत्था, पढीअह
	पढिज्जसि, पढिज्जसे	पढिज्जित्था, पढिज्जह
तृतीय पुरुष	पढीअइ, पढीअए,	पढीअन्ति-न्ते, पढिइरे,
	पढिज्जइ, पढिज्जए	पढिज्जन्ति-न्ते, पढिज्जिरे

पुरुषबोधक प्रत्ययों के पूर्व अ का ए होता है तब-

	एकवचन	बहुवचन
तृतीय पुरुष	पढीएइ,	पढीएन्ति, पढीएन्ते, पढीएइरे,
	पढिज्जेइ	पढिज्जेन्ति, पढिज्जेन्ते, पढिज्जेइरे,

पुरुषबोधक प्रत्ययों के पूर्व अ का ए और ज्ज-ज्जा प्रत्ययसहित-

सर्वपुरुष, **सर्ववचन** - पढीएज्ज, पढीएज्जा
पढिज्जेज्ज, पढिज्जेज्जा

ह्यस्तन भूतकाल

सर्वपुरुष, **सर्ववचन** - पढीअईअ, पढीज्जईअ

आर्ष में

सर्वपुरुष, **सर्ववचन** - पढीइत्था, पढिज्जित्था,
पढीइंसु, पढिज्जिंसु

परोक्षभूत + अद्यतन भूतकाल

कर्तरिवत् - पढीअ

विधि-आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र.पु.	पढीअमु-आमु-इमु-एमु पढिज्जमु-ज्जामु-ज्जिमु-ज्जेमु	पढीअमो-आमो-इमो-एमो पढिज्जमो-ज्जामो-ज्जिमो-ज्जेमो
द्वितीय पुरुष	पढीअहि-एहि, पढीअसु-एसु, पढीइज्जसु-एज्जसु, पढीइज्जहि-एज्जहि, पढीइज्जे-एज्जे, पढीअ पढिज्जहि-ज्जेहि, पढिज्जसु, पढिज्जेसु, पढिज्जिज्जसु, ज्जेज्जसु, पढिज्जिज्जहि, ज्जेज्जहि, पढिज्जिज्जे-ज्जेज्जे, पढिज्ज	पढीअह, पढीएह पढिज्जह, पढिज्जेह

आर्ष में-	पढीइज्जसि, पढीएज्जसि पढीइज्जासि, पढीएज्जासि, पढीइज्जाहि, पढीएज्जाहि, पढीआहि	पढीइज्जाह, पढीएज्जाह
	पढिज्जिज्जसि, पढिज्जेज्जसि, पढिज्जिज्जासि, पढिज्जेज्जासि, पढिज्जिज्जाहि, पढिज्जेज्जाहि, पढिज्जाहि	पढिज्जिज्जाह, पढिज्जेज्जाह
तृतीय पुरुष	पढीअउ, पढीएउ, पढिज्जउ, पढिज्जेउ	पढीअन्तु, पढीएन्तु पढिज्जन्तु, पढिज्जेन्तु
सर्वपुरुष सर्ववचन	पढीएज्ज-ज्जा पढिज्जेज्ज-ज्जा	पढीएज्जइ, पढीएज्जाइ पढिज्जेज्जइ, पढिज्जेज्जाइ

भविष्यकाल

तृतीय पुरुष एकवचन - * पढिहिइ, पढेहिइ, पढिस्सइ

पढिहिए, पढेहिए, पढिस्सए

इस प्रकार सभी रूप कर्तरि के समान जानने चाहिए ।

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	**बहुवचन**
पुंलिंग	पढन्तो	पढन्ता
स्त्रीलिंग	पढन्ती	पढन्तीओ
नपुंसकलिंग	पढन्तं	पढन्ताइं

आदि कर्तरि वत्

सर्वपुरुष सर्ववचन } पढेज्ज - पढेज्जा

स्वरान्त धातु - हो (भू) = होना. होईअ, होइज्ज

---

* षड्भाषा चन्द्रिका तथा आर्ष में ईअ-इज्ज का प्रयोग भविष्यकाल में दिखाई देता है । पढीइहिइ-ए, पढीएहिइ-ए, पढिज्जिहिइ-ए, पढिज्जेहिइ-ए, पढीइहिज्ज-ज्जा, पढीएहिज्ज-ज्जा, पढिज्जिहिज्ज-ज्जा, पढिज्जेहिज्ज-ज्जा आदि रूप भी होते हैं । आर्ष में-साहरिज्जिस्सामित्ति जाणइ (संहरिष्ये) कप्पसुत्ते सुत्तं ३०.

वर्तमानकाल

तृतीय पु. एकवचन होईअइ, होईएइ, होइज्जइ, होइज्जेइ

इस प्रकार सभी रूप जानने चाहिए ।

सर्वपुरुष सर्ववचन होईएज्ज, होईएज्जा
होइज्जेज्ज, होइज्जेज्जा

भूतकाल

सर्वपुरुष सर्ववचन होईअसी, होईअही, होईअहीअ
होइज्जसी, होइज्जही, होइज्जहीअ

आर्ष में-

सर्वपुरुष-सर्ववचन- होईइत्था, होईइंसु, होइज्जित्था, होइज्जिंसु

परोक्षभूत + अद्यतन भूतकाल

सर्वपुरुष-सर्ववचन - होसी, होही, होहीअ

आर्ष में - होत्था, हविंसु — कर्तरिवत्

विधि - आज्ञार्थ

तृतीय पु. एकवचन - होईअउ, होईएउ, होइज्जउ, होइज्जेउ आदि ।

सर्वपुरुष सर्ववचन होईएज्ज, होईएज्जा
होइज्जेज्ज, होइज्जेज्जा, होईएज्जइ, होईएज्जाइ
होइज्जेज्जइ, होइज्जेज्जाइ

भविष्यकाल

तृतीय पुरुष एकवचन - * होहिइ, होहिए — कर्तरिवत्

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिंग	होन्तो, हुन्तो	होन्ता, हुन्ता
स्त्रीलिंग	होन्ती, हुन्ती	होन्तीओ, हुन्तीओ
नपुंसकलिंग	होन्तं, हुन्तं	होन्ताइं, हुन्ताइं

आदि कर्तरिवत्

* षड्भाषा चन्द्रिका में होईइहिइ, होईएहिइ, होइज्जिहिइ, होइज्जेहिइ, होईइहिज्ज-ज्जा, होईएहिज्ज-ज्जा, होइज्जिहिज्ज-ज्जा, होइज्जेहिज्ज-ज्जा आदि प्रयोग भी दिखाई देते हैं ।

+ षड्भाषा में होईअन्तं, होइज्जन्तं, होईएज्ज-ज्जा, होइज्जेज्जा-ज्जा आदि प्रयोग भी दिखाई देते हैं ।

सर्वपुरुष } होज्ज-ज्जा
सर्ववचन } हुज्ज-ज्जा

कर्मणि और भावे में ही उपयोगी धातुओं के आदेश

क्र.सं.	प्राकृत कर्तरि	प्राकृत कर्मणि	संस्कृत धातु	अर्थ
1.	पास्	दीस	दृश्	देखना
2.	वय्	वुच्च	वच्	बोलना
3.	चिण्	चिव्व, चिम्म	चि	इकट्ठा करना
4.	जिण्	जिव्व	जि	जीतना
5.	सुण्	सुव्व	श्रु	सुनना
6.	हुण्	हुव्व	हु	होम करना
7.	थुण्	थुव्व	स्तु	स्तुति करना
8.	लुण्	लुव्व	लू	काटना
9.	पुण्	पुव्व	पू	पवित्र करना
10.	धुण्	धुव्व	धू	हिलाना, कम्पन कराना
11.	हण्	हम्म	हन्	नाश करना
12.	खण्	खम्म	खन्	खोदना
13.	दुह्	दुब्भ	दुह्	दोहना
14.	लिह्	लिब्भ	लिह्	चाटना
15.	वह्	वुब्भ	वह्	वहन करना
16.	रुंध्	रुब्भ	रुध्	रोकना
17.	डह्	डज्झ	दह्	जलना, जलाना
18.	बंध्	बज्झ	बन्ध्	बाँधना
19.	सं + रुंध्	संरुज्झ	सं + रुध्	रोकना
20.	अणु + रुंध्	अणुरुज्झ	अनु + रुध्	आज्ञा मानना, अनुसरण करना, आधीन होना
21.	उव + रुंध्	उवरुज्झ	उप + रुध्	रोकना
22.	गम्	गम्म	गम्	जाना
23.	हस्	हस्स	हस्	हँसना

क्र.सं.	प्राकृत कर्तरि	प्राकृत कर्मणि	संस्कृत धातु	अर्थ
24.	भण्	भण्ण	भण्	बोलना, पढ़ना
25.	छुव्	छुव्व	स्पृश्	स्पर्श करना
26.	रुव्	रुव्व	रुद्	रोना
27.	लह्	लब्भ	लभ्	प्राप्त करना
28.	कह्	कत्थ	कथ्	कहना
29.	भुंज्	भुज्ज	भुज्	खाना
30.	हर्	हीर	हृ	हरण करना, ले जाना
31.	कर्	कीर	कृ	करना
32.	तर्	तीर	तृ	तैरना
33.	जर्	जीर	जॄ	जीर्ण होना
34.	विढव्, अज्ज्	विढप्प	अर्ज्	पैदा करना, कमाना
35.	जाण्	णव्व, णज्ज	ज्ञा	जानना
36.	वाहर्	वाहिप्प	वि+आ+हृ	बोलना, बुलाना
37.	आढव्	आढप्प	आ+रभ्	शुरू करना, आरंभ करना
38.	सिणिज्झ	सिप्प	स्निह्	स्नेह करना
39.	सिच्	सिप्प	सिच्-सिञ्च्	छांटना, सिंचन करना
40.	गह्-गिण्ह्	घेप्प, घिप्प	ग्रह्	ग्रहण करना
41.	छिव्	छिप्प	स्पृश्	स्पर्श करना

6. **चिव्व से छिप्प** पर्यन्त के धातुओं का कर्मणि और भावे प्रयोग में ही विकल्प से प्रयोग होता है । जब उनका प्रयोग होता है तब कर्मणि-भावे के प्रत्यय लगाये बिना उस-उस काल के पुरुषबोधक प्रत्यय लगाये जाते हैं ।
7. दीस् और वुच्च धातु में यह प्रयोग नित्य होता है ।
8. जब चिव्व, जिव्व आदि धातुओं का प्रयोग नहीं करना हो तब चिण्-जिण् वगैरह मूल धातुओं को कर्मणि-भावे प्रत्यय लगाकर अंग बनाकर उस-उस काल के पुरुषबोधक प्रत्यय लगाने से भी रूप बनते हैं ।

कुछ कर्मणि और भावे रूपों का कोष्टक

धातु	वर्तमानकाल तृ.पु. एकवचन	विध्यर्थ-आज्ञार्थ तृ.पु. एकवचन	भूतकाल सर्वपु. सर्ववचन	भविष्यकाल तृ.पु. एकवचन	क्रियातिपत्त्यर्थ सर्वपु. सर्ववचन
दीस्	दीसइ	दीसउ	दीसीअ	(नि.२ से) पासिहिइ	(नि.२ से) पासन्तो-न्ती-न्तं पासेज्ज-ज्जा दीसन्तो-न्ती-न्तं
				दीसिहिइ	दीसेज्ज-ज्जा
भण्	भण्णइ	भण्णउ	भण्णीअ भणीअईअ	भण्णिहिइ	भण्णन्तो-न्ती भण्णेज्ज-ज्जा
	भणीअइ भणिज्जइ	भणीअउ भणिज्जउ	भणिज्जईअ	भणिहिइ	भणेज्ज-ज्जा भणन्तो-न्ती-न्तं
हस्	हस्सइ	हस्सउ	हस्सीअ हसीअईअ	हस्सिहिइ	हस्सन्तो-न्ती-न्तं हस्सेज्ज-ज्जा
	हसीअइ हसिज्जइ	हसीअउ हसिज्जउ	हसिज्जईअ	हसिहिइ	हसन्तो-न्ती-न्तं हसेज्ज-ज्जा
थुण्	थुव्वइ	थुव्वउ	थुव्वीअ	थुव्विहिइ	थुव्वन्तो-न्ती-न्तं थुव्वेज्ज-ज्जा
	थुणीअइ थुणिज्जइ	थुणीअउ थुणिज्जउ	थुणीअईअ थुणिज्जईअ	थुणिहिइ	थुणन्तो-न्ती-न्तं थुणेज्ज-ज्जा
ने	नेईअइ	नेईअउ	नेईअसी-ही-हीअ	नेहिइ	नेन्तो-न्ती-न्तं
	नेइज्जइ	नेइज्जउ	नेइज्जसी-ही-हीअ		नेज्ज-ज्जा

9. शब्द में **द्र** संयुक्त व्यंजन हो तो **द्र** के **र्** का विकल्प से लोप होता है। (२/८०)

उदा. चन्दो, चंद्रो (चन्द्र:) | भद्दो, भद्रो (भद्र:)
रुद्दो, रुद्रो (रुद्र:) | समुद्दो, समुद्रो (समुद्र:)

शब्दार्थ (पुंलिंग)

अकाल (अकाल) = अकाल, समय बिना
आणाल (आलान) = बंधन, हाथी को बाँधने का खूंटा
उवयार (उपकार) = उपकार, आदर, सेवा
नायमग्ग (न्यायमार्ग) = नीति, मार्ग
नीसंद (निःष्यन्द) = रस का झरना, गलना
पओग (प्रयोग) = प्रयोग, साधन
परिसर (परिसर) = समीप
भुयग (भुजग) = साँप, सर्प
मारुअ (मारुत) = पवन, वायु
राहु (राहु) = राहु ग्रह
विउस (विद्वस्) = विद्वान्
विहि (विधि) = प्रकार, भाग्य, कर्तव्य, आज्ञा
सज्झाय (स्वाध्याय) = शास्त्रपठन, आवृत्ति करना
समणोवासग-य (श्रमणोपासक) = श्रावक, साधु का उपासक
सुअ (सुत) = पुत्र

(नपुंसकलिंग)

गुंजिअ (गुञ्जित) = गुनगुनाहट
चिंध, चिण्ह (चिह्न) = चिह्न, लंछन, निशानी
जंत (यन्त्र) = यन्त्र, मशीन
दुआर, दार, वार (द्वार) = दरवाजा
नहयल (नभस्तल) आकाशतल
भद्द, भद्र (भद्र) = कल्याण, सुख, मंगल
मउण, मोण (मौन) = मौन
मसाण, सुसाण (श्मशान) = श्मशानभूमि
वसण (व्यसन) कष्ट, दुःख
सुरहि (सुरभि) सुगन्ध

(पुंलिंग + नपुंसकलिंग)

रुक्ख (वृक्ष) वृक्ष, पेड़

(स्त्रीलिंग)

अउज्झा, अओज्झा (अयोध्या) = एक नगरी का नाम, अयोध्या
केरिसी (कीदृशी) = किस प्रकार की
तारा (तारा) नक्षत्र, तारा
देवी (देवी) देवी, उत्तम स्त्री, पटरानी
परिसा (पर्षद्) = सभा
सद्धा, सड्ढा (श्रद्धा) = धर्मराग, स्पृहा, = विश्वास
सहा (सभा) = सभा

(विशेषण)

अप्प (अल्प) थोड़ा
असब्भ (असभ्य) खराब, सभ्य नहीं
इयर (इतर) अन्य, दूसरा, हीन
उच्च / **उच्चअ** (उच्चक) उन्नत, ऊँचा
कयग्घ (कृतघ्न) = नमकहराम, उपकार नहीं माननेवाला
किअंत (कियत्) = कितना
गुरुअ (गुरुक) = बड़े, ज्येष्ठ
ठिअ (स्थित) = खड़ा रहा हुआ, रहा हुआ
थेर (स्थविर) = वृद्ध, वृद्ध जैन साधु
दयालु (दयालु) = दयावान
धवल (धवल) = सफेद, श्वेत
धुत्त (धूर्त) = ठग
निम्मल (निर्मल) = स्वच्छ
पच्चक्ख (प्रत्यक्ष) = साक्षात्, खुल्ला, प्रत्यक्ष
भद्द / **भद्र** **(भद्र)** = कल्याण करनेवाला, सुखी, सरल स्वभावी
रउद्द / **रोद्द** **(रौद्र)** = दारुण, भयंकर, भीषण
वीसत्थ (विश्वस्त) = विश्वासवाला
सीयल (शीतल) = ठण्डा, शीत स्पर्शवान
सुरहि (सुरभि) = सुगन्धवाला

(सामासिक शब्द)

अन्नुन्नरूव (अन्योन्यरूप) = परस्पर स्वरूपवान
इंदियवग्ग (इन्द्रियवर्ग) = इन्द्रियों का समूह
जोयणपरिमंडल (योजनपरिमंडल) = गोलाकार योजन प्रमाण
नयसहस्स (नयसहस्र) = हजारों नीति
भिच्चगुण (भृत्यगुण) = नौकर के गुण
मच्छवहगाइ (मत्स्यवधकादि) = मच्छीमार आदि
महिलामण (महिलामनस्) = स्त्रियों का मन
विविहचरित्त (विविधचरित्र) = अलग-अलग चरित्र
ससिरवि (शशिरवि) = चन्द्र और सूर्य
सिहरपरंपरा (शिखरपरंपरा) = शिखरों की परम्परा
सुयणदुज्जणविसेस (सुजनदुर्जनविशेष) = सज्जन-दुर्जन का भेद

अव्यय

इणं (इदम्) यह (इदम् सर्व-प्र.एकव.)
केणइ (केनचित्) = किसी के द्वारा
जहसत्ति (यथाशक्ति) = शक्ति अनुसार
सव्वओ (सर्वतः) = सब तरफ
समंता (समन्तात्) = चारों तरफ
सक्खं (साक्षात्) = प्रत्यक्ष
हु / **खु** **(खलु)** = निश्चय, वितर्क, संभावना, विस्मय अर्थ में

धातु

अव-मन्न् (अव + मन्) = अवज्ञा करनी, अपमान करना	**दम् (दम्)** = निग्रह करना
अव-लंब् (अव + लम्ब्) = आश्रय लेना	**सं-प-मज्ज् (सं + प्र + मृज्)** = साफ करना, निर्मल करना
उव-यर् (उप + कृ) = उपकार करना	**हिंड् (हिण्ड्)** = जाना, घूमना
चव् (कथ्) = बोलना	
पम्हस् (वि + स्मृ) = भूलना, विस्मरण होना	

हिन्दी में अनुवाद करें

1. जे भावा पुव्वण्हे दीसीअ, ते अवरण्हे न दीसन्ति ।
2. जह पवणस्स रउद्देहिं गुंजिएहिं मंदरो न कंपिज्जइ, तह खलाणं असब्भेहिं वयणेहिं सज्जणाणं चित्ताइं न कंपीइरे ।
3. धम्मेण सुहाणि लब्भन्ति, पावाइं च नस्संति ।
4. समणोवासएहिं चेइएसु जिणंदाणं पडिमाओ अच्चिज्जीअ ।
5. विउसाणं परिसाए मुक्खेहिं मउणं सेवीअउ अन्नह मुक्खत्ति नज्जिहिन्ति ।
6. देवेहिं सीयलेण सुहफासेण सुरहिणा मारुएण जोयणपरिमंडला भूमी सव्वओ समंता संपमज्जिज्जइ ।
7. अग्गिणा नयरं डज्झीअ ।
8. गुरूणं भत्तीए सत्थाणं तत्ताइं णव्विहिरे ।
9. अज्ज वि अउज्झाए परिसरे उच्चेसु रुक्खेसु ठिएहिं जणेहिं निम्मले नहयले धवला सिहरपरंपरा तस्स गिरिणो दीसइ ।
10. गुरूणमुवएसेण संसारो तीरइ ।
11. भद्दे ! का तुमं देवि व्व दीससि ? !
12. सहा केरिसी वुच्चए ? !
13. जत्थ थेरा अत्थि सा सहा ।
14. कलिम्मि अकाले मेहो वरिसेइ, काले न वरिसेज्ज, असाहू पूइज्जन्ति, साहवो न पूईइरे ।
15. वेसाओ धणं चिय गिण्हन्ति, न हु धणेण ताओ घिप्पन्ति ।
16. होइ गुरुयाणं गरुयं, वसणं लोयम्मि न उण इयराणं ।
जं ससिरविणो घेप्पंति, राहुणा न उण ताराओ ॥1॥
17. जलणो वि घेप्पइ सुहं, पवणो भुयगो य केणइ नएण ।
महिलामणो न घेप्पइ, बहुएहिं नयसहस्सेहि ॥2॥
18. पूइज्जंति दयालू जइणो, न हु मच्छवहगाई ।
19. को कस्स एत्थ जणओ, का माया बंधवो य को कस्स ।
कीरंति सकम्मेहिं, जीवा अन्नुन्नरूवेहिं ॥3॥

20. सव्वस्स उवयरिज्जइ, न पम्हसिज्जइ परस्स उवयारो ।
विहलं अवलंबिज्जइ, उवएसो एस विउसाणं ॥4॥

21. रिउणो न वीससिज्जइ, कयावि वंचिज्जइ न विसत्थो ।
न कयग्घेहि हविज्जइ, एसो नाणस्स नीसंदो ॥5॥

22. वन्निज्जइ भिच्चगुणो, न य वन्निज्जइ सुअस्स पच्चक्खे ।
महिलाओ नोभया वि हु, न नस्सए जेण माहप्पं ॥6॥

23. जीवदयाइ रमिज्जइ, इंदियवग्गो दमिज्जइ सयावि ।
सच्चं चेव चविज्जइ, धम्मस्स रहस्समिणमेव ॥7॥

24. दीसइ विविहचरित्तं, जाणिज्जइ सुयणदुज्जणविसेसो ।
धुत्तेहिं न वंचिज्जइ, हिंडिज्जइ तेण पुहवीए ॥8॥

प्राकृत में अनुवाद करें—

1. लक्ष्मण द्वारा शत्रु का मस्तक काटा गया ।
2. श्रावकों द्वारा गुरुओं के वचन पर श्रद्धा की जाती है । (सद्दह)
3. श्रद्धा से उपाध्याय के पास ज्ञान प्राप्त किया जाता है ।
4. योगियों द्वारा श्मशान में मन्त्रों का ध्यान किया जाता है । (झा)
5. नटों द्वारा दरवाजे में नृत्य किया जाता है ।
6. प्रजाजन राजा की आज्ञा का अपमान न करें ।
7. चोर के ललाट में अग्नि द्वारा चिह्न किया जाता है ।
8. पहले कोई जल और वनस्पति में जीव नहीं मानते थे, लेकिन अब यन्त्र के प्रयोग से उनमें साक्षात् जीव दिखाई देते हैं ।
9. राजा के पुरुषों द्वारा चोर पकड़ा गया और दण्ड दिया गया ।
10. जो धन न्यायमार्ग से प्राप्त किया जाता है, वह कभी भी नष्ट नहीं होता ।
11. रात्रि में मुनियों द्वारा स्वाध्याय किया जायेगा ।
12. शिष्यों को सदा आचार्य की सेवा करनी चाहिए ।
13. मैं दुष्कर्मों से मुक्त होता हूँ ।
14. तुम मोह से पागल नहीं होते हो ।
15. तू शत्रु द्वारा जीता गया ।
16. तुम धर्म द्वारा रक्षण कराये गए ।
17. यदि हमेशा धर्म सुना जाय, दान दिया जाय, शील धारण किया जाय, गुरुओं को वन्दन किया जाय, विधिपूर्वक जिनेश्वर की प्रतिमा की पूजा की जाय और तत्त्वों की श्रद्धा की जाय तो यह संसार तैरा जा सकता है ।
18. थोड़ा भी परोपकार किया जाय तो परलोक में सुखी बनेंगे ।
19. बालक द्वारा पिता की आज्ञा मानी गयी ।
20. उत्तम पुरुषों द्वारा जो कार्य प्रारम्भ किया जाता है उसमें वे अवश्य सफल होते हैं ।

पाठ - 20

कृदन्त

1. कृदन्त के दो प्रकार हैं । विशेषणरूप कृदन्त और अव्ययरूप कृदन्त ।
2. हेत्वर्थ और संबंधक भूतकृदन्त अव्ययरूप कृदन्त हैं, उनको कोई विभक्ति नहीं लगती है ।
3. उपर्युक्त दो सिवाय के कृदन्त विशेषणरूप कृदन्त हैं, उनके तीनों लिंगों में रूप बनते हैं ।

अव्ययरूप कृदन्त

हेत्वर्थ कृदन्त

1. धातुओं के अंग को **उं-तुं** प्रत्यय लगाने पर हेत्वर्थ कृदन्त बनता है, इस प्रत्यय के लगने पर पूर्व **अ** का **इ** अथवा **ए** होता है तथा आर्ष में **त्तए-त्तुं** प्रत्यय भी लगता है ।

उदा. सुण + उं = सुणिउं, सुणेउं	**हस + उं** = हसिउं, हसेउं
सुण + तुं = सुणितुं, सुणेतुं	**हस + तुं** = हसितुं, हसेतुं
सुण + त्तए = सुणित्तए, सुणेत्तए	**हस + त्तए** = हसित्तए, हसेत्तए
सुण + त्तुं = सुणित्तुं, सुणेत्तुं	**हस + त्तुं** = हसित्तुं, हसेत्तुं
(श्रोतुम्) = सुनने के लिए	**(हसितुम्)** = हँसने के लिए

झाअ + उं = झाइउं, झाएउं
झाअ + तुं = झाइतुं, झाएतुं
झाअ + त्तए = झाइत्तए, झाएत्तए
झाअ + त्तुं = झाइत्तुं, झाएत्तुं
झा + उं = झाउं
झा + तुं = झातुं
} **(ध्यातुम्)** = ध्यान करने के लिए

चय = चइउं, चएउं, चइत्तए, चएत्तए, चइत्तुं, चएत्तुं **(त्यक्तुम्)** = त्याग करने के लिए ।

कर = करिउं, करेउं, करित्तए, करेत्तए, करित्तुं, करेत्तुं (कर्तुम्) = करने के लिए ।

उपयोगी अनियमित हेत्वर्थ कृदन्त

घेत्तुं (गृहीतुम्) = ग्रहण करने के लिए
वोत्तुं (वक्तुम्) = बोलने के लिए
रोत्तुं (रोदितुम्) = रोने के लिए
भोत्तुं (भोक्तुम्) खाने के लिए
बोद्धुं (बोद्धुम्) = जानने के लिए

मोत्तुं (मोक्तुम्) = छूटने के लिए
दट्ठुं (द्रष्टुम्) = देखने के लिए
काउं, कट्टुं (कर्तुम्) = करने के लिए

सम्बन्धक भूतकृदन्त

2. धातु के अंग को **तुं, उं, अ, तूण, ऊण, तुआण, उआण** प्रत्यय लगाने पर सम्बन्धक भूतकृदन्त बनता है, ये प्रत्यय लगाने पर पूर्व **अ** का **इ** अथवा **ए** होता है। आर्ष में **त्ता, त्ताणं, त्तु** और **इय** प्रत्यय भी लगते हैं।

उदा. **हस + तुं** = हसितुं, हसेतुं
हस + उं = हसिउं, हसेउं
हस + अ = हसिअ, हसेअ
हस + तूण = हसितूण, हसेतूण
हस + ऊण = हसिऊण, हसेऊण
हस + तुआण = हसितुआण, हसेतुआण
हस + उआण = हसिउआण, हसेउआण
हस + त्ता = हसित्ता, हसेत्ता
हस + त्ताणं = हसित्ताणं, हसेत्ताणं
हस + त्तु = हसित्तु, हसेत्तु
हस + इय = हसिय
(हसित्वा) = हँसकर
झाअ + तुं = झाइतुं, झाएतुं
झाअ + उं = झाइउं, झाएउं
झाअ + अ = झाइअ, झाएअ
झाअ + तूण = झाइतूण, झाएतूण
झाअ + ऊण = झाइऊण, झाएऊण
झाअ + तुआण = झाइतुआण, झाएतुआण
झाअ + उआण = झाइउआण, झाएउआण
झाअ + त्ता = झाइत्ता, झाएत्ता
झाअ + त्ताण = झाइत्ताणं, झाएत्ताणं
झाअ + त्तु = झाइत्तु, झाएत्तु
झाअ + इय = झाइय
(ध्यात्वा) ध्यान करके
झा = झातुं, झाउं, झाअ, झातूण, झाऊण, झातुआण, झाउआण, झाइअ (ध्यात्वा) = ध्यान करके

अनियमित सम्बन्धक भूतकृदन्त

घेत्तूण, घेत्तुआण, (गृहीत्वा) = ग्रहण करके
वोत्तूण, वोत्तुआण (उक्त्वा) = कहकर
दट्ठूण, दट्ठुआण (दृष्ट्वा) = देखकर
काऊण, काउआण, कट्टु (कृत्वा) = करके

रोत्तूण, रोत्तुआण (रुदित्वा) = रोकर	**मोच्चा (भुक्त्वा)** = खाकर
भोत्तूण, भोत्तुआण (भुक्त्वा) = खाकर	**मोच्चा (मुक्त्वा)** = छोड़कर
मोत्तूण, मोत्तुआण (मुक्त्वा) = छोड़कर	**मच्चा (मत्वा)** = विचारकर
गन्तूण, गंतुआण (गत्वा) = जाकर	**वंदित्ता (वंदित्वा)** = वन्दन करके
उट्ठाए, उट्ठाय (उत्थाय) = उठकर	**सुच्चा-सोच्चा (श्रुत्वा)** = सुनकर
गच्चा (गत्वा) = जाकर	**सुत्ता (सुप्त्वा)** = सोकर
णच्चा (ज्ञात्वा) = जानकर	**साहट्टु (संहृत्य)** = संकोचकर
बुज्झा (बुद्ध्वा) = बोध पाकर	

3. सम्बन्धक भूतकृदन्त के प्रत्ययसंबंधी **ण** का अनुस्वारसहित भी प्रयोग होता है । **उदा.**

   तूणं, ऊणं, तुआणं, उआणं = हसितूणं, हसिऊणं, हसितुआणं, हसिउआणं आदि ।

विशेषणरूप कृदन्त
कर्मणि भूतकृदन्त

4. धातु के अंग को **अ** अथवा **त** प्रत्यय लगने पर कर्मणि भूतकृदन्त बनता है, इस प्रत्यय के लगने पर पूर्व के अ का इ होता है ।

   यह कृदन्त विशेषण होने के कारण इसका स्त्रीलिंग 'आ' लगाने पर बनता है, इसके रूप आकारान्त स्त्रीलिंग के समान बनते हैं तथा पुंलिंग-नपुंसकलिंग रूप अकारान्त पुंलिंग-नपुंसकलिंग के समान बनते हैं ।

उदा. पुंलिंग	नपुंसकलिंग	स्त्रीलिंग
सुण + अ = सुणिओ **सुण + त** = सुणितो (श्रुतः)	**सुणिअं** **सुणितं** (श्रुतम्)	**सुणिआ** **सुणिता** (श्रुता)

रामेण देसणा सुणिआ - राम द्वारा देशना सुनी गई ।

झा + अ = झाअं, झातं (ध्यातम्) ध्यान किया गया ।

हस + अ = हसिअं, हसितं (हसितम्) हँसाया ।

झाअ + अ = झाइअं, झाइतं (ध्यातम्) ध्यान किया गया ।

संस्कृत कृदन्त से प्राकृत नियमानुसार परिवर्तन होकर बनते कृदन्त-

उक्किट्ठं (उत्कृष्टम्) श्रेष्ठ
कडं / **कयं** (कृतम्) किया हुआ
गयं (गतम्) गया हुआ
चत्तं (त्यक्तम्) त्याग किया हुआ
दिट्ठं (दृष्टम्) देखा हुआ
सिट्ठं (सृष्टम्) त्याग किया हुआ, रखा हुआ, अलग
सुयं (श्रुतम्) सुना हुआ
धत्थं (ध्वस्तं) नष्ट हुआ, गिरा हुआ
नयं (नतम्) नम्र, नमा, झुका हुआ।
निव्वुओ (निर्वृतः) शान्त हुआ
पण्णत्तं (प्रज्ञप्तम्) प्रतिपादन किया हुआ, कहा हुआ
मिट्ठं (मृष्टम्) मधुर, साफ, स्वच्छ
वट्टं (वृतम्) बना हुआ
संवुअं (संवृतम्ः) ढका हुआ, छुपाया हुआ
हयं (हतम्) मारा हुआ
हिअं (हृतम्) हरण किया हुआ

उपयोगी अनियमित कर्मणि भूतकृदन्त

अप्फुण्णो (आक्रान्तः) दुःखी, दबाया हुआ
आढत्तो / **आरद्धो** (आरब्ध) प्रारम्भ किया हुआ
उक्कोसं (उत्कृष्टम्) श्रेष्ठ
किलिन्नो (क्लिन्नः) गीला, भीगा हुआ
खित्तं (क्षिप्तम्) दूर किया हुआ
गिलाणं (ग्लानम्) रोगी
गुत्तो (गुप्तः) छुपाया हुआ,
चक्खिअं (आस्वादितम्) चखा हुआ
छित्तं (स्पृष्टम्) स्पर्श किया हुआ
छूढं (क्षिप्तम्) फेंका हुआ
छिक्को / **छुत्तो** (छुप्तः) स्पर्श किया हुआ
जढं (त्यक्तम्) त्याग किया हुआ
झोसिअं (क्षिप्तम्) फेंका हुआ
ढड्ढो (स्तब्धः) अभिमानी, अक्कड़
तत्थं / **तट्ठं** / **हित्थं** (त्रस्तम्) दुःखी, पीड़ित
दक्को / **दट्ठो** (दंष्टः) डंक दिया हुआ
दड्ढो / **दद्धो** (दग्धः) जलाया हुआ
दिण्णं (दत्तम्) दिया हुआ
दुद्धं (दुग्धम्) दोहा हुआ
निच्छूढं (उद्वृत्तम्) बाहर निकाला हुआ, ऊपर फेंका हुआ
लुक्को / **लुग्गो** **(रुग्णः)** = रोगी
ल्हिक्को (नष्टः) = भागा हुआ नष्ट हुआ
विढत्तं (अर्जितम्) = पैदा किया हुआ
वोलीणो (अतिक्रान्त) = उल्लंघन किया हुआ

वोसट्टो (विकसितः) = विकास पाया हुआ
निमिअं (स्थापितम्) स्थापना किया हुआ
निसुट्टो (निपातितः) मारा हुआ, गिराया हुआ
पम्हुट्ठो (दे. विस्मृतं) नष्ट, भूला हुआ
पल्हत्थं, **पल्लोट्टं** (पर्यस्तम्) फेंका हुआ, दूर किया हुआ
फुडं (स्पृष्टम्) स्पर्श किया हुआ
फुडं (स्पष्टम्) स्पष्ट किया हुआ
मिलाणं (म्लानम्) सूखा हुआ, मुरझाया हुआ, खिन्न

मुक्को, **मुत्तो** (मुक्तः) त्याग किया हुआ, छुड़ाया हुआ
मुद्धं (मुग्धम्) मोहित, मूर्ख
लुअं (लूनम्) काटा हुआ
सक्को, **सत्तो** **(शक्तः)** = समर्थ
सणिद्धं, **सिणिद्धं**, **निध्धं** **(स्निग्धम्)** = मायालु, स्नेहालु
सिलिट्ठो (श्लिष्टः) भेंटा हुआ
सुत्तो (सुप्तः) सोया हुआ

कर्तरि भूतकृदन्त

5. कर्मणि भूतकृदन्त को **वंत** प्रत्यय लगाने से कर्तरि भूतकृदन्त बनता है।
उदा. गय-गयवंतो (गतवान्), सुय-सुयवंतो (श्रुतवान्)

कर्मणि वर्तमानकृदन्त

6. धातु के कर्मणि अंग को पुंलिंग-नपुंसकलिंग में **न्त-माण** प्रत्यय और स्त्रीलिंग में **ई, न्ती, न्ता, माणी, माणा** प्रत्यय लगाने पर कर्मणि वर्तमान कृदन्त बनता है, ये प्रत्यय लगने पर पूर्व **अ** का विकल्प से **ए** होता है।

उदा.	**पुंलिंग**	**नपुंसॉकलिंग**	**स्त्रीलिंग**
हसिज्ज -	हसिज्जन्तो	हसिज्जन्तं	हसिज्जई, हसिज्जेई
	हसिज्जेन्तो	हसिज्जेन्तं	हसिज्जन्ती, हसिज्जेन्ती
	हसिज्जमाणो	हसिज्जमाणं	हसिज्जन्ता, हसिज्जेन्ता
	हसिज्जेमाणो	हसिज्जेमाणं	हसिज्जमाणी, हसिज्जेमाणी
			हसिज्जमाणा, हसिज्जेमाणा
हसीअ -	हसीअन्तो	हसीअन्तं	हसीअई, हसीएई
	हसीएन्तो	हसीएन्तं	हसीअन्ती, हसीएन्ती
	हसीअमाणो	हसीअमाणं	हसीअन्ता, हसीएन्ता

हसीएमाणो	हसीएमाणं	हसीअमाणी, हसीएमाणी हसीअमाणा, हसीएमाणा
(हस्यमानः)- हँसाता	हस्यमा-हँसाता	(हस्यमाना)- हँसाती
दीस - दीसन्तो	दीसन्तं	दीसई, दीसेई
दीसेन्तो	दीसेन्तं	दीसन्ती, दीसेन्ती
दीसमाणो	दीसमाणं	दीसन्ता, दीसेन्ता
दीसेमाणो	दीसेमाणं	दीसमाणी, दीसेमाणी
(दृश्यमानः) दिखाई देता	(दृश्यमानम्)- दिखाई देता	दीसमाणा, दीसेमाणा (दृश्यमाना)- दिखाई देती

कर्तरि वर्तमानकृदन्त

7. धातु के कर्तरि अंग को पुंलिंग-नपुंसकलिंग में **न्त-माण** प्रत्यय और स्त्रीलिंग में **ई, न्ती, न्ता, माणी, माणा** प्रत्यय लगाने पर कर्तरि वर्तमान कृदन्त बनता है, ये प्रत्यय लगने पर पूर्व **अ** का विकल्प से **ए** होता है।

उदा. पुंलिंग	**नपुंसकलिंग**	**स्त्रीलिंग**
हस+न्त=हसन्तो, हसेन्तो	हसन्तं, हसेन्तं	हस+ई = हसई, हसेई
हस+माण= हसमाणो, हसेमाणो	हसमाणं, हसेमाणं	हस+न्ती = हसन्ती, हसेन्ती
	(हसत्-हसमानम्) हँसता	हस+न्ता = हसन्ता, हसेन्ता हस+माणी = हसमाणी, हसेमाणी हस+माणा = हसमाणा, हसेमाणा
(हसन्-हसमानः) हँसता	हँसती	(हसन्ती-हसमाना)- हँसती
हो - होअन्तो	होअन्तं	होअई, होएई
होएन्तो	होएन्तं	होअन्ती, होएन्ती
होअमाणो	होअमाणं	होअन्ता, होएन्ता
होएमाणो	होएमाणं	होअमाणी, होएमाणी होअमाणा, होएमाणा
हो - होन्तो	होन्तं	होई
हुन्तो	हुन्तं	होन्ती, हुन्ती, होन्ता, हुन्ता
होमाणो	होमाणं	होमाणी, होमाणा
(भवन्-भवमानः)- होता	(भवद्-भवमानम्) होता	(भवन्ती-भवमाना) होती

भविष्य कृदन्त

8. धातु को **'इस्स'** प्रत्यय लगाकर वर्तमान कृदन्त के प्रत्यय लगाने पर भविष्य कृदन्त बनता है ।

उदा. पुंलिंग	नपुंसकलिंग	स्त्रीलिंग
जिण+इस्स = जिणिस्सन्तो, जिणिस्समाणो	जिणिस्सन्तं, जिणिस्समाणं	जिणिस्सई, जिणिस्सन्ती, जिणिस्सन्ता, जिणिस्समाणी, जिणिस्समाणा
(जेष्यन्-जेष्यमाणः) - जीतता होगा	(जेष्यन्-जेष्यमाणम्)- जीतता होगा	(जेष्यन्ती-जेष्यमाणा) - जीतती होगी

विध्यर्थ कृदन्त

9. धातु के अंग को **तव्व, अव्व, अणीअ (अणीय)** और **अणिज्ज** प्रत्यय लगाने पर विध्यर्थ कर्मणि कृदन्त बनता है, **तव्व** और **अव्व** प्रत्यय लगने पर पूर्व **अ** का **इ** अथवा **ए** होता है ।

उदा. बोह - बोहिअव्वं, बोहेअव्वं, बोहणीअं, बोहितव्वं, बोहेतव्वं, बोहणिज्जं ।
(बोद्धव्यम्-बोधनीयम्) - जानने योग्य

झाअ - झाइअव्वं, झाएअव्वं, झाअणीअं, झाइतव्वं, झाएतव्वं, झाअणिज्जं
(ध्यातव्यम् - ध्यानीयम्) - ध्यान करने योग्य

झा - झाअव्वं, झाणीअ, झातव्वं, झाणिज्जं

उपयोगी अनियमित विध्यर्थ कृदन्त

कायव्वं (कर्तव्यम्) = करने योग्य
घेतव्वं (गृहीतव्यम्) = ग्रहण करने योग्य
दट्ठव्वं (द्रष्टव्यम्) = देखने योग्य
भोत्तव्वं (भोक्तव्यम्) = भुगतने योग्य, खाने योग्य
मोत्तव्वं (मोक्तव्यम्) = छोड़ने योग्य
रोत्तव्वं (रोदितव्यम्) = रोने योग्य
हंतव्वं (हन्तव्यम्) = मारने योग्य

10. मूलधातुओं को **इर** प्रत्यय लगाने पर कर्तृसूचक कृदन्त बनता है ।

उदा. हस् = हसिरो (हसनशीलः) = हँसनेवाला	**रोविरं** = (रुदनशीलम्) = रोनेवाला
हसिरा / **हसिरी** (हसनशीला) हँसनेवाली	**भम् = भमिरो (भ्रमणशीलः)** = भ्रमण करनेवाला
हसिरं (हसनशीलम्) = हँसनेवाला	**भमिरा** / **भमिरी** (भ्रमणशीला) भ्रमण करनेवाली
रोव् = रोविरो (रुदनशीलः) = रोनेवाला	**भमिरं** (भ्रमणशीलम्) भ्रमण करनेवाला
रोविरा / **रोविरी** **(रुदनशीला)** = रोनेवाली	

इसी तरह **लज्जिरो** = लज्जावान, **जम्पिरो** = बोलनेवाला, **वेविरो** = कम्पन करनेवाला, **नमिरो** = नम्र, **गव्विरो** = गर्विष्ठ इत्यादि ।

11. कर्तृसूचक कृदन्त सिद्ध संस्कृत पर से भी बनते हैं ।

कत्ता (कर्त्ता) = करनेवाला	**पायगो** / **पायओ** **(पाचकः)** = पकानेवाला
कुंभआरो / **कुंभारो** **(कुम्भकारः)** = कुम्भार	**भत्ता** / **भट्टा** **(भर्ता)** = पोषण करनेवाला
गंता (गन्ता) = जानेवाला	**लोहयारो** / **लोहारो** **(लोहकारः)** = लुहार
जायगो / **जायओ** **(याचकः)** = मांगनेवाला	**सुवण्णआरो** / **सुवण्णगारो** **(सुवर्णकारः)** = सोनी
दायगो / **दायओ** **(दायकः)** = देनेवाला	

12. शब्द के अन्दर **त्व** का **च्च**, **थ्व** का **च्छ**, **द्व** का **ज्ज** और **ध्व** का **ज्झ** प्रयोगानुसार बनता है । (२/१५) उदा.

किच्चा (कृत्वा)	**पिच्छी** (पृथ्वी)
विज्जं (विद्वान्)	**बुज्झा** (बुद्ध्वा)

13. शब्द में संयुक्त व्यंजन का अन्त्याक्षर **ल** हो तो उसके पूर्व **इ** रखी जाती है ।

उदा. किलिन्नो (क्लिन्नः)	**सिलोओ-गो** (श्लोकः)
किलेसो (क्लेशः)	**गिलायइ** / **गिलाइ** (ग्लायति)
सिलिट्ठं (श्लिष्टम्)	

14. तृतीया विभक्ति के स्थान पर कहीं-कहीं सप्तमी विभक्ति भी रखी जाती है ।

उदा. त्रिभिः तैः, तेषु-तेसु अलंकिया पुहवी ।

शब्दार्थ (पुंलिंग)

अग्गि (अग्नि) = अग्नि

अच्चय (अत्यय) = विनाश, मरण, विपरीत आचरण

आगम (आगम) = शास्त्र, सिद्धान्त

उवाय (उपाय) = उपाय

गब्भ (गर्भ) = गर्भ

जंबूकुमार (जंबूकुमार) = विशेषनाम, जंबूकुमार

जाम (याम) = प्रहर

जीवलोग (जीवलोक) = दुनिया, जगत्

निअम (नियम) = निश्चय, गृहीत प्रतिज्ञा

पडियार (प्रतिकार) = आनेवाली वस्तु को रोकना, रोग का इलाज, बदला

पसु (पशु) = पशु

वायस (वायस) = कौआ

संवेग (संवेग) = संसार से वैराग्य

सुविज्ज (सुवैद्य, सुविद्यः) = अच्छा वैद, श्रेष्ठ विद्यावाला

सोग (शोक) = शोक

नपुंसकलिंग

कुमारत्तण (कुमारत्व) कुमारपना

दव्वलिंग (द्रव्यलिंग) मुनिवेश, बाह्यवेश

पच्चक्खाण (प्रत्याख्यान) प्रत्याख्यान

परिक्खण (परीक्षण) परीक्षा करना

पाहुड (प्राभृत) = भेंट, उपहार

पोरुस / **पोरिस** } **(पौरुष)** = पुरुषत्व, पुरुषार्थ

वत्थु (वस्तु) = पदार्थ, चीज

सुह (शुभ) = मंगल, कल्याण

स्त्रीलिंग

अमरी (अमरी) = देवी

आयइ (आयति) = भावी, भविष्यकाल

आलोयणा (आलोचना) = प्रायश्चित्त हेतु दोष कहना, बताना

आहि (आधि) = मानसिक पीड़ा

काया (काया) = देह

किन्नरी (किन्नरी) = व्यंतर देवी

निद्दा (निद्रा) = निद्रा

पिअसही (प्रियसखी) = प्रेमपात्र सखी

पीडा / **पीला** } **(पीडा)** = पीड़ा, दुःख

महादेवी (महादेवी) = पटरानी

रमणी (रमणी) = सुन्दर स्त्री

सत्ति (शक्ति) = शक्ति, सामर्थ्य

साविगा / **साविआ** } **(श्राविका)** = श्राविका

सिद्धि (सिद्धि) = मोक्ष

पुंलिंग + नपुंसकलिंग

पाण (बहुवचन) (प्राण) **इन्द्रियादि दस प्राण**

विशेषण

अलंकिअ (अलङ्कृत) शोभित	**परिचत्त** हुआ
उम्मत्त (उन्मत्त) मत्त,	**परिणीअ** (परिणीत) विवाहित
चरम / **चरिम** (चरम) अन्तिम	**मुक्खत्थि** (मोक्षार्थिन्) मोक्ष का अर्थी
	लग्ग (लग्न) लगा हुआ, सम्बन्धित
धणवंत (धनवत्) धनवान	**वयणिज्ज** (वचनीय)
नाणि (ज्ञानिन्) ज्ञानवान	**वियक्खण** (विचक्षण) होशियार, कुशल
परिच्चत्त (परित्यक्त) त्याग किया	**समत्थ** (समर्थ) समर्थ

अव्यय

नूण, नूणं (नूनम्) निश्चय, विचार, कारण

सामासिक शब्द

अजसघोसणा (अयशोघोषणा) अपयश की घोषणा,	**जीवदयामय** (जीवदयामय) जीवदयारूप
कालसप्प (कालसर्प) कालरूपी सर्प	**जुवइपिया** (युवतिपिता) स्त्री के पिता
	निययकुलं (निजककुलं) अपने कुल को

धातु

अभि + नन्द् (अभि + नन्द्) प्रशंसा करना	**उव्वह्** (उद् + वह्) वहन करना, पालन करना
आ + लोय् (आ + लोक्) देखना, तलाश करना	**खंड्** (खण्ड्) तोड़ना, टुकड़े करना
	पेच्छ् (प्र + ईक्ष्) देखना
उवज्ज् (उत् + पद्) उत्पन्न होना	**वज्ज्** (वृज्-वर्ज्) त्याग करना

हिन्दी में अनुवाद करें

1. पाणाणमच्चए वि जीवेहिं अकरणिज्जं न कायव्वं, करणीअं च कज्जं न मोत्तव्वं ।
2. धम्मं कुणमाणस्स सहला जंति राईओ ।
3. जेण इमा पुहवी हिंडिऊण दिट्ठा, सो नरो नूणं वत्थूणं परिक्खणे वियक्खणो होइ ।

3. कालसप्पेण खाइज्जन्ती काया केण धरिज्जइ, नत्थि तत्थ को वि उवाओ ।
5. सव्वे जीवा जीविउं इच्छन्ति, न मरित्तए, तओ जीवा न हंतव्वा ।
6. 'परस्स पीडा न कायव्वा' इइ जेण न जाणिअं तेण पढिआए विज्जाए किं ?
7. मुक्खत्थीहिं जीवदयामओ धम्मो करेअव्वो ।
8. का सत्ती तीए तस्स पुरओ ठाइउं ।
9. परिच्चइय पोरुसं, अपासिऊण निययकुलं, अगणिऊण वयणीअं, अणालोइऊण आयइं, परिचत्तं तेण दव्वलिङ्गं ।
10. जं जिणेहिं पन्नत्तं तमेव सच्चं इअ बुद्धी जस्स मणे निच्चलं तस्स सम्मत्तं ।
11. चोरो धणिणो धणं हरित्तए घरे पविसीअ ।
12. पच्चूसे जिणे अच्चिय, गुरू य वंदित्ता, पच्चक्खाणं च किरत्तु, पच्छा य भोयणं कुज्जा ।
13. गुरुणा धम्मं कुणमाणाणं सावगाणं, समायरंतीणं च साविआणं उवएसो दिण्णो ।
14. पिउणा सिक्खीअमाणो पुत्तो सिक्खीज्जती य पुत्ती गुणे लहेज्ज ।
15. सा महादेवी सुराणं रमणीहिं सलहिज्जंती, किन्नरीहिं गाइज्जंती, बुहेहिं थुव्वंती, बंधुणा मित्तेण य अभिनंदिज्जंती गब्भमुव्वहइ ।
16. एगो जायइ जीवो, एगो मरिऊण तह उवज्जेइ ।
एगो भमइ संसारे, एगो च्चिय पावइ सिद्धिं ॥1॥
17. नाणेणं चिय नज्जइ, करणिज्जं तह य वज्जणिज्जं च ।
नाणी जाणइ काउं, कज्जमकज्जं च वज्जेउं ॥2॥
18. जं जेण पावियव्वं, सुहमसुहं वा जीवलोयम्मि ।
तं पाविज्जइ नियमा, पडियारो नत्थि एयस्स ॥3॥
19. जम्मंतीए सोगो, वड्ढंतीए य वड्ढए चिंता ।
परिणीआए दंडो, जुवइपिआ दुक्खिओ निच्चं ॥4॥
20. जं चिय खमइ समत्थो, धणवंतो जं न गव्विरो होइ ।
जं च सुविज्जो नमिरो, तेसु तेसु अलंकिआ पुहवी ॥5॥
21. लज्जा चत्ता, सीलं च खंडिअं, अजसघोसणा दिण्णा ।
जस्स कए पिअसहि !, सो चेअ जणो अजणो जाओ ॥6॥
22. जत्थ रमणीण रूवं, रमणिज्जं पेच्छिऊण अमरीओ ।
लज्जंतीओ व्व चिंताइ, कह वि निद्दं न पावंति ॥7॥

23. गायंता सज्झायं, झायंता धम्मझाणमकलंकं ।
जाणंता मुणियव्वं, मुणिणो आवस्सए लग्गा ॥8॥

प्राकृत में अनुवाद करें

1. जंबूकुमार ने कुमार अवस्था में अपनी सब ऋद्धि का त्याग करके (चय्) चारित्र ग्रहण किया (गिण्ह्) ।
2. मैं शास्त्र पढ़ने के लिए (अहिज्ज्) गुरु के पास जाता हूँ ।
3. गुरु प्रमाद करते (पमज्ज) साधु को पढ़ने के लिए (पढ्) कहते हैं ।
4. रात्रि के प्रथम प्रहर में सोकर (सुव्) और अन्तिम प्रहर में जगकर (जग्ग्) किया जानेवाला (कीर्) अभ्यास स्थिर बनता है ।
5. मनुष्यों में सोनी, पक्षियों में कौआ और पशुओं में सियाल कपटी होता है ।
6. पाठशाला में अध्ययन करती (कुण्) कन्याओं को तुम इनाम दो ।
7. मनुष्यों की आधि हरण करने का उपाय (हर्) शास्त्रश्रवण से अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है ।
8. अग्नि द्वारा जलती (डज्झ्) स्त्री का उसने रक्षण किया (रक्ख्) ।
9. राम द्वारा कही जानेवाली (कह्) बात सुनकर (सुण्) उसने वैराग्य प्राप्त किया ।
10. जानने योग्य (जाण्) भावों को तुम जानो ।
11. मूर्ख व्यक्ति ने अपना वस्त्र अग्नि में डाला (खिव्) और वह जल गया (डह्) ।
12. साधुओं की सेवा द्वारा उसके दिन व्यतीत हुए (वोलीण)
13. जीवों का वध करनेवाला और मांस का भक्षण करनेवाला (भक्ख्) मनुष्य राक्षस कहलाता है ।
14. वह गुरु के पास पापों की आलोचना लेने के लिए (गिण्ह्) जाते हुए (वच्च्) शरमाता है ।
15. वह समाधिपूर्वक मृत्यु पाकर (पाव्) स्वर्ग में देव हुआ ।
16. रोते (रुव्) बालक को तू हैरान मत कर ।
17. हँसता हुआ बालक सब को प्रिय लगता है ।
18. ग्रहण करने योग्य को (गह्-गिण्ह्) ग्रहण कर, त्याग करने योग्य का (चय्) त्याग कर ।

पाठ 21

व्यञ्जनान्त नाम, तद्धित, अधिकतादर्शक और श्रेष्ठतादर्शक प्रत्यय

प्राकृत में व्यंजनान्त नाम के अन्त्य व्यंजनों का लोप होता है लेकिन कुछ शब्दों में विशेषता है, वह आगे बतायेंगे ।

1. व्यंजनान्त नामों के अन्त्य व्यंजन का जिनमें लोप होता है उनके रूप पहले बताये गये अ कारान्त, इ कारान्त-उ कारान्त पुंलिंग और नपुंसकलिंग नामों के समान बनते हैं ।

उदा. **जसो** (यशस्)	**जम्मो** (जन्मन्)
तमो (तमस्)	**धणी** (धनिन्)
चक्खू (चक्षुष्)	**हत्थी** (हस्तिन्)

2. स् कारान्त और न् कारान्त नामों का पुंलिंग में ही प्रयोग होता है लेकिन दाम (दामन्), सिर (शिरस्), नह (नभस्) शब्दों का प्रयोग नपुंसकलिंग में ही होता है ।

पुं. प्रथमा एकवचन	**नपुंसक प्रथमा एकवचन**
उदा. **उरो (उरस्)** = वक्षस्थल	**दामं** (दामन्) माला
जसो (यशस्) = यश	**सिरं** (शिरस्) मस्तक
तमो (तमस्) = अन्धकार	**नहं** (नभस्) आकाश
तेओ (तेजस्) = तेज	
पओ (पयस्) = दूध, जल	
तवो (तपस्) = तप	
जम्मो (जन्मन्) = जन्म	
नम्मो (नर्मन्) = हँसी, क्रीड़ा	
मम्मो (मर्मन्) = मर्म, रहस्य	

अपवाद :- कुछ स्थानों में नपुंसकलिंग में भी प्रयोग दिखाई देते हैं ।

उदा. **सेयं** (श्रेयस्) कल्याण	**सम्मं** (शर्मन्) कल्याण
वयं (वयस्) उम्र	**चम्मं** (चर्मन्) चमड़ा
सुमणं (सुमनस्) श्रेष्ठ मन, उदार चित्त	

3. शरद् आदि शब्दों में अन्त्य व्यंजन का **अ** होता है, प्रावृष् और आयुष् शब्द के अन्त्य **ष्** का **स** और धनुष् शब्द के **ष्** का **ह** विकल्प से होता है। शरद् और प्रावृष् शब्द के रूप पुंलिंग में ही होते हैं ।

उदा. **सरओ (शरद्)** = शरदऋतु		पुंलिंग
भिसओ (भिषज्) = वैद्य		पुंलिंग
पाउसो (प्रावृष्) = वर्षाऋतु		पुंलिंग
आउसो-सं / **आऊ-उं**	**(आयुष्)** = आयु	पुंलिंग + नपुंसकलिंग
धणुहं / **धणू**	**(धनुष्)** = धनुष्य, चाप, कार्मुक, कमठा	पुंलिंग + नपुंसकलिंग

4. अन् अन्तवाले पुंलिंग नामों में अन्त्य **अन्** का विकल्प से **आण** होता है, जब **आण** नहीं होता है तब **न्** का लोप होता है ।

उदा. **अद्ध-अद्धाण** (अध्वन्) मार्ग, रास्ता	पुंलिंग
अप्प-अप्पाण (आत्मन्) आत्मा	पुंलिंग
उच्छ-उच्छाण (उक्षन्) वृषभ, बैल	पुंलिंग
गाव-गावाण (ग्रावन्) पत्थर	पुंलिंग
जुव-जुवाण (युवन्) युवान	पुंलिंग
तक्ख-तक्खाण (तक्षन्) सुथार	पुंलिंग
तच्छ-तच्छाण	पुंलिंग
पूस-पूसाण (पूषन्) सूर्य	पुंलिंग
बम्ह-बम्हाण (ब्रह्मन्) ब्रम्हा	पुंलिंग
महव-महवाण (मघवन्) इन्द्र	पुंलिंग
मुद्ध-मुद्धाण (मूर्धन्) मस्तक	पुंलिंग
राय-रायाण (राजन्) राजा	पुंलिंग
स-साण (श्वन्) कुत्ता	पुंलिंग
सुकम्म / **सुकम्माण** (सुकर्मन्) अच्छे कर्मवाला	विशेषण

5. उपर्युक्त शब्दों के रूप अ कारान्त पुंलिंग के समान बनते हैं, लेकिन मूल शब्द अद्ध-अप्पाण आदि के रूपों में कुछ विशेषता है, वह नीचे बताते हैं– प्रथमा एकवचन में **आ** प्रत्यय, प्रथमा, द्वितीया बहुवचन, चतुर्थी, पंचमी

और षष्ठी एकवचन में **णो** प्रत्यय, तृतीया एकवचन में **णा** प्रत्यय तथा द्वितीया एकवचन, चतुर्थी, षष्ठी बहुवचन में **इणं** प्रत्यय लगते हैं। ये प्रत्यय ज्यादा लगते हैं। चतुर्थी और षष्ठी विभक्ति सिवाय ◆ **णो** प्रत्यय लगाने पर पूर्वस्वर दीर्घ होता है।

उपर्युक्त नियमानुसार तैयार हुए प्रत्यय -

बम्ह (ब्रह्मन्)

	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
प.	आ	णो	बम्हा	बम्हाणो
बी.	इणं	णो	बम्हिणं	बम्हाणो
त.	णा	0	बम्हणा	0
च.-छ.	णो	इणं	बम्हणो	बम्हिणं
पं.	णो	0	बम्हाणो	0
स.	0	0	0	0
सं.	0	0	0	0

6. अन् अन्तवाले नामों में उपर्युक्त रूप अधिक बनते हैं, शेष रूप देव के समान बनते हैं।

बम्ह-बम्हाण शब्द के संपूर्ण रूप

	एकवचन	बहुवचन
प.	बम्हो, बम्हाणो, बम्हा	बम्हा, बम्हाणा, बम्हाणो
बी.	बम्हं, बम्हाणं, बम्हिणं	बम्हे, बम्हा, बम्हाणे, बम्हाणा, बम्हाणो
त.	बम्हेण-णं, बम्हाणेण-णं बम्हणा	बम्हेहि-हिँ-हिं बम्हाणेहि-हिँ-हिं
च.	बम्हाय, बम्हस्स, बम्हाणाय, बम्हाणस्स, बम्हणो	बम्हाण, बम्हाणं, बम्हाणाण, बम्हाणाणं, बम्हिणं

◆ षड्भाषा चन्द्रिका में षष्ठी एकवचन में भी णो प्रत्यय के पूर्व दीर्घस्वर किया हुआ है, इससे बम्हाणो, अप्पाणो, रायाणो वगैरह रूप भी बनते हैं।

पं.	बम्हत्तो, बम्हाओ-उ-हि-हिन्तो बम्हा, बम्हाणो, बम्हाणत्तो, बम्हाणाओ उ-हि-हिन्तो, बम्हाणा	बम्हत्तो, बम्हाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो, बम्हेहि-हिन्तो-सुन्तो बम्हाणत्तो, बम्हाणाओ, उ-हि-हिन्तो सुन्तो बम्हाणेहि-हिन्तो-सुन्तो
छ.	बम्हस्स, बम्हणो, बम्हाणस्स	बम्हाण, बम्हाणं, बम्हिणं, बम्हाणाण, बम्हाणाणं
स.	बम्हे, बम्हम्मि, बम्हाणे, बम्हाणम्मि	बम्हेसु, बम्हेसुं बम्हाणेसु, बम्हाणेसुं
सं.	हे बम्ह, बम्हो, बम्हा, हे बम्हाण, बम्हाणो, बम्हाणा	हे बम्हा, बम्हाणा, बम्हाणो

इस प्रकार अन् अन्तवाले नामों के रूप बनते हैं किन्तु अप्प और राय शब्दों के रूपों में विशेषता है ।

7. अप्प शब्द को तृतीया एकवचन में **णिआ-णइआ** ये दो प्रत्यय अधिक लगाये जाते हैं । इससे तृतीया एकवचन में अप्पणिआ, अप्पणइया ये दो रूप अधिक बनते हैं । शेष अप्प और अप्पाण शब्द के रूप बम्ह और बम्हाण शब्द के समान समझने चाहिए ।

अप्प - अप्पाण (आत्मन्)

	एकवचन	बहुवचन
प.	अप्पो, अप्पाणो, अप्पा	अप्पा, अप्पाणा, अप्पाणो,
बी.	अप्पं, अप्पाणं, अप्पिणं	अप्पे, अप्पा, अप्पाणे, अप्पाणा, अप्पाणो
त.	अप्पेण-णं, अप्पाणेण-णं, अप्पणा, अप्पणिआ, अप्पणइआ	अप्पेहि-हिँ-हिं, अप्पाणेहि-हिँ-हिं
च.	अप्पाय, अप्पस्स, अप्पाणाय, अप्पाणस्स, अप्पणो	अप्पाण-अप्पाणं, अप्पाणाण, अप्पाणाणं, अप्पिणं

पं.	अप्पत्तो, अप्पाओ-उ-हि-हिन्तो, अप्पा, अप्पाणो, अप्पाणत्तो, *अप्पाणाओ-उ-हि-हिन्तो, अप्पाणा*	अप्पत्तो, अप्पाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो *अप्पेहि-* *अप्पेहि-हिन्तो-सुन्तो* अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ-उ-हिन्तो-सुन्तो अप्पाणेहि-हिन्तो-सुन्तो
छ.	अप्पस्स, अप्पाणस्स, अप्पणो	अप्पाण, अप्पाणं, अप्पाणाण, अप्पाणाणं, अप्पिणं
स.	अप्पे, अप्पम्मि, अप्पाणे, अप्पाणम्मि	अप्पेसु, अप्पेसुं. अप्पाणेसु, अप्पाणेसुं
सं.	हे अप्प, अप्पो, अप्पा, हे अप्पाण, अप्पाणो, हे अप्पाणा	अप्पा, अप्पाणा, अप्पाणो

8. राय (राजन्) शब्द के रूपों में निम्नलिखित विशेषता है –

(1) **णो, णा, म्मि** ये तीन प्रत्यय लगाने पर पूर्व **य** का विकल्प से **इ** होता है।

उदा. राइणो, राइणा, राइम्मि, इ न हो तब-रायणो, रायणा, रायम्मि।

(2) द्वितीया एकवचन और षष्ठी बहुवचन में प्रत्ययसहित राय शब्द के **य** का **इणं** आदेश विकल्प से होता है।

बी. एकव.	राइणं अथवा रायं
छ. बहुव.	राइणं अथवा रायाणं

(3) तृतीया, पंचमी और षष्ठी एकवचन में ण्णा-णो प्रत्यय के पूर्व राय शब्द के आय का अण् विकल्प से होता है।

त. एकवचन	रण्णा अथवा राइणा, रायणा
पं. एकवचन	रण्णो अथवा राइणो, रायाणो
छ. एकवचन	रण्णो अथवा राइणो, रायणो

(4) तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी और सप्तमी बहुवचन में प्रत्ययों के पूर्व राय शब्द के य का विकल्प से दीर्घ 'ई' होता है।

त. बहुव.	राईहि अथवा राएहि
च. बहुव. } छ. बहुव. }	राईणं अथवा राइणं, रायाणं
पं. बहुव.	राईओ, राईसुन्तो अथवा रायाओ, रायासुन्तो
स. बहुव.	राईसुं अथवा राएसुं.

राय - रायाण (राजन्)

	एकवचन	बहुवचन
प.	रायो, रायाणो, राया	राया, रायाणा, राइणो, रायाणो
बी.	रायं, रायाणं, राइणं	राए, राया, रायाणे, रायाणा, राइणो, रायाणो
त.	राएण-णं, रायाणेण-णं, रण्णा, राइणा, रायणा	राएहि-हिँ-हिं, रायाणेहि-हिँ-हिं, राईहि-हिँ-हिं
च.	रायाय, रायस्स, रायाणाय, रायाणस्स, रण्णो, राइणो, रायणो	रायाण-णं रायाणाण-णं राइण, राईण-णं
पं.	रायत्तो, रायाओ-उ-हि-हिन्तो, राया, रायाणत्तो, रायाणाओ-उ-हि- हिन्तो, रायाणा, रण्णो, राइणो, रायाणो	रायत्तो, रायाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो, राएहि-हिन्तो-सुन्तो, रायाणत्तो, रायाणाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो राइत्तो, राईओ-उ-हिन्तो-सुन्तो रायाणेहि-हिन्तो-सुन्तो
छ.	रायस्स, रायाणस्स, रण्णो, राइणो, रायणो	रायाण, रायाणं, रायाणाण, रायाणाणं राइणं, राईण-णं
स.	राए, रायम्मि, रायाणे, रायाणम्मि, राइम्मि (रायंसि, रायाणंसि)	राएसु, राएसुं, रायाणेसु, रायाणेसुं राईसु-सुं
सं.	हे राय, रायो, रायाण, रायाणो, राया, (रायं)	हे राया, रायाणा, राइणो, रायाणो

नपुंसकलिंग

9. अन् अन्तवाले नामों के नपुंसकलिंग रूप अकारान्त नपुंसकलिंग (वण) जैसे बनते हैं और जो नाम विशेषण हैं उनके तृतीया विभक्ति से पुंलिंग के समान रूप बनते हैं । उदा.–

सम्म (शर्मन्) - कल्याण, सुख

नपुंसकलिंग	एकवचन	बहुवचन
पढमा / बीया	सम्मं	सम्माइं, सम्माइँ, सम्माणि

शेष रूप अकारान्त नपुंसकलिंग वत् ।

दाम (दामन्) - माला

नपुंसकलिंग	एकवचन	बहुवचन
पढमा / बीया	दामं	दामाइं, दामाइँ, दामाणि
तइया	दामेण-णं	दामेहि-हिँ-हिं

शेष रूप अकारान्त नपुंसकलिंग वत् ।

सुकम्म, सुकम्माण (सुकर्मन्)

नपुंसकलिंग	एकवचन	बहुवचन
पढमा / बीया	सुकम्मं सुकम्माणं	सुकम्माइं, सुकम्माइँ, सुकम्माणि, सुकम्माणाइं, सुकम्माणाइँ, सुकम्माणाणि

शेष रूप बम्ह, बम्हाण वत् ।

10. मत्, वत् और अत् अन्तवाले शब्दों के रूप अन्त्य **अत्** का **अन्त** करने से अकारान्त शब्दों के समान ही बनते हैं ।

उदा. **भगवंतो** (भगवान्) पूज्य
धणवंतो (धनवान्) धनवान
सिरिमंतो (श्रीमान्) लक्ष्मीवान
हिरिमंतो (ह्रीमान्) लज्जावान
अरिहंत (अर्हन्) अरिहंत
कियंतो (कियान्) कितना
भवंतो (भवान्) आप
भविस्संतो (भविष्यन्) होता

आर्ष प्राकृत में प्रथमा एकवचन में निम्नानुसार भी रूप बनते हैं ।

उदा. भयवं (भगवान्) पूज्य	**मइमं** (मतिमान्) बुद्धिशाली
धणवं (धनवान्) धनवाला	**सिरिमं** (श्रीमान्) लक्ष्मीवाला
अरिहं (अर्हन्) अरिहंत	**संवसं** (संवसन्) साथ में रहनेवाला
प्रथमा बहुवचन-भगवंतो (भगवन्तः)	**भवन्तो** (भवन्तः)
तृतीया एकवचन-भगवया-ता (भगवता)	**भवया-ता** (भवता)
षष्ठी एकवचन-भगवओ-तो (भगवतः)	**भवओ-तो** (भवतः)

स् कारान्त नाम

11. जस (यशस्) आदि शब्दों के रूप भी अकारान्त शब्दों के समान ही होते हैं।

उदा. जसो (यशः) **तमो** (तमः) **नहं** (नभः)

जस (यशस्)

	एकवचन	बहुवचन
प.	जसो	जसा
बी.	जसं	जसे, जसा
त.	जसेण-णं	जसेहि-हिँ-हिं

शेष रूप देव (अकारान्त पुंलिंग) वत्

सुजसस् (सुयशस्)

प.	सुजसो	सुजसा
बी.	सुजसं	सुजसे, सुजसा
त.	सुजसेण-णं	सुजसेहि-हिँ-हिं

शेष रूप देववत्।

आर्ष में उपयोगी स् अन्तवाले शब्द तथा अन्य विशेष रूप

	त. एकव.	छ. एकव.	स. एकव.
जस - यश	जससा (यशसा)	जससो (यशसः)	
मण - मन	मणसा (मनसा)	मणसो (मनसः)	मणसि (मनसि)
वय - वचन	वयसा (वचसा)	वयसो (वचसः)	
सिर - मस्तक	सिरसा (शिरसा)	सिरसो (शिरसः)	
तेय - तेज	तेयसा (तेजसा)	तेयसो (तेजसः)	

तव - तप	तवसा (तपसा)	तवसो (तपसः)
तम - अंधकार, राहु	तमसा (तमसा)	तमसो (तमसः)
चक्खु - चक्षु	चक्खुसा (चक्षुषा)	चक्खुसो (चक्षुषः)
काय - देह	कायसा (कायेन)	कायसो (कायस्य)
जोग - योग	जोगसा (योगेन)	
बल - बल	बलसा (बलेन)	
कम्म - कर्म, क्रिया	कम्मुणा (कर्मणा)	
धम्म - धर्म	धम्मुणा (धर्मेण)	

इस प्रकार सिद्ध प्रयोग भी आर्ष प्राकृत में मिलते हैं –
उदा. तमसा गसिओ वि सूरो विक्कमं किं विमुच्चइ =
राहु द्वारा ग्रसित सूर्य भी क्या अपने पराक्रम का त्याग करता है ?

स्त्रीलिंग

12. विद्युत् सिवाय के व्यञ्जनान्त स्त्रीलिंग शब्दों में अन्त्य व्यंजन का **आ** अथवा **या** होता है, उनके रूप आ कारान्त, उ कारान्त स्त्रीलिंग के समान बनते हैं ।

उदा. **सरिआ - या** (सरित्) नदी
पडिवआ - या, **पाडिवआ - या** (प्रतिपद्) एकम, पडवा
आवआ - या (आपत्) दुःख, आपदा
संपआ - या (सम्पत्) लक्ष्मी
विज्जु (विद्युत्) बिजली

13. (1) व्यंजनान्त स्त्रीलिंग में अन्त्य **र्** का **रा** होता है –
उदा. गिरा स्त्री. (गिर्) वाणी
धुरा स्त्री. (धुर्) धुसरी, अग्र
पुरा स्त्री. (पुर्) नगरी
(2) क्षुध् के **ध्** का और ककुभ् के **भ्** का **हा** होता है ।
उदा. छुहा (क्षुध्) भूख, **कउहा** (ककुभ्) दिशा
(3) अप्सरस् शब्द के **स्** का **सा** विकल्प से होता है ।
उदा. अच्छरसा, **अच्छरा** (अप्सरस्) अप्सरा, देवयोनि विशेष

14. संस्कृत में आनेवाले **वत्-मत्** प्रत्ययों के अर्थ में प्राकृत में **आलु, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त, मन्त, इत्त, इर** और **मण** प्रत्यय आते हैं ।

उदा. नेहो अस्स अत्थि त्ति नेहालू (स्नेहवान्)
जडा अस्स अत्थि त्ति जडालो (जटावान्)
प. एकव.

आलु - नेहालू (स्नेहवान्) स्नेहवाला
दयालू (दयावान्) दयावाला
ईसालू (ईर्ष्यावान्) ईर्ष्यावाला

इल्ल - छाइल्लो (छायावान्) छायावाला
सोहिल्लो (शोभावान्) शोभावाला

उल्ल - विआरुल्लो (विकारवान्) विकारवाला
मंसुल्लो (श्मश्रुवान्) दाढ़ीवाला

आल - सद्दालो (शब्दवान्) शब्दवाला
जडालो (जटावान्) जटावाला
रसालो (रसवान्) रसवाला

वन्त - धणवन्तो (धनवान्) धनवाला
भत्तिवन्तो (भक्तिमान्) भक्तिवाला

मन्त - हणुमन्तो (हनुमान्) हनुमान
सिरिमन्तो (श्रीमान्) श्रीमन्त, लक्ष्मीवाला

इत्तो - कव्वइत्तो (काव्यवान्) काव्यवाला

इर - गव्विरो (गर्ववान्) गर्ववाला

मण - धणमणो (धनवान्) धनवाला

15. भाव में **त्त-इमा-त्तण** प्रत्यय लगते हैं ।

उदा. पीणत्तं, पीणिमा, पीणत्तणं (पीनत्वं) पुष्ट अवस्था
पुप्फत्तं, पुप्फिमा, पुप्फत्तणं (पुष्पत्वं) पुष्पावस्था

16. भव (हुआ) अर्थ में **इल्ल-उल्ल** प्रत्यय आते हैं ।

उदा. **इल्ल** - गामिल्लो (ग्रामे भवः) गाँव में उत्पन्न हुआ
पुरिल्ला (पुरे भवाः) नगर में उत्पन्न हुए
उल्ल - अप्पुल्लं (आत्मनि भवम्) आत्मा में हुआ

17. स्वार्थ में **'इल्ल-उल्ल-अ'** ये तीन प्रत्यय लगते हैं ।

उदा. **इल्ल** - पल्लविल्लो (पल्लवकः) पत्ता
उल्ल - पिउल्लो (पितृकः) पिता
मुहुल्लम् (मुखकम्) मुँह, मुख
अ - चन्दओ (चन्द्रकः) चन्द्र
दुहिअओ (दुःखितकः) दुःखी
बहुअं (बहुकम्) ज्यादा

18. वत् (जैसा-जैसे = जिसतरह) अर्थ में **व्व** प्रत्यय लगता है और मयट् प्रत्यय के अर्थ में **मइअ** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **महुरव्व** (मथुरावत्) मथुरा के जैसा
विसमइओ / **विसमओ** } (विषमयः) विषस्वरूप
नाणमइओ / **नाणमओ** } (ज्ञानमयः) ज्ञानस्वरूप

19. **'जैसा'** अर्थ बताने में सर्वनामों को **रिस** (दृश-दृश्) प्रत्यय लगता है, यह प्रत्यय लगाने पर पूर्व **अ** का **आ** होता है तथा **इम** का **ए** और **क** **(किम्)** का **के** होता है ।

उदा.

जारिसो (यादृशः) = जैसा	**एरिसो (ईदृशः)** = ऐसा, इसके जैसा
तारिसो (तादृशः) = उसके जैसा, वैसा	**केरिसो (कीदृशः)** = कैसा, किसके जैसा
एयारिसो (एतादृशः) = इसके जैसा	**अम्हारिसो (अस्मादृशः)** = हमारे जैसा
तुम्हारिसो (युष्मादृशः) = तुम्हारे जैसा	**अन्नारिसो (अन्यादृशः)**=दूसरे के जैसा

आर्ष प्राकृत में -

तालीसो / **तालिसो** } (तादृशः)	**एयालिसो** (एतादृशः)
केसो (कीदृशः)	**इमेरिसो** / **एलिसो** } (ईदृशः)

अनियमित उपयोगी तद्धित शब्द

अम्हकेरो (अस्मदीयः) = हमारा	**तुम्हेच्चयं** (यौष्माकम्) तुम्हारा
तुम्हकेरो (युष्मदीयः) तुम्हारा	**पारकेरं** / **पारक्कं** / **परक्कं** } (परकीयम्) पराया
अम्हेच्चयं (अस्मदीयम्) हमारा	

रायकेरं, **रायक्कं** (राजकीयम्) = राजा का
सव्वंगिओ (सर्वाङ्गीण:) = सर्वाङ्ग व्याप्त
अप्पणयं (आत्मीयं) = अपना
कडुएल्लं (कटुतैलम्) = कटुतैल, तीखा तैल
अवरिल्लो (उपरि) = ऊपर का
जित्तिअं, जेत्तिअं, जेत्तिलं, जेद्दहं (यावत्) = जितना
तित्तिअं, तेत्तिअं, तेत्तिलं, तेद्दहं (तावत्) = उतना
इत्तिअं, एत्तिअं, एत्तिलं, एद्दहं (एतावत्) = इतना
एत्तिअं, एत्तिलं, एद्दहं (इयत्) = इतना
केत्तिअं, केत्तिलं, केद्दहं (कियत्) = कितना
नवल्लो, **नवो** (नवक:) = नया

एकल्लो, **एगो**, **एक्को** (एकक:) अकेला
मीसालिअं, **मीसं** (मिश्रकं) मिश्र
विज्जुला, **विज्जू** (विद्युत्) बिजली
पत्तलं, **पत्तं** (पत्रम्) पत्र, पत्ता, पर्ण
एक्कसि, **एक्कसिअं**, **एक्कइया** (एकदा) = एक समय
भुमया, **भमया** (भ्रू) = भौं, भौंह, भ्रू
पीवलं, **पीअलं**, **पीअं** (पीतम्) पीला
अंधलो, **अंधो** (अन्धक:) अन्धा

अधिकतादर्शक और श्रेष्ठतादर्शक प्रत्यय

20. अधिकतादर्शक **यर (तर)** और श्रेष्ठतादर्शक **यम (तम)** प्रत्यय शब्द को लगाये जाते हैं, वे विशेषण बनते हैं। अन्त्य **अ** का **ई** करने पर इनका स्त्रीलिंग रूप बनता है, कुछ स्थानों में **आ** प्रत्यय लगाने पर भी स्त्रीलिंग रूप बनता हैं।

उदा. **धन्न** - धन्नयरो (धन्यतर:) अधिक प्रशंसापात्र
धन्नयमो (धन्यतम:) सर्वाधिक प्रशंसापात्र
कट्ठ - कट्ठयरं (कष्टतरम्) अधिक दु:खदायक
कट्ठयमं (कष्टतमम्) सर्वाधिक दु:खदायक
लहु - लहुयरो (लघुतर:) अधिक छोटा
लहुयमो (लघुतम:) सबसे छोटा

उच्च - उच्चयरो (उच्चतरः) अधिक ऊँचा
उच्चयमो (उच्चतमः) सब से ऊँचा

स्त्रीलिंग - **ई प्रत्यय** - धन्नयरी, कड्डयमी, लहुयरी, उच्चयमी,
आ प्रत्यय - धन्नयरा, उच्चयमा

आकारान्त पुंलिंग गोवा (गोपा) गोपाल

	एकवचन	बहुवचन
प.	गोवा	गोवा
बी.	गोवाम्	गोवा
त.	गोवाण-णं	गोवाहि, गोवाहिँ, गोवाहिं
च. छ.	गोवस्स	गोवाण, गोवाणं
पं.	गोवत्तो, गोवाओ-उ, गोवाहिन्तो	गोवत्तो, गोवाओ-उ-हिन्तो-सुन्तो
स.	गोवम्मि	गोवासु, गोवासुं
सं.	हे गोवा !	हे गोवा !

21. गामणी-खलपू वगैरह दीर्घ ईकारान्त-ऊकारान्त शब्दों के रूप, उनके स्वर ह्रस्व होकर ह्रस्व इकारान्त-उकारान्त पुंलिंग के समान ही बनते हैं, मात्र संबोधन में उनका स्वर नित्य ह्रस्व होता है ।

	एकवचन	बहुवचन
प.	गामणी	गामणउ, गामणओ, गामणिणो, गामणी
प.	खलपू	खलपवो, खलपउ, खलपओ, खलपुणो, खलपू
सं.	हे गामणि	हे गामणउ, गामणओ, गामणिणो, गामणी
सं.	हे खलपु	हे खलपवो, खलपउ, खलपओ, खलपुणो, खलपू

शेष रूप मुणि, साहु वत्

देश्य प्राकृत में प्रयुक्त शब्द

अत्थक्कं (अकाण्डम्) अकस्मात्
आऊ (आपः) पानी
आसीसा (आशीः) आशीर्वाद
कत्थइ (क्वचित्) कभी-कभी
खुड्डओ (क्षुल्लकः) छोटा साधु
◆ **गावी** (गौः) गाय

◆ गो शब्द के स्त्रीलिंग अंग गावी, गाई, गोणी, गउ बनते हैं, गावी-गाई और गोणी के रूप इत्थी के समान तथा गउ के रूप धेणु के समान जानने चाहिए ।

गोणो (गौ:) बैल, वृषभ
छिछि, द्धिद्धि (धिक्धिक्) धिक्कार हो
छिंछई (पुंश्चली) असती, कुलटा स्त्री
जम्मणं (जन्म) जन्म
धिरत्थु (धिगस्तु) धिक्कार हो
पक्कलो (पक्वल:) समर्थ
बइल्लो (बलीवर्द:) बैल
बहिद्धा (बहिर्धा) मैथुन, कामक्रीड़ा, बहार

बहुयरं (बृहत्तरं) ज्यादा बड़ा
मघोणो (मघवन्) इन्द्र
मुव्वहइ (उद्वहति) वह धारण करता है।
लज्जालुइणी (लज्जावती) लज्जावाली, लज्जा
विउसग्गो (व्युत्सर्ग:) त्याग
वोसिरणं (व्युत्सर्जनम्) त्याग करना
सक्खिणो (साक्षी) साक्षी, गवाह

शब्दार्थ (पुंलिंग)

आसिण (आश्विन) आसो महीना
छण (क्षण) उत्सव

नक्क (देश्य) नाक, नासिका
निहस (निकष) कसौटी का पत्थर
पहार (प्रहार) प्रहार

नपुंसकलिंग

अंगण (अंगन) आँगन, चौक
अवच्च (अपत्य) पुत्र
जय } **जग** } (जगत्) जगत्, दुनिया, संसार

दीणत्तण (दीनत्व) गरीबी
मंगल (मङ्गल) मंगल, शुभ
मंडल (मण्डल) गोलाकार, चक्राकार
हेम (हेमन्) सुवर्ण, सोना

विशेषण

अभिभूअ (अभिभूत) पराभूत, पराजित
चवल (चपल) चंचल, अस्थिर
जिइंदिय (जितेन्द्रिय) इन्द्रियों को जीतनेवाला
निद्दय (निर्दय) दयारहित

मय } **मुअ** } (मृत) मरा हुआ
सण्ह } **सुण्ह** } **सुहुम** } (सूक्ष्म) सूक्ष्म, बारीक पतला

अव्यय

जाव } **जा** } (यावत्) जब तक

ताव } **ता** } (तावत्) तब तक

सामासिक शब्द

उच्छाहसत्ति (उत्साहशक्ति) उत्साह और शक्ति को	**निअसीलबलेणं** (निजशीलबलेन) अपने शील के बल से
चउगइभवे (चतुर्गतिभवे) चार गतिरूप संसार में	**नियववसायाणुरूवं** (निजव्यवसायानुरूपम्) अपने व्यवसाय के अनुरूप
जलपूरीकओ (जलपूरीकृत:) पानी से भरा हुआ	

धातु

आरम्भ (आरभ्य सं. भू. कृ.) आरम्भ करके, चालू करके	**प + वज्ज् (प्र + पद्य)** = स्वीकार करना
तुड् / **तुट्ट** **(त्रुट्)** = टूटना	**वि + वाह् (वि + वाहय्)** = विवाह करना
निवट्ट् / **निअट्ट्** **(नि + वृत् - वर्त्)** = वापिस आना, पीछे आना	**संध् (सं + धा)** = जोड़ना, सन्धि करना, पसन्द करना, प्रेम करना
	सूय् (सूचय्) = सूचना करना
	सोह् (शोधय्) = शुद्ध करना, ढूंढ़ना

हिन्दी में अनुवाद करें–

1. देविंदेहिँ अच्चिअं सिरिमहावीरं सिरसा मणसा वयसा वंदे ।
2. महासईए सीयाए अप्पाणं सोहन्तीए निअसीलबलेण अग्गी जलपूरीकओ ।
3. गुरुया अप्पणो गुणे अप्पणा कयाइ न वण्णन्ति ।
4. नराणं सुहं वा दुहं वा को कुणइ ? अप्पण च्चिय कयाइं कम्माइं समयम्मि परिणमंति ।
5. जइ उ तुम्हे अप्पणो रिद्धिं इच्छह, तो निच्चंपि जिणेसरं आराहह ।
6. जो कोहेण अभिभूओ जीवे हणेइ, सो इह जम्मे परम्मि य जम्मणे वि अप्पणो वहाइ होइ ।
7. नायपुत्तो भयवं महावीरो सिद्दत्थस्स रण्णो अवच्चं होत्था ।
8. अरिहंता मंगलं कुज्जा । अरिहंते सरणं पवज्जामि ।
9. गयणे अच्छरसाणं नच्चं दीसइ ।
10. भिसया तणुस्स वाही अवणेन्ति, लोगोत्तमा य भगवंता सूरिणो य मणसो आहिणो हरन्ति ।
11. सरए इत्थीओ घराणं अंगणे अच्छरसाउ व्व गाणं कुणन्ति नच्चंति अ ।
12. मुणओ पाउसे एगाए वसहीए चिट्ठन्ति ।
13. जए दयालवो जणा बहुआ न हवन्ति ।

14. कलिम्मि सिरिमन्ता लोगा पायेण गव्विरा निद्दया य संति ।
15. दीणत्तणे वि जो उवयरेइ सो धम्मवंतो जाणेअव्वो ।
16. गामिल्लाणं तत्ताइं न रोएन्ति ।
17. पुरिल्ला लोगा तत्ताणं नाणे कुसला संति ।
18. दुहिअएसु नरेसु सइ दयं कुज्जा ।
19. धणवंताणं पि लच्छी पाउसस्स विज्जुव्व चवला नायव्वा ।
20. इमं भोयणं विसमइयं अत्थि, तओ मा खाएइ ।
21. रायक्कं दव्वं पयाए हिआय होइअव्वं ।
22. जीवाणं अप्पणयं नाणं दंसणं चरित्तं च अत्थि, अन्नं सव्वमणिच्चं, तत्तो ताणि चिय सेविज्जाह ।
23. जे निरत्थयं पाणिवहं कुणंति, ताणं धिरत्थु ।
24. गावीणं दुद्धं बालगाणं सोहणं ति ।
25. तं एरिसेहि कम्मेहिं अप्पं निरए माइं पक्खिवसु ।
26. दुज्जणाणं गिराए अमयमत्थि हियए उ विसं ।
27. पावा अप्पणो हिअं पि न पिच्छन्ति न सुणन्ति य ।
28. जो सीलवंतो जिइंदिओ य होइ, तस्स तेओ जसो य धिई य वड्ढन्ते ।
29. नहस्स सोहा चंदो, सरोयाइं सरस्स य, तवसो उवसमो य, मुहस्स य चक्खू नक्को अ ।
30. राइणा वुत्तं-भयवं ! वेसासु मणं कयावि न करिस्सं ।
31. अप्पस्स इव सव्वेसु पाणीसुं जो पासइ स च्चिय पासेइ ।
32. जीवाणं अजीवाणं च सण्हं सरूवं जित्तियं जारिसं च जिणिंदस्स पवयणे अत्थि, तेत्तिलं तारिसं च सरूवं न अन्नह दंसणे ।
33. एवं जीवंताणं, कालेण कयाइ होइ संपत्ती ।
जीवाणं मयाणं पुण, कत्ता दीहंमि संसारे ।।1।।
34. पाणेसु धरन्तेसु य, नियमा उच्छाहसत्तिमसुयन्तो ।
पावेइ फलं पुरिसो, नियववसायाणुरूवं तु ।।2।।
35. दारं च विवाहंतो, भममाणो मंडलाइं चत्तारि ।
सुएइ अप्पणो तह, वहूइ चउगइभवे भमणे ।।3।।

प्राकृत में अनुवाद करें

1. प्रभात में गोवाल (गोवा) गायों को दोहता है ।
2. शुभ कर्मवाले जीव (सुकम्म) शुभकार्य करके परलोक में सुखी बनते हैं ।
3. हे भगवन् ! आप (भगवन्त-भवन्त) इस असार संसार में से हमारे जैसे दु:खियों का उद्धार करो ।

4. शत्रुओं से प्रजा का रक्षण करने के लिए राजा (राय) के पुरुषों ने नगर के बाहर खाई (परिहा) बनायी ।
5. पत्थर जैसे (गाव) हृदय को धारण करनेवाले ये मनुष्य बैलों को (उच्छ-बइल्ल) बहुत पीड़ा देते हैं ।
6. अन्धकार में (तम) मनुष्य चक्षु (चक्खु) द्वारा देखने के लिए समर्थ नहीं होते हैं ।
7. लोग आश्विन महीने में प्रतिपदा से (पडिवया) लेकर पूर्णिमा पर्यन्त महोत्सव करते हैं ।
8. विद्वान् मनुष्य अपने (अप्प) गुणों द्वारा सर्वत्र पूजे जाते हैं ।
9. सोनी कसौटी पर सुवर्ण की परीक्षा करते हैं ।
10. अच्छा वैद भी टूटे हुए आयुष्य को (आउ-आउस) जोड़ने के लिए (संध्) समर्थ (पक्कल) नहीं होता है ।
11. तुम्हारे जैसे (तुम्हारिस) स्नेहवाले (नेहालु) पुरुषों को हमारे जैसे (अम्हारिस) गरीब पर प्रीति करनी चाहिए ।
12. सभी इन्द्र तीर्थंकरों के जन्म (जम्म) काल में मेरुपर्वत पर तीर्थंकरों को लेकर जन्ममहोत्सव करते हैं ।
13. मनुष्यों को संपत्ति (संपया) में गर्विष्ठ (गव्विर) नहीं बनना चाहिए और दुःख (आवया) में दीन नहीं बनना चाहिए ।
14. जीव अपने ही (अप्पाण) कर्म के माध्यम से सुख और दुःख प्राप्त करता है, दूसरा देता है, वह मिथ्या है ।
15. गुरुओं के आशीर्वादों से (आसीसा) कल्याण ही होता है, इसलिए उनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए ।
16. तपश्चर्या (तव) द्वारा कर्मों की निर्जरा होती है और क्रोध से कर्मों का बन्ध होता है ।
17. शास्त्र ◆ पढ़े हुए मूर्ख ज्यादा होते हैं, लेकिन जो आचारवाले हैं वे ही पण्डित कहलाते हैं ।
18. बन्धु ने राजा को (राय) कहा कि तू राज्य का त्याग कर और यहाँ मत ठहर ।
19. अच्छी तरह पालन किया हुआ राज्य राजा को (राय) बहुत धन और कीर्ति देता है ।
20. वृद्धावस्था में (वुड्डत्तण) शरीर की सुन्दरता (सुंदरत्तण) नष्ट होती है ।
21. दूसरों के (पारकेर) दुःख सुनकर महात्माओं का (महप्प) मन दयावाला बनता है । (दयालु)

◆ यहाँ 'पढिअवंता' कर्तवि भूतकृदन्त का प्रयोग करें ।

पाठ - 22

प्रेरक भेद

1. धातुओं के प्रेरक रूप - मूल धातु को **अ, ए, आव** और **आवे** प्रत्यय लगाकर उस-उस काल के पुरुषबोधक प्रत्यय लगाने पर बनते हैं ।
2. प्रेरक धातु में उपान्त्य **अ** हो तो **अ** अथवा **ए** प्रत्यय लगाने पर **अ** का **आ** बनता है ।

उदा. हस् + अ = हास + इ = हासइ
हस् + ए = हासे + इ = हासेइ
हस् + आव = हसाव + इ = हसावइ
हस् + आवे = हसावे + इ = हसावेइ
} वह हँसाता है ।

ने + अ = नेअ + इ = नेअइ
ने + ए = नेए + इ = नेएइ
ने + आव = नेआव + इ = नेआवइ
ने + आवे = नेआवे + इ = नेआवेइ
} (वह लिवाता है ।)

3. मूल धातुओं में उपान्त्य **इ** अथवा **उ** हो तो प्रायः **इ** का **ए** और **उ** का **ओ** होता है ।

उदा. रिय् + अ = रेय - रेयइ | **तुस् + अ** = तोस - तोसइ
बुह् + अ = बोह - बोहइ | **तुड् + अ** = तोड़ - तोडइ

4. धातु में आदि स्वर गुरु हो तो **अवि** प्रत्यय भी लगता है ।
   उदा. बोल्लवि - तोसवि
5. **आव-आवे** प्रत्यय लगाने पर कुछ स्थानों में पूर्व **अ** का **आ** होता है ।
   उदा. कारावइ - कारावेइ
6. **भम्** धातु का प्रेरक अंग विकल्प से **भमाड** भी होता है ।
   उदा. भमाड

मूल धातु	**प्रेरक अंग**			
पड्	पाड	पाडे	पडाव	पडावे
कर्	कार	कारे	कराव	करावे

हस्	हास	हासे	हसाव	हसावे	
जाण्	जाण	जाणे	जाणाव	जाणावे	जाणवि
बोल्ल्	बोल्ल	बोल्ले	बोल्लाव	बोल्लावे	बोल्लवि
भम्	भाम	भामे	भमाव	भमावे	भमाड
ने	नेअ	नेए	नेआव	नेआवे	नेअवि
हो	होअ	होए	होआव	होआवे	होअवि
बुह्	बोह	बोहे	बोहाव	बोहावे	बोहवि

इस प्रकार धातुओं का प्रेरक अंग तैयार करके उसे उस-उस काल के पुरुषबोधक प्रत्यय लगाकर पूर्वानुसार रूप सिद्ध करना चाहिए ।

कार् - कार, कारे, कराव, करावे अंग के रूप

वर्तमानकाल [व्यञ्जनान्त धातु]

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**कार** - कारमि, कारामि, कारेमि	कारमो, कारामो, कारिमो, कारेमो
	कारे - कारेमि	कारेमो
	कराव - करावमि, करावामि, करावेमि	करावमो, करावामो, कराविमो, करावेमो
	करावे - करावेमि	करावेमो
		इस प्रकार मु-म प्रत्यय के रूप भी समझना ।
द्वितीय पुरुष	**कार** - कारसि, कारेसि	कारह, कारेह
	कारे - कारेसि	कारेह
	कराव - करावसि - करावेसि	करावह, करावेह
	करावे - करावेसि	करावेह
	इस प्रकार से प्रत्यय-	
	कार - कारसे	कारित्था, कारेइत्था
	कारे -	कारेइत्था
	कराव - करावसे	करावित्था, करावेइत्था
	करावे -	करावेइत्था

तृतीय पुरुष	**कार** - कारइ, कारेइ	कारन्ति, कारेन्ति
	कारे - कारेइ	कारेन्ति
	कराव - करावइ, करावेइ	करावन्ति, करावेन्ति
	करावे - करावेइ	करावेन्ति
	कार - कारए	कारन्ते, कारेन्ते,
	कारे -	कारेन्ते
	कराव - करावए	करावन्ते, करावेन्ते
	करावे -	करावेन्ते
	कार -	कारिरे, कारेइरे
	कारे -	कारेइरे
	कराव -	कराविरे, करावेइरे
	करावे -	करावेइरे

ज्ज - ज्जा प्रत्ययसहित

सर्वपुरुष
सर्ववचन } कारेज्ज - कारेज्जा
करावेज्ज, करावेज्जा

◆ भूतकाल

सर्वपुरुष
सर्ववचन } कारीअ, कारेईअ,
करावीअ, करावेईअ

आर्ष प्राकृत में-

सर्वपुरुष
सर्ववचन }
कार - कारित्था, कारिंसु
कारे - कारेत्था, कारेंसु,
कराव - करावित्था, कराविंसु
करावे - करावेत्था, करावेंसु

◆ आर्ष में - भूतकाल में व्यञ्जनान्त धातुओं में भी 'सी' प्रत्यय का प्रयोग दिखाई देता है । उदा. सीलवंती राईमई पव्वईया संती तहिं बहुं सयणं परियणं चेव पव्वावेसी (प्रावीव्रजत्) उत्तरा. अध्य. 22, गा. 32

विध्यर्थ-आज्ञार्थ

प. पु.	एकवचन	बहुवचन
	कार - कारमु, कारामु, कारिमु, कारेमु	कारमो, कारामो, कारिमो, कारेमो
	कारे - कारेमु	कारेमो
	कराव - करावमु, करावामु, कराविमु, करावेमु,	करावमो, करावामो, कराविमो, करावेमो
	करावे - करावेमु	करावेमो
द्वि. पु.	**कार** - कारहि, कारेहि कारसु, कारेसु कारिज्जसु, कारेज्जसु कारिज्जहि, कारेज्जहि कारिज्जे, कारेज्जे, कार, कारे	कारह, कारेह

आर्ष प्राकृत में-

	[कारिज्जसि, कारेज्जसि, कारिज्जासि, कारेज्जासि, कारिज्जाहि, कारेज्जाहि, काराहि]	कारिज्जाह, कारेज्जाह
कारे -	कारेहि, कारेसु	कारेह
कराव -	करावहि, करावेहि करावसु, करावेसु कराविज्जसु, करावेज्जसु कराविज्जहि, करावेज्जहि कराविज्जे, करावेज्जे, कराव, करावे	करावह, करावेह

आर्ष प्राकृत में -

	[कराविज्जसि, करावेज्जसि, कराविज्जासि, करावेज्जासि, कराविज्जाहि, करावेज्जाहि, करावाहि]	[कराविज्जाह, करावेज्जाह]
करावे -	करावेहि, करावेसु	करावेह

तृतीय पुरुष	**कार** - कारउ, कारेउ	कारन्तु, कारेन्तु
	कारे - कारेउ	कारेन्तु
	कराव - करावउ, करावेउ,	करावन्तु, करावेन्तु
	करावे - करावेउ, (कारए)	करावेन्तु
	सर्वपुरुष सर्ववचन } कारेज्ज, कारेज्जा, करावेज्ज, करावेज्जा	कारेज्जइ, कारेज्जाइ, करावेज्जइ, करावेज्जाइ

भविष्यकाल

प. पु.	एकवचन	बहुवचन
	कार - कारिस्सं, कारेस्सं,	
	कारिस्सामि, कारेस्सामि,	कारिस्सामो, कारेस्सामो,
		कारिहामो, कारेहामो
	कारिहामि, कारेहामि,	कारिहिमो, कारेहिमो,
		कारिहिस्सा, कारेहिस्सा
	कारिहिमि, कारेहिमि,	कारिहित्था, कारेहित्था
	कारे - कारेस्सं, कारेस्सामि,	कारेस्सामो, कारेहामो,
	कारेहामि, कारेहिमि	कारेहिमो,
		कारेहिस्सा, कारेहित्था
	कराव - कराविस्सं, करावेस्सं,	कराविस्सामो, करावेस्सामो,
	कराविस्सामि, करावेस्सामि,	कराविहामो, करावेहामो,
	कराविहामि, करावेहामि,	कराविहिमो, करावेहिमो,
	कराविहिमि, करावेहिमि	कराविहिस्सा, करावेहिस्सा,
		कराविहित्था, करावेहित्था
	करावे - करावेस्सं,	करावेस्सामो, करावेहामो,
	करावेस्सामि	करावेहिमो
	करावेहामि, करावेहिमि	करावेहिस्सा, करावेहित्था
		इस प्रकार मु-म-प्रत्यय लगाकर रूप जानना ।
द्वितीय पुरुष	**कार** - कारिहिसि, कारेहिसि,	कारिहिह, कारेहिह
	कारिस्ससि, कारेस्ससि	कारिहित्था, कारेहित्था
		कारिस्सह, कारेस्सह

	कारे - कारेहिसि, कारेस्ससि, **कराव** - कराविहिसि, करावेहिसि, कराविस्ससि, करावेस्ससि **करावे** - करावेहिसि, करावेस्ससि, **(इस प्रकार से प्रत्यय)**	कारेहिह, कारेइत्था, कारेस्सह कराविहिह, करावेहिह कराविहित्था, करावेहित्था, कराविस्सह, करावेस्सह करावेहिह, करावेहित्था, करावेस्सह
तृ. पु.	**कार** - कारिहिइ, कारेहिइ, कारिस्सइ, कारेस्सइ **कारे** - कारेहिइ, कारेस्सइ, **कराव** - कराविहिइ, करावेहिइ, कराविस्सइ, करावेस्सइ **करावे** - करावेहिइ करावेस्सइ **(इस प्रकार ए प्रत्यय)**	कारिहिन्ति, कारेहिन्ति, कारिस्सन्ति, कारेस्सन्ति, कारेहिन्ति, कारेस्सन्ति कराविहिन्ति, करावेहिन्ति, कराविस्सन्ति, करावेस्सन्ति करावेहिन्ति, करावेस्सन्ति **(इस प्रकार न्ते-इरे प्रत्यय के रूप समझना)**
	सर्वपुरुष सर्ववचन } कारेज्ज, कारेज्जा, करावेज्ज, करावेज्जा	

क्रियातिपत्त्यर्थ

पुंलिंग	**एकवचन**	**बहुवचन**
कार -	कारन्तो	कारन्ता
कारे -	कारेन्तो	कारेन्ता
कराव -	करावन्तो	करावन्ता
करावे -	करावेन्तो	करावेन्ता
स्त्रीलिंग -		
कार -	कारन्ती	कारन्तीओ
कारे -	कारेन्ती	कारेन्तीओ

कराव -	करावन्ती	करावन्तीओ
करावे -	करावेन्ती	करावेन्तीओ
नपुंसकलिंग -		
कार -	कारन्तं	कारन्ताइं
कारे -	कारेन्तं	कारेन्ताइं
कराव -	करावन्तं	करावन्ताइं
करावे -	करावेन्तं	करावेन्ताइं

इत्यादि कर्तरि के समान जानना

सर्वपुरुष सर्ववचन
- कार - कारेज्ज - कारेज्जा
- कारे - कारेज्ज - कारेज्जा
- कराव - करावेज्ज - करावेज्जा
- करावे - करावेज्ज - करावेज्जा

वर्तमानकाल [स्वरान्त] धातु.

होअ, होए, होआव, होआवे, होअवि - अंग के रूप

प्रथम पु. एकवचन - होअमि, होआमि, होएमि, होएमि
होआवमि, होआवामि, होआवेमि, हीआवेमि
होअविमि

ज्ज - ज्जासहित

होएज्जमि, होएज्जामि,
होआवेज्जमि, होआवेज्जामि
होअविज्जमि, होअविज्जामि
होएज्ज-ज्जा, होआवेज्ज-ज्जा, होअविज्ज-ज्जा

भूतकाल

सर्वपुरुष सर्ववचन
- होअसी - ही - हीअ
- होएसी - ही - हीअ
- होआवसी - ही - हीअ
- होआवेसी - ही - हीअ
- होअविसी - ही - हीअ

आर्ष में -

सर्वपुरुष सर्ववचन	होअ - होइत्था	होइंसु
	होए - होएत्था	होएंसु
	होआव - होआवित्था	होआविंसु
	होआवे - होआवेत्था	होआवेंसु
	होअवि - होअवित्था	होअविंसु

विध्यर्थ-आज्ञार्थ

प्रथम पु. एकवचन - होअमु, होआमु, होइमु, होएमु,
होआवमु, होआवामु, होआविमु, होआवेमु
होआवेमु, होअविमु

ज्ज - ज्जा सहित

होएज्जमु, होएज्जामु, होएज्जिमु, होएज्जेमु,
होआवेज्जमु, होआवेज्जामु, होआवेज्जिमु,
होआवेज्जेमु, होअविज्जमु, होअविज्जामु,
होअविज्जिमु, होअविज्जेमु

भविष्यकाल

प्रथम पु. एकवचन -

होअ, होए	होइस्सं, होएस्सं, होइस्सामि, होएस्सामि, होइहामि, होएहामि, होइहिमि, होएहिमि,
होआव, होआवे	होआविस्सं, होआवेस्सं, होआविस्सामि, होआवेस्सामि, होआविहामि, होआवेहामि, होआविहिमि, होआवेहिमि
होअवि	होअविस्सं, होअविस्सामि, होअविहामि, होअविहिमि

ज्ज - ज्जा प्रत्ययसहित

होएज्ज, होएज्जा	होएज्जस्सं, होएज्जस्सामि, होएज्जहामि, होएज्जाहामि होएज्जहिमि, होएज्जाहिमि, होएज्ज, होएज्जा
होआवेज्ज, होआवेज्जा	होआवेज्जस्सं, होआवेज्जस्सामि, होआवेज्जहामि होआवेज्जाहामि, होआवेज्जहिमि, होआवेज्जाहिमि होआवेज्ज, होआवेज्जा

होअविज्ज } होअविज्जस्सं, होअविज्जस्सामि, होअविज्जहामि
होअविज्जा } होअविज्जाहामि, होअविज्जहिमि, होअविज्जाहिमि,
होअविज्ज, होअविज्जा

क्रियातिपत्त्यर्थ

पुंलिंग -	एकवचन	बहुवचन
होअ -	होअन्तो	होअन्ता
होए -	होएन्तो	होएन्ता
होआव -	होआवन्तो	होआवन्ता
होआवे -	होआवेन्तो	होआवेन्ता
होअवि -	होअविन्तो	होअविन्ता
स्त्रीलिंग -		
होअ -	होअन्ती	होअन्तीओ
होए -	होएन्ती	होएन्तीओ
होआव -	होआवन्ती	होआवन्तीओ
होआवे -	होआवेन्ती	होआवेन्तीओ
होअवि -	होअविन्ती	होअविन्तीओ
नपुंसकलिंग -		
होअ -	होअन्तं	होअन्ताइं
होए -	होएन्तं	होएन्ताइं
होआव -	होआवन्तं	होआवन्ताइं
होआवे -	होआवेन्तं	होआवेन्ताइं
होअवि -	होअविन्तं	होअविन्ताइं

इत्यादि कर्तरि के समान जानने चाहिए।

सर्वपुरुष सर्ववचन
होअ - होएज्ज - होएज्जा
होए - होएज्ज - होएज्जा
होआव - होआवेज्ज - होआवेज्जा
होआवे - होआवेज्ज - होआवेज्जा
होअवि - होअविज्ज - होअविज्जा

धातु	वर्तमानकाल	भूतकाल	विध्यर्थ-आज्ञार्थ	भविष्यकाल	क्रियातिपत्त्यर्थ
पड्	पाडइ	पाडीअ	पाडउ	पाडिहिइ	पाडन्तो
	पाडेइ	पाडेईअ	पाडेउ	पाडेहिइ	पाडेन्तो
	पडावइ	पडावीअ	पडावउ	पडाविहिइ	पडावन्तो
	पडावेइ	पडावेईअ	पडावेउ	पडावेहिइ	पडावेन्तो
हस्	हासइ	हासीअ	हासउ	हासिहिइ	हासन्तो
	हासेइ	हासेईअ	हासेउ	हासेहिइ	हासेन्तो
	हसावइ	हसावीअ	हसावउ	हसाविहिइ	हसावन्तो
	हसावेइ	हसावेईअ	हसावेउ	हसावेहिइ	हसावेन्तो
बोल्ल्	बोल्लइ	बोल्लीअ	बोल्लउ	बोल्लहिइ	बोल्लन्तो
	बोल्लेइ	बोल्लेईअ	बोल्लेउ	बोल्लेहिइ	बोल्लेन्तो
	बोल्लावइ	बोल्लावीअ	बोल्लावउ	बोल्लाविहिइ	बोल्लावन्तो
	बोल्लावेइ	बोल्लावेईअ	बोल्लावेउ	बोल्लावेहिइ	बोल्लावेन्तो
	बोल्लविइ	बोल्लाविईअ	बोल्लविउ	बोल्लविहिइ	बोल्लविन्तो
भम्	भामइ	भामीअ	भामउ	भामिहिइ	भामन्तो
	भामेइ	भामेईअ	भामेउ	भामेहिइ	भामेन्तो
	भमावइ	भमावीअ	भमावउ	भमाविहिइ	भमावन्तो
	भमावेइ	भमावेईअ	भमावेउ	भमावेहिइ	भमावेन्तो
	भमाडइ	भमाडीअ	भमाडउ	भमाडिहिइ	भमाडन्तो
ने	नेअइ	नेअसी	नेअउ	नेइहिइ	नेअन्तो
	नेएइ	नेएसी	नेएउ	नेएहिइ	नेएन्तो
	नेआवइ	नेआवसी	नेआवउ	नेआविहिइ	नेआवन्तो
	नेआवेइ	नेआवेसी	नेआवेउ	नेआवेहिइ	नेआवेन्तो
	नेअविइ	नेअविसी	नेअविउ	नेअविहिइ	नेअविन्तो

7. (1) धातु के प्रेरक अंग को पूर्वोक्त कृदन्त के प्रत्यय लगाने से प्रेरक हेत्वर्थकृदन्त, सम्बन्धकभूतकृदन्त, वर्तमानकृदन्त, भविष्यकृदन्त और विध्यर्थ कर्मणिकृदन्त बनते हैं ।

(2) मूल धातु को **आवि** प्रत्यय लगाकर भूतकृदन्त के प्रत्यय लगाने से अथवा धातु के उपान्त्य **अ** का **आ** करके भूतकृदन्त के प्रत्यय लगाने से कर्मणि भूतकृदन्त बनता है ।

उदा. हस् + आवि + अ = हसाविअं } हँसाया हुआ, हँसाया
हस् + अ = हासिअं }
कर् + आवि + अ = कराविअं } करवाया,
कर् + अ = कारिअं }

धातु के अंग	**हेत्वर्थ कृदन्त**	**सम्बन्धक भूतकृदन्त**	**कर्तरि वर्तमान कृदन्त**	**भविष्य कृदन्त**	**विध्यर्थ कर्मणि कृदन्त**
कार	कारिउं	कारिउं	कारन्तो	कारिस्सन्तो	कारियव्वं
कारे	कारेउं	कारेउं	कारेन्तो	कारेइस्सन्तो	कारेयव्वं
कराव	कराविउं	कराविउं	करावन्तो	कराविस्सन्तो	करावियव्वं
करावे	करावेउं	करावेउं	करावेन्तो	करावेइस्सन्तो	करावेयव्वं
कार	कारित्तए	कारिअ	कारमाणो	कारिस्समाणो	कारणीअं
कारे	कारेत्तए	कारेअ	कारेमाणो	कारेइस्समाणो	कारेअणीअं
कराव	करावित्तए	कराविअ	करावमाणो	कराविस्समाणो	करावअणीअं
करावे	करावेत्तए	करावेअ	करावेमाणो	करावेइस्समाणो	करावेअणीअं
कार	कारित्तुं	कारिऊण	कारई		कारणिज्जं
कारे	कारेत्तुं	कारेऊण	कारेई		कारेअणिज्जं
कराव	करावित्तुं	कराविऊण	करावई		करावणिज्जं
करावे	करावेत्तुं	करावेऊण	करावेई		करावेअणिज्जं
कार		कारिउआण	कारन्ती-न्ता		
कारे		कारेउआण	कारेन्ती-न्ता		
कराव		कराविउआण	करावन्ती-न्ता		
करावे		करावेउआण	करावेन्ती-न्ता		
कार		कारित्तु	कारमाणी-णा		
कारे		कारेत्तु	कारेमाणी-णा		
कराव		करावित्तु	करावमाणी-णा		
करावे		करावेत्तु	करावेमाणी-णा		
कार		कारित्ता-णं			
कारे		कारेत्ता-णं			
कराव		करावित्ता-णं			
करावे		करावेत्ता-णं			

इस प्रकार सभी धातुओं के प्रेरक अंग तैयार करके कृदन्त बना सकते हैं ।

प्रेरक कर्मणि और भावे रूप

8. **अ-ए-आव-आवे** प्रत्ययों के स्थान पर प्रेरक सूचक ◆**आवि** प्रत्यय लगाकर उस तैयार अंग को पूर्वोक्त कर्मणि-भावे के **ईअ-इज्ज** प्रत्यय लगाकर उन-उन काल के पुरुषबोधक प्रत्यय लगाने से प्रेरक कर्मणि और भावे रूप बनते हैं **अथवा** प्रेरक सूचक कोई भी प्रत्यय लगाये बिना उपान्त्य **अ** का **आ** करके **ईअ-इज्ज** प्रत्यय लगाने से प्रेरक कर्मणि और भावे रूप बनते हैं।

उदा. **कर् + आवि = करावि + ईअ** = करावीअ

कर् + आवि = करावि + इज्ज = कराविज्ज

कर् - कार् + ईअ = कारीअ

कर् - कार् + इज्ज = कारिज्ज

जाण् + आवि = जाणावि + ईअ = जाणावीअ

जाण् + आवि = जाणावि + इज्ज = जाणाविज्ज

जाण् + ईअ = जाणीअ

जाण् + इज्ज = जाणिज्ज

हो + आवि = होआवि + ईअ = होआवीअ

हो + आवि = होआवि + इज्ज = होआविज्ज

हो + ईअ = होईअ

हो + इज्ज = होइज्ज

इस प्रकार अंग तैयार करके पुरुषबोधक प्रत्यय लगाकर रूप सिद्ध करने चाहिए।

रूप

हस्-हसावीअ, हसाविज्ज, हासीअ, हासिज्ज-अंग के रूप

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु.	हसावीअमि, हसावीआमि हसावीएमि हसाविज्जमि, हसाविज्जामि,	हसावीअमो, हसावीआमो, हसावीइमो, हसावीएमो, हसाविज्जमो, हसाविज्जामो,

◆ **आवि** प्रत्यय लगाने पर कुछ स्थानों में पूर्व **अ** का **आ** भी होता है। उदा. हासावीअइ (णायविढत्तधणेण जं काराविज्जंति देवभवणाइं। कुव. माला पृ. 206 पं. 16)

	हसाविज्जेमि हासीअमि, हासीआमि, हासीएमि हासिज्जमि, हासिज्जामि, हासिज्जेमि	हसाविज्जिमो, हसाविज्जेमो, हासीअमो, हासीआमो, हासीइमो, हासीएमो, हासिज्जमो, हासिज्जामो, हासिज्जिमो, हासिज्जेमो, (इस प्रकार `मु-म' प्रत्यय के रूप समझना)
द्वितीय पु.	हसावीअसि हसाविज्जसि, हासीअसि, हासिज्जसि (इस प्रकार `से' प्रत्यय के रूप समझना)	हसावीइत्था, हसावीअह हसाविज्जित्था, हसाविज्जह हासीइत्था, हासीअह, हासिज्जित्था, हासिज्जह
तृतीय पु.	हसावीअइ हसाविज्जइ हासीअइ हासिज्जइ (इस प्रकार `ए' प्रत्यय के रूप समझना)	हसावीअन्ति-न्ते, हसावीइरे हसाविज्जन्ति-न्ते, हसाविज्जिरे हासीअन्ति-न्ते, हासीइरे हासिज्जन्ति-न्ते, हासिज्जिरे

सर्वपुरुष सर्ववचन } हसावीएज्ज-ज्जा, हसाविज्जेज्ज-ज्जा,
हासीएज्ज-ज्जा, हासिज्जेज्ज-ज्जा

भूतकाल

सर्वपुरुष सर्ववचन } हसावीअईअ, हसाविज्जईअ,
हासीअईअ, हासिज्जईअ

आर्ष प्राकृत में -

सर्वपुरुष सर्ववचन	हसावीअ हसावीइत्था,	हसावीइंसु,
	हसाविज्ज - हसाविज्जित्था,	हसाविज्जिंसु
	हासीअ - हासीइत्था,	हासीइंसु
	हासिज्ज - हासिज्जित्था	हासिज्जिंसु

विध्यर्थ-आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु.	हसावीअमु, हसावीआमु,	हसावीअमो, हसावीआमो,
	हसावीइमु, हसावीएमु,	हसावीइमो, हसावीएमो,
	हसाविज्जमु, हसाविज्जामु,	हसाविज्जमो, हसाविज्जामो,
	हसाविज्जिमु, हसाविज्जेमु,	हसाविज्जिमो, हसाविज्जेमो
	हासीअमु, हासीआमु,	हासीअमो, हासीआमो,
	हासीइमु, हासीएमु,	हासीइमो, हासीएमो,
	हासिज्जमु, हासिज्जामु	हासिज्जमो, हासिज्जामो
	हासिज्जिमु, हासिज्जेमु	हासिज्जिमो, हासिज्जेमो
द्वितीय पु.	हसावीअहि, हसावीएहि	हसावीअह, हसावीएह
	हसावीअसु, हसावीएसु	हसाविज्जह, हसाविज्जेह
	हसावीइज्जसु, हसावीएज्जसु	हासीअह, हासीएह
	हसावीइज्जहि, हसावीएज्जहि	हासिज्जह, हासिज्जेह
	हसावीइज्जे, हसावीएज्जे,	
	हसावीअ, हसावीए	
(इस प्रकार हसाविज्ज-हासीअ-हासिज्ज अंग के रूप भी समझना)		
तृतीय पु.	हसावीअउ, हसावीएउ,	हसावीअन्तु, हसावीएन्तु,
	हसाविज्जउ, हसाविज्जेउ,	हसाविज्जन्तु, हसाविज्जेन्तु
	हासीअउ, हासीएउ,	हासीअन्तु, हासीएन्तु
	हासिज्जउ, हासिज्जेउ	हासिज्जन्तु, हासिज्जेन्तु

सर्वपुरुष सर्ववचन } हसावीएज्ज-ज्जा, हसावीएज्जइ,
हसाविज्जेज्ज-ज्जा, हसाविज्जेज्जइ,
हासीएज्ज-ज्जा, हासीएज्जइ,
हासिज्जेज्ज-ज्जा, हासिज्जेज्जइ

भविष्यकाल ◆

हसावि-हास अंग

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु.	हसाविस्सं, हसाविस्सामि, हसाविहामि, हसाविहिमि, हासिस्सं, हासेस्सं, हासिस्सामि, हासेस्सामि, हासिहामि, हासेहामि, हासिहिमि, हासेहिमि	हसाविस्सामो, हसाविहामो, हसाविहिमो, हसाविहिस्सा, हसाविहित्था, हासिस्सामो, हासेस्सामो, हासिहामो, हासेहामो, हासिहिमो, हासेहिमो, हासिहिस्सा, हासेहिस्सा, हासिहित्था, हासेहित्था (इस प्रकार 'मु-म' प्रत्यय के रूप भी समझना)
द्वितीय पु.	हसाविहिसि, हसाविस्ससि, हासिहिसि, हासेहिसि, हासिस्ससि, हासेस्ससि, (इस प्रकार 'से' प्रत्यय के रूप समझना)	हसाविहिह, हसाविस्सह, हसाविहित्था, हासिहिह, हासेहिह, हासिस्सह, हासेस्सह, हासिहित्था, हासेहित्था
तृतीय पु.	हसाविहिइ, हसाविहिए, हसाविस्सइ, हसाविस्सए, हासिहिइ, हासिहिए, हासेहिइ, हासेहिए, हासिस्सइ, हासिस्सए, हासेस्सइ, हासेस्सए **सर्वपुरुष** } हसाविज्ज-ज्जा, **सर्ववचन** } हासेज्ज-ज्जा	हसाविहिन्ति, हसाविस्सन्ति, हासिहिन्ति, हासेहिन्ति, हासिस्सन्ति, हासेस्सन्ति (इस प्रकार 'न्ते-इरे' प्रत्यय के रूप समझना)

◆ भविष्यकाल और क्रियातिपत्त्यर्थ में **'ईअ-इज्ज'** प्रत्यय नहीं लगते हैं, इसलिए **'ईअ-इज्ज'** प्रत्यय लगाये बिना ही पुरुषबोधक प्रत्यय लगाये जाते हैं। परि. 1 नि.9.

क्रियातिपत्त्यर्थ हसावि-हास अंग

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिंग -	हसाविन्तो, हासन्तो	हसाविन्ता, हासन्ता
स्त्रीलिंग -	हसाविन्ती, हासन्ती	हसाविन्तीओ, हासन्तीओ
नपुंसकलिंग -	हसाविन्तं, हासन्तं	हसाविन्ताइं, हासन्ताइं इत्यादि कर्तरि के समान जानना।

सर्वपुरुष } हसाविज्ज-ज्जा,
सर्ववचन } हासेज्ज-ज्जा

धातु	अंग	वर्तमानकाल	भूतकाल	विध्यर्थ-आज्ञार्थ	भविष्यकाल	क्रियातिपत्त्यर्थ
कर्	करावीअ	करावीअइ	करावीअईअ	करावीअउ	कराविहिइ, कराविस्सइ	कराविन्तो-न्ती-न्तं कराविज्ज-ज्जा
	कराविज्ज	कराविज्जइ	कराविज्जईअ	कराविज्जउ	कराविहिइ, कराविस्सइ	कराविन्तो-न्ती-न्तं कराविज्ज-ज्जा
	कारीअ	कारीअई	कारीअईअ	कारीअउ	कारिहिइ } कारिस्सइ }	कारन्तो-न्ती-न्तं
	कारिज्ज	कारिज्जइ	कारिज्जईअ	कारिज्जउ		कारेज्ज-ज्जा
पड्	पडावीअ	पडावीअइ	पडावीअईअ	पडावीअउ	पडाविहिइ, } पडाविस्सइ }	पडाविन्तो-न्ती-न्तं पडाविज्ज-ज्जा
	पडाविज्ज	पडाविज्जइ	पडाविज्जईअ	पडाविज्जउ	पडाविहिइ, } पडाविस्सइ }	पडाविन्तो-न्ती-न्तं पडाविज्ज-ज्जा
	पाडीअ	पाडीअइ	पाडीअईअ	पाडीअउ	पाडिहिइ }	पाडन्तो-न्ती-न्तं
	पाडिज्ज	पाडिज्जइ	पाडिज्जईअ	पाडिज्जउ	पाडिस्सइ }	पाडेज्ज-ज्जा
हो	होआवीअ	होआवीअइ	होआवीअसी- ही-हीअ	होआविअउ	होआविहिई, होआविस्सइ	होआविन्तो-न्ती-न्तं होआविज्ज-ज्जा
	होआविज्ज	होआविज्जइ	होआविज्जसी- ही-हीअ	होआविज्जउ	होआविहिई, होआविस्सइ	होआविन्तो-न्ती-न्तं होआविज्ज-ज्जा

	होईअ	होईअइ	होईअसी-ही-हीअ	होईअउ	होहिइ	होन्तो-न्ती-न्तं, होज्ज-ज्जा
	होइज्ज	होइज्जइ	होइज्जसी-ही-हीअ	होइज्जउ	होस्सइ	
दृश् ◆	दीसावि	दीसाविइ	दीसाविईअ	दीसाविउ	दीसाविहिइ	दीसाविन्तो-न्ती-न्तं, दीसाविज्ज-ज्जा
	दीस	दीसइ	दीसईअ	दीसउ	दीसिहिइ	दीसन्तो-न्ती-न्तं, दीसेज्ज-ज्जा
ग्रह्	घेप्पावि	घेप्पाविइ	घेप्पाविईअ	घेप्पाविउ	घेप्पाविहिइ घेप्पाविस्सइ	घेप्पाविन्तो-न्ती-न्तं, घेप्पाविज्ज-ज्जा
	घेप्प	घेप्पइ	घेप्पईअ	घेप्पउ	घेप्पिहिइ घेप्पिस्सइ	घेप्पन्तो-न्ती-न्तं, घेप्पेज्ज-ज्जा
	गहावीअ	गहावीअइ	गहावीअईअ	गहावीअउ	गहाविहिइ गहाविस्सइ	गहाविन्तो-न्ती-न्तं, गहाविज्ज-ज्जा
	गहाविज्ज	गहाविज्जइ	गहाविज्जईअ	गहाविज्जउ	गहाविहिइ गहाविस्सइ	गहाविन्तो-न्ती-न्तं, गहाविज्ज-ज्जा
	गाहीअ	गाहीअइ	गाहीअईअ	गाहिअउ	गाहिहिइ	गाहन्तो-न्ती-न्तं,
	गाहिज्ज	गाहिज्जइ	गाहिज्जईअ	गाहिज्जउ	गाहिस्सइ	गाहेज्ज-ज्जा

प्रेरक कर्मणि वर्तमानकृदन्त

9. प्रेरक कर्मणि अंग को वर्तमानकृदन्त के प्रत्यय लगाने से प्रेरक कर्मणि वर्तमानकृदन्त बनता है ।

उदा.	अंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
	करावीअ	करावीअन्तो-माणो	करावीअई-न्ती-न्ता-माणी-माणा
	कराविज्ज	कराविज्जन्तो-माणो	कराविज्जई-न्ती-न्ता-माणी-माणा
	कारीअ	कारीअन्तो-माणो	कारीअई-न्ती-न्ता-माणी-माणा
	कारिज्ज	कारिज्जन्तो-माणो	कारिज्जई-न्ती-न्ता-माणी-माणा

◆ दीस इत्यादि धातुओं के लिए पाठ-19 देखिए ।

प्रेरक वाक्यरचना

10. प्रेरक की वाक्य-रचना में मूल क्रिया का कर्त्ता दूसरी अथवा तीसरी विभक्ति में रखा जाता है ।
उदा. सीसो गंथं रएइ, तं गुरु पेरणं करेइ त्ति गुरू सीसं सीसेण वा गंथं रयावेइ । (गुरु शिष्य के पास ग्रंथ की रचना करवाते हैं ।)

11. **अपवाद -** अकर्मक धातु तथा शब्दकर्मक धातु, गति-ज्ञान-भोजन अर्थवाले धातु और देक्ख-पास इत्यादि धातुओं की वाक्यरचना में मूल क्रिया का कर्त्ता प्रायः दूसरी विभक्ति में रखा जाता है ।

उदा. कर्तरि		**प्रेरक**
बालो जग्गइ	–	पिआ बालं जग्गावेइ । [अकर्मक]
समणो सिद्धन्तं पढेइ	–	सूरी समणं सिद्धन्तं पढावेइ । [शब्दकर्मक]
समणा विहरन्ति	–	आयरिओ समणे विहरावेइ । [गति-अर्थ]
सावगो तत्ताइं जाणेइ	–	गुरू सावगं तत्ताइं जाणावइ । [ज्ञानार्थ]
पुत्तो आहरेइ	–	पिआ पुत्तं आहारेइ । [भोजनार्थ]
वच्छो जिणपडिमं देक्खइ	–	जणओ वच्छं जिणपडिमं देक्खविइ । [देक्ख-पास धातु]

अन्य प्रक्रिया

12. संस्कृत में इच्छादर्शक आदि अन्य प्रक्रियाएँ हैं वैसी प्राकृत में नहीं हैं, लेकिन कुछ प्रक्रिया के रूप आर्ष प्राकृत में दिखाई देते हैं । वे पूर्वोक्त वर्ण विकार के नियमानुसार परिवर्तन होकर सिद्ध होते हैं ।
उदा.

	संस्कृत	प्राकृत	हिन्दी अनुवाद	कृदन्त
सन्नन्त (इच्छादर्शक)	जुगुप्सते	जुगुच्छइ, जुउच्छइ	निन्दा करने की इच्छा करता है	जुगुच्छिअ-भूत कृ. जुगुच्छमाण-वर्त. कृ.
	पिपासति	पिवासइ	पीने की इच्छा करता है ।	पिवासिअ-भूत कृ.
	बुभुक्षति	बुहुक्खइ	खाने की इच्छा करता है ।	बुहुक्खिअ-भूत कृ.
	लिप्सति	लिच्छइ	प्राप्त करने की इच्छा करता है ।	
	शुश्रूषते	सुस्सूसइ	सेवा करता है, सुनने की इच्छा करता है ।	सुस्सूसंत, सुस्सूसमाण } वर्त. कृ.

	चिकित्सति	चिइच्छइ	चिकित्सा (औषध) करता है।	
	तितिक्षते	तितिक्खइ	सहन करता है।	तितिक्खमाण, तिइक्खमाण } वर्त. कृ.
यङन्त	लालप्यते	लालप्पइ	बकवास करता है।	लालप्पमाण वर्त. कृ.
	चङ्क्रम्यते	चंकम्मइ	बहुत चलता है।	चंकम्मंत } वर्त. कृ., चंकम्ममाण } वर्त. कृ.
यङ्लुगन्त	चङ्क्रमीति	चंकमइ	बार-बार चलता है।	चंकमंत, चंकममाण } वर्त. कृ.; चंकमिउं - हे. कृ.; चंकमियव्व - वि. कृ.; चंकमिअ - भूत कृ.
नामधातु	दमदमायते	दमदमाइ, दमदमाअइ	आडम्बर करता है।	
	गुरुकायते	गुरुआइ, गुरुआअइ	गुरु के समान आचरण करता है।	
	लोहितायते	लोहिआइ, लोहिआअइ	लाल होता है।	
	अमरायते	अमराइ, अमराअइ	अमर के समान आचरण करता है।	

13. स्याद्-भव्य-चैत्य, चौर्य और उनके जैसे शब्दों में संयुक्त **'य'** व्यंजन के पूर्व **इ** रखी जाती है।

उदा. **सिया** (स्याद्) **चेइअं** (चैत्यम्) **थेरिअं** (स्थैर्यम्)
सियावाओ (स्याद्वादः) **चोरिअं** (चौर्यम्) **वीरिअं** (वीर्यम्)
भविओ (भव्यः)

शब्दार्थ (पुंलिंग)

कुमरवाल, **कुमारवाल** } (कुमारपाल) कुमारपाल राजा
तवस्सि (तपस्विन्) तपस्वी
नट्टअ (नर्तक) नट
पयत्थ (पदार्थ) पदार्थ, वस्तु, पद का अर्थ
मउड (मुगुट) मुगट
संपइनरिंद (सम्प्रतिनरेन्द्र) संप्रतिराजा
समणोवासय (श्रमणोपासक) श्रावक
सब्भाव (सद्भाव) अच्छा भाव, सत्ता, विद्यमान
सिद्धराय (सिद्धराज) राजा का नाम, सिद्धराज

नपुंसकलिंग

कवड (कपट) कपट, माया
कट्ठ (कष्ट) दु:ख, पीड़ा
केवल (केवल) केवलज्ञान
खलिअ (स्खलित) अपराध, भूल
गिह (गृह) घर
गेह (गेह) घर, मकान
चोरिअ (चौर्य) चोरी
जलोयर (जलोदर) जलोदर
जावज्जीव / **जाजीव** (यावज्जीव) जीवनपर्यंत
तिमिर (तिमिर) आँख का रोग, अज्ञान, अन्धकार
पइदिण (प्रतिदिन), प्रतिदिन, रोज
पास (पार्श्व) समीप, पास में, निकट, बाजू में
पावकम्म (पापकर्म) पापकर्म
बंधण (बन्धन) बंधन
सरूव (स्वरूप) स्वरूप
सरणत्त (शरणत्व) आश्रयपना
सिद्धहेम (सिद्धहैम) व्याकरण का नाम

स्त्रीलिंग

आराहणा (आराधना) उपासना, सेवना
कन्नगा (कन्यका) कन्या
गइ (गति) आधार, देवादि चार गति
पइट्ठा (प्रतिष्ठा) प्रतिष्ठा, कीर्ति, आदर

पुंलिंग + नपुंसकलिंग

खसर (दे. कसर) रोगविशेष, खाज, खुजली
देव्व-व / **दइव्व-व** (दैव) दैव, भाग्य, नसीब,
रयण (रत्न) रत्न
वेडुज्ज / **वेडुरिअ** / **वेरुलिअ** (वैडूर्य) वैडूर्यरत्न
सूल (शूल) शूल, शूल का रोग

विशेषण

अण्णमण्ण / **अण्णण्ण** / **अण्णुण्ण** / **अण्णोण्ण** (अन्योन्य) परस्पर
अणज्ज / **अणारिय** (अनार्य) अनार्य, आर्य नहीं है वह
कणिट्ठ (कनिष्ठ) लघुभ्राता, लघु, सबसे छोटा
कट्ठ (कष्ट) दु:खकारी, दु:ख
खलिअ (स्खलित) गिरा हुआ, भूला हुआ
जोग्ग (योग्य) योग्य, लायक
जुत्त (युक्त) उचित, योग्य, मिला हुआ
नव (नवन् द्वि. बहुव) नौ संख्या
नव (नव) नया

भविअ (भव्य, योग्य जीव) **भव्व** **मूग** (मूक) गूंगा **मूअ** **वियंभिय** (विजृम्भित) खिला हुआ, विकसित	**सइंदिय** (स-इन्द्रक) इन्द्रियसहित **सयल** (सकल) पूर्ण, सब **सप्पाण** (सप्राण) प्राणसहित **सासय** (शाश्वत) नित्य, अविनश्वर

सामासिक शब्द

जीवाजीवाइ (जीवाजीवादि) जीव-अजीव आदि नौ पदार्थ **दूसमसमय** } (दुःषमसमय) दुःषमकाल **दुस्समसमय** } **धणहरण** (धनहरण) धन का हरण करना **पाणिगण** (प्राणिगण) जीवों का समुदाय	**पाययकव्व** (प्राकृतकाव्य) प्राकृतकाव्य **मणवल्लह** (मनोवल्लभ) मन को प्रिय **मरणभय** (मरणभय) मृत्यु का भय **वसुदेवपुत्त** (वसुदेवपुत्र) वसुदेव का पुत्र **सकुडुंबय** (सकुटुम्बक) कुटुम्बसहित **सव्वायर** (सर्वादर) संपूर्ण आदरसहित

अव्यय

अहो (अहो) शोक, आश्चर्य, प्रशंसा, आमन्त्रणादि अर्थ में ◆ **अलाहि** } (दे. अलम्) निवारण, **अलं** } निषेध, पूर्ण, बस	**पुणरुत्तं** (पुनरुक्तम् दे.) बारबार **सयं** (स्वयम्) स्वयं, आप, खुद **सव्वहा** (सर्वथा) सभी प्रकार से **हंतूण** (हत्वा) हत्या करके (संबं-भूत. कृ.)

धातु

अणु + सास् (अनु + शास्) शिक्षा देना, उपदेश देना, आज्ञा करना **अप्प्** } (अर्पय्) अर्पण करना, **X पणाम** } भेंट देना **उम्मूल** (उद् + मूल) मूल से उखेड़ना **X उल्लाल** } (उद् + नामय्) ऊँचा **X उन्नाम्** } करना, ऊपर घुमाना **X उन्नाव** }	**X जव्** } (यापय्) बिताना, शरीर का **X जाव्** } पालन करना **जम्प्** (कथ्-जल्प्) बोलना, कहना **X टव** (स्थापय) स्थापन करना **X ढक्क्** } (छादय्) ढकना, आच्छादन **छाय्** } करना

◆ इस अव्यय के योग में तीसरी विभक्ति रखी जाती है।

X दाव
X दंस्
X दक्खव
दरिस् } (दर्शय्) दिखाना, बताना

X दूम् (दू-दावय्) दुःख देना, सन्ताप कराना

X नासव
X पलाव
नास् } (नाशय्) नाश करना भगाना

अब्भस् (अभि + अस्) अभ्यास करना, सीखना

अभिनिक्खम् (अभि + निष्क्रम्) संयम के लिए घर से निकलना

उग्घाड (उद् + घटय्) खोलना

निम्माण्
निम्मव्
निम्म् } (निर् + मा) बनाना, रचना

X निस्सार
X नीसार } (निर् + सारय्) बाहर निकलना

पज्जुवास् (परि + उप + आस्) सेवा, भक्ति करनी

X पट्ठव
X पट्ठाव } (प्र + स्थापय्) भेजना, प्रस्थान करना, प्रारम्भ करना

X पत्तिआव (प्रति + आयय्) विश्वास कराना

X प्रभाव (प्र + भावय्) प्रभावना करनी

परिचिंत् (परि + चिन्तय्) चिन्तन करना, विचार करना

X पव्वाव (प्र + व्राजय्) दीक्षा दिलाना

पसम् (प्र + शमय्) शान्ति करनी

फेड (स्फेटय्) विनाश करना

बहुमाण (बहुमानय्) सम्मान करना, आदर करना

भुंज् (भुज्) भोजन करना.

रोमन्थ
वग्गोल } (रोमन्थय्) पगुराना, चबाई हुई वस्तु को पुनः चबाना, जुगाली करना

विणास्
वेढ
परिआल } (वि + नाशय्) विनाश करना (वेष्ट्) लपेटना

सिह (स्पृह) चाहना, स्पृहा करना

सुह (सुखयू) सुखी करना

X इस चिहनवाले धातुओं का प्रेरक में ही उपयोग होता है ।

हिन्दी में अनुवाद करें

1. पावकम्मं नेव कुज्जा न कारवेज्जा ।
2. पाइयकव्वं लोए कस्स हिययं न सुहावेइ ।
3. बलवंता पंडिआ य जे के वि नरा संति ते वि महिलाए अंगुलीहिं नच्चाविज्जन्ति ।
4. अहं वेज्जोम्हि फेडेमि सीसस्स-वेयणं, सुणावेमि बहिरं, अवणोमि तिमिरं, पणासेमि खसरं, उम्मूलेमि वाहिं, पसमेमि सूलं, नासेमि जलोयरं च ।

5. साहूणं दंसणं पि हि नियमा दुरियं पणासेइ ।
6. रण्णा सुवण्णगारे वाहराविऊण अप्पणो मउडम्मि वइराइं वेडुज्जाइं रयणाणि य रयावीअईअ ।
7. संपइनरिंदेण सयलाए पिच्छीए जिणेसराणं चेइआइं कराविआइं ।
8. *तवस्सी भिक्खू ण छिंदे, ण छिंदावए, ण पए, ण पयावए ।*
9. समणोवासगो पइड्ठाए महोच्छवे सव्वे साहम्मिए भुंजावेईअ ।
10. जइ पिआ पुत्ते सम्मं पढावंतो ता वुड्ढत्तणे सो किं एवंविहं दुहं लहेन्तो ?
11. नरिंदेण तत्थ गिरिंमि चेइअं निम्मवियं ।
12. खमियव्वं खमावियव्वं, उवसमियव्वं उवसामियव्वं, जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा, जो न उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा, तओ अप्पणा चेव उवसमियव्वं ।
13. एरिसा कण्णगा परस्स दाऊण अप्पणो गेहाओ किं निस्सारिज्जइ ? सव्वहा न जुत्तमेयं ।
14. अहो कट्ठं कट्ठं वसुदेवपुत्तो होऊण सयलजणाणं मणवल्लहं कणिट्ठं भायरं विणासेहामि ।
15. हेमचंदसूरिणो पासे देवाणं सरूवं मुणिऊण हं सव्वत्थ वि तित्थयराणं मंदिराइं कराविस्सामि त्ति पइण्णं कुमारवालनरिंदो कासी ।
16. सो पइदिणं अब्भसंतो जिणधम्मं, पज्जुवासंतो मुणिजणं, परिचिन्तन्तो जीवाजीवाइणो नव पयत्थे, रक्खन्तो रक्खाविंतो य पाणिगणं, बहुमाणन्तो साहम्मिए जणे, सव्वायरेण पभावंतो जिणसासणं कालं गमेइ ।
17. एसो रज्जस्स जोग्गो ता झत्ति रज्जे ठविज्जउ, अलाहि निग्गुणेहिँ अन्नेहिँ ।
18. गिहं जहा वि न जाणइ तहा पवेसेमि नीसारेमि य ।
19. जो सावज्जे पसत्तो सयंपि अतरंतो कहं तारए अन्न ?
20. गुरुणा पुणरुत्तं अणुसासिओ वि न कुप्पेज्जा ।
21. एक्कस्स चेव दुक्खं, मारिज्जंतस्स होइ खणमेक्कं ।
जावज्जीवं सकुडुंबयस्स, पुरिसस्स धणहरणे ॥1॥
22. दूसमसमए वि हु हेमसूरिणो, निसुणिऊण वयणाइं ।
सव्वजणो जीवदयं, कराविओ कुमरवालेण ॥2॥

23. रोवन्ति रुवावन्ति य, अलियं जंपन्ति पत्तियावेन्ति ।
कवडेण य खंति विसं, मरन्ति न य जंति सब्भावं ॥3॥

24. मरणभयम्मि उवगए, देवा वि सइंदया न तारेंति ।
धम्मो ताणं सरणं, गइत्ति चिंतेहि सरणत्तं ॥4॥

25. हन्तूण परप्पाणे, अप्पाणं जो करेइ सप्पाणं ।
अप्पाणं दिवसाणं, कए स णासेइ अप्पाणं ॥5॥

प्राकृत में अनुवाद करें

1. पिता ने उपाध्याय के पास पुत्रों को तत्त्वों का ज्ञान ग्रहण करवाया । **(गिण्ह्)**
2. सिद्धराज ने हेमचन्द्रसूरिजी के पास व्याकरण रचवाया । **(रय्)**, इसलिए 'सिद्धहैम' इस प्रकार उसका नाम स्थापित करवाया **(ठव्)** ।
3. अच्छे शिष्य गुरुओं को अपनी भूलें सुनाते हैं **(सुण्)** और सुनाकर क्षमा मांगते हैं । **(खम्)**
4. जो पुस्तकों का विनाश करते हैं **(वि + नास्)**, वे परलोक में गूंगे, अन्धे और बहरे होते हैं ।
5. आचार्य शिष्यों को रात्रि के अन्तिम प्रहर में उठाकर **(उट्ठ)** हमेशा स्वाध्याय करवाते हैं ।
6. नट ने राजा और परिषद् के लोगों को भरत राजा का नाटक दिखाया **(दाव-दक्ख)** और यह दिखलाते हुए नट ने केवलज्ञान प्राप्त किया ।
7. पिता पुत्रों को विद्वान् गुरु के पास शिक्षा दिलाते हैं । **(अणु + सास्)**
8. राजा के बुद्धिशाली मन्त्री ने अपनी बुद्धि से नगर तरफ आते हुए शत्रुओं का नाश करवाया । **(नासव्)**
9. राजा ने उपाध्याय को बुलाकर **(बोल्ल्)** कहा कि तुम राजपुत्रों को नीतिशास्त्र और व्याकरणशास्त्र पढ़ाओ ।
10. राम ने उस समय उसको जहर खिलाया होता **(भक्ख्)** तो वह जरूर मरता ।
11. माता को छोटे बालकों को नहीं डराना चाहिए ।
12. तीर्थंकर भव्य जीवों को संसार के बन्धन में से मुक्त करके **(मुय्)** शाश्वत सुख दिलाते हैं । **(अप्प्)**

13. जिनके द्वारा चोरी की गई उनको राजा ने सजा दिलवाई । **(दंड)**

14. कुमार ने घर से निकलकर **(अभिनिक्खम)** सब का त्याग करके, बगीचे में आचार्य के पास संयम ग्रहण किया और बहुत कुमारों को भी ग्रहण करवाया । **(गिण्ह)**

15. संयम में रहे साधु भगवन्त सुखपूर्वक दिन बिताते हैं । **(जाव)**

16. जो भाइयों और मित्रों को परस्पर लड़ाता है **(जुज्झ)** और वक्त पर मनुष्य के पास अपना मस्तक भी कटवाता है **(छिंद)**, वह अदृष्ट ही है ।

17. प्रसन्न रानी ने चोर को अपने मकान में ले जाकर सुन्दर भोजन करवाया, उसके बाद वस्त्र और आभूषण देकर छुट्टी दी ।

18. ज्ञातपुत्र समवसरण में बैठकर मनुष्यों और देवों को जन्म और मरण का कारण समझाते हैं । **(जाण्-बोह)**

19. सज्जन पुरुष कहते हैं कि पापकर्म जीवों को हमेशा संसारचक्र में घुमाते हैं । **(भमाड)**

20. सभी धर्मों का त्याग करके एक वीतराग देव की तू सेवा कर, वही सभी पापों से तुझे छुड़ायेगा । **(मुय)**

पाठ - 23

समास

- भिन्न-भिन्न अर्थवाले शब्द इकट्ठे होकर एक अर्थ को बतानेवाला जो पद बनता है उसे समास कहते हैं ।
- समास से भाषा के प्रयोग में शब्दों की अल्पता होती है तथा लिखने और बोलने में सरलता और सुन्दरता भी लगती है ।
- संस्कृत की तरह प्राकृत में भी द्वन्द्व, तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि, द्विगु, अव्ययीभाव और एकशेष ये सात प्रकार के समास आते हैं ।

[1]दंदे य [2]बहुव्वीही, [3]कम्मधारए [4]दिगुयए चेव ।
[5]तप्पुरिसे [6]अव्वईभावे, [7]एगसेसे य सत्तमे ।।

1. संयुक्त व्यंजन में एक का लोप होने पर शेष व्यंजन तथा संयुक्त व्यंजन के स्थान पर हुआ आदेशभूत व्यंजन जो समास के अन्दर हो तो विकल्प से द्वित्व होता है ।

उदा. **विसप्पओगो** - विसपओगो (विषप्रयोगः),
कुसुमप्पयरो - कुसुमपयरो (कुसुमप्रकरः),
धणक्खओ - धणखओ (धनक्षयः)

2. प्राकृत में दो पदों की सन्धि विकल्प से होती है । (पा. 2 नि. 6 देखो)

उदा. **जिण + अहिवो** = जिणाहिवो, जिणअहिवो (जिनाधिपः)
जिण + ईसरो = जिणेसरो, जिणीसरो (जिनेश्वरः)
कवि + ईसरो = कवीसरो, कविईसरो (कवीश्वरः)
साहु + उवस्सओ = साहुवस्सओ, साहूउवस्सओ (साधूपाश्रयः)

अपवाद :- इ और **उ** वर्ण के बाद विजातीय स्वर हो तो सन्धि नहीं होती है तथा **ए** और **ओ** के बाद कोई भी स्वर हो तो सन्धि नहीं होती है ।

उदा. **वंदामि + अज्जवइरं** = वंदामि अज्जवइरं (वन्दे आर्यव्रजम्)
संति + उवाओ = संतिउवाओ (शान्त्युपायः)
दणु + इंदो = दणुइंदो (दनुजेन्द्रः)
संजमे + अजियं = संजमे अजियं (संयमेऽजितम्)
देवो + असुरो य = देवो असुरो य (देवोऽसुरश्च)

3. समास में स्वर का ह्रस्व और दीर्घ विधान अर्थात् ह्रस्व स्वर का दीर्घ स्वर और दीर्घ स्वर का ह्रस्व स्वर प्रयोगानुसार होता है ।

उदा. ह्रस्व का दीर्घ -

सत्तावीसा (सप्तविंशतिः)	**अंतावेई** (अन्तर्वेदिः)
पईहरं } (पतिगृहम्) **पइहरं**	**वेलूवणं** } (वेणुवनम्) **वेलुवणं**

दीर्घ का ह्रस्व -

जउँणअडं-जउँणाअडं (यमुनातटम्)	**लच्छीफलं**-लच्छिफलं (लक्ष्मीफलम्)
गयहत्थो-गयाहत्थो (गदाहस्तः)	**नइसोत्तं**-नईसोत्तं (नदी श्रोतः)
गोरिहरं-गोरीहरं (गौरीगृहम्)	**वहुमुहं**-वहूमुहं (वधूमुखम्)
सिरीसरिसं, सिरिसरीसं (श्रीसदृशम्)	**मायपिअरा** (मातापितरौ)

1. दंद (द्वन्द्व) समास

4. एक मूल नाम का, अन्य एक या अनेक नामों के साथ समास होता है अथवा अनेक नाम एक-एक के साथ जोड़कर बड़ा समास भी किया जा सकता है, वह द्वन्द्व समास कहलाता है। (इस समास में सभी नाम मुख्य होते हैं अर्थात् क्रिया के करनेवाले होते हैं।)
5. यह समास करने के लिए **अ, य** और कुछ स्थानों में **च** अव्यय का प्रयोग किया जाता है।
6. द्वन्द्व समास बहुवचन में ही होता है और अन्तिम नाम की जाति पूरे समास को लगती है।

   उदा. अजिअसंतिणो (अजितशान्ती) = अजिओ अ संती अ = अजितनाथ और शान्तिनाथ।

   उसहवीरा (ऋषभवीरौ) = उसहो अ वीरो अ = ऋषभदेव और वीरजिनेश्वर

   देवदाणवगंधव्वा (देवदानवगन्धर्वाः) = देवा य दाणवा य गन्धव्वा य = देव, दानव और गंधर्व।

   वानरमोरहंसा (वानरमयूरहंसाः) = वानरो अ मोरो अ हंसो अ = बन्दर, मोर और हंस।

   सावगसाविगाओ (श्रावकश्राविकेएँ) = सावगा अ साविगा अ = श्रावक और श्राविका।

   देवदेवीओ (देवदेव्यः) = देवा य देवीओ अ = देव और देवियाँ

   सासूवहूओ (श्वश्रूवध्वौ) = सासू अ वहू अ = सास और बहू

भक्खाभक्खाणि (भक्ष्याभक्ष्ये) = भक्खं च अभक्खं च = भक्ष्य और अभक्ष्य
पत्तपुप्फफलाणि (पत्रपुष्पफलानि) = पत्तं च पुप्फं च फलं च = पत्ता, पुष्प और फल
इस प्रकार - जीवाजीवा, पासवीरा, समणसमणीओ, सत्तुमित्ताणि, निंदासलाहाओ, रूवसोहग्गजोव्वणाणि के विग्रह करना चाहिए ।

7. यह द्वन्द्व समास जब समूह बतलाता है या जब समूह का एक ही संकीर्ण विचार बतलाता है तब समाहार द्वन्द्व समास बनता है । यह समास एकवचन और प्रायः नपुंसकलिंग में होता है । ◆
उदा. असणपाणं (अशनपानम्) = असणं च पाणं च एएसिं समाहारो
तवसंजमं (तपःसंयमम्) = तवो अ संजमो अ एएसिं समाहारो
नाणदंसणचरित्तं (ज्ञानदर्शनचारित्रम्) = नाणं च दंसणं च चरित्तं च एएसिं समाहारो ।
रागदोसभयमोहं (रागदोषभयमोहम्) = रागो अ दोसो अ भयं अ मोहो अ एएसिं समाहारो ।

2. तप्पुरिस (तत्पुरुष) समास

8. प्रथमा विभक्ति को छोड़कर छह विभक्तिवाले पूर्वपदों का उत्तरपद के साथ समास होता है । इस समास में उत्तरपद प्रधान होता है ।
उदा. द्वितीया - भद्दपत्तो (भद्रप्राप्तः) = भद्दं पत्तो
सिवगओ (शिवगतः) = सिवं गओ
तृतीया - साहुवंदिओ (साधुवन्दितः) = साहूहिं वन्दिओ
जिणसरिसो (जिनसदृशः) = जिणेण सरिसो
चतुर्थी - कलससुवण्णं (कलशसुवर्णम्) = कलसाय सुवण्णं
मोक्खत्थं नाणं (मोक्षार्थं ज्ञानम्) = मोक्खाय इमं
पंचमी - दंसणभट्ठो (दर्शनभ्रष्टः) = दंसणाओ भट्ठो
अन्नाणभयं (अज्ञानभयं) = अन्नाणाओ भयं
षष्ठी - जिणेन्दो, जिणिन्दो (जिनेन्द्रः) = जिणाणं इंदो
देवत्थुइ, देवथुई (देवस्तुतिः) देवस्स थुई
विबुहाहिवो (विबुधाधिपः) = विबुहाणं अहिवो
वहुमुहं (वधूमुखम्) = वहूए मुहं

◆ इस समास का प्रयोग प्राकृत में बहुत ही अल्प दिखाई देता है ।

सप्तमी - जिणोत्तमो, जिणुत्तमो (जिनोत्तमः) = जिणेसु उत्तमो
णाणोज्जओ, णाणुज्जओ (ज्ञानोद्यतः) = णाणम्मि उज्जओ
कलाकुसलो (कलाकुशलः) = कलासु कुसलो

नञ् तत्पुरुष

9. निषेधवाचक अव्यय **'अ'** अथवा **'अण'** का नाम के साथ समास होता है ।

10. शब्द के प्रारम्भ में व्यंजन हो तो **'अ'** और स्वर हो तो **'अण'** रखा जाता है ।

उदा. अदेवो (अदेवः) = न देवो **अणवज्जं (अनवद्यम्)** = न अवज्जं
अविरई (अविरतिः) = न विरई **अणायारो (अनाचारः)** = न आयारो

3. कम्मधारय (कर्मधारय) समास

11. विशेषणादि पूर्वपद का विशेष्यादि उत्तरपद के साथ समास होता है ।

12 इस समास में अधिकतर दोनों पद समान विभक्ति में आते हैं, इसलिए यह समास समानाधिकरण ही होता है ।

उदा. विशेषण पूर्वपद - रत्तघडो (रक्तघटः) = रत्तो अ एसो घडो
सुंदरपडिमा (सुन्दरप्रतिमा) = सुन्दरा य एसा पडिमा
परमपयं (परमपदम्) = परमं च एअं पयं च
विशेषणोभयपद - रत्तसेओ आसो (रक्तश्वेतोऽश्वः) = रत्तो अ एस सेओ य
सीउण्हं जलं (शीतोष्णं जलम्) = सीअं च तं उण्हं च
विशेष्यपूर्वपद - वीरजिणिंदो (वीरजिनेन्द्रः) वीरो अ एसो जिणिंदो
उपमानपूर्वपद - चंदाणणं (चन्द्राननम्) = चंदो इव आणणं
उपमानोत्तरपद - मुहचंदो (मुखचन्द्रः) = मुहं चंदो व्व
जिणचंदो (जिनचन्द्रः) = जिणो चंदु व्व
अवधारणपूर्वपद - अन्नाणतिमिरं (अज्ञानतिमिरम्) = अन्नाणं चेअ तिमिरं
नाणधणं (ज्ञानधनम्) = नाणं चेअ धणं
पयपउमं (पदपद्मम्) = पयमेव पउमं

4. दिगु (द्विगु) समास

13. कर्मधारय समास का प्रथम अवयव संख्यादर्शक हो तो द्विगु समास

बनता है और वह समूहसूचक है इसलिए एकवचन में और नपुंसकलिंग में होता है ।

14. इस समास के अन्त में `अ' हो तो कुछ प्रयोग में दीर्घ `ई' होती है और उसके रूप दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिंग नाम के समान बनते हैं ।

उदा. तिलोअं, तिलोई (त्रिलोकम्, त्रिलोकी) = तिण्हं लोआणं समाहारोत्ति

नवतत्तं (नवतत्त्वम्) = नवण्हं तत्ताणं समाहारोत्ति

चउकसायं, चउक्कसायं (चतुःकषायम्) = चउण्हं कसायाणं समाहारोत्ति

15. कुछ स्थानों में समाहार द्विगु समास पुंलिंग में भी होता है ।

उदा. तिविगप्पो (त्रिविकल्पम्) = तिण्हं विगप्पाणं समाहारोत्ति

5. बहुव्वीही (बहुव्रीहि) समास

16. (1) जिन पदों का समास किया हो उनसे अन्य पद की प्रधानता इस समास में होती है, इससे यह सामासिक पद अन्य नाम का विशेषण बनता है तथा विभक्ति, वचन और लिंग विशेष्य के अनुसार होते हैं ।

(2) यह समास जो स्त्रीलिंग का विशेषण हो तो अन्त्य **अ** का **आ** अथवा **ई** प्रयोगानुसार होता है ।

उदा. कमलाणणा नारी (कमलानना नारी)

चंदमुही कन्ना (चन्द्रमुखी कन्या)

17. इस समास में अधिकतर पूर्वपद विशेषण बनता है और उत्तरपद विशेष्य बनता है । कुछ स्थानों में उपमान तथा अवधारणसूचक पद भी पूर्वपद होता है ।

विशेषण पूर्वपद - नीलकंठो मोरो (नीलकण्ठो मयूरः) = नीलो कण्ठो जस्स सो ।

उपमान पूर्वपद - चंदमुही कन्ना (चन्द्रमुखी कन्या) = चन्दो इव मुहं जाए ।

अवधारण पूर्वपद - चरणधणा साहवो (चरणधनाः साधवः) = चरणं चेअ धणं जाणं ।

18. यह समास दो अथवा दो से अधिक समानाधिकरण (समान विभक्तिवाले) पदों का बनता है । **उदा. धुअसव्वकिलेसो जिणो (धुतसर्वक्लेशो जिनः)** = धुओ सव्वो किलेसो जस्स सो ।-

19. कहीं-कहीं समान विभक्ति न हो तो भी यह समास बनता है, उसे

व्यधिकरण बहुव्रीहि कहते हैं । **उदा. चक्कहत्थो भरहो (चक्रहस्तो भरतः)** = चक्कं हत्थे जस्स सो ।

20. इस समास के विग्रह में प्रथमा विभक्ति को छोड़कर सभी विभक्तियों का प्रयोग होता है ।

द्वितीया - पत्तनाणो मुणी (प्राप्तज्ञानो मुनिः) = पत्तं नाणं जं सो

तृतीया - जिअकामो थूलभद्दो (जितकामः स्थूलभद्रः) = जिओ कामो जेण सो

जिआरिगणो अजिओ (जितारिगणोऽजितः) = जिओ अरिगणो जेण सो

पंचमी - नट्ठदंसणो मुणी (नष्टदर्शनो मुनिः) = नट्ठं दंसणं जत्तो सो

षष्ठी - सेअंबरा मुणिणो (श्वेताम्बराः मुनयः) = सेअं अंबरं जाणं ते

दिण्णवया साहवो (दत्तव्रताः साधवः) = दिण्णाइं वयाइं जेसिं ते

सप्तमी - वीरनरो गामो (वीरनरो ग्रामः) = वीरा नरा जम्मि सो

कुद्धसीहा गुहा (क्रुद्धसिंहा गुफा) = कुद्धो सीहो जाए सा

21. निषेधार्थक अव्यय **अ** या **अण** का, **वि-निर्** आदि उपसर्ग का और **स** या **सह** अव्यय का नाम के साथ समास के विशेषण के रूप में प्रयोग हो तो भी बहुव्रीहि समास होता है ।

उदा. अव्यय अ = अपुत्तो (अपुत्रः) = नत्थि पुत्तो जस्स सो

अणाहो (अनाथः) = नत्थि नाहो जस्स सो ।

अण् -अणुज्जमो पुरिसो (अनुद्यमः पुरुषः) = नत्थि उज्जमो जस्स सो

अणवज्जो मुणी (अनवद्यो मुनिः) = नत्थि अवज्जं जस्स सो

उपसर्ग वि - विरूवो जणो (विरूपो जनः) = विगयं रूवं जत्तो सो

विरसं भोयणं (विरसं भोजनम्) = विगओ रसो जत्तो तं

निर् - निद्दयो जणो (निर्दयो जनः) = निग्गआ दया जस्स सो

निराहारा कन्ना (निराहारा कन्या) = निग्गओ आहारो जीए सा

अव्यय स - ससीसो आइरिओ विहरेइ (सशिष्य आचार्यो विहरति) =

सह - सीसेहिं सह आइरिओ विहरेइ सो

सपुत्तो पिआ गच्छइ (सपुत्रः पिता गच्छति) = पुत्तेहिं सह पिआ गच्छइ स.

अव्वईभाव (अव्ययीभाव) समास

22. नाम के साथ अव्यय जोड़ने से अव्ययीभाव समास बनता है, यह समास नपुंसकलिंग एकवचन में होता है और अन्त में दीर्घस्वर हो तो

ह्रस्वस्वर होता है । **उदा.**

उव - उवसिद्धगिरिं (उपसिद्धगिरि) = सिद्धगिरिणो समीवं = सिद्धगिरि के पास

अणु - अणुजिणं (अनुजिनम्) = जिणस्स पच्छा = जिन के पीछे

जह - जहसत्तिं (यथाशक्ति) = सत्तिं अणइक्कमिअ = शक्ति अनुसार

जहविहिं (यथाविधि) = विहिं अणइक्कमिअ = विधि अनुसार

अहि (अधि) - अज्झप्पं (अध्यात्मम्) = अप्पम्मि इइ (आत्मनि इति) आत्मा के बारे में

पइ - पइनयरं (प्रतिनगरम्) = नयरं नयरं ति = प्रत्येक नगर में

पइदिणं (प्रतिदिनम्) = दिणं दिणं ति = प्रत्येक दिन, रोज

पइघरं (प्रतिगृहम्) = घरे घरे त्ति = प्रत्येक घर में

7. एकसेस (एकशेष) समास स्वरूप सम्बन्धी

23. समान रूपवाले पदों का समास करते समय एक पद रहता (बचता) है और अन्यपदों का लोप होता है, वह एकशेष समास कहलाता है ।

उदा. जिणा (जिनाः) = जिणो अ जिणो अ जिणो अ त्ति

नेत्ताइं (नेत्रे) = नेत्तं च नेत्तं च त्ति

विरूप सम्बन्धी

पिअरा (पितरौ) - माआ य पिआ य त्ति

ससुरा (श्वशुरौ) - सासू अ ससुरो अ त्ति

इस प्रकार संक्षेप में यहाँ समासों के नियम बोध हेतु दिये हैं । वास्तव में संस्कृत के नियमानुसार ही प्राकृत में भी समास बनते हैं । श्रीमद्हेमचन्द्रसूरीश्वरजी ने भी अपने आठवें अध्याय में (8-1-1) सूत्र में समास प्रकरण के लिए संस्कृत के समान की ही सिफारिश की है इसलिए विद्यार्थियों को संस्कृत के नियम ध्यान में रखकर ही समास करने चाहिए ।

शब्दार्थ (पुंलिंग)

अरुण (अरुण) सूर्य का सारथी, सूर्य, संध्याराग

अववाय (अपवाद) निन्दा, अपवाद

आरंभ (आरम्भ) आरंभ, जीववध

एरावण (ऐरावण) इन्द्र का हाथी

ओह (ओघ) समूह

किंनर (किन्नर) देवविशेष, व्यंतर देव की जाति

गण (गण) समुदाय
गय (गज) हाथी
चक्कवाय (चक्रवाक) चक्रवाक, पक्षी विशेष
चलण (चरण) पद, पाद
जोग (योग) व्यापार, योग
तिअस, (त्रिदश) देव
तिलअ / **तिलग** (तिलक) तिलक
दाणव (दानव) असुर, दैत्य
निवास (निवास) स्थान, वास
पडिवक्ख (प्रतिपक्ष) शत्रु
बंधव (बांधव) बन्धु, मित्र
रवि (रवि) सूर्य
ववसाय (व्यवसाय) व्यापार, कार्य, उद्यम
विवेअ / **विवेग** (विवेक) विवेक, सत्यासत्य का निर्णय
संगम (सङ्गम) मिलना, प्राप्ति
सयण (स्वजन) स्वजन, कुटुम्बी
संसार (संसार) संसार, चार गतिरूप
सावय (श्वापद) शिकारी पशु, हिंसक जानवर
सिणेह (स्नेह) स्नेह, प्रेम
सोम (सोम) चन्द्र

नपुंसकलिंग

अंजण (अञ्जन) अंजन, काजल, आँख में अंजन करना, सुरमा डालना
अगार (अगार) घर
असण (अशन) भोजन, खाना
इस्सरिअ / **ईसरिअ** (ऐश्वर्य) ऐश्वर्य, वैभव, प्रभुता
करण (करण) करना, इन्द्रिय
तवोवण (तपोवन) आश्रम
नियाण (निदान) निदान, कारण, हेतु
नेउर / **निउर** / **नूउर** (नूपुर) पैर का आभूषण विशेष, नेपुर, घुँघरु
पंजर (पञ्जर) पिंजरा
बल (बल) शक्ति, सामर्थ्य
सत्त (सत्त्व) बल, पराक्रम

पुंलिंग + नपुंसकलिंग

कलत्त (कलत्र) पत्नी
कुल (कुल) वंश
रूव (रूप) देहकान्ति, सौन्दर्य, आकृति
वय (व्रत) व्रत, नियम

स्त्रीलिंग

अग्गला (अर्गला) बन्धन, बेड़ी
अडवि / **अडवी** (अटवी) जंगल, वन, अरण्य
कुगइ (कुगति) खराब गति
निव्वुइ (निर्वृति) मोक्ष, चित्त की स्वस्थता, शांति

पच्चोणी (दे.) सम्मुख, सामने
परिसा (परिषद्) सभा, पर्षदा
अब्भत्थणा (अभ्यर्थना) प्रार्थना, अर्ज करना
अरइ (अरति) अप्रीति, सुख का अभाव
बाला (बाला) कुमारी, छोटी लड़की, बालिका
महिला (महिला) स्त्री, नारी
वाया (वाच्) वाणी, वचन
वाणी (वाणी) वाणी, वचन, वाग्देवता
वुट्ठि (वृष्टि) वृष्टि, वर्षा

विशेषण

अणंत (अनन्त) अनन्त, अपरिमित
अमयभूअ (अमृतभूत) अमृत के समान, अमृतरूप बना हुआ
आउल (आकुल) व्याकुल, व्याप्त, दु:खित
आगय (आगत) आया हुआ
आयत्त (आयत्त) आधीन, स्वाधीन
उचिअ (उचित) योग्य, लायक
गंभीर (गम्भीर) गम्भीर, गहरा
गरिट्ठ (गरिष्ठ) सबसे बड़ा, बड़ा
दुक्कर (दुष्कर) मुश्किल, कष्टसाध्य
देसय (देशक) उपदेशक, दिखानेवाले
नव (नव) नया
पढम (प्रथम) पहला, आद्य
बंभयारि (ब्रह्मचारिन्) ब्रह्मचर्य का पालन करनेवाला
बलिट्ठो (बलिष्ठ) सबसे बलवान
भावि (भाविन्) भावी, भविष्य में होनेवाला
मत्त (मत्त) उन्मत्त, मदसहित
ललिय (ललित) सुन्दर, मनोहर
लुद्ध (लुब्ध) लोलुप, आसक्त
विरल (विरल) अल्प, दुर्लभ, थोड़ा
विहुर (विधुर) दु:खी, व्याकुल, विह्वल
विहूण / **विहीण** (विहीन) वर्जित, रहित
समावडिअ (समापतित) सामने आकर गिरा हुआ, सामने आया हुआ
सामन्न (सामान्य) साधारण, सामान्य

अव्यय

अह (अथ) अनंतर, मंगल, प्रश्न, अधिकार, आरम्भ, समुच्चय, अथवा
खलु (खलु) निश्चय, अवधारण अर्थ में
उट्ठाय संबं-भूत कृ. (उत्थाय) उठकर

धातु

अब्भुद्धर (अभ्युद् + धर्) उद्धार करना
अवे (अप + इ) दूर होना, चले जाना
उवे (उप + इ) पास में जाना
चक्कम्म् (भ्रम्) भ्रमण करना, घूमना

जव् (जप्) जपना, जाप करना	**पूर्** (पूरय्) भरना, पूर्ण करना
जोय् (दृश्) देखना	**भाव्** (भावय्) वासित करना, चिन्तन करना
निव्विज्ज् (निर् + विद् - विद्य) निर्वेद पाना, विरक्त होना	**विसीय्** (वि + सीद्) खेद करना
पत्थ् / **पच्छ्** (प्रार्थय्) प्रार्थना करना	**सव्** (शप्) शाप देना
परिव्वय् (परि + व्रज्) दीक्षा लेना	**सिढिल** (शिथिलय्) शिथिल करना
	सुव् / **सोव्** (स्वप्) सोना, सो जाना

हिन्दी में अनुवाद करें

1. साहवो मणसा वि न पत्थन्ति बहुजीवाउलं जलारंभं ।
2. खंतिसूरा अरहंता, तवसूरा अणगारा, दाणसूरे वेसमणे, जुद्धसूरे वासुदेवे ।
3. ते सत्तिमंता पुरिसा, जे अब्भत्थणावच्छला समावडियकज्जा न गणेइरे आयइं, अब्भुद्धरेन्ति दीणयं, पूरेन्ति परमणोरहे रक्खन्ति सरणागयं ।
4. जे निद्दुज्जणाइं तवोवणाइं सेवन्ति ते जणा सुधन्ना ।
5. अहो णु खलु नत्थि दुक्करं सिणेहस्स, सिणेहो नाम मूलं सव्वदुक्खाणं, निवासो अविवेयस्स, अग्गला निव्वुईए, बंधवो कुगइवासस्स, पडिवक्खो कुसलजोगाणं, देसओ संसाराडवीए, वच्छलो असच्चववसायस्स, एएण अभिभूआ पाणिणो न गणेन्ति आयइं, न जोयन्ति कालोइअं, न सेवन्ति धम्मं, न पेच्छन्ति परमत्थं, महालोहपंजरगया केसरिणोविय समत्था विसीयन्ति त्ति ॥
6. उत्तमपुरिसा न सोवंति संझाए ।
7. नेव वसणवसगएणं बुद्धिमया विसाओ कायव्वो ।
8. अम्हे पच्चोणिं गन्तूण पिऊणं चलणेसु पडिआ ।
9. अह निण्णासिअतिमिरो, विओगविहुराण चक्कवायाण ।
संगमकरणेक्करसो, वियंभिओ अरुणकिरणोहो ॥1॥
10. पुत्ता ! तुम्हे वि संजमे नियमे च उज्जमं करिज्जाह अमयभूएण य जिणवयणेण अप्पाणं भाविज्जाह ।
11. देवदानवगन्धव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा ।
बम्हयारिं नमंसन्ति, दुक्करं जे करेइ तं ॥2॥

12. विरला जाणन्ति गुणे, विरला जाणन्ति ललियकव्वाइं ।
सामन्नधणा विरला, परदुक्खे दुक्खिआ विरला ॥3॥

13. गलइ बलं उच्छाहो, अवेइ सिढिलेइ सयलवावारे ।
नासइ सत्तं अरई, विवड्ढए असणरहिअस्स ॥4॥

14. सोमगुणेहिं पावइ न तं * नवसरयससी,
तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी ।
रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई,
सारगुणेहिं पावइ न तं • धरणिधरवई ॥5॥

15. जस्सत्थो तस्स सुहं, जस्सत्थो पंडिओ य सो लोए ।
जस्सत्थो सो गुरुओ, अत्थविहुणो य लहुओ य ॥6॥

16. वंचइ मित्तकलत्ते, नाविक्खए मायपिअसयणे अ ।
मारेइ बंधवे वि हु, पुरिसो जो होइ धणलुद्दो ॥7॥

17. न गणन्ति कुलं न गणन्ति, पावयं पुण्णमवि य न गणन्ति ।
इस्सरिएण हि मत्ता, तहेव परलोयमिहलोयं ॥8॥

18. न गणन्ति पुव्वनेहं, न य नीइं नेय लोयअववायं ।
न य भाविआवयाओ, पुरिसा महिलाए आयत्ता ॥9॥

19. मेरु गरिट्ठो जह पव्वयाणं, एरावणो सारबलो गयाणं ।
सिंहो बलिट्ठो जह सावयाणं, तहेव सीलं पवरं वयाणं ॥10॥

20. बालत्तणंमि जणओ, जुव्वणपत्ताइ होइ भत्तारो ।
वुड्ढत्तणेण पुत्तो, सच्छंदत्तं न नारीणं ॥11॥

21. '**पसिणं**'-किं होइ रहस्स वरं, बुद्धिपसाएण को जणो जयइ ।
किं च कुणंती बाला, नेउरसद्दं पयासेह ॥12॥

उत्तरं - ◆ चक्कम्मंती

प्राकृत में अनुवाद करें

1. **राम और लक्ष्मण ने** रावण की सेना जीती और लक्ष्मण के **चक्र से कटा** रावण मरकर नरक में गया ।

---

* तं-अजितजिनं, • मेरुपर्वतः

◆ चक्कं (चक्रम्), मंती (मन्त्री), चक्कम्मंती (भ्रमन्ती)

इस पाठ में और आगे के पाठ में हिन्दी वाक्यों में बड़े अक्षर हैं वहाँ प्राकृत समास करें ।

2. सज्जन पुरुष **आपत्ति** में भी **असत्य वचन** नहीं बोलते हैं ।

3. विद्यार्थियों को प्रभात में जल्दी उठकर **मातापिता** अथवा गुरु को नमस्कार करके अपना अध्ययन करना चाहिए ।

4. **संसार के दु:खों** को देखकर वह संसार से **निर्वेद पाता है ।**

5. उस बालिका ने **हाथरूप कमल द्वारा** राजा के कपाल में तिलक किया ।

6. **किया है निदान जिन्होंने,** उनको **बोधि की प्राप्ति** कहाँ से होगी ?

7. तीर्थंकर **गम्भीर वाणी द्वारा** समवसरण में **देव-दानव और मनुष्यों की परिषद्** में देशना देते हैं जिसे सुनकर भव्यजीव **दर्शन-ज्ञान और चारित्र** ग्रहण करते हैं तथा **आहाररहित** ऐसा मोक्षपद प्राप्त करते हैं ।

8. **जिनके हाथों में पुष्प हैं** ऐसी नगर की कन्याओं ने **पुरुषों में उत्तम** ऐसे राजा पर पुष्पों की वृष्टि की ।

9. **तीनों भुवन में** सभी जीवों की अपेक्षा तीर्थंकर **अनन्तरूपवाले** होते हैं ।

10. **जिनके पास में संयमरूपी धन है** वैसे साधुओं को **परलोक का भय** नहीं है ।

11. सिद्ध भगवन्तों को **आहार-देह-आयुष्य और कर्म** नहीं हैं इसलिए ही वे **अनन्त सुखवाले** हैं ।

12. जो **विधि अनुसार** मन्त्रों की आराधना करता है वह जरूर फल पाता है ।

13. **शक्ति का उल्लंघन किये बिना** जो **अहिंसा-संयम और तपरूपी** धर्म में उद्यम करता है वह **संसाररूपी समुद्र** से तिर जाता है ।

14. **अज्ञानरूपी अन्धकार** से अन्ध जन के लिए ज्ञान ही उत्तम अंजन है ।

15. जो कुमारपाल पहले **सिद्धराज के भय** से भटकता था, उसने **श्रीहेमचन्द्रसूरिजी की मदद से भय से मुक्त** होकर राज्य प्राप्त किया ।

16. **जिनके पास बहुत धन है,** इस पर्वत पर **सुन्दर जिनालय** बनवाकर लोगों को सन्तुष्ट करके **जिन्होंने बड़ी कीर्ति प्राप्त की है,** वे ये **वस्तुपाल और तेजपाल** महामन्त्री हैं ।

पाठ - 24

सर्वनाम

10 वें पाठ में संक्षेप में सर्वनामों के रूप बताये थे । यहाँ विशेषतासहित सभी रूप बतायेंगे ।

अमु (अदस्) को छोड़कर सभी सर्वनाम अकारान्त हैं इसलिए उनके सामान्यरूप अकारान्त नामों के समान जानना चाहिए और **अमु (अदस्)** शब्द उकारान्त होने से उसके सामान्यरूप उकारान्त नामों के समान समझने चाहिए ।

1. सर्वनामों के रूप तीनों लिंग में बनते हैं ।
2. **अम्ह (अस्मद्), तुम्ह (युष्मद्)** सर्वनाम के रूप तीनों लिंग में समान बनते हैं । पुंलिंग प्रथमा बहुवचन में **'ए'** प्रत्यय ही लगता है और षष्ठी बहुवचन में **एसिं** प्रत्यय विकल्प से लगता है । (३/५८)
   उदा. सव्वे (प्रथमा बहुव.), **सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं** (षष्ठी बहुवचन)
3. **'एसिं'** प्रत्यय लगाने पर पूर्वस्वर का लोप होता है । (३/६१)
   उदा. त + एसिं = तेसिं (षष्ठी बहुवचन)
4. सप्तमी एकवचन में **स्सि, म्मि, त्थ** ये तीन प्रत्यय लगते हैं । **'एअ'** और **'इम'** को छोड़कर सभी सर्वनामों को **हिं** प्रत्यय भी लगता है । (३/५९,६०)
   उदा. एअस्सि, एअम्मि, एत्थ (सप्तमी एकवचन)
   तस्सि, तम्मि, तत्थ, तहिं (सप्तमी एकवचन)
5. **विशेष = उभ-उह** के रूप बहुवचन में बनते हैं और षष्ठी बहुवचन में **उहण्ह, उहण्हं, उभण्ह** और **उभण्हं** रूप बनते हैं । अन्यरूप समान ही हैं । **उदा. उभे, उभा** (द्वि. बहुवचन) **उहेण, उहेणं** (तृतीया एकवचन)

अकारान्त पुंलिंग सव्व (सर्व)

	एकवचन	बहुवचन
प.	सव्वो, सव्वे	सव्वे
बी.	सव्वं,	सव्वे सव्वा
त.	सव्वेण, सव्वेणं	सव्वेहिँ, सव्वेहिं, सव्वेहि
च.	सव्वाय, सव्वस्स, सव्वाए,	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
पं.	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ,
	सव्वाहि, सव्वाहिन्तो	सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो,

	सव्वा	सव्वेहि, सव्वेहिन्तो, सव्वेसुन्तो,
छ.	सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
स.	सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्थ सव्वहिं, सव्वंसि	सव्वेसु, सव्वेसुं
सं.	हे सव्व, सव्वो, सव्वा, सव्वे	सव्वे

इस प्रकार वीस, विस्स (विश्व), उह-उभ (उभ), उहय-उभय (उभय), अन्न (अन्य), अन्नयर (अन्यतर), इयर (इतर), कयर (कतर), कयम (कतम), सम (सम), पुव्व (पूर्व), अवर (अपर), दाहिण-दक्खिण (दक्षिण), उत्तर (उत्तर), सुव (स्व) आदि सर्वनामों के रूप जानने चाहिए ।

आकारान्त स्त्रीलिंग

6. आकारान्त स्त्रीलिंग सर्वनामों के रूप आकारान्त स्त्रीलिंग नाम के समान ही बनते हैं ।

   विशेष :- षष्ठी बहुवचन में **'एसिं'**, प्रत्यय भी प्रयोगानुसार लगता है और आर्ष में **'सिं'** प्रत्यय भी लगता है ।

सव्वा (सर्वा)

	एकवचन	**बहुवचन**
प.	सव्वा	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा
बी.	सव्वं	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा
त.	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वाहिँ, सव्वाहिं, सव्वाहि
च. छ.	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वेसिं, सव्वाण-णं, सव्वासिं
पं.	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिन्तो	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो
स.	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वासु, सव्वासुं
सं.	हे सव्वा	सव्वा

अकारान्त नपुंसकलिंग सव्व (सर्व)

प. बी.	सव्वं	सव्वाइं, सव्वाइँ, सव्वाणि
सं.	हे सव्व	सव्वाइं, सव्वाइँ, सव्वाणि

शेष रूप पुंलिंग वत् ।

त-ण (तद्), एअ-एत (एतद्), ज (यत्), क (किम्), इम (इदम्), अमु (अदस्), अम्ह (अस्मद्), तुम्ह (युष्मद्) शब्दों के रूप–

त-ण (तद्) पुंलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प.	स, सो, से	ते, णे
बी.	तं, णं	ते, ता, णे, णा
त.	तेण, तेणं, तिणा, णेण, णेणं, णिणा	तेहिँ, तेहिं, तेहि णेहिँ, णेहिं, णेहि
च. छ.	तास, तस्स, से, णस्स	तास, तेसिं, ताण, ताणं, सिं, णेसिं, णाण, णाणं
पं.	तो, तम्हा, तत्तो, ताओ, ताउ ताहि, ताहिन्तो, ता.	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो, तासुन्तो तेहि, तेहिन्तो, तेसुन्तो
	णत्तो, णाओ, णाउ णाहि, णाहिन्तो, णा	णत्तो, णाओ, णाउ, णाहि, णाहिन्तो, णासुन्तो णेहि, णेहिन्तो, णेसुन्तो
स.	तस्सिं, तम्मि, तत्थ, तहिं, तंसि	तेसु, तेसुं
	णस्सिं, णम्मि, णत्थ, णहिं, णंसि	णेसु, णेसुं
	* ताहे, ताला, तइआ	

ता, ◆ ती, णा, णी स्त्रीलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प.	सा	ताओ, ताउ, ता
		तीआ, तीओ, तीउ, ती

* ताहे आदि तीनों रूपों का 'उस समय' इस अर्थ में प्रयोग होता है।

◆ **ता** का **ती**, **जा** का **जी**, **का** का **की**, **एआ** का **एई**, **इमा** का **इमी** भी विकल्प से होता है। (पाठ-१६ देखो)

बी.	तं	ताओ, ताउ, ता तीआ, तीओ, तीउ, ती
त.	ताअ, ताइ, ताए तीअ, तीआ, तीइ, तीए	ताहिँ, ताहिं, ताहि तीहिँ, तीहिं, तीहि
च. छ	तिस्सा, तीसे, तीस, से, ताअ, ताइ, ताए तीअ, तीआ, तीइ, तीए	तेसिं, ताण, ताणं, सिं तास, तासिं,
पं.	ताअ, ताइ, ताए, तो, तम्हा, तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो तीअ, तीआ, तीइ, तीए, तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो, तासुन्तो, तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, तीसुन्तो
स.	ताअ, ताइ, ताए, तीअ, तीआ, तीइ, तीए	तासु, तासुं, तीसु, तीसुं

णा-णी के रूप भी इसके समान जानने चाहिए ।

नपुंसकलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प.	तं	ताइं, ताइँ, ताणि
बी.	णं	णाइं, णाइँ, णाणि

शेष रूप पुंलिंग के समान जानने चाहिए ।

ज (यत्) पुंलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प.	जो, जे	जे
बी.	जं	जे, जा
त.	जेण, जेणं, जिणा	जेहिँ, जेहिं, जेहि
च. छ.	जास, जस्स	जेसिं, जाण, जाणं
पं.	जम्हा, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जा	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जासुन्तो, जेहि, जेहिन्तो, जेसुन्तो

स.	जस्सिं, जम्मि, जत्थ, जहिं, जंसि ◆ जाहे, जाला, जइआ	जेसु, जेसुं

जा - जी (यत्) स्त्रीलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प.	जा	जाओ, जाउ, जा जीआ, जीओ, जीउ, जी
बी.	जं	जाओ, जाउ, जा, जीआ, जीओ, जीउ, जी
त.	जाअ, जाइ, जाए जीअ, जीआ, जीइ, जीए	जाहि, जाहिं, जाहिँ जीहि, जीहिं, जीहिँ
च. छ.	जिस्सा, जीसे, जाअ, जाइ, जाए जीअ, जीआ, जीइ, जीए	जेसिं, जाण, जाणं, जासिं
पं.	जाअ, जाइ, जाए-जम्हा जत्तो, जाउ, जाओ, जाहिन्तो, जीअ, जीआ, जीइ, जीए जित्तो, जीओ, जीउ, जीहिन्तो	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो, जासुन्तो जित्तो, जीओ, जीउ, जीहिन्तो, जीसुन्तो
स.	जाअ, जाइ, जाए, जीअ, जीआ, जीइ, जीए	जासु, जासुं जीसु, जीसुं

नपुंसकलिंग

प. बी. जं — जाइं, जाइँ, जाणि

शेष रूप पुंलिंग वत् ।

क (किम्) पुंलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प.	को, के	के
बी.	कं	के, का

◆ जाहे आदि तीनों रूपों का 'जब, जिस समय' अर्थ में प्रयोग होता है ।

त.	केण, केणं, किणा	केहि, केहिं, केहिँ
च. छ.	कास, कास्स	कास, केसिं, काण, काणं
पं.	किणो, कीस, कम्हा, कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, का	कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, कासुन्तो केहि, केहिन्तो, केसुन्तो
स.	कस्सिं, कम्मि, कत्थ, कहिं, कंसि • काहे, काला, कइआ	केसु, केसुं

का, की (किम्) स्त्रीलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प.	का	काओ, काउ, का कीआ, कीओ, कीउ, की
बी.	कं	काओ, काउ, का *कीआ, कीओ, कीउ, की*
त.	काअ, काइ, काए कीअ, कीआ, कीइ, कीए	काहि, काहिं, काहिँ कीहि, कीहिं, कीहिँ
च. छ.	किस्सा, कीसे, कास काअ, काइ, काए, कीअ, कीआ, कीइ, कीए	केसिं, काण, काणं, कासिं, कास
पं.	काअ, काइ, काए, कम्हा, कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो, कीअ, कीआ, कीइ, कीए, कित्तो, कीओ, कीउ, कीहिन्तो	कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो, कासुन्तो, कित्तो, कीओ, कीउ, कीहिन्तो, कीसुन्तो
स.	काअ, काइ, काए, कीअ, कीआ, कीइ, कीए	कासु, कासुं, कीसु, कीसुं

क (किम्) नपुंसकलिंग

प. बी.	किं	काइं, काइँ, काणि

शेष रूप पुंलिंग वत् ।

• काहे आदि तीनों रूपों का 'कब और किस समय' अर्थ में प्रयोग होता है ।

एअ, एत (एतद्) पुंलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प.	एस, एसो, एसे इणं, इणमो	एए
बी.	एअं	एए, एआ
त.	एएण, एएणं, एइणा	एएहि, एएहिं, एएहिँ
च. छ.	एअस्स, से	एएसिं, एआण, एआणं, सिं
पं.	एत्तो, एत्ताहे, (एअत्तो), एआओ, एआउ, एआहि, एआहिन्तो, एआ	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एआहिन्तो, एआसुन्तो, एएहि, एएहिन्तो, एएसुन्तो
स.	अयम्मि, ईअम्मि, एअस्सिं, एअम्मि, एत्थ, एअंसि	एएसु, एएसुं

एआ, एई (एतद्) स्त्रीलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प.	एस, एसा, इणं, इणमो, एई, एईआ	एआओ, एआउ, एआ, एईआ, एईओ, एईउ, एई,
बी.	एअं, एइं	एआओ, एआउ, एआ, एईआ, एईओ, एईउ, एई
त.	एआअ, एआइ, एआए एईअ, एईआ, एईइ, एईए	एआहि, एआहिं, एआहिँ एईहि, एईहिं, एईहिँ
च. छ.	एआअ, एआइ, एआए, एईअ, एईआ, एईइ, एईए, से.	एआण, एआणं, सिं, एएसिं, एआसिं, एईण-णं
पं.	एआअ, एआइ, एआए, (एअत्तो), एआओ, एआउ, एआहिन्तो एईअ, एईआ, एईइ, एईए, एइत्तो, एईओ, एईउ, एईहिन्तो	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहिन्तो, एआसुन्तो एइत्तो, एईओ, एईउ, एईहिन्तो, एईसुन्तो
स.	एआअ, एआइ, एआए, एईअ, एईआ, एईइ, एईए	एआसु, एआसुं, एईसु, एईसुं

एअ (एतद्) नपुंसकलिंग

प.	एअं, एस, इणं, इणमो	एआइं, एआइँ, एआणि
बी.	एअं	एआइं, एआइँ, एआणि

शेष रूप पुंलिंग वत् ।

इम (इदम्) पुंलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प.	अयं, इमो, इमे	इमे
बी.	इमं, इणं, णं	इमे, इमा, णे, णा
त.	इमेणं, इमेण, इमिणा, णेणं, णेण, णिणा	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ णेहि, णेहिं, णेहिँ
च. छ.	इमस्स, से, अस्स	इमेसिं, इमाण, इमाणं, सिं
पं.	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहिन्तो, इमा	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिन्तो, इमासुन्तो इमेहि, इमेहिन्तो, इमेसुन्तो
स.	इमस्सिं, इमम्मि, अस्सिं, इह, इमंसि	इमेसु, इमेसुं एसु, एसुं

इमा, इमी (इदम्) स्त्रीलिंग

प.	इमा, इमिआ इमी, इमीआ	इमाओ, इमाउ, इमा इमीआ, इमीओ, इमीउ, इमी (इमे)
बी.	इमं, इमिं, इणं, णं	इमाओ, इमाउ, इमा, इमीआ, इमीओ, इमीउ, इमी, (इमे)
त.	इमाअ, इमाइ, इमाए इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए, णाअ, णाइ, णाए	इमाहि, इमाहिं, इमाहिँ, इमीहि, इमीहिं, इमीहिँ णाहि, णाहिं, णाहिँ, आहि, आहिं, आहिँ

च. छ.	इमाअ, इमाइ, इमाए, इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए, से, (इमीसे)	इमाण, इमाणं, सिं, इमेसिं, इमासिं, इमीण, इमीणं
पं.	इमाअ, इमाइ, इमाए, इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहिन्तो इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए, इमित्तो, इमीओ, इमीउ, इमीहिन्तो	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहिन्तो, इमासुन्तो, इमित्तो, इमीओ, इमीउ, इमीहिन्तो, इमीसुन्तो,
स.	इमाअ, इमाइ, इमाए, इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए	इमीसु, इमीसुं, इमासु, इमासुं आसु, आसुं

इम (इदम्) नपुंसकलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प. बी.	इदं, इणमो, इणं	इमाइं, इमाइँ, इमाणि

शेष रूप पुंलिंग वत् ।

अमु (अदस्) यह, वह पुंलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प.	अह, अमू	अमवो, अमउ, अमओ, अमुणो, अमू
बी.	अमुं	अमुणो, अमू
त.	अमुणा	अमूहि, अमूहिं, अमूहिँ
च. छ.	अमुणो, अमुस्स	अमूण, अमूणं
पं.	अमुणो, अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो, अमूसुन्तो
स.	अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि, अमुंसि	अमूसु, अमूसुं

स्त्रीलिंग

प.	अह, अमू	अमूओ, अमूउ, अमू
बी.	अमुं	अमूओ, अमूउ, अमू

त.	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूहि, अमूहिं, अमूहिँ
च. छ.	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूण, अमूणं
पं.	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए अमुत्तो, अमूओ, अमूउ अमूहिन्तो	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो, अमूसुन्तो
स.	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूसु, अमूसुं

नपुंसकलिंग

प.	अह, अमुं	अमूइं, अमूइँ, अमूणि
बी.	अमुं	अमूइं, अमूइँ, अमूणि

शेष रूप पुंलिंग वत्

◆ अम्ह (अस्मद्) = मैं

तीनों लिंग में एकसमान रूप बनते हैं।

	एकवचन	बहुवचन
प.	हं, अहं, अहयं, म्मि, अम्हि, अम्मि	अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, मे
बी.	मं, ममं, मिमं, अहं, णे, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह	अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे
त.	मि, मे, ममं, ममए, ममाइ, मइ, मए, मयाइ, णे, [मया]	अम्हेहिं, अम्हाहिं, अम्ह, अम्हे, णे
च. छ.	मे, मइ, मम, मह, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं	णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण-णं, ममाण-णं, महाण-णं, मज्झाण-णं
पं.	मइत्तो, मईओ-उ-हिन्तो, ममत्तो, ममाओ-उ-हिन्तो, ममा, महत्तो, महाओ-उ-हिन्तो, महा	ममत्तो, ममाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो, ममेहि-हिन्तो-सुन्तो, अम्हत्तो, अम्हाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो,

	मज्झत्तो, मज्झाओ-उ-हिन्तो, मज्झा	अम्हेहि-हिन्तो-सुन्तो
स.	मि, मइ, ममाइ, मए, मे, अम्हस्सिं-म्मि, अम्हंसि, ममस्सिं-म्मि, ममंसि, मह्मस्सिं-म्मि, महंसि, मज्झस्सिं-म्मि, मज्झंसि, अम्हे, ममे, महे, मज्झे [मम्हिं]	अम्हसु-सुं, अम्हेसुं-सुं, ममसु-सुं, ममेसु-सुं, महसु-सुं, महेसु-सुं, मज्झसु-सुं, मज्झेसु-सुं, अम्हासु-सुं

◆ तुम्ह (युष्मद्) = तू (तुम)

तीनों लिंग में एकसमान रूप बनते हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
प.	तं, तुं, तुवं, तुह, तुमं	भे, तुब्भे, तुम्हे, तुज्झे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे
बी.	तं, तुं, तुवं, तुमं, तुह, तुमे, तुए	वो, तुब्भे, तुम्हे, तुज्झे, उज्झे, तुय्हे, उय्हे, भे
तइया	भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुमं, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ	भे, तुब्भेहिं, तुम्हेहिं, तुज्झेहिं, उज्झेहिं, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं
चउत्थी - छट्ठी	तइ, तुं, ते, तुम्ह, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, उब्भ, उम्ह, उज्झ, उय्ह	तु, वो, भे, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, उब्भ, उम्ह, उज्झ, तुब्भाण-णं, तुवाण-णं, तुम्हाण-णं, तुमाण-णं, तुज्झाण-णं, तुहाण-णं
पंचमी	तइत्तो, तईओ-उ-हिन्तो, तुवत्तो, तुवाओ-उ-हि-हिन्तो, तुवा तुमत्तो, तुमाओ-उ-हि-हिन्तो, तुमा तुहत्तो, तुहाओ-उ-हि-हिन्तो, तुहा	तुब्भत्तो, तुब्भाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो तुब्भेहि-हिन्तो-सुन्तो तुम्हत्तो, तुम्हाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो तुम्हेहि-हिन्तो-सुन्तो तुज्झत्तो,

◆ अम्ह (अस्मद्) और तुम्ह (युष्मद्) के रूपों में नीचे लाइन किये हुए रूप महत्त्वपूर्ण हैं ।

		तुज्झाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो
	तुब्भत्तो, तुब्भाओ-उ-हि- हिन्तो, तुब्भा	तुज्झेहि-हिन्तो-सुन्तो तुय्हत्तो, तुय्हाओ-उ-हि-हिन्तो, सुन्तो,
	तुम्हत्तो, तुम्हाओ-उ-हि- हिन्तो, तुम्हा	तुय्हेहि-हिन्तो-सुन्तो उय्हत्तो-उय्हाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो
	तुज्झत्तो, तुज्झाओ-उ-हि- हिन्तो, तुज्झा	उय्हेहि-हिन्तो-सुन्तो उम्हत्तो, उम्हाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो,
	तुय्ह, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, तहिन्तो	उम्हेहि-हिन्तो-सुन्तो
सप्तमी	तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए, तुम्मि तुवम्मि, तुवस्सिं, तुवंसि, तुमम्मि, तुमस्सिं, तुमंसि, तुहम्मि, तुहस्सिं, तुहंसि, तुब्भम्मि, तुब्भस्सिं, तुब्भंसि, तुम्हम्मि, तुम्हस्सिं, तुम्हंसि, तुज्झम्मि, तुज्झस्सिं, तुज्झंसि	तुसु-सुं तुवसु-सुं, तुवेसु-सुं, तुमसु-सुं, तुमेसु-सुं, तुहसु-सुं, तुहेसु-सुं, तुब्भसु-सुं, तुब्भेसु-सुं, तुम्हसु-सुं, तुम्हेसु-सुं, तुज्झसु-सुं, तुज्झेसु-सुं, तुब्भासु-सुं, तुम्हासु-सुं, तुज्झासु-सुं

उपयोगी रूप

अम्ह (अस्मद्)

	एकवचन	बहुवचन
प.	अहं, हं	अम्हे, अम्हो
बी.	ममं, मं	अम्हे, अम्हो
त.	मए, मइ	अम्हेहिं
च. छ.	मे, मम मह, मज्झ	अम्ह, अम्हाणं
पं.	ममत्तो, ममाओ	अम्हत्तो, अम्हाओ
स.	मइ, मज्झे	अम्हेसु

तुम्ह (युष्मद्)

प.	तुं, तुमं	तुम्हे, तुज्झे
बी.	तुं, तुमं	तुम्हे, तुज्झे
त.	तए, तुमए	तुब्भेहिं, तुम्हेहिं
च. छ.	तुह, तुव	तुब्भाण, तुम्हाण
पं.	तुमत्तो, तुमाओ	तुब्भत्तो, तुब्भाओ,
स.	तुमए, तए	तुब्भेसु, तुम्हेसुं

7. अन्त में **'वी'** संयुक्त हो ऐसे स्त्रीलिंग नामों में **'वी'** के पूर्व **उ** रखा जाता है ।

उदा. **तणुवी** (तन्वी) — **मउवी** (मृद्वी)
लहुवी (लघ्वी) — **गुरुवी** (गुर्वी)
पुहुवी (पृथ्वी)

8. क (किम्) सर्वनाम के रूपों को **'चि, इ, ई'** (चित्) और **'पि-वि' (अपि)** प्रत्यय लगाने पर प्रश्नार्थ दूर होकर अनिश्चयार्थ होता है ।

उदा. **कस्सइ, कासइ** (कस्यचित्) किसी का	**केणइ** (केनचित्) किसी के द्वारा
कस्सवि, कासवि (कस्यापि) किसी का भी	**केणवि** (केनापि) किसी के भी द्वारा
केइ, केई (केचित्) कोई	**कंचि** (कञ्चित्) किसी को
केवि (केऽपि) कोई भी	**कंपि** (कमपि) किसी को भी

शब्दार्थ (पुलिंग)

अणुग्गह (अनुग्रह) = उपकार, कृपा
जणद्दण (जनार्दन) = वासुदेव का नाम
जराकुमार (जराकुमार) = वसुदेव राजा का पुत्र, वासुदेव का बड़ा भाई, जराकुमार
जायव (यादव) = यदुवंशीय, यदु वंश का
निब्बंध (निर्बन्ध) = आग्रह
पणाम (प्रणाम) = नमस्कार
भोग (भोग) = शब्दादि विषय, खाना
महप्प (महात्मन्) = महात्मा, योगी
विसाय (विषाद) = खेद, शोक
संजोग (संयोग) = सम्बन्ध, मिलन
सामि (स्वामिन्) = स्वामी, नायक, अधिपति

नपुंसकलिंग

दूर (दूर) = दूर, अलग
वसण (वसन) = रहना, वस्त्र
वेर / वइर (वैर) = वैर, दुश्मनी

पुंलिंग + नपुंसकलिंग

भूअ (भूत) प्राणी, भूत
वय (वयस्) उम्र, आयुष्य

पुंलिंग + स्त्रीलिंग

उवहि (उपधि) माया, उपकरण, साधन।

स्त्रीलिंग

अणगारिया (अनगारिता) = साधुजीवन
जरादेवी (जरादेवी) = वसुदेव की स्त्री
दिट्ठि (दृष्टि) = दृष्टि, नजर
दोरिआ (दे. दवरिका) = रस्सी, डोरी
परंपरा (परम्परा) = परम्परा, अनुक्रम
पव्वज्जा (प्रव्रज्या) = दीक्षा
पुहुवी (पृथ्वी) = पृथ्वी, भूमि
मित्ती (मैत्री) = मैत्री,
सही (सखी) = सहेली,

विशेषण

उवज्जिअ (उपार्जित) = उपार्जन किया हुआ
जेट्ठ / जिट्ठ (ज्येष्ठ) = बड़ा, वृद्ध
तिविह (त्रिविध) = तीन प्रकार से (मन, वचन-काया से)
निबद्ध (निबद्ध) = बँधा हुआ
परिणय (परिणत) = परिपक्व
बाहिर (बाह्य) = बाहर का
लट्ठ (दे.) = सुन्दर
विवरिअ / विवरीअ (विपरीत) = उल्टा, प्रतिकूल
विहलिअ (विह्वलित) = व्याकुल
वुत्त (उक्त) = कहा हुआ
संजुअ (संयुत) = युक्त, सहित
सज्ज (सज्ज) = तैयार
समाण (सत्) = होता हुआ, विद्यमान
सेस (शेष) = बाकी

अव्यय

अइ / ऐ (अयि) संभावना अर्थ में, आमन्त्रण सूचक
इहरा / इहरहा (इतरथा) अन्यथा, नहीं तो, अन्य प्रकार से

ईसिं (ईषत्) = अल्प, थोड़ा	**बहुसो (बहुशः)** = अनेकबार
एक्कसरिअं (दे.) = शीघ्र, जल्दी, संप्रति, अब	**मोरउल्ला, मुहा (मुधा)** = मुधा, व्यर्थ
णवर, णवरं (दे.) = केवल, फक्त, अनन्तर, बाद में	**वीसुं (विष्वक्)** = चारों तरफ, समन्तात्
थु (दे.) = निन्दासूचक	**हद्धि, हद्धी (हा + धिक्)** = खेदसूचक, अनुताप

धातु

अई, णी (गम्) जाना	**झड् (शद्)** = सड़ना, गिरना, झपट मारना, गिराना
अक्कम् (आ + क्रम्) दबाना, आक्रमण करना	**निअच्छ, पुलोअ, पुलअ, निअ (दृश्)** = देखना
अणुभव् (अनु + भव्) = अनुभव करना, जानना	**निस्सस्, नीसस् (निर् + श्वस्)** = निःश्वास लेना
आइक्ख् (आ + चक्ष्) = कहना, उपदेश देना	**पमाय (प्र + माद्)** = प्रमाद करना, भूलना
आरंभ्, आढव्, आरभ् (आ + रभ्) = शुरू करना, प्रारम्भ करना	**पव्वय् (प्र + व्रज्)** = दीक्षा लेना
आसास् (आ + श्वास्) = शान्ति देना, आश्वासन देना	**भास् (भाष्)** = बोलना
छिव्, छिह् (स्पृश्) = स्पर्श करना	**विक्के (वि + क्री)** = बेचना
जीह् (लज्ज्) = लज्जित होना, शरमाना	**संपज्ज् (सम् + पद्)** = प्राप्त करना
	सोय्, सोच् (शुच्-शोच्) = शोक करना

हिन्दी में अनुवाद करें

1. जइ से पिया न पव्वइओ हीन्तो, तो लट्ठं होन्तं ।
2. तइय च्चिय पव्वज्जं गिण्हंतो, ता इण्हिं एरिसं पराभवं नेव पाविंतो ।
3. सव्वेसिं गुणाणं बम्हचेरं उत्तममत्थि ।
4. गुरवो सया अम्ह रक्खन्तु ।
5. कण्हेण भयवं पुच्छिओ, सामि ! कत्तो मे मरणं भविस्सइ ?

6. सामिणा कहियं, जो एस 'ते जेट्ठ-भाया' वसुदेवपुत्तो जरादेवीए जाओ जराकुमारो नाम, इमाओ ते मच्चू, तओ जायवाण जराकुमारे सविसाया सोएण निवडिआ दिट्ठी, चिंतिअं इमिणा 'अहो ! कट्ठं, अहं वसुदेवपुत्तो होऊण सयलजणिट्ठं कणिट्ठं भायरं विणासेहामि' त्ति, तओ आपुच्छिऊण जादवजणं जणद्दणरक्खणत्थं गओ वणवासं जराकुमारो ।

7. जइ रूवं होन्तं, ता सव्वगुणसंपया होन्ता ।

8. हे वीरजिणेसर ! तह कुणसु अम्ह पसायं, जह न संसारे अम्हे निविडिमो ।

9. चिट्ठउ दूरे मन्तो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।

10. न मं मोत्तुं अन्नो उचिओ इमीए, ता मुंच एयं जुद्धसज्जो वा होहि ।

11. साहूहिं वुत्तं जइ ते अइनिब्बंधो, तो संघसहिए अम्हे मेरुम्मि नेऊण चेइआइं वंदावेह, तीए (देवीए) भणियं तुम्हे दो जणे अहं देवे तत्थ वंदावेमि ।

12. X अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणय-वए अणगारियं पव्वइहिसि ।

13. किं मे कडं, किं च मे किच्चसेसं, किं च सक्कणिज्जं न समायरामि त्ति पच्चूहे सया झाएयव्वं ।

14. जं जेण जया जत्थ, जारिसं कम्मं सुहमसुहं उवज्जियं ।
तं तेण तया तत्थ, तारिसं कम्मं दोरियनिबद्धं व्व संपज्जइ ॥

15. तुं कुण धम्मं, जेण सुहं सो च्चिय चिंतेइ तुह सव्वं ।

16. खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥1॥

17. सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥2॥

18. जीसे खित्ते साहू, दंसणनाणेहिं चरणसहिएहिं ।
साहंति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ दुरिआइं ॥3॥

19. हसउ अ रमउ अ तुह सहिजणो, हसामु अ रमामु अ अहंपि ।
हससु अ रमसु अ तं पि, इअ भणिही मह पिओ इण्हिं ॥4॥

20. सामाइयम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ।
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥5॥

21. जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ।
आहारमुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥6॥

22. एगो हं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ ।
एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासइ ॥7॥

X समाणे सत्तमी (सति सप्तमी) में तृतीया अथवा सप्तमी विभक्ति रखी जाती है ।

23. एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसण संजुओ ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥8॥

24. संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ।
तम्हा संजोगसंबंध, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥9॥

25. अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।
जिणपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥10॥

प्राकृत में अनुवाद करें

1. देव और असुरों के समूह से वन्दन किये हुए जिनेश्वर देव हमारा रक्षण करें ।
2. जो दुविधा में आये हुए (दुविधा प्राप्त) को शान्ति देता है, दुःख प्राप्त (दुःखी) का उद्धार करता है, शरण में आये हुए (शरणागत) का रक्षण करता है, उन पुरुषों द्वारा पृथ्वी अलंकृत है ।
3. अहिंसा, संयम और तप ये धर्म जिनके हृदय में हैं, उनको देव भी नमस्कार करते हैं ।
4. जो मनुष्य धर्म का त्याग करके केवल काम और भोगों का सेवन करता है, वह किसी भी काल में सुख नहीं पाता है ।
5. सभी मंगलों में प्रथम मंगल कौन-सा है ?
6. हे भगवन् ! धर्म का उपदेश देकर आपने मुझ पर अनुग्रह किया है ।
7. स्वामी की आज्ञा में रहना, उसी में तुम्हारा कल्याण है ।
8. जब पुण्य का नाश होता है, तब सब विपरीत होता है ।
9. हे प्रभु ! तुम्हारे चरणों की शरण स्वीकार कर कौन सा मनुष्य संसार नहीं तरेगा ?
10. इस लोक (इस भव) में शुभ या अशुभ कर्म किया है, वही परलोक में साथ में आता है, इसलिए तुम शुभकर्म का संचय करो ।
11. इस संसार में किसका जीवन सफल है ?
12. जिसके जीवित रहने पर सज्जन और मुनि जीते हैं और जो हमेशा परोपकारी है उसका जीवन सफल है ।
13. यह मेरा है और यह तेरा है, इस प्रकार की वृत्ति तुच्छ मनवालों की होती है, लेकिन महात्माओं को संपूर्ण जगत् अपना ही है ।
14. तू कहता है कि यह पुस्तक मेरी है और तेरा मित्र कहता है कि यह पुस्तक उसकी है तो तुम्हारे में सत्यवादी कौन है ?
15. उस व्यक्ति ने इन बालकों को और उन बालिकाओं को सभी फल दे दिए ।
16. राजा ने एकदम कहा कि वे मनुष्य कौन हैं, कहाँ से आते हैं और मेरे पास उनका क्या काम है ?

पाठ - 25

संख्यावाचक शब्दावली

1	**एग - एअ** **एक्क - इक्क**	(एक) एक
2	**दो** **वे**	(द्वि) दो
3	**ति**	(त्रि) तीन
4	**चउ**	(चतुर्) चार
◆ 5	**पंच**	(पञ्चन्) पाँच
6	**छ**	(षष्) छह
7	**सत्त** **सग**	(सप्तम्) सात
8	**अट्ठ**	(अष्टन्) आठ
9	**नव**	(नवन्) नौ
10	**दस** **दह**	(दशन्) दस
11	**एगारह** **एगादस**	(एकादशन्) ग्यारह
12	**दुवालस** **बारह** **बारस**	(द्वादशन्) बारह
13	**तेरह** **तेरस**	(त्रयोदशन्) तेरह
14	**चोद्दह** **चोद्दस** **चउद्दह** **चउद्दस**	(चतुर्दशन्) चौदह
15	**पण्णरस** **पण्णरह**	(पञ्चदशन्) पन्द्रह
16	**सोलस** **सोलह**	(षोडशन्) सोलह
17	**सत्तरस** **सत्तरह**	(सप्तदशन्) सत्रह
18	**अट्ठारह** **अट्ठारस**	(अष्टादशन्) अठारह

1. **एग, एअ, एक्क, इक्क** शब्दों के रूपों का तीनों लिंगों में उपयोग होता है और उसके रूप **'सव्व'** शब्द के समान ही बनते हैं।
2. **दो** से **अट्ठारस** पर्यन्त के संख्यावाचक शब्दों के रूप बहुवचन में ही बनते हैं तथा तीनों लिंगों में समान ही बनते हैं।

   उदा. दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे (दो का प्र. बहुवचन)
3. अट्ठारस पर्यन्त के संख्यावाचक शब्दों में षष्ठी बहुवचन में **ण्ह** और **ण्हं** प्रत्यय लगता है।

   उदा. सत्तण्ह, सत्तण्हं (सत्त का षष्ठी बहुवचन)

◆ आर्ष में 'पंच' का 'पण', 'अट्ठ' का अड, 'अट्ठारह' का 'अट्ठार' भी होता है। उदा. पण जणा = (पाँच मनुष्य), अड बाला = आठ बालिका, अट्ठार अंबा = अठारह आम के वृक्ष।

4. संख्यावाचक शब्द में असंयुक्त **'द'** का **'र'** होता है और दस (दशन्) के **'श'** का **'ह'** विकल्प से होता है ।

उदा. एआरह (एकादश), **तेरह** (त्रयोदशन्)
एगारस **तेरस**

(पुंलिंग)

एग (एक)

	एकवचन	**बहुवचन**
प.	एगो, एगे	एगे
बी.	एगं	एगे, एगा
च. छ.	एगस्स	एगण्हं, एगण्ह, एगेसिं

शेष रूप 'सव्व' वत् ।

स्त्रीलिंग

प.	एगा	एगाओ, एगाउ, एगा
बी.	एगं	एगाओ, एगाउ, एगा
च. छ.	एगाअ, एगाइ, एगाए	एगासिं, एगेसिं एगण्ह, एगण्हं

शेष रूप 'सव्वा' वत् ।

नपुंसकलिंग

प. बी. एगं एगाइं, एगाइँ, एगाणि

शेष रुप 'सव्व' वत् ।

	दो-वे (द्वि) तीनों लिंग में	**ति (त्रि)** तीनों लिंग में
	बहुवचन	बहुवचन
प. बी.	दुवे, दोण्णि, दुण्णि वेण्णि, विण्णि, दो, वे	तिण्णि (तओ)
त.	दोहि, दोहिं, दोहिँ वेहि, वेहिं, वेहिँ	तीहि, तीहिं, तीहिँ
च. छ.	दोण्हं, दोण्ह, दुण्हं, दुण्ह वेण्हं, वेण्ह, विण्हं, विण्ह	तिण्हं, तिण्ह

पं.	दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहिन्तो, दोसुन्तो वित्तो, वेओ, वेउ, वेहिन्तो, वेसुन्तो	तित्तो, तीओ, तीउ तीहिन्तो, तीसुन्तो
स.	दोसु, दोसुं, वेसु, वेसुं	तीसु, तीसुं

	चउ (चतुर्)	पंच (पञ्चन्)
तीनों लिंग में	बहुवचन	बहुवचन
प. बी.	चत्तारो, चउरो, चत्तारि	पंच
त.	चऊहि, चऊहिं, चऊहिँ चउहि, चऊहिं, चऊहिँ	◆ पंचहि, पंचहिं, पंचहिँ
च. छ.	चउण्हं, चउण्ह	पंचण्हं, पंचण्ह
पं.	चउत्तो, चऊओ, चऊउ, चऊहिन्तो, चऊसुन्तो, चउओ, चउउ, चउहिन्तो, चउसुन्तो	पंचत्तो, पंचाओ, पंचाउ, पंचाहिन्तो, पंचासुन्तो
स.	चऊसु, चऊसुं चउसु, चउसुं	पंचसु, पंचसुं

	छ (षष्)	सत्त (सप्तन्)
तीनों लिंग में	बहुवचन	बहुवचन
प. बी.	छ	सत्त
त.	छहि, छहिं, छहिँ	सत्तहि, सत्तहिं, सत्तहिँ
च. छ.	छण्हं, छण्ह	सत्तण्हं, सत्तण्ह
पं.	छत्तो, छाओ, छाउ, छाहिन्तो, छासुन्तो	सत्तत्तो, सत्ताओ, सत्ताउ, सत्ताहिन्तो, सत्तासुन्तो
स.	छसु, छसुं	सत्तसु, सत्तसुं

	अट्ठ (अष्टन्)	नव (नवन्)
तीनों लिंग में	बहुवचन	बहुवचन
प. बी.	अट्ठ	नव

◆ पंचेहि-हिं-हिँ, सत्तेहि-हिं-हिँ इत्यादि रूप भी दिखाई देते हैं।
उदा. बारसेहिं जोयणेहि ईसिपब्भारा पुढवी ।। निशीथ भा.1.

त.	अट्ठहि, अट्ठहिं, अट्ठहिँ	नवहि, नवहिं, नवहिँ
च. छ.	अट्ठण्ह, अट्ठण्हं	नवण्ह, नवण्हं
पं.	अट्ठत्तो, अट्ठाओ, अट्ठाउ, अट्ठाहिन्तो, अट्ठासुन्तो	नवत्तो, नवाओ, नवाउ, नवाहिन्तो, नवासुन्तो
स.	अट्ठसु, अट्ठसुं	नवसु, नवसुं

इस प्रकार **दह, दस** से **अट्ठारस** पर्यन्त के रूप जानने चाहिए। कइ (कति) = कितना ? के रूप बहुवचन में ही होते हैं।

तीनों लिंग में	बहुवचन
प. बी.	कई
त.	कईइ, कईहिं, कईहिँ
च. छ.	कइण्हं, कइण्ह
पं.	कइत्तो, कईओ, कईउ, कईहिन्तो, कईसुन्तो
स.	कईसु, कईसुं

5. संख्यावाचक शब्द में आर्ष प्राकृत में अन्त्य **आ** का **अ** भी होता है, इसके रूप पुंलिंग और नपुंसकलिंग प्रथमा और द्वितीया एकवचन में प्राकृत साहित्य में दिखाई देते हैं।
   उदा. आ का अ - एगूणवीस, वीस, बावीस, चउव्वीस, पणवीस, छव्वीस, एगूणतीस, तीस, बत्तीस, तेत्तीस, छत्तीस, **अट्ठतीस** - अड़तीस, एगूणचत्तालीस, चत्तालीस, बायालीस, **छायाल** - छयालीस, **अडयाल** - अट्ठचत्तालीस, एगूणपन्नास, पन्नास, **एगावन्न** - एगपन्नास, **छप्पन्न** - छप्पन्नास, **अट्ठावन्न** - अडवन्न - अट्ठपन्नास इत्यादि.
   एगुणपन्नं राइंदियाइं जीविउं. द्वितीया एकव. (वसुदेवहिंडी पृ. 278)
   चत्तालीसं जोयणा चूला मेरूम्मि प्रथमा एकव. (नि. पृ. 29)
   वीसं गयदंतेसु, जयंति तीसं कूलगिरीसु प्रथमा एकव. (शाश्वत जिनस्तवे)
6. एगूणपण्णासा इत्यादि में **ण्ण** का **न्न** भी होता है।
   उदा. एगूणपन्नासा, पन्नासा, एगावन्ना, बावन्ना, तेवन्ना
7. एगूणवीसा से नवणवइ पर्यन्त शब्दों में से आकारान्त शब्दों के रूप 'रमा' के समान और इकारान्त शब्दों के रूप 'बुद्धि' के समान होते हैं।
   उदा. एगूणवीसाओ, एगूणवीसाउ, एगूणवीसा - (एगूणवीसा का प्रथमा बहुवचन)

एगूणसट्ठीओ, एगूणसट्ठीउ, एगूणसट्ठी - (एगूणसट्ठि का प्रथमा बहुवचन)

8. सय, सहस्स और लक्ख इन शब्दों का पुंलिंग में भी प्रयोग होता है। **उदा.** सोलस रायसहस्सा कमेण पूयंति रयणमाईहिं - (नेमिचरिए भव - 9, गा. 1340), अट्ठ सहस्सा गा. 48

एगूणवीसा से संख्यावाची शब्द

19. एगूणवीसा (एकोनविंशति) = उन्नीस
20. वीसा (विंशति) = बीस
21. एगवीसा, एक्कवीसा, इक्कवीसा (एकविंशति) = इक्कीस
22. बावीसा (द्वाविंशति) = बाईस
23. तेवीसा (त्रयोविंशति) = तेईस
24. चउवीसा, चोवीसा (चतुर्विंशति) = चौबीस
25. पणवीसा (पञ्चविंशति) = पच्चीस
26. छव्वीसा (षड्विंशति) = छब्बीस
27. सत्तावीसा, सगवीसा (सप्तविंशति) = सत्ताईस
28. अट्ठावीसा, अट्ठवीसा, अडवीसा (अष्टाविंशति) = अट्ठाईस
29. एगूणतीसा, अउणतीसा (एकोनत्रिंशत्) = उन्तीस
30. तीसा (त्रिंशत्) = तीस
31. एगतीसा, एक्कतीसा, इक्कतीसा (एकत्रिंशत्) = इक्कतीस
32. बत्तीसा (द्वात्रिंशत्) = बत्तीस
33. तेत्तीसा, तित्तिसा (त्रयस्त्रिंशत्) = तैतीस
34. चउतीसा, चोत्तीसा (चतुस्त्रिंशत्) = चौंतीस
35. पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्) = पैंतीस
36. छत्तीसा (षट्त्रिंशत्) = छत्तीस
37. सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्) = सैंतीस
38. अट्ठतीसा, अडतीसा (अष्टात्रिंशत्) = अडतीस
39. एगूणचत्तालीसा (एकोनचत्वारिंशत्) = उनचालीस
40. चत्तालीसा (चत्वारिंशत्) = चालीस
41. एगचत्तालीसा, एक्कचत्तालीसा, इक्कचत्तालीसा, एगयालीसा, इगयाला (एकचत्वारिंशत्) = इकतालीस
42. बायालीसा, बायाला, बेयालीसा, बेचत्तालीसा, बेआला, दुचत्तालीसा (द्वाचत्वारिंशत्) = बयालीस

43. तिचत्तालीसा, तेआलीसा, तेआला (त्रिचत्वारिंशत्) = तैंतालीस
44. चउचत्तालीसा, चोयालीसा, चउयालीसा, चउआला (चतुश्चत्वारिंशत्)=चौवालीस
45. पणचत्तालीसा, पणयालीसा, पणयाला (पञ्चचत्वारिंशत्) = पैंतालीस
46. छचत्तालीसा, छायालीसा, छायाला (षट्चत्वारिंशत्) = छियालीस
47. सत्तचत्तालीसा, सत्तयालीसा, सगयाला (सप्तचत्वारिंशत्) = सैंतालीस
48. अट्ठचत्तालीसा, अडयालीसा, अडयाला (अष्टचत्वारिंशत्) = अड़तालीस
49. ◆एगूणपण्णासा, अउणापण्णा, अउणपण्णा (एकोनपञ्चाशत्) = उनचास
50. पण्णासा, पंचासा (पञ्चाशत्) = पचास
51. एगपण्णासा, एक्कपण्णासा, एगावण्णा (एकपञ्चाशत्) = इक्यावन
52. दुप्पण्णासा, बावण्णा (द्विपञ्चाशत्) = बावन
53. तिपण्णासा, तेवण्णा (त्रिपञ्चाशत्) = तिरेपन
54. चउपण्णासा, चोवण्णा, चउवण्णा (चतु:पञ्चाशत्) = चउपन, चोपन
55. पंचावण्णा, पणपणासा, पणपण्णा (पञ्चपञ्चाशत्) = पचपन
56. छप्पण्णा, छप्पण्णासा (षट्पञ्चाशत्) = छप्पन
57. सत्तपण्णासा, सत्तावण्णा (सप्तपञ्चाशत्) = सत्तावन
58. अट्ठावण्णा, अट्ठापण्णासा, अडवण्णा (अष्टपञ्चाशत्) = अट्ठावन
59. एगूणसट्ठि, अउणसट्ठि (एकोनषष्टि) = उनसठ
60. सट्ठि (षष्टि) = साठ
61. एगसट्ठि, एक्कसट्ठि, इक्कसट्ठि (एकषष्टि) = इकसठ
62. बासट्ठि, बावट्ठि (द्विषष्टि) = बासठ
63. तेसट्ठि, तेवट्ठि (त्रिषष्टि) = तिरेसठ
64. चउसट्ठि, चोवट्ठि, चोसट्ठि (चतुष्षष्टि) = चौंसठ
65. पणसट्ठि, पण्णट्ठि (पंचषष्टि) = पैंसठ
66. छासट्ठि, छावट्ठि (षट्षष्टि) = छासठ
67. सत्तसट्ठि, सडसट्ठि (सप्तषष्टि) = सड़सठ
68. अट्ठसट्ठि, अडसट्ठि (अष्टषष्टि) = अड़सठ
69. एगूणसत्तरि, अउणत्तरि (एकोनसप्तति) = उनहत्तर
•70 सत्तरि, सित्तरि, सयरि (सप्तति) = सत्तर

◆ ण्ण का न्न होने पर एगूणपन्नासा, पन्नासा, एगावन्ना, बावन्ना, तेवन्ना आदि रुप भी होते हैं।

• आर्ष प्राकृत में 'सत्तरि' के स्थान पर 'हत्तरि' भी आता है।

71. एगसत्तरि, एक्कसत्तरि, इक्कसत्तरि (एकसप्तति) = इकहत्तर
72. बावत्तरि, बाहत्तरि, बिसत्तरि, बहत्तरि (द्विसप्तति) = बहत्तर
73. त्रिसत्तरि, तिहत्तरि, तेवत्तरि (त्रिसप्तति) = तिहत्तर
74. चउसत्तरि, चोवत्तरि, चोसत्तरि (चतु:सप्तति) = चौहत्तर
75. पण्णसत्तरि, पंचहत्तरि (पञ्चसप्तति) = पिचहत्तर
76. छसत्तरि, छस्सयरि (षट्सप्तति) = छिहत्तर
77. सत्तसत्तरि, सत्तहत्तरि (सप्तसप्तति) = सतहत्तर
78. अट्ठसत्तरि, अट्ठहत्तरि (अष्टसप्तति) = अठहत्तर
79. एगूणासीइ (एकोनाशीति) = उन्अस्सी, उन्यासी
80. असीइ (अशीति) = अस्सी
81. एगासीइ एक्कासीइ, इक्कासीइ (एकाशीति) = इक्यासी
82. बासीइ (द्वयशीति) = बयासी
83. तेसीइ, तेआसीइ (त्र्यशीति) = तिरासी
84. चउरासीइ, चोरासीइ, चुलसी (चतुरशीति) = चौरासी
85. पणसीइ, पंचासीइ (पञ्चाशीति) = पिच्यासी
86. छासीइ (षडशीति) = छियासी
87. सत्तासीइ (सप्ताशीति) = सत्तासी
88. अट्ठासीइ (अष्टाशीति) = अट्ठायासी
89. नवासीइ, एगूणनवइ, एगूणणउइ (नवाशीति, एकोननवति) = नवासी
90. नवइ, नउइ (नवति) = नब्बे
91. एगणवइ, एक्कणवइ, इक्कणवइ, इक्कणउइ (एकनवति) = इक्यानवे
92. बाणउइ, बाणवइ (द्विनवति) = बानवे
93. तेणवइ, तिणउइ (त्रिनवति) = तिरानवे
94. चउणवइ, चोणवइ (चतुर्नवति) = चोरानवे
95. पंचाणउइ, पंचाणवइ, पण्णणवइ (पञ्चनवति) = पिच्यानवे
96. छण्णवइ, छण्णउइ (षण्णवति) = छियानवे
97. सत्ताणवइ, सत्तणवइ, सत्तणउइ (सप्तनवति) = सत्तानवे
98. अट्ठाणवइ, अट्ठाणउइ, अट्ठणवइ, अडणवइ (अष्टनवति) = अट्ठानवे
99. नवणउइ, नवणवइ (नवनवति) = निन्नानवे, निन्यानने
एगूणसय नपुं. (एकोनशत)
100. सय नपुं. (शत) = सौ

200 दुसय, बिसय, दो सयाइं नपुं. (द्विशत) = दो सौ
300 तिसय, तिण्णि सयाइं नपुं. (त्रिशत) = तीन सौ
400 चउसय, चत्तारि सयाइं नपुं. (चतु:शत) = चारसौ
500 पंचसय, पणसय नपुं. (पञ्चशत) = पाँचसौ
600 छसय नपुं. (षट्शत) = छहसौ
700 सत्तसय नपुं. (सप्तशत) = सातसौ
800 अट्ठसय, अडसय नपुं. (अष्टशत) = आठसौ
900 नवसय नपुं. (नवशत) = नवसौ (नौ सौ)
1000 सहस्स नपुं. (सहस्त्र) = हजार
10,000 दससहस्स, दहसहस्स नपुं. (दशसहस्त्र) = दस हजार
अयुत-अजुअ नपुं. (अयुत) दस हजार.
1,00,000 सयसहस्स नपुं. (शतसहस्त्र) = एक लाख
1,00,000 लक्ख नपुं. (लक्ष) = एक लाख
10,00,000 दसलक्ख नपुं. (दशलक्ष) = दस लाख
1,00,00,000 कोडि स्त्री. (कोटि) = करोड़
10,00,00,000 दसकोडि स्त्री. (दशकोटि) = दस करोड़
100,00,00,000 सयकोडि स्त्री (शतकोटि) = सौ करोड़
1000,00,00,000 सहस्सकोडि स्त्री. (सहस्त्रकोटि) = हजार करोड़
100,00,00,00,000 लक्खकोडि स्त्री. (लक्षकोटि) = लाख करोड़
कोडाकोडि स्त्री. (कोटाकोटि) कोडाकोडी, क्रोड को क्रोड से गुना करने पर जो संख्या आती है वह ।
पलियोवम पुं. नपुं. (पल्योपम) पल्योपम, समय प्रमाण विशेष ।
सागरोवम पुं. नपुं. (सागरोपम) सागरोपम, समय प्रमाण विशेष, दस कोडाकोडी पल्योपम प्रमाण कालविशेष ।

9. संख्यावाचक शब्दों के पहले सवाय-सड्ढ-सद्ध-पाओण-पाउण-पोण शब्द रखने पर भी अपूर्णांक शब्द सिद्ध होते हैं ।

उदा. **सवायपंच-अ** वि. (सपादपञ्च-क) सवा पाँच
सड्ढपंच-अ वि. (सार्धपञ्च-क) साढ़े पाँच
पाओणपंच-अ, **पाउणपंच-अ**, **पोणपंच-अ** } वि. (पादोनपञ्च-क) पौने पाँच

अपूर्णांक शब्द

पाय पुं. (पाद) = चौथा भाग, पाव	**अद्धतइय** / **अड्ढाइय** / **अड्ढाइज्ज** } **वि.** (अर्धतृतीय) ढाई
अद्ध / **अड्ढ** } **पुं, नपुं. (अर्ध)** = आधा भाग, = आधा	**अद्धुट्ठ** / **अद्धुट्ठ** } **वि.** (अर्धचतुर्थ - अध्युष्ट) साढ़े तीन
पाओण / **पाऊण** / **पोण** } **वि. (पादोन)** = पौना, पाव कम	**अद्धपंचम वि.** (अर्धपञ्चम) साढ़े चार
सवाय वि. (सपाद) = सवा, पाव सहित	**अद्धछट्ठ वि.** (अर्धषष्ठ) साढ़े पाँच
सद्ध / **सड्ढ** } **वि. (सार्ध)** = डेढ़, आधासहित	**अद्धसप्तम वि.** (अर्धसप्तम) साढ़े छह
दिवड्ढ वि. (द्वयपार्ध) = डेढ़	**अद्धट्ठम वि.** (अर्धाष्टम) साढ़े सात
	अद्धनवम वि. (अर्धनवम) साढ़े आठ
	अद्धदसम वि. (अर्धदशम) साढे नौ

संख्यापूरक शब्द

पढम / **पढमिल्ल** } (प्रथम) पहला, 1ला,	**चउत्थ** / **चोत्थ** / **तुरिय** } (चतुर्थ, तुर्य) चौथा, 4 था
बीअ - / **बिइअ** / **दुइय** / **दुइज्ज** / **दोच्च** } (द्वितीय) दूसरा, 2रा	**पंचम** (पञ्चम) पाँचवाँ, 5 वाँ
	छट्ठ (षष्ठ) छट्ठा, 6 ठा
	सत्तम (सप्तम) सातवाँ, 7 वाँ
	अट्ठम (अष्टम) आठवाँ, 8 वाँ
तीअ / **तइअ** / **तच्च** / **तिइज्ज** / **तिइय** } (तृतीय) तीसरा, 3रा	**नवम** (नवम्) नौवाँ, 9 वाँ
	दहम / **दसम** } (दशम) दसवाँ, 10 वाँ

10. एक्कारस आदि संख्यावाचक नामों को प्रयोगानुसार **'अ-म-यम-इम'** प्रत्यय लगाने से संख्यापूरक शब्द बनते हैं, **'अ'** प्रत्यय लगाने पर पूर्व के स्वर का लोप होता है तथा संस्कृत सिद्ध प्रयोग से भी प्राकृत नियमानुसार परिवर्तन होकर उपयोग होता है ।

एक्कारस - म (एकादश) ग्यारहवाँ, 11 वाँ

बारस - म } (द्वादश) बारहवाँ, 12 वाँ
दुवालसमो }

तेरस - म (त्रयोदश) तेरहवाँ, 13 वाँ

चउद्दश - म (चतुर्दश) चौदहवाँ, 14 वाँ

पन्नरस - म } (पञ्चदश) पन्द्रहवाँ, 15 वाँ
पंचदस - म }

सोलस - म (षोडश) सोलहवाँ, 16 वाँ

सत्तरस - म (सप्तदश) सत्रहवाँ, 17 वाँ

अट्ठारस - म (अष्टादश) अठारहवाँ, 18 वाँ

एगूणवीस - इम (एकोनविंशतितम) उन्नीसवाँ, 19 वाँ

वीसइम (विंशतितम) बीसवाँ, 20 वाँ

एक्कवीस - म - इम (एकविंशतितम) इक्कीसवाँ

बावीस - इम (द्वाविंशतितम) बावीसवाँ, 22 वाँ

तेवीस - इम (त्रयोविंशतितम) तेइसवाँ, 23 वाँ

चउवीस - इम (चतुर्विंशतितम) चौबीसवाँ, 24 वाँ

पंचवीस - इम } (पञ्चविंशतितम) पच्चीसवाँ, 25 वाँ
पणवीस - इम }

छव्वीस - इम (षड्विंशतितम) छब्बीसवाँ, 26 वाँ

सत्तावीस - इम (सप्तविंशतितम) सत्ताईसवाँ, 27 वाँ

अट्ठावीस - इम (अष्टाविंशतितम) अट्ठाईसवाँ, 28 वाँ

एगूणतीस - इम (एकोनत्रिंशत्तम) उनतीसवाँ, 29 वाँ

तीसइम (त्रिंशत्तम) तीसवाँ, 30 वाँ

एक्कतीस - इम (एकत्रिंशत्तम) इकतीसवाँ, 31 वाँ

बत्तीस - इम (द्वात्रिंशत्तम) बत्तीसवाँ, 32 वाँ

तेत्तीस - इम (त्रयस्त्रिंशत्तम) तैंतीसवाँ, 33 वाँ

चउतीस - इम (चतुस्त्रिंशत्तम) चौंतीसवाँ, 34 वाँ

पंचतीस - इम } (पञ्चत्रिंशत्तम) पैंतीसवाँ, 35 वाँ
पणतीस - इम }

छत्तीस - इम (षट्त्रिंशत्तम) छत्तीसवाँ, 36 वाँ

सत्ततीस - इम (सप्तत्रिंशत्तम) सैंतीसवाँ, 37 वाँ

अट्ठतीस - इम (अष्टात्रिंशत्तम) अडतीसवाँ, 38 वाँ

एगूणचत्ताल - इम } (एकोनचत्वारिंशत्तम) उनतालीसवाँ, 39 वाँ
एगूणचालीस - इम

चत्ताल } (चत्वारिंशत्तम) चालीसवाँ, 40 वाँ
चालीस - म
चत्तालीस - म

एगचत्ताल (एकचत्वारिंशत्तम) एकतालीसवाँ, 41 वाँ

बायालीस - इम (द्वाचत्वारिंशत्तम) बयालीसवाँ, 42 वाँ

तेयालीस - इम (त्रिचत्वारिंशत्तम) तैंतालीसवाँ, 43 वाँ

चउचत्तालीस - इम } (चतुश्चत्वारिंशत्तम) चौवालीसवाँ 44 वाँ
चउयालीस - इम

पणयाल (पञ्चचत्वारिंश) पैंतालीसवाँ, 45 वाँ

छायालीस (षट्चत्वारिंश) छियालीसवाँ, 46 वाँ

सत्तचत्ताल } (सप्तचत्वारिंश) सैंतालीसवाँ, 47 वाँ
सत्तचत्तालीसं

अट्ठचत्ताल } (अष्टचत्वारिंश) अड़तालीसवाँ, 48 वाँ
अडयालीस

एगूणपन्नास (एकोनपञ्चाश) उनचासवाँ, 49 वाँ

पन्नास - म - इम (पञ्चाशत्तम) पचासवाँ, 50 वाँ

एगावन्न - म } (एकपञ्चाशत्तम) इक्यावनवाँ, 51 वाँ
एगपन्नास - इम

बावन्न *- ण्ण (द्विपञ्चाशत्तम) बावनवाँ, 52 वाँ*

तिपंचास - इम (त्रिपञ्चाशत्तम) तिरेपनवाँ, 53 वाँ

चउपण्ण - इम } (चतु:पञ्चाशत्तम) चोपनवाँ, 54 वाँ
चउपन्नास - इम

पंचावन्न (पञ्चपञ्चाश) पचपनवाँ, 55 वाँ

छप्पन्न (षट्पञ्चाश्) छप्पनवाँ, 56 वाँ

सत्तावन्न-ण्ण (सप्तपञ्चाश) सत्तावनवाँ, 57 वाँ

अट्ठावन्न-ण्ण (अष्टपञ्चाश) अट्ठावनवाँ, 58 वाँ

एगूणसट्ठ (एकोनषष्टि) उनसठवाँ, 59 वाँ

सट्ठिइम } (षष्टितम) साठवाँ, 60 वाँ
सट्ठिअम }

एगसट्ठ (एकषष्टि) इकसठवाँ, 61 वाँ

बासट्ठ (द्वाषष्टि) बासठवाँ, 62 वाँ

तिसट्ठ (त्रिषष्टि) तिरेसठवाँ, 63 वाँ

चउसट्ठट्ठिम (चउषष्टष्टितम) चौंसठवाँ, 64 वाँ

पंचसट्ठ (पञ्चषष्टि) पैंसठवाँ, 65 वाँ

छासट्ठ (षट्षष्टि) छासठवाँ, 66 वाँ

सत्तसट्ठ (सप्तषष्टि) सड़सठवाँ, 67 वाँ

अडसट्ठट्ठिम (अष्टषष्टष्टितम) अड़सठवाँ, 68 वाँ

एगूणसत्तर (एकोनसप्तति) उनहत्तरवाँ, 69 वाँ

सत्तर } (सप्ततितम) सत्तरवाँ, 70 वाँ
सत्तरिअम }

एगसत्तर (एकसप्तति) इकहत्तरवाँ, 71 वाँ

बावत्तर (द्विसप्तति) बहत्तरवाँ, 72 वाँ

तिहत्तर (त्रिसप्तति) तिहत्तरवाँ, 73 वाँ

चउहत्तर (चतु:सप्तति) चौहत्तरवाँ, 74 वाँ

पंचहत्तर (पञ्चसप्तति) पिचहत्तरवाँ, 75 वाँ

छहत्तर (षट्सप्तति) छिहत्तरवाँ 76 वाँ

सत्तहत्तर (सप्तसप्तति) सतहत्तरवाँ, 77 वाँ

अट्ठहत्तर (अष्टसप्तति) अठहत्तरवाँ, 78 वाँ

एगूणासीय - यम (एकोनाशीतितम) उन्यासीवाँ, 79 वाँ

असीइम *(अशीतितम) अस्सीवाँ, 80 वाँ*

एगासीइम *(एकाशीतितम) इक्यासीवाँ, 81 वाँ*

बासीइम (द्वयाशीतितम) बयासीवाँ, 82 वाँ

तेयासीइम (त्र्यशीतितम) तिरासीवाँ, 83 वाँ

चउरासीइम (चतुरशीतितम) चौरासीवाँ, 84 वाँ

पंचासीइम (पञ्चाशीतितम) पिच्यासीवाँ, 85 वाँ

छासीइम (षडशीतितम) छियासीवाँ, 86 वाँ

सत्तासीइम (सप्ताशीततितम) सत्तासीवाँ, 87 वाँ

अट्ठासीयम (अष्टाशीततितम) अट्ठासीवाँ, 88 वाँ

एगूणनउय (एकोननवति) नवासीवाँ, 89 वाँ

नउइय } (नवतितम) नब्बेवाँ, 90 वाँ
नवइयम

एक्काणउय } (एकनवति) इक्यानवेवाँ 91 वाँ
एक्काणवय

बाणउय (द्विनवति) बानवेवाँ, 92 वाँ

तेणउय (त्रिनवति) तिरानवेवाँ 93 वाँ

चउणउय (चतुर्नवति) चोरानवेवाँ, 94 वाँ

पंचाणउय (पञ्चनवति) पिच्यानवेवाँ, 95 वाँ

छन्नउय (षण्णवति) छियानवेवाँ, 96 वाँ

सत्ताणउय (सप्तनवति) सत्तानवेवाँ, 97 वाँ

अट्ठाणउय (अष्टनवति) अट्ठानरेवाँ 98 वाँ

नवणउय } (नवनवतितम) निन्यानवेवाँ 99 वाँ
नवणवइम

सययम (शततम) सौवाँ 100 वाँ

इस प्रकार **एक्कुत्तरसय** - एक्कोत्तरसय, दुरुत्तरसय, तिउत्तरसय वगैरह संख्या से संख्यापूरक शब्द भी बनते हैं ।

11. 'पढम' से 'तिइय' पर्यन्त संख्यापूरक शब्दों का स्त्रीलिंग **आ** लगाने से बनता है और शेष संख्यापूरक शब्दों का स्त्रीलिंग प्राय: अन्त्य **अ** का **ई** करने से बनता है ।

उदा. पढमा-बीया-बिइया-तीया-तइया-चउत्थी-दसमी, एक्कारसी-चउद्दसी-चउद्दसमी-सत्तावीसी-सत्तावीसमी-तीसइमी-चालीसमी-एगसट्ठी-*बावत्तरी-एगासीइमी-छन्नउई इत्यादि ।*

संख्यापूरक शब्द विशेषण होने से उनके रूप पुंलिंग में 'देव' के समान और स्त्रीलिंग में 'रमा' और 'इत्थी' के समान समझने चाहिए ।

वार अर्थ (आवृत्तिदर्शक क्रियाविशेषण)

12. संख्यावाचक शब्दों को **'हुत्त' (कृत्वस्)** प्रत्यय लगाने पर आवृत्तिदर्शक क्रियाविशेषण बनते हैं, तथा आर्ष प्राकृत में **'क्खुत्तो-खुत्तो'** प्रत्यय भी लगाया जाता है । एग का सइ अथवा सइं भी होता है, द्वि का दु, त्रि का ति और चतुर् का चउ होता है ।

उदा. सइ - सइं = एगहुत्तं, एक्कसिं (सकृत्) एकबार

दु - दोच्चं, दुक्खुत्तो (द्विः) दो बार

ति - तच्चं, तिक्खुत्तो (त्रिः) तीन बार

चउ - चउक्खुत्तो (चतुः) चार बार

पंचहुत्तं, पंचक्खुत्तो (पञ्चकृत्वः) पाँच बार

सयहुत्तं, सयक्खुत्तो (शतकृत्वः) सौ बार

सहस्सहुत्तं, सहस्सक्खुत्तो (सहस्रकृत्वः) हजारबार

अणंतहुत्तं, अणंतक्खुत्तो, अणंतखुत्तो (अनन्तकृत्वः) अनन्तबार

प्रकार अर्थ

13. प्रकार अर्थ में **हा (धा)** और **विह (विध)** प्रत्यय लगाये जाते हैं ।

उदा. एगहा अ. (एकधा),	**एगविह वि.** (एकविध) एक प्रकार से
दुहा अ. (द्विधा),	**दुविह वि.** (द्विविध) दो प्रकार से
तिहा अ. (त्रिधा),	**तिविह वि.** (त्रिविध) तीन प्रकार से
चउहा / चउद्धा } **अ.** (चतुधा),	**चउविह** / **चउव्विह** } **वि.** (चतुर्विध) चार प्रकार से
अट्ठहा अ. (अष्टधा),	**अट्ठविह वि.** (अष्टविध) आठ प्रकार से
दसहा अ. (दशधा),	**दसविह वि.** (दशविध) दस प्रकार से
बहुहा अ. (बहुधा),	**बहुविह वि.** (बहुविध) अनेक प्रकार से
सयहा अ. (शतधा),	**सयविह वि.** (शतविध) सौ प्रकार से
सहस्सहा अ. (सहस्रधा),	**सहस्सविह वि.** (सहस्रविध) हजार प्रकार से

नाणाविह वि. (नानाविध) अलग-अलग प्रकार से

शब्दार्थ (पुंलिंग)

अइसय (अतिशय) = अतिशय, महिमा, प्रभाव

अंब (आम्र) = आम का वृक्ष

अज्झाय (अध्याय) = ग्रन्थ का अमुक भाग, प्रकरण, अध्याय

◆ **अरिह (अर्हन्)** = तीर्थंकर

आइ (आदि) = प्रथम, प्रधान, वगैरह

कत्तिअ (कार्तिक) = कार्तिक मास

कवल (कवल) = कवल

कुरु (कुरु) = एक देश का नाम, कुरु

खंडिअ (खण्डिक) = छात्र, विद्यार्थी

◆ अरिह शब्द का प्रथमा एकवचन अरिहा भी होता है ।

चइत्त (चैत्र) = चैत्र महीना

चक्कवट्टि (चक्रवर्तिन्) = चक्रवर्ती, छह खण्ड का अधिपति

चंपअ (चम्पक) = चम्पा का वृक्ष

छेयगंथ (छेदग्रन्थ) = निशीथादि छह सूत्र

जंबुदीव } **जंबूद्वीप** = द्वीप का नाम, जंबूद्वीप
जंबूदीव

जणवय (जनपद) = देश, जनस्थान

निगम (निगम) = व्यापार का स्थान, व्यापारियों का समूह

निहि (निधि) = खजाना, भण्डार, चक्रवर्ती राजा की संपत्ति विशेष

पयंग (पतङ्ग) = पतंगा, तितली

भरह (भरत) = भरतक्षेत्र, श्री ऋषभदेव का प्रथम पुत्र

भसल (भ्रमर) = भौंरा

मणपज्जव (मनःपर्यव) = चतुर्थज्ञान (दूसरों के मन के भावों को बतानेवाला ज्ञान)

लिंब (निंब) = नींबू का वृक्ष

लोगंतिअ (लोकान्तिक) = देवविशेष

लोगवाल } **(लोकपाल)** = इन्द्र का दिक्पाल
लोगपाल

वारियर (वारिचर) = जलचर, मत्स्य

वासहर (वर्षधर) = पर्वत विशेष

वियार (विकार) = विकार

सउण (शकुन) = पक्षी

हय (हय) = घोड़ा

नपुंसकलिंग

अंग (अङ्ग) आचारांगादि बारह अंग, शरीर, शरीर के अवयव

अंब (आम्र) = आम्रफल

अणिअ (अनीक) = सैन्य

अणुओगदार (अनुयोगद्वार) = सूत्रविशेष, एक आगम का नाम, अनुयोगद्वार सूत्र

आउह (आयुध) = शस्त्र

गुणट्ठाण (गुणस्थान) = गुणों का स्थान, मिथ्यादृष्टि आदि चौदह गुणस्थान

नंदिसुत्त (नन्दीसूत्र) = नन्दीसूत्र, सूत्र का नाम, जिसमें पाँच ज्ञानों का स्वरूप है

निव्वाण (निर्वाण) = मोक्ष

पज्जवसाण (पर्यवसान) = अन्त, अवसान, किनारा

पाइअ (प्राकृत) = प्राकृतभाषा

मूलसुत्त (मूलसूत्र) = सूत्र विशेष

रूअ (रुत) = शब्द, आवाज

सिप्प (शिल्प) = चित्रकला आदि कला, कारीगरी

हत्थिणाउर (हस्तिनापुर) नगर का नाम, हस्तिनापुर

पुंलिंग + नपुंसकलिंग

उवंग (उपाङ्ग) = अंग के अर्थ का विस्तार करनेवाला सूत्र

खंड (खण्ड) टुकड़ा, पृथ्वी का अमुक भाग

स्त्रीलिंग

अद्धमागही (अर्धमागधी) = अर्धमागधी भाषा

अमावासा } **(अमावास्या)** =
अमावस्सा } अमावास्या,

आसायणा (आशातना) = विपरीत वर्तन, अपमान

कयली } = (कदली)
केली }

भगवई (भगवती) = भगवती सूत्र, पाँचवाँ अंग,

भस्संतया (भस्मान्तता) = जलकर भस्म होना,

भासा (भाषा) = भाषा, वाक्य, वचन, वाणी

वायणा (वाचना) = वाचना

पुंलिंग + स्त्रीलिंग

ओहि } = (अवधि) मर्यादा, हद, तीसरा ज्ञान
अवहि } = अतीन्द्रिय, रूपी पदार्थों को बतानेवाला ज्ञान

कुच्छि = (कुक्षि) उदर, पेट

तिहि (तिथि) = तिथि, दिन

विशेषण

अहियगर (अधिकतर) = अहित करनेवाला

कोसलिय (कौशलिक) = कोशला - अयोध्या नगरी में उत्पन्न

जेट्ठ } **(ज्येष्ठ)** = महान्, सर्वथा,
जिट्ठ } बड़ा, श्रेष्ठ

पइन्न - ग (प्रकीर्ण - क) = बिखरे हुए

पाइअ (प्राकृत) स्वाभाविक, नीच, मूल, पामर

पुव्व (पूर्व) = कालविशेष, एक पूर्व, 70 लाख 56 हजार करोड़ वर्षों का समूह

पूरअ } **(पूरक)** = पूर्ण *करनेवाला*
पूरग }

भंत (**भगवत्**) भगवान्, ऐश्वर्यवान,
भदन्त कल्याणकारक,
भ्राजत् देदीप्यमान,
भवान्त संसार और
भयान्त) सकल भयों का अन्त करनेवाला

भिक्खायरिअ (भिक्षाचरक) = भिक्षाचर

मह } = (महत्) बड़ा, वृद्ध, श्रेष्ठ,
महंत } विस्तीर्ण

विणट्ठ (विनष्ट) = नष्ट, नष्ट हुआ **विणिद्दिट्ठ (विनिर्दिष्ट)** = विशेष प्रकार से कहा हुआ **संतिण्ण** (सन्तीर्ण) पार पाया हुआ, तिरा हुआ	**संवच्छरिअ (सांवत्सरिक)** = संवत्सर सम्बन्धी, वार्षिक

अव्यय

णं (देश्य) वाक्यालंकार में उपयोगी

धातु

अइवाय् (अति + पात्)= जीवहिंसा करना **अणुया (अनु + या)** = अनुसरण करना **अभि + सिंच् (अभि + सिञ्च्)** = अभिषेक करना **वाय् (वाचय्)** = पढ़ना, पढ़ाना	**विहे (वि + धा)** = करना, बनाना **पया (प्र + जनय्)** = प्रसव करना, जन्म देना **पसव् (प्र + सू)** = जन्म देना, उत्पन्न करना

हिन्दी में अनुवाद करें

1. उवज्झाओ चउण्हं समणाणं सुत्तस्स वायणं देइ ।
2. पंच पंडवा सिद्धगिरिम्मि निव्वाणं पावीअ ।
3. कामो कोहो लोहो मोहो मयो मच्छरो य छवियारा जीवाणमहियगरा ।
4. अस्सिं उज्जाणे पणवीसा अंबा, छत्तीसा य लिंबा, एगासीई केलीओ, सडसट्ठी चंपआ अत्थि ।
5. सो समणो पव्वइओ अद्धुट्ठेहिं सह खंडियसएहिं ।
6. नहे सत्तण्हं रिसीणं सत्त तारा दीसन्ति ।
7. समोसरणे भयवं महावीरो देवदाणवमणुअपरिसाए चऊहिं मुहेहिं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ ।
8. तिसला देवी चइत्तमासस्स सुक्कपक्खे तेरसीए तिहिए महावीरं पुत्तं पयाही।
9. दसहिं दसेहिँ सयं होई, दसहिँ सएहिं सहस्सं ।
   दसहिं सहस्सेहिँ अजुयं, दसहिं अजुएहि लक्खं च ॥1॥
10. उसभे अरिहा कोसलिए पढमराया पढमभिक्खायरिए, पढम तित्थयरे, वीसं पुव्वसय-सहस्साइं कुमारवासे वसित्ता, तेवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं रज्जमणुपालेमाणे लेहाइयाओ सउणरुअपज्जवसाणाओ बावत्तरिं

कलाओ, चोवट्ठिं महिलागुणे, सिप्पाणमेगसयं, एए तिन्नि पयाहियट्ठाए उवदिसइ, उवदिसित्ता पुत्तसयं रज्जसए अभिसिंचइ, ततो पच्छा लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए संवच्छरियं दाणं दाऊण परिव्वइओ ।

11. जिणमए एगादस अंगाणि, बारस उवंगाणि, छ छेयगंथा, दस पइन्नगाइ, चत्तारि मूलसुत्ताइं, नंदिसुत्त-अणुओगदाराइं च दोण्णि त्ति पणचालीसा आगमा संति ।

12. भंते ! नाणं कइविहं पन्नत्तं, गोयमा ! नाणं पंचविहं पन्नत्तं तं जहा- मइनाणं, सुअनाणं ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं, केवलनाणं च ।

13. चत्तारि लोगपाला, सत्त य अणियाइं तिण्णि परिसाओ ।
एरावणो गइंदो, वज्जं च महाउहं तस्स (सक्कस्स) ॥2॥

14. बत्तीसं किर कवला, आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ ।
पुरिसस्स महिलाए, अट्ठावीसं मुणेयव्वा ॥3॥

15. अट्ठावीसं लक्खा, अडयालीसं च तह सहस्साइं ।
सव्वेसिं जिणाणं, जईण माणं विणिदिट्ठं ॥4॥

16. पढमे न पढिआ विज्जा, बिईए न अज्जिअं धणं ।
तईए न तवो तत्तो, चउत्थे किं करिस्सए ॥5॥

17. सत्तो सद्दे हरिणो, फासे नागो रसे य वारियरो ।
किवणपयगो रूवे, भसलो गंधेण विणट्ठो ॥6॥

18. पंचसु सत्ता पंच वि, णट्ठा जत्थागहिअपरमट्ठा ।
एगो पंचसु सत्तो, पजाइ भस्संतयं मूढो ॥7॥

19. • कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं,
तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पहावो ।
जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवई,
बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो ॥
चउदसवररयणनवमहानिहि-चउसट्ठिसहस्स-
पवरजुवईण सुंदरवई चुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी,
छन्नवइगामकोडिसामी आसी जो भारहंमि भयवं ॥ वेड्ढओ ॥8॥

20. • तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया ।
संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ रासानंदियं ॥ युग्मम् ॥9॥

• [ये दो स्तुतियाँ शान्तिनाथ भ. की हैं, वेड्ढओ (वेष्टकः), रासानंदिअयं (रासानन्दितम) ये दो छन्द विशेष के नाम हैं]

प्राकृत में अनुवाद करें

1. वह इक्कीस साल (वर्ष) चारित्रपालन करके समाधिपूर्वक मृत्यु पाकर बारहवें **देवलोक में देव** हुआ।
2. भगवान महावीर **आश्विन महीने की अमावास्या की रात्रि में** आठ कर्मों का क्षय करके मोक्ष में गये, उसके बाद **कार्तिक महीने की प्रतिपदा को गौतमस्वामी को केवलज्ञान** हुआ, इसलिए ये दो दिन जगत् में श्रेष्ठ माने जाते हैं।
3. जैन **छह द्रव्य, आठ कर्म, जीवादि नौ तत्त्व, दश यतिधर्म** और **चौदह गुणस्थानक** मानते हैं।
4. श्रावकों को जिनमन्दिर की चौरासी (84) **आशातना** और गुरु म. की तैंतीस (33) **आशातनाओं** का त्याग करना चाहिए।
5. जो भरतक्षेत्र के **तीन** खण्ड जीतते हैं वे वासुदेव और **छह** खण्ड जीतते हैं वे चक्रवर्ती बनते हैं।
6. तीर्थंकर भगवंतों को चार (4) अतिशय जन्म से होते हैं तथा **कर्मक्षय** से ग्यारह (11) अतिशय और **देवकृत** उन्नीस (19) अतिशय इस प्रकार **चौंतीस अतिशयों से सुशोभित** तीर्थंकर होते हैं।
7. सभी अंग और उपांगादि सूत्रों में **पाँचवाँ** भगवती अंग श्रेष्ठ और सबसे बड़ा है।
8. **चौंसठ** इन्द्र मेरुपर्वत पर तीर्थंकर भगवंतों का जन्ममहोत्सव करते हैं।
9. सिद्ध भगवंत आठों कर्म से रहित होते हैं।
10. कुमारपाल राजा ने **अठारह** देशों में जीवदया का पालन करवाया था।
11. श्री हेमचन्द्रसूरिजी ने **सिद्धहेमव्याकरण** के **आठवें** अध्याय में **प्राकृत व्याकरण** दिया है।
12. इस जंबूद्वीप में **छह वर्षधर** पर्वत और **भरतादि सात क्षेत्र** हैं।
13. जीव **दो प्रकार से,** गति **चार प्रकार से,** व्रत **पाँच प्रकार से** और **भिक्षु की प्रतिमा बारह प्रकार से** हैं।
14. इस पण्डित ने इस व्याकरण के **आठ** अध्याय बनाये हैं और प्रत्येक अध्याय के **चार-चार** पाद हैं, मैंने **सात** अध्याय और **आठवें** अध्याय के **दो** पाद पढ़े हैं।
15. उस यक्ष के **दो** मुँह और **चार** हाथ हैं, उसमें से **एक** हाथ में शंख है, दूसरे हाथ में गदा है, **तीसरे** हाथ में चक्र और **चौथे** हाथ में बाण है।
16. इस पुस्तक के मैंने **पच्चीस** पाठ पढ़े, इसके **चार हजार** शब्द याद किये, **हजारों** वाक्य किये, अब मुझे प्राकृत सुलभ बने इसमें आश्चर्य क्या ?

प्राकृत-हिन्दी शब्दकोष

अ

अइसय पुं. (अतिशय), अतिशय, महिमा, प्रभाव

अईव अ. (अतीव) अत्यंत

अउअ-अजुअ नपुं. (अयुत) दस हजार, संख्या विशेष

अउज्झा स्त्री. (अयोध्या) अयोध्या-नगरी.

अओ-अतो अ. (अतः) इस कारण से, इससे, इसलिए

अंग नपुं.(अङ्ग) अवयव, आचारांगादि बारह अंग

अंगण नपुं. (आङ्गण)-आँगन, चौक

अंगार-ल-इंगार-ल पुं. (अङ्गार) अंगार, कोयला

अंगुली स्त्री. (अङ्गुली) उंगली

अंजण नपुं. (अञ्जन) काजल, आँख में अंजन करने का सुरमा

अंत-अंतो अ-(अन्तर) अन्दर, बीच में

अन्ध-अंध वि. (अन्ध) अन्धा

अंब पुं. (आम्र) आम्रवृक्ष, नपुं. आम्रफल

अंसु नपुं. (अश्रु) आँसू

अकाल पुं. (अकाल) बेमौका, अयोग्य अवसर, अकाल

अक्क पुं. (अर्क) सूर्य

अग्ग नपुं. (अग्र) आगे, शिखर.

अग्गओ अ. (अग्रतः) अग्र, पहला, सामने

अग्गला स्त्री (अर्गला) आगल, किवाड़ बन्द करने की लकड़ी, बेड़ी

अगार नपुं. (अगार) घर

अग्गि पुं. (अग्नि) अग्नि

अच्चण नपुं. (अर्चन) पूजा

अच्चणा स्त्री. (अर्चना) पूजा

अच्चत्थ वि. (अत्यर्थ) अतिशय, ज्यादा

अच्चंत पुं. (अत्यन्त) अत्यधिक, बहुत, हद से ज्यादा

अच्चय पुं. (अत्यय) विनाश, मरण, विपरीत आचरण

अच्चा स्त्री. (अर्चा) पूजा, सत्कार

अच्छि पुं. नपुं. (अक्षि) आँख

अच्छेर नपुं. (आश्चर्य) विस्मय, चमत्कार

अजसघोसणा (अयशोघोषणा) अपयश की घोषणा

अजिण्ण नपुं. (अजीर्ण) अजीर्ण, अपचा

अजीव पुं. (अजीव) अजीव

अज्ज अ.(अद्य) आज

अज्झयण नपुं. (अध्ययन) अध्ययन

अज्झाय पुं. (अध्याय) ग्रन्थ का अमुक भाग, पठन, अधिकार विशेष

अट्ठ-अत्थ पुं. नपुं. (अर्थ) धन, वस्तु, पदार्थ, प्रयोजन, तात्पर्य, विषय

अडवि-अडवी स्त्री. (अटवि-वी) अटवी, जंगल, अरण्य

अण अ. नहीं, अभाव

अणंत वि. (अनन्त) अनंत, अपरिमित

अणंतखुत्तो-अणंतक्खुत्तो अ. (अनन्तकृत्वस्) अनंतबार

अणंतरं अ. (अनन्तरम्) तुरन्त, व्यवधान रहित, अव्यवहित

अणगारिया स्त्री. (अनगारिता) साधुपना

अणज्ज-अणारय वि. (अनार्य) अनार्य

अणत्थ-अणट्ठ पुं. (अनर्थ) नुकसान, हानि

अणाबाह वि. (अनाबाध) पीड़ा रहित

अणिय नपुं. (अनीक) सैन्य, लश्कर

अणुओगदार नपुं. (अनुयोगद्वार) सूत्र विशेष

अणुग्गह पुं. (अनुग्रह) उपकार करना, कृपा करनी

अणुपत्त वि. (अनुप्राप्त) प्राप्त, मिला हुआ

अणेग वि. (अनेक) एक से ज्यादा, बहुत

अण्णमण्णं अ. (अन्योन्यम्) परस्पर एक दूसरे को

अण्णया अ. (अन्यदा) कालान्तर, कोई समय में

अण्णह-अण्णहा अ. (अन्यथा) विपरीत रीति से, उलटा, अन्य प्रकार से

अण्णहि-अण्णह-अण्णत्थ अ. (अन्यत्र) दूसरी जगह.

अण्णाणि वि. (अज्ञानिन्) अज्ञानी, मूर्ख

अतुल्ल-अउल्ल वि. (अतुल्य) असाधारण

अत्थ पुं. (अस्त) अस्ताचल पर्वत, नपुं. मृत्यु, अन्तर्धान

अत्थक्कं (अकाण्डम्) अकस्मात्, अकाल

अदुवा-अदुव अ. (अथवा) वा, अथवा

अद्धमागही स्त्री. (अर्धमागधी) अर्धमागधी भाषा

अधम्म-अहम्म पुं. (अधर्म) अधर्म

अन्न सर्व. (अन्य) अन्य, दूसरा

अन्नुन्नरूव (अन्योन्यरूप) परस्पर स्वरूपवाला.

अपि-अवि-पि-वि अ. (अपि) परन्तु, वा, शंका, सत्य

अपुव्व-अउव्व वि. (अपूर्व) नया

अप्प वि. (अल्प) थोड़ा

अप्पकेर वि. (आत्मीय) अपना, स्वकीया, निजीय

अब्भ नपु. (अभ्र) मेघ, बादल

अब्भत्थणा स्त्री. (अभ्यर्थना) प्रार्थना, आदर, सत्कार

अभयकुमार पुं. (अभयकुमार) श्रेणिकपुत्र
अभिभूअ वि. (अभिभूत) पराभूत, पराजित
अमयभूअ वि. (अमृतभूत) अमृत-समान
अमयरस पुं. (अमृतरस) सुधारस
अमर पुं. (अमर) देव
अमरी स्त्री. (अमरी) देवी
अमावासा-अमावस्सा स्त्री. (अमावास्या) अमावस, तिथि विशेष
अमिअ-अमय नपुं. (अमृत) अमृत
अम्मो अ. (दे.) आश्चर्य
अम्हारिस स. (अस्मादृश) हमारे जैसा
अयल पुं. (अचल) पर्वत, वि. स्थिर, निश्चल
अयि-ऐ (अयि) प्रश्न, समाधान, सान्त्वन
अरण्ण रण्ण नपुं. (अरण्य) वन, जंगल
अरइ स्त्री. (अरति) अप्रीति, ग्लानि, सुख का अभाव
अरिह पुं. (अर्हन्) तीर्थंकर
अरिहंत-अरुहंत-अरहंत पुं. (अर्हत्) तीर्थंकर, वि. पूज्य
अरुण पुं. (अरुण) संध्याराग, सूर्य, सूर्य का सारथि
अलं अ-(अलम्) पूर्ण, प्रतिषेध, पर्याप्त निवारण, बस
अलंकिय वि. (अलंकृत) विभूषित, सुशोभित
अलाहि अ. (दे.) पर्याप्त, पूर्ण, प्रतिषेध, अलम्
अलिय नपुं. (अलीक) असत्य वचन
अलोग पुं. (अलोक) अलोक
अवच्च नपुं. (अपत्य) पुत्र
अवज्झाण नपुं. (अपध्यान) दुर्ध्यान, दुष्ट चिन्तन
अवण्णा स्त्री. (अवज्ञा) अपमान, तिरस्कार
अवमाण पुं. (अपमान) अपमान, तिरस्कार
अवरण्ह पुं. (अपराह्ण) दिन का पिछला भाग
अवरा स्त्री. (अपरा) पश्चिम दिशा
अवराह पुं. (अपराध) अपराध, गुनाह
अववाय पुं. (अपवाद) अपवाद, निन्दा
अवस्सं अ. (अवश्य) जरूर, निश्चय
असइ अ. (असकृत्) बार-बार, अनेक बार
असण नपुं. (अशन) भोजन, खाना
असब्भ वि. (असभ्य) खराब, सभ्य नहीं
असाय नपुं. (असात) पीड़ा, दुःख
असार वि. (असार) निरर्थक, सार रहित
असुर पुं. (असुर) असुर

असुरिंद पुं. (असुरेन्द्र) असुरों का इन्द्र
असोगचंद पुं. (अशोकचन्द्र) श्रेणिक का पुत्र
अह अ. (अथ) अब, बाद, अधिकार, प्रश्न, प्रतिवचन=उत्तर
अहव-अहवा अ.(अथवा) अथवा, वा
अहि अ. (अभि) तरफ, पास में
अहि पुं. (अहि) साँप,
अहिअ वि. (अधिक) ज्यादा
अहिण्णु-अहिज्ज वि. (अभिज्ञ) निपुण पण्डित
अहिमन्नु, अहिमज्जु-अहिमञ्जु पु. (अभिमन्यु) अर्जुन का पुत्र
अहियगर वि. (अहितकर) अहित करनेवाला
अहिलास पुं. (अभिलाष) अनुराग, इच्छा
अहुणा अ. (अधुना) सम्प्रति, अब, अभी, इस समय
अहो अ. (अहो) शोक, करुणा, निंदा, विस्मय

आ

आइ पुं. (आदि) प्रथम, प्रधान, पूर्व वगैरह, आद्य,
आइच्च पुं. (आदित्य) सूर्य
आउल वि. (आकुल) व्याकुल, व्याप्त, दु:खी
आउह नपुं. (आयुध) शस्त्र
आउ स्त्री. (आप:) पानी
आउस आउ पुं. नपुं. (आयुष) आयुष्य
आएस पुं. (आदेश) आज्ञा, हुकम,
आगम पुं. (आगम) शास्त्र, सिद्धान्त
आगमत्थ पुं. (आगमार्थ) आगम का अर्थ
आगत वि. (आगत) आया हुआ, उत्पन्न
आगास पुं. नपुं. (आकाश) आकाश
आणंद पुं. (आनन्द) विशेषनाम
आणा स्त्री. (आज्ञा) आदेश, हुकम
आणाल पुं. (आलान) हाथी को बाँधने का खीला.
आयइ स्त्री. (आयति) भविष्यकाल
आयत्त वि. (आयत्त) आधीन
आयरिअ-आइरिअ पुं. (आचार्य) आचार्य
आयव पुं. (आतप) आतप, धूप, प्रकाश
आयार पुं. (आचार) आचार
आयारंग नपुं. (आचाराङ्ग) बारह अंगों में पहला अंग
आरंभ पुं. (आरम्भ) आरंभ करना, शुरुआत करनी, जीववध
आरब्भ सं.भू.कृ. (आरभ्य) प्रारंभ करके
आराहणा स्त्री. (आराधना) उपासना
आलाव पुं. (आलाप) सूत्र का आलावा, संभाषण, बातचीत
आलोयणा स्त्री. (आलोचना) दिखाना, बतलाना, गुरु को अपने *दोष कहना*

आवया स्त्री. (आपद्-दा) आपदा, विपद्, दुःख
आवासय-आवस्सय नपुं. (आवश्यक) नित्यकर्म, धर्मानुष्ठान
आस पुं. (अश्व) घोड़ा
आसण नपुं. (आसन) बैठने का आसन, स्थान
आसन्न वि. (आसन्न) समीप में रहनेवाला, नपुं. नजदीक
आसम पुं. (आश्रम) आश्रम
आसायणा स्त्री. (आशातना) विपरीत वर्तन, अपमान
आसिण पुं. (आश्विन) आश्विन मास
आशीसा (आशीः) आशीर्वाद
आहार पुं. (आधार) आधार, आश्रय, आलम्बन, अधिकरण
आहि पुं. स्त्री. (आधि) मानसिक पीड़ा

इ

इअ-इइ-ति-त्ति अ. (इति) इस तरह, इस प्रकार, समाप्ति
इंद पुं. (इन्द्र) इन्द्र
इंदिय नपुं. (इन्द्रिय) स्पर्शेन्द्रियादि पाँच इन्द्रिय (त्वक्, जिह्वा, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र)
इंदु पुं. (इन्दु) चन्द्र
इक्खु पुं. (इक्षु) ईख, ऊख
इड्ढि-रिड्ढि इद्धि स्त्री. (ऋद्धि) वैभव, ऐश्वर्य, समृद्धि
इणं सर्व. (इदम्) यह
इत्थं अ. (इत्थम्) इस प्रकार
इत्थी, थीस्त्री. (स्त्री) स्त्री, औरत, महिला
इंदियचोर पुं. (इन्द्रियचौर) इन्द्रियरूपी चोर
इंदियवग्ग (इन्द्रियवर्ग) इन्द्रियों का समुदाय, समूह
इम सर्व. (इदम्) यह
इयर वि. (इतर) अन्य, दूसरा, हीन, जघन्य
इयाणि-इयाणिं-दाणि-दाणिं अ. (इदानीम्) संप्रति, अब, इस समय
इव-मिव-पिव-विव-व्व--व-विअ अ. (इव) जैसे, की तरह, जिस प्रकार, उपमा, सादृश्य, तुलना
इस्सरिअ-ईसरिअ नपुं. (ऐश्वर्य) वैभव, प्रभुता, ईश्वरपन
इह-इहं-अ. (इह) यहाँ, इस जगह
इहरहा-इहरा अ. (इतरथा) अन्यथा, अन्य रीति से

ई

ईसर पुं. (ईश्वर) ईश्वर, प्रभु
ईसि-ईसिं-ईसी अ. (ईषद्) थोड़ा, अल्प

उ

उ अ. (उ) निन्दा, तिरस्कार, आमंत्रण, विस्मय सूचक
उअ अ. (दे.) विलोकन करो, देखो
उक्किट्ठ वि. (उत्कृष्ट) उत्कृष्ट.
उग्ग वि. (उग्र), तीव्र, प्रबल, तेज

उचिअ वि. (उचित) योग्य, लायक
उच्च अ. वि. (उच्च-क) उन्नत, ऊँचा
उच्छाह पुं. (उत्साह) उत्साह, उत्कंठा, उत्सुकता
उच्छाहसत्तिं (उत्साह-शक्तिम्) उत्साह और शक्ति को
उज्जअ वि. (उद्यत) तत्पर
उज्जम पुं. (उद्यम) उद्यम, उद्योग, प्रयत्न
उज्जयंत पुं. (उज्जयन्त) गिरनार पर्वत
उज्जाण नपुं. (उद्यान) उद्यान, बगीचा
उज्जोग पुं. (उद्योग) प्रयत्न, उद्यम, उद्योग
उट्ठाय संबं-भू-(उत्थाय) उठकर
उत्तम-उत्तिम वि. (उत्तम) श्रेष्ठ
उत्तर नपुं. (उत्तर) उत्तर, जवाब
उत्तरा स्त्री. (उत्तरा) उत्तर दिशा
उदग-दग नपुं. (उदक) पानी, जल
उदाहु-उयाहु अ. (उताहु) अथवा, या
उप्पल नपुं. (उत्पल) कमल
उम्मत्त वि. (उन्मत्त) उद्धत, उन्माद युक्त, पागल, भूताविष्ट
उवएस (पुं) (उपदेश) उपदेश, शिक्षा, बोध
उवंग पुं. नपुं. (उपाङ्ग) सूत्र विशेष, अंग के अर्थ का विस्तार करनेवाला सूत्र
उवज्जिअ वि. (उपार्जित) पैदा किया हुआ, कमाया हुआ ।
उवज्झाय-ऊज्झाय-ओज्झाय पुं. (उपाध्याय) उपाध्याय, पाठक, अध्यापक
उवरि-उवरिं-अवरि-अवरिं अ. (उपरि) ऊपर, ऊर्ध्व
उवस्सय पुं. (उपाश्रय) उपाश्रय, जैन साधुओं का निवास स्थान
उवहि पुं. स्त्री. (उपधि) माया, उपकरण, साधन
उवाय पुं. (उपाय) उपाय
उसह-उसभ-वसह पुं. (ऋषभ) प्रथम जिनेश्वर का नाम (वृषभ) बैल, साँड

ए

एअ-एग-एक-एक्क वि. (एक) एक
एक्कसरिअं अ- (दे.) शीघ्र, जल्दी, अब
एक्कसि-एक्कसिअं-एक्कइआ-एगया अ. (एकदा) एक बार
एण्हिं-एत्ताहे अ. (इदानीम्) अब, इस बार
एत्थ-अत्थ अ. (अत्र) यहाँ, यहाँ पर
एरावण पुं. (ऐरावण) इन्द्र का हाथी
एरिस वि. (ईदृश) ऐसा, इस प्रकार का
एव-एवं अ. (एवम्) इस प्रकार, इस रीति से
एव-णइ-चेअ-चिअ-च-च्च-च्चिअ-च्चेअ अ. (एव) अवधारण, निश्चय

ओ

ओसढ-ओसह नपुं. (औषध) औषध, दवाई
ओह पुं. (ओघ) समूह, संघात, समुदाय

ओहि-अवहि पुं. स्त्री. (अवधि) मर्यादा, हद, तीसरा अवधिज्ञान (रूपी पदार्थों का बोध करानेवाला अतीन्द्रिय ज्ञान)

क

क सर्व. (किम्) कौन

कअ-कड वि. (कृत) किया हुआ

कइ-कवि पुं. (कवि) कवि

कउरव पुं. (कौरव) कुरु देश में उत्पन्न (राजा), कुरु वंश में उत्पन्न

कउहा स्त्री. (ककुभ्) दिशा

कए-कएण-कएणं अ. (कृते) वास्ते, निमित्त, लिए, के कारण

कंठ पुं. (कण्ठ) गला, घाँटी

कज्ज नपुं. (कार्य) जो किया जाय वह, करने योग्य, प्रयोजन, उद्देश्य

कट्ठ नपुं. (काष्ठ) लकड़ी

कट्ठ नपुं. (कष्ट) दुःख, संकट, कष्ट

कण्ण-पुं. (कर्ण) कर्ण.

कणिट्ठ वि. (कनिष्ठ) छोटा, पुं. छोटा भाई

कण्ह-किण्ह पुं. (कृष्ण) वासुदेव

कत्तार-कत्तु वि. (कर्तृ) कर्ता, करनेवाला

कत्तिअ पुं. (कार्तिक) कार्तिक मास

कत्तो-कुतो कओ, कुदो, कुओ. अ. (कुतः) कहाँ से, किससे

कत्थ-कह-कहि-कहिं अ. (कुत्र-क्व) कहाँ

कत्थइ-अ. (क्वचित्)

कन्ना कन्नगा स्त्री. (कन्यका) कन्या, लड़की, कुमारी

कमल नपुं. (कमल) कमल का फूल

कयग्घ वि. (कृतघ्न) नमकहराम

कम्म पुं. नपुं. (कर्मन्) काम, कर्म, ज्ञानावरणीयादि आठ कर्म

कयण्णु वि. (कृतज्ञ) कृतज्ञ, उपकार को जाननेवाला,

कयली-केली स्त्री. (कदली) केल

कया अ. (कदा) कब

कयाइ-कयाइं कयाई अ. (कदाचित्) किसी समय, कभी

करण नपुं. (करण) इन्द्रिय, कृति, क्रिया, हेतु

करुणाजुअ वि. (करुणायुत) दया से युक्त

कलत्त पुं. नपुं. (कलत्र) स्त्री, भार्या

कला स्त्री. (कला) कला, विज्ञान

कलि पुं. (कलि) कलियुग, कलह, झगड़ा

कल्ल नपुं. (कल्य) कल, गया हुआ या आगामी दिन

कल्लिं-कल्ले अ. (कल्ये) आगामी दिन

कल्लाण नपुं. (कल्याण) कल्याण, शुभ, सुख, मंगल

कवड पुं. नपुं. (कपट) कपट, माया, शाठ्य

कवल पुं. (कवल) कवल, ग्रास

कवि पुं. (कपि) बन्दर

कव्व नपुं. (काव्य) काव्य.

कासइ-कस्सइ अ. (कस्यचित्) किसी का

कहं-कह अ. (कथम्) कैसे, किस तरह ? क्यों, किस लिए ?
कहा स्त्री. (कथा) कथा, कहानी,
काउस्सग्ग पुं. (कायोत्सर्ग) काया का त्याग, काउसग्ग
काम पुं. (काम) इच्छा
कामधेणु स्त्री. (कामधेनु) कामधेनु, गाय
कामसम वि. (कामसम) काम के समान
कायव्व वि. (कर्तव्य) करने योग्य
काया स्त्री. (काया) देह
कारण न. (कारण) कारण.
काल पुं. (काल) काल, समय
कालसप्प पुं (कालसर्प) कालरूपी सर्प
किअंत वि. (कियत्) कितना
किंतु अ. (किन्तु) परन्तु, लेकिन
किंनर पुं. (किन्नर) किन्नर, देवविशेष
किंपि, किमवि, अ. (किमपि) कुछ भी
किच्च नपुं. (कृत्य) करने योग्य, कर्तव्य, फर्ज
किण्ह वि. (कृष्ण) काला, श्यामवर्ण का
किन्नरी स्त्री. (किन्नरी) व्यंतर देवी
किर-इर-हिर-किल अ. (किल) संभावना, निश्चय, सत्य, तिरस्कार दर्शक
किवण वि. (कृपण) लोभी, गरीब, रंक, दीन
किवा स्त्री. (कृपा) दया
कुंभआर-कुंभार पुं. (कुम्भकार) कुम्हार
कुगइ स्त्री. (कुगति) अशुभ गति (नरक और तिर्यंचगति)
कुच्छि पुं. स्त्री. (कुक्षि) उदर, पेट
कुडुंबि वि. (कुटुम्बिन्) कुटुम्बवाला, गृहस्थ
कुढार पुं. (कुठार) कुल्हाड़ा, फरसा
कुमार-कुमर पुं. (कुमार) कुमार
कुमारत्तण नपुं. (कुमारत्व) कुमारपना, कुमारावस्था
कुमारवाल-कुमरवाल पुं. (कुमारपाल) कुमारपाल राजा
कुरु पुं. बहुव. (कुरु) देश का नाम
कुल पुं. नपुं. (कुल) कुल, वंश
केणइ अ. (केनचित्) किसी के द्वारा
केरिसी स्त्री. (कीदृशी) किस प्रकार की
केवल पुं. (केवल) केवलज्ञान, वि. असाधारण, असहाय
केवलं अ. (केवलम्) केवल, मात्र, अकेला, अनुपम, अद्वितीय
केवलि पुं. (केवलिन्) केँवली, केवलज्ञानी, सर्वज्ञ
केसरि पुं. (केसरिन्) सिंह
कोवसम वि. (कोपसम) क्रोध के समान
कोसा स्त्री. (कोश्या) वेश्या का नाम
कोसलिअ वि. (कौशलिक) अयोध्या में उत्पन्न
कोह पुं. (क्रोध) क्रोध

ख

खंड पुं. नपुं. (खण्ड) टुकड़ा पृथ्वी का अमुक भाग ।
खंडिय पुं. (खण्डिक) छात्र, विद्यार्थी

खंति स्त्री. (क्षान्ति) क्षान्ति, क्षमा, उपशम, सहनशीलता ।
खंध पुं. (स्कन्ध) कन्धा
खग्ग पुं. (खड्ग) तलवार
खण पुं. (क्षण) क्षण, कालविशेष
खमा स्त्री. (क्षमा) क्षमा, क्रोध का अभाव, शान्ति, धीरज, पृथ्वी
खमासमण पुं. (क्षमाश्रमण) साधु, क्षमाप्रधान मुनि
खल वि. (खल) दुष्ट, अधम, दुर्जन
खलु अ. (खलु) = अवधारणा, निश्चय, पुनः, फिर, पादपूर्ति और वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है ।
खलिअ (वि.) (स्खलित) पड़ा हुआ, भूला हुआ ।
खलिअ नपुं अपराध
खसर पुं. नपुं. (दे. कसर) रोग विशेष, खस, खाज
खिप्पं अ. (क्षिप्रम्) शीघ्र, तुरन्त, जल्दी
खीण झीण-छीण वि. (क्षीण) क्षय प्राप्त, कंगाल, जीर्ण, दुर्बल
खीर-छीर नपुं. (क्षीर) दूध
खु-हु- अ. (खलु) निश्चय, वितर्क, अवधारण, संभावना, आश्चर्य, विस्मय, संदेह
खुड्डओ (क्षुल्लक) छोटा साधु
खेत्त नपुं. (क्षेत्र) आकाश, जमीन, खेत

ग

गइ स्त्री. (गति) गति, आधार, चलन, देवादि चार गति
गंगा स्त्री (गङ्गा) नदी का नाम
गंभीर वि. (गम्भीर) गंभीर, गहरा,
गण पुं. (गण) समूह, समुदाय, यूथ, थोक
गणहर पुं. (गणधर) गणधर, गणी
गणि पुं. (गणिन्) गणधर, गणी
गब्भ पुं. (गर्भ) गर्भ
गयंद-गइंद पुं. (गजेन्द्र) उत्तम हाथी, ऐरावण
गयण नपुं. (गगन) आकाश
गय पुं. (गज) हाथी
गरिट्ठ वि. (गरिष्ठ) ज्यादा बड़ा
गरिहा स्त्री. (गर्हा) निंदा, घृणा जुगुप्सा
गरुल पुं. (गरुड़) पक्षिराज, गरुड़ पक्षी, यक्ष विशेष, भवनपति देवों की एक जाति, सुपर्णकुमार देवों का इन्द्र ।
गव्व पुं. (गर्व) मान, अभिमान, अहंकार
गव्विअ वि. (गर्वित), अभिमानी, गर्विष्ठ
गहिअ-गहीअ वि. (गृहीत) उपात्त, स्वीकृत
गाण नपुं. (गान) गीत, गाना
गाम पुं. (ग्राम) गाम
गावी (गौः) गाय
गिरि पुं. (गिरि) पर्वत
गिला (ग्लै) ग्लान होना, बीमार होना
गिह नपुं. (गृह) घर

गिहासत्त वि. (गृहासक्त) घर में आसक्त
गीयत्थ-ड्ढ पुं. (गीतार्थ) विद्वान जैन साधु
गुंजिअ वि. (गुञ्जित) गुनगुन आवाज
गुण पुं. (गुण) गुण
गुणड्डाण नपुं. (गुणस्थान) गुणों का स्वरूप विशेष। मिथ्यादृष्टि आदि 14 गुणस्थान
गुणि वि. (गुणिन्) गुणवाला
गुरु पुं. (गुरु) गुरु, पूज्य
गुरुअ-गरुअ वि. (गुरुक) भारी, बोझिल
गुरुया स्त्री. (गुरुता) बड़प्पन
गेह नपुं. (गेह) घर
गोणो (गौः) बैल
गोयम पुं. (गौतम) भगवान महावीर के आद्य गणधर.
गोवाल पुं (गोपाल) अहीर, गौ पालनेवाला, ग्वाला
गोविसाण नपुं. (गोविषाण) गाय का सींग

घ

घड पुं. (घट) घड़ा, कुम्भ, कलश
घण पुं. (घन) मेघ, बादल
घय नपुं. (घृत) घी
घर नपुं. (गृह) घर

च

च-य-अ. अ. (च) और, तथा, पुनः, फिर, अवधारण, निश्चय, पादपूर्ति अर्थ में
चइत्त *पुं. (चैत्र) चैत्रमास*
चउगइभवे (चतुर्गति भवे) चार गतिरूप संसार में
चंपअ. पुं (चम्पक) चंपक फूल का वृक्ष
चंद-चंद्र पुं. (चन्द्र) चन्द्र
चंदण नपुं (चन्दन) चन्दन
चक्खु पुं. नपुं (चक्षुष्) आँख, नेत्र, चक्षु.
चक्कवट्टि पुं. (चक्रवर्तिन्) चक्रवर्ती छह खंड का अधिपति
चक्कवाय पुं. (चक्रवाक) चक्रवाक पक्षी
चच्चर नपुं. (चत्वर) चौंटा, बाजार
चत्तारि प्र.द्वि.ब. (चत्वारि) चार
चरम-चरिम वि. (चरम) अन्तिम, पर्यन्तवर्ती, अन्त का
चरण नपुं. (चरण) चारित्र
चरणधण नपुं. (चरणधन) चारित्र संयम, व्रत, नियम, चारित्ररूपी धन.
चरित्त नपुं. (चरित्र) चरित्र, आचरण, स्वभाव, प्रकृति.
चरित्त-चारित्त नपुं. (चारित्र) संयम, व्रत, विरति, सद्वृत्ति
चलण पुं. (चरण) पाँव, पैर, पाद
चवल वि. (चपल) चंचल, अस्थिर
चवेडा-चमेडा स्त्री. (चपेटा) तमाचा, थप्पड़
चाइ वि. (त्यागिन्) दानी, त्याग करनेवाला
चिआ स्त्री. (चिता) चिता, चेह
चिंता स्त्री. (चिन्ता) चिन्ता विचार
चिंध-चिण्ह नपुं. (चिह्न) चिन्ह, *लांछन, निशानी.*

चिरं अ. (चिरम्) दीर्घकाल तक
चीवंदण नपुं. (चैत्यवंदन) चैत्य को नमस्कार
चेइअ-चइत्त नपुं. (चैत्य) व्यन्तरायतन, जिनालय, मंदिर, मूर्ति
चोज्ज नपुं. (चोद्य) प्रश्न, पृच्छा आश्चर्य, अद्‌भुत
चोर पुं. (चौर) चोर
चोरिय नपुं. (चौर्य) चोरी

छ

छण पुं. *(क्षण) उत्सव*
छप्पअ पुं. (षट्पद) भ्रमर, भौंरा
छाया स्त्री. *(छाया) आतप का अभाव*, छाया, कान्ति, प्रतिबिंब
छाही स्त्री. (छाया) छाया.
छिंछई स्त्री. (पुंश्चली) कुलटा
छुहा स्त्री. (क्षुधा) क्षुधा, भूख, बुभुक्षा
छुहा स्त्री. (सुधा) अमृत
छेयगंथ पुं. (छेदग्रन्थ) निशीथादि छह सूत्र

ज

ज स. (यत्) जो, जो कोई
जइ पुं (यति) यति, साधु
जइ अ. (यदि) यदि, जो
जइण वि. (जैन) जैन, जिनभक्त, जिनसंबंधी
जइणधम्म पुं. (जैनधर्म) जिनेश्वर का धर्म
जउँणा स्त्री, (यमुना) नदी का नाम
जओ-जत्तो-जदो अ. (यतः) जहाँ से, जिससे, क्योंकि, कारण कि
जं अ. (यत्) क्योंकि, कारण कि
जं किंचि अ. (यत्किञ्चित्) जो कुछ, जो कोई
जंत नपुं. (यन्त्र) यन्त्र, मशीन
जंतु पुं. (जन्तु) प्राणी, जीव
जंबूकुमार पुं. (जम्बूकुमार) विशेषनाम
जंबूदीव-जंबुद्दीव पुं. (जम्बूद्वीप) द्वीप का नाम
जक्ख पुं. *(यक्ष) यक्ष*
जडिल *पुं. (जटिल) तापस, जटाधारी*
जण पुं. (जन) मनुष्य, मानव, लोग, व्यक्ति, लोक, समुदाय
जणद्दण पुं. (जनार्दन) वासुदेव का नाम
जणय पुं. (जनक) पिता, बाप
जणवय पुं. (जनपद) देश, राष्ट्र, देशनिवासी, जनसमूह
जत्ता स्त्री. (यात्रा) यात्रा, तीर्थयात्रा
जम्म पुं. (जन्मन्) जन्म, उत्पत्ति
जम्मणं पुं. (जन्मन्) जन्म, उत्पत्ति
जय पुं. (जय) जय, जीत, शत्रु का पराभव
जय-जग नपुं. (जगत्) जगत, दुनिया, संसार
जया अ. (यदा) जब
जराकुमार पुं. (जराकुमार) वसुदेव का पुत्र

जरागहिअ वि. (जरागृहीत) बूढ़ा
जरादेवी स्त्री. (जरादेवी) वसुदेव की स्त्री
जल नपुं. (जल) जल, पानी
जलण पुं. (ज्वलन) अग्नि
जलपूरीकओ=(जलपूरीकृतः) पानी से भरा हुआ।
जलोयर नपुं. (जलोदर) जलोदर, रोगविशेष, जलन्धर, जठराम
जस पु. (यशस्) । कीर्ति प्रसिद्धि
जह-जहा अ. (यथा) जिस तरह से, जैसे
जहसत्ति अ. (यथाशक्ति) शक्ति अनुसार
जहि-जहिं-जह-जत्थ अ. (यत्र) जहाँ
जा-जाव अ. (यावत्) जहाँ तक, मर्यादा, परिमाण, निश्चय, अवधि
जाम पुं. (याम) प्रहर
जामायर-जामाउ पुं. (जामातृ) जामाता, लड़की का पति
जाय वि. (जात) उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो
जायव पुं. (यादव) यदुवंशीय, यदुवंश में उत्पन्न
जाया स्त्री. (जाया) स्त्री, औरत
जारिस वि. (यादृश) जैसा, जिस प्रकार का
जाल नपुं. (जाल) जाल, पाश
जावज्जीव-जाजीव नपुं (यावज्जीव) जीवन के अंत तक
जिअलोग पुं. (जीवलोक) दुनिया
जिइंदिय वि. (जितेन्द्रिय) जितेन्द्रिय
जिण पुं. (जिन) जिन, रागद्वेषरहित
जिणबिंब नपुं. (जिनबिम्ब) जिनमूर्ति
जिणंद-जिणिंद पुं. (जिनेन्द्र) जिनेन्द्र, तीर्थंकर
जिणेसर-जिणीसर पुं. (जिनेश्वर) जिनेश्वर भगवान तीर्थंकर
जिब्भा-जीहा (स्त्री.) (जिह्वा) जीभ
जीव पुं. (जीव) जीव
जीवण नपुं. (जीवन) जीवन
जीवदया स्त्री. (जीवदया) जीवदया
जीवदयामय (जीवदयामय) जीवदयारूप
जीवलोग पुं. (जीवलोक) दुनिया, जगत
जीवहिंसा स्त्री. (जीवहिंसा) जीवों का नाश
जीवाइ पुं. (जीवादि) जीव, अजीव वगैरह नवतत्त्व
जीवाउ पुं. नपुं. (जीवातु) जिलानेवाला औषध, जीवनौषध
जीवाजीवाइ (जीवाजीवादि) जीव-अजीवादि नौ पदार्थ
जीविअ नपुं (जीवित) जीवन, जिन्दगी
जीविअंत पुं. (जीवितान्त) प्राण का नाश
जुत्त वि. (युक्त) उचित, योग्य, संगत
जुद्ध नपुं (युद्ध) युद्ध, लड़ाई
जुवइपिया (युवतिपिता) स्त्री का पिता
जेट्ठ-जिट्ठ वि. (ज्येष्ठ) ज्येष्ठ

जोग पुं. (योग) व्यापार, योग
जोगि पुं. (योगिन्) जोगी
जोग्ग वि. (योग्य), योग्य, उचित लायक
जोण्हा स्त्री. (ज्योत्स्ना) चन्द्र-प्रकाश
जोयणपरिमंडल (योजनपरिमण्डल) गोलाकार योजन प्रमाण
जोव्वण नपुं (यौवन) तारुण्य, जवानी
जोह पुं. (योध) सुभट, योद्धा

झ

झडत्ति-झडित्ति-झत्ति अ. (झटिति) शीघ्र, जल्दी, तुरंत
झाण नपुं. (ध्यान) ध्यान
झुणि पुं. (ध्वनि) शब्द

ट

टिअ वि. (स्थित) खड़ा रहा हुआ

ण

ण, अण्-णाइ अ. (न, नकार, नहीं, मत, निषेधार्थक अव्यय
णउण-णउणो-णउणा-णउणाइ अ. (न पुनः) फिर नहीं
णै अ. (दे.) वाक्यालंकार
णत्थि अ. (नास्ति) अभावसूचक अव्यय
णमो अ. (नमस्) नमस्कार
णवर-णवरं-णवरि अ. (दे.) केवल, फक्त
णाम अ. (नाम) संभावना, आमन्त्रण, अनुज्ञा, अनुमति
णायव्व वि. (ज्ञातव्य) जानने योग्य
णायार-णाउ वि. (ज्ञातृ) जानकार
णिच्चं अ. (नित्यम्) निरन्तर, हमेशां, सर्वदा
णिच्चसा अ. (नित्यशस्) निरन्तर सर्वदा
णु अ. (हनु) वितर्क, प्रश्न, संशय
णुणं, णुण अ. (नूनम्) निश्चय, तर्क, प्रयोजन, प्रश्न
णेय (वि.) (ज्ञेय) जानने लायक
णो अ. (नो) निषेध, प्रतिषेध, अभाव

त

त स. *(तत्) वह*
तओ-तत्तो-तए-तदो-तो अ. (ततः) उससे, उस कारण से, बाद में
तणु स्त्री. (तनु) शरीर
तत्त नपुं (तत्त्व) तत्त्व, रहस्य
तत्तनाण नपुं. (तत्त्वज्ञान) तत्त्वज्ञान
तत्तवत्ता स्त्री. (तत्त्ववार्ता) तत्त्वों की बात
तया-तइआ-ता-तो अ. (तदा) उस समय
तरु पुं. (तरु) वृक्ष, पेड़
तलाय नपुं. (तडाग) तालाब सरोवर.
तव पुं. (तपस्) तप
तवस्सि-तवंसि पुं. (तपस्विन्) तपस्वी
तवोवण नपुं. (तपोवन) आश्रम
तह-तहा अ. (तथा) उसी तरह

तहवि अ. (तथापि) तो भी
तहि-तहिं--तह-तत्थ- अ. (तत्र) यहाँ, उसमें
ता-ताव अ. (तावत्)
ता अ. (तर्हि) तो, उस समय, तब
तारग वि. (तारक) तारनेवाला, पार उतारनेवाला, नपुं. तारा
तारा स्त्री. (तारा) नक्षत्र, तारा
ताव पुं. (ताप) ताप, संताप, पीड़ा
तावस पुं. (तापस) तापस, योगी, संन्यास विशेष
तारिस वि. (तादृश) वैसा, उस तरह का
तिअस पुं. (त्रिदश) देव
तिक्ख-तिण्ह वि. (तीक्ष्ण) तेज, तीखा
तिण्हा स्त्री. (तृष्णा) तृष्णा, स्पृहा, वांछा, पिपासा
तित्थ-तूह नपुं. (तीर्थ) तीर्थ, पवित्र स्थान
तित्थयर पुं. (तीर्थंकर) तीर्थंकर
तित्थुद्धार पुं. (तीर्थोद्धार) तीर्थ का उद्धार
तिमिर नपुं. (तिमिर) आँख का रोग, अन्धकार, अज्ञान
तिलअ-ग पुं. (तिलक) तिलक
तिविह वि. (त्रिविध) तीन प्रकार से
तिव्व वि. (तीव्र) तीक्ष्ण, प्रबल, प्रचण्ड, उत्कट,
तिसला स्त्री. (त्रिशला) प्रभु वीर की माता
तिहि पुं. स्त्री. (तिथि) तिथि, दिन
तिहुअण नपुं. (त्रिभुवन) तीन लोक
तु-उ अ. (तु) समुच्चय, अवधारण, निश्चय, पादपूरण, भेद, विशेषण, कारण ।
तेयंसि पुं. (तेजस्विन्) तेजस्वी

थ

थिअ वि. (स्थित) रहा हुआ
थिर वि. (स्थिर) निश्चल, निष्कम्प
थु अ. (दे.) तिरस्कार
थुइ स्त्री. (स्तुति) थोय, स्तुति, स्तवन, गुण कीर्तन
थूण-थेण पुं. (स्तेन) चोर
थेर वि. (स्थविर) वृद्ध, बूढ़ा, वृद्ध जैन साधु
थोक्क-थोव-थेव वि. (स्तोक) अल्प, थोड़ा
थोत्त नपुं. (स्तोत्र) स्तोत्र, स्तुति, स्तव

द

दइव-व्व-देव-व्व नपुं. (दैव) दैव, भाग्य, अदृष्ट, प्रारब्ध, पूर्वकृत-कर्म
दंसण नपुं. (दर्शन) चक्षु, देखना, सम्यग्दर्शन, मत, सामान्य ज्ञान, धर्मशास्त्र
दंसणमेत्त-दंसणमत्त नपुं. (दर्शनमात्र) देखने मात्र से
दढ् वि. (दृढ) मजबूत, निश्चल बलवान, स्थिर, कठोर, कठिन
दत्त-दिण्ण वि. (दत्त) दिया हुआ

दप्प पुं. (दर्प) अभिमान
दया स्त्री. (दया) अनुकंपा, करुणा, कृपा
दयालु *वि. (दयालु) दयावान*
दव्व-दविअ नपुं. (द्रव्य) द्रव्य, संपत्ति
दव्वलिंग नपुं. (द्रव्यलिंग) मुनि का वेष
दव्वलुद्ध वि. (द्रव्यलुब्ध) द्रव्य में लोभी
दहि नपुं. (दधि) दही
दाण नपुं. (दान) दान
दाणव पुं. (दानव) असुर, दैत्य
दायार-दाउ वि. (दातृ) दाता, देनेवाला
दार पुं. नपुं. (दार) स्त्री, महिला
दाढा स्त्री. (दंष्ट्रा) दाढ़ा
दाहिणपास नपुं. (दक्षिणपार्श्व) दाँयी तरफ
दाहिणा-दक्खिणा स्त्री. (दक्षिणा) दक्षिण दिशा
दाहिणिल्ल-दक्खिणिल्ल वि. (दक्षिणात्य) दक्षिण दिशा का
दिंत वि. (ददत्) देता हुआ
दिक्खा स्त्री. (दीक्षा) दीक्षा, संयम
दिघ-दीह-दीहर वि. (दीर्घ) दीर्घ, लंबा
दिट्ठि स्त्री. (दृष्टि) नेत्र, आँख, नजर
दिवस-दिवह पुं. नपुं (दिवस) दिन
दिवा-दिआ अ. (दिवा) दिन में
दिसा स्त्री. (दिश्-दिशा) पूर्वादि दिशा
दीण वि. (दीन) गरीब
दीणत्तण नपुं. (दीनत्व) गरीबपना
दीव पुं. (दीप) दिया
दुआर-दार-वार नपुं. (द्वार) दरवाजा
दुक्कर वि. (दुष्कर) कष्टसाध्य
दुक्ख-दुह नपुं. (दुःख) दुःख
दुज्जण *पुं. (दुर्जन) दुर्जन, दुष्ट पुरुष*
दुज्जाहण *पुं. (दुर्योधन) नाम*
दुद्ध नपुं. (दुग्ध) दूध
दुरिय नपुं. (दुरित) पाप
दुस्समसमय-दूसमसमय पुं. (दुःषमसमय) दुःषमकाल
दुहि-दुक्खि वि. (दुःखिन्) दुःखी
दुहिअ-दुक्खिअ वि. (दुःखित) पीड़ित, दुःखी।
दुहिआ-धूआ-धीआ स्त्री. (दुहितृ) बेटी
दूर नपुं. (दूर) दूर
देव पुं. (देव) देव
देववंदण नपुं. (देववन्दन) देववंदन
देवाणंदा स्त्री. (देवानंदा) भगवान महावीर की माता
देवालय पुं. (देवालय) देव का मंदिर
देविंद पुं. (देवेन्द्र) देवों का इन्द्र
देवी स्त्री. (देवी) देवी, उत्तम स्त्री
देस पुं. (देश) देश, जनपद
देसअ स्त्री. (देशना) देशना, उपदेश
देसविरइ स्त्री. (देशविरति) देशविरति, अणुव्रत, श्रावक धर्म
देह पुं. नपुं. (देह) शरीर
दोरिआ स्त्री. (दवरिका) रस्सी
दोवई स्त्री. (द्रौपदी) पांडवों की स्त्री
दोस पुं. (दोष) दोष, दूषण, दुर्गुण, अपराध, पाप
द्रह पुं. द्रह, ह्रद, बड़ा जलाशय

ध

धअ-झअ पुं. (ध्वज) ध्वज, ध्वजा

धण नपुं. (धन) धन, वित्त, द्रव्य

धणवंत वि. (धनवान्) धनिक, धनवान

धणहरण न. (धनहरण) धन का हरण

धन्न नपुं. (धान्य) धान्य, अनाज, अन्न

धन्न वि. (धन्य) प्रशंसा योग्य

धम्म पुं. (धर्म) धर्म, फर्ज, शुभकर्म, पुण्य, सुकृत

धम्मिअ पुं.(धार्मिक) धर्म तत्पर, धर्मपरायण

धम्मिट्ठ वि. (धर्मिष्ठ) अतिशय धार्मिक

धवल वि. (धवल) सफेद, श्वेत

धायर-धाउ वि. (धातृ) विधाता, ब्रह्मा

धि-धी अ. (धिक्) निंदा, धिक्कार

धिइ स्त्री. (धृति) धैर्य, धीरज

धिद्धि-धिद्धि-छिछि अ. (धिक्-धिक्) धिक्-धिक्

धिरत्थु (धिगस्तु) धिक्कार हो

धुत्त वि. (धूर्त) ठग, वञ्चक, प्रतारक

धेणु स्त्री. (धेनु) गाय

न

न अ. नपुं. नहीं

नई स्त्री. (नदी) नदी

नंदिसुत्त नपुं. (नन्दिसूत्र) एक आगमविशेष है।

नक्क पुं. (दे) नाक, नासिका

नक्खत्त नपुं. (नक्षत्र) नक्षत्र, तारा

नग्ग वि. (नग्न) नग्न, वस्त्र रहित

नट्टअ पुं. (नर्त्तक) नट

नड पु. (नट) नट

नणंदा स्त्री. (ननान्द) नणंद

नत्थि अ. (नास्ति) अभावसूचक अव्यय

नमो अ. (नमस्) नमस्कार, नमन

नमोक्कार-नमुक्कार पुं. (नमस्कार) नमन, प्रणाम

नय पुं. (नय) नय, नीति

नयर नपुं. (नगर) नगर

नयसहस्स (नयसहस्र) हजार नीति

नरय-निरय पुं. (नरक), नारकी नरकस्थान

नरवइ पुं. (नरपति) राजा

नरिंद पुं. (नरेन्द्र) राजा

नव वि. (नव) नवुं

नव द्वि. ब. (नवन्) नौ संख्या

नहयल पुं. नपुं. (नभस्तल) आकाशतल

नाण नपुं. (ज्ञान) ज्ञान

नाणि वि. (ज्ञानिन्) ज्ञानवान, ज्ञानी

नाम अ. (नाम) वाक्यालंकार संभावना, आमन्त्रण, संबोधन

नाय पुं. (न्याय) न्याय, नीति

नायउत्त पुं. (ज्ञातपुत्र) प्रभु महावीर का नाम

नायमग्ग पुं. (न्यायमार्ग) नीति- मार्ग

नारी स्त्री. (नारी) स्त्री

नावा स्त्री. (नौ) नौका, जहाज

नास (पु.) (नाश) नाश.

निअम पुं. (नियम) निश्चित ली हुई प्रतिज्ञा

निअसीलबलेण (निजशीलबलेन) अपने शील के बल से
निंदा स्त्री. (निन्दा) बुराई
निक्कारण वि. (निष्कारण) बिना कारण, अहेतुक ।
निगम पुं. (निगम) व्यापार प्रधान स्थान, व्यापारी समूह
निग्गुण वि. (निर्गुण) गुणरहित.
निच्च वि. (नित्य) अविनश्वर, शाश्वत, निरंतर, हमेशा
निच्चल वि. (निश्चल) स्थिर, अचल, दृढ़
निज्जरा स्त्री. (निर्जरा) कर्म का क्षय
निट्ठुर वि. (निष्ठुर) निष्ठुर, निर्दय पुरुष
निद्दय वि. (निर्दय) दयारहित
निप्फल वि. (निष्फल) निरर्थक फलरहित
निब्बंध पुं. (निर्बन्ध) आग्रह
निबद्ध वि. (निबद्ध) बँधा हुआ
निम्मलयर वि. (निर्मलतर) अतिशय निर्मल
निमेस पुं. (निमेष) निमीलन, अक्षिसंकोच
निय वि. (निज) अपना
निययकुल न. (निजककुल) स्वकुल का
नियववसायाणुरूवं न. (निजव्यवसायानुरूपम्) स्व व्यवसाय के समान
नियाण नपुं. (निदान) नियाणा, कारण, हेतु

निव पुं. (नृप) राजा
निवइ पुं. (नृपति) राजा
निवास पुं. (निवास) वास-स्थान, डेरा
निव्वाण नपुं. (निर्वाण) मोक्ष
निव्वुइ स्त्री. (निर्वृत्ति) मोक्ष
निसा स्त्री. (निशा) रात्रि
निहस पुं. (निकष) कसौटी
निहि वि. (निधि) खजाना, भंडार चक्रवर्ती राजा की संपत्ति विशेष ।
नीइ स्त्री. (नीति) न्याय
नीइसत्थ न. (नीतिशास्त्र), नीतिशास्त्र
नीसंद पुं. (निःस्यन्द) रस-स्तुति रस का झरन
नेउर-निउर-नुउर नपुं. (नूपुर) नूपुर, स्त्री के पाँव का नूपुर
नेत्त पुं. नपुं. (नेत्र) नेत्र, आँख
नेमि पुं. (नेमि) बाईसवें मे तीर्थंकर
नेमित्तिअ वि. (नैमित्तिक) निमित्त शास्त्र जाननेवाला
नेह पुं. (स्नेह) स्नेह राग

प

पइ अ. (प्रति) व्याप्ति, आभिमुख्य, विरोध, सामीप्य
पइट्ठा स्त्री. (प्रतिष्ठा) प्रतिष्ठा, कीर्ति, आदर
पइण्णा स्त्री. (प्रतिज्ञा) प्रतिज्ञा
पइदिण नपुं. (प्रतिदिन) सदा, हर रोज

पइन्न-ग पुं. नपुं. (प्रकीर्ण-क) सूत्र विशेष । वि. विपुल, विस्तृत, बिखरा हुआ

पउण वि. (प्रगुण) पटु, होशियार

पए अ. (प्रगे) प्रभात में

पओग पुं. (प्रयोग) प्रयोग, जीव का व्यापार

पंकअ नपुं. (पङ्कज) कमल

पंजर नपुं. (पञ्जर) पिंजरा

पंडव पुं. (पाण्डव) पाण्डु, राजा के पुत्र, पाण्डव

पंडिअ पुं. (पण्डित) पंडित, विद्वान्, बुद्धिमान्

पक्क-पिक्क वि. (पक्क) पका हुआ

पक्कलो वि. (पक्वल) समर्थ

पक्ख पुं. (पक्ष) पक्ष, आधा माह, पखवारा

पक्खि पुं. (पक्षिन्) पक्षी

पच्चक्ख वि. (प्रत्यक्ष) साक्षात्, आँख के सामने

पच्चक्खाण नपुं. (प्रत्याख्यान) नियम, त्याग करने की प्रतिज्ञा

पच्चूस-ह पुं. (प्रत्यूष) प्रभात काल

पच्चोणी स्त्री. (दे.) सम्मुख आना

पच्छ वि. (पथ्य) हितकारी वस्तु

पच्छा अ. (पश्चात्) बाद में, अनन्तर, पीछे का

पच्छायाव पुं. (पश्चाताप) अनुताप, पछतावा

पज्जवसाण नपुं. (पर्यवसान) अंत, अवसान, किनारा

पज्जाय पुं. (पर्याय) पर्याय, रूपान्तर

पज्जुण्ण पुं. (प्रद्युम्न) कामदेव, विष्णु का पुत्र

पडिक्कमण नपुं. (प्रतिक्रमण) प्रतिक्रमण, आवश्यक क्रिया, पाप से पीछे हटना

पडिमा स्त्री. (प्रतिमा) मूर्ति, प्रतिबिम्ब

पडियार पुं. (प्रतिकार) इलाज, बदला

पडिवक्ख पुं. (प्रतिपक्ष) शत्रु

पडिवया-पाडिवया स्त्री. (प्रतिपद्) गिरना

पढण नपुं. (पठन) पढ़ना, अभ्यास

पढम वि. (प्रथम) प्रथम, आद्य, पहला

पणाम पुं. (प्रणाम) नमस्कार

पण्ण नपुं. (पर्ण) पत्र, पत्ती

पण्णा स्त्री. (प्रज्ञा) बुद्धि

पण्ह पुं. (प्रश्न) प्रश्न, पृच्छा

पत्थिअ वि. (प्रार्थित) 1) जिसके पास प्रार्थना की गई हो । 2) जिस चीज की प्रार्थना की गई हो वह

पभाव-पहाय पुं. नपुं. (प्रभात) प्रभात

पमाय पुं. (प्रमाद) प्रमाद, भूल, बेदरकारी

पय पुं. नपुं. (पद) पद, शब्दसमूह, विभक्ति अंतवाला पद

पयंग पुं. (पतङ्ग) शलभ

पयत्थ पुं. (पदार्थ) पदार्थ, पद का अर्थ, तत्त्व, वस्तु-चीज

पया स्त्री. (प्रजा) प्रजा, संतान

पयास पुं. (प्रकाश) प्रकाश

पयासग वि. (प्रकाशक) प्रकाश करनेवाला

पर वि. (पर) अन्य, श्रेष्ठ, तत्पर
परंपरा स्त्री. (परम्परा) परम्परा, अनुक्रम, हार, प्रवाह।
परक्कम-पराकम पुं. नपुं. (पराक्रम) बल, शक्ति, सामर्थ्य
परदार पुं. नपुं. (परदार) परस्त्री
परदारा स्त्री. (परदार) परस्त्री
परप्पर-परुप्पर-परोप्पर वि. (परस्पर) अन्योन्य, एक दूसरे को
परम वि. (परम) उत्कृष्ट, श्रेष्ठ
परमपय नपुं. (परमपद) मोक्ष, उत्कृष्ट पद
परलोयहिअ वि. (परलोकहित) परलोक में हित करनेवाला
पराभव पुं. (पराभव) पराभव, हार जाना
परिक्खण नपुं. (परीक्षण) परीक्षा करना
परिच्चत्त-परिचत्त वि. (परित्यक्त) परित्याग करना, छोड़ देना
परिणय वि. (परिणत) परिपक्व
परिणीय वि. (परिणीत) जिसका विवाह हुआ हो वह, विवाहित
परिमाण नपुं. (परिमाण) मान, माप
परिसर पुं. (परिसर) समीप, नजदीक
परिसा स्त्री. (पर्षद्-परिषद्) सभा, पर्षद्, परिवार
परिहा स्त्री. (परिखा) खाई
परोवयार पुं. (परोपकार) परोपकार, दूसरे की भलाई
पवण पुं. (पवन) पवन, वायु
पवयण नपुं. (प्रवचन) आगम, सिद्धान्त
पवासि–सु-पावासु पुं. (प्रवासिन्) मुसाफिर
पविट्ठ वि. (प्रविष्ट) घुसा हुआ प्रवेश किया हुआ
पवित्तया स्त्री. (पवित्रता) पवित्रता, पवित्रपना
पव्वज्जा स्त्री. (प्रव्रज्या) दीक्षा
पव्वय पुं. (पर्वत) पर्वत
पसत्त पुं. (प्रसक्त) प्रसक्त, आसक्त, चिपका हुआ
पसाय पुं. (प्रसाद) प्रसन्नता, खुशी, दया, कृपा, मेहरबानी
पसु पुं. (पशु) पशु
पहार पुं. (प्रहार) प्रहार
पहाव पुं. (प्रभाव) प्रभाव, शक्ति, सामर्थ्य
पहावग वि. (प्रभावक) प्रभावक, उन्नति करनेवाला, प्रभावना करनेवाला
पहिअ पुं. (पान्थ-पथिक) मुसाफिर
पहु पुं. (प्रभु) प्रभु, स्वामी, परमेश्वर, परमात्मा, मालिक, नायक
पाइअ-पागय वि. (प्राकृत) प्राकृत भाषा, स्वाभाविक, नीच, साधारण
पाइयकव्व नपुं. (प्राकृतकाव्य) प्राकृत काव्य
पाइअवागरण न. (प्राकृत व्याकरण) प्राकृतव्याकरण.
पाउस पुं. (प्रावृष्) वर्षाऋतु, चातुर्मास
पाढसाला स्त्री. (पाठशाला) पाठशाला
पाण पुं. नपुं. (प्राण) इन्द्रिय वगैरह दस प्राण (५ इन्द्रिय, 3 बल, श्वासोश्वास आयुष्य)

पाणाइवाय पुं. (प्राणातिपात) जीवहिंसा, प्राणों का नाश

पाणि पुं. (प्राणिन्) जीव, आत्मा, चेतन

पाणि पुं. (पाणि) हाथ, हस्त

पाणिगण पुं. (प्राणिगण) जीवों का समूह

पाणिय नपुं. (पानीय) जल, पानी

पाणिवह पुं. (प्राणिवध) जीवहिंसा

पाय पुं. (पाद) पाद, पैर, पाँव, श्लोक का चौथा भाग

पाय पुं. (पात) गिरना, पतन

पायड-पयड वि. (प्रकट) प्रकट, खुल्ला

पायव पुं. (पादप) वृक्ष, पेड़

पायशो अ. (प्रायशस्) प्रायः, ज्यादा करके

पारद्धि पुं. (पापर्द्धि) पारधी, शिकारी स्त्री. मृगया

पारितोसिअ वि. (पारितोषिक) इनाम...

पारेवअ-पारावअ पुं. (पारापत) कबूतर, पक्षिविशेष

पालग वि. (पालक) पालन करनेवाला

पाव वि. (पाप) नीच, पापी

पाव नपुं. (पाप) पापकर्म

पावकम्म नपुं. (पापकर्मन्) पापकर्म

पास नपुं. (पार्श्व) समीप, पास में, नजदीक

पासा अ. पु. (प्रासाद) मकान

पाहुड नपुं. (प्राभृत) उपहार, भेंट

पिअर-पिउ पुं. (पितृ) पिता

पिउसिया-पिउच्छा स्त्री. (पितृस्वसृ) बुआ

पिच्छी-पुहुवी स्त्री. (पृथ्वी) पृथ्वी, भूमि

पिय वि. (प्रिय) प्रिय पुं. पति, स्वामी,

पियसही स्त्री. (प्रियसखी) प्रेम-पात्र, सहेली

पिवासा स्त्री. (पिपासा) तृषा, प्यास

पीइ स्त्री. (प्रीति) प्रेम, अनुराग

पीडण नपुं. (पीडन) दुःख देना

पीडा-पीला स्त्री. (पीडा) पीडा, हैरानी, वेदना

पुज्ज वि. (पूज्य) पूज्य, पूजने योग्य

पुढवी-पुहवी स्त्री. (पृथ्वी) पृथ्वी, भूमि

पुण-पुणा-पुणाइ-पुणो-उण अ. (पुनर्) फिर से, फिर फिर, बारंबार

पुणरुत्तं अ. (दे.) फिर से कहा हुआ

पुण्ण नपुं. (पुण्य) पुण्य, धर्म, शुभकर्म, वि. पवित्र ।

पुण्णिमा स्त्री. (पूर्णिमा) पूनम, पूर्णमासी, तिथि विशेष

पुत्त पुं. (पुत्र) पुत्र, लड़का

पुत्थय-पोत्थय पुं. नपुं. (पुस्तक) पुस्तक, पोथी, किताब

पुप्फ नपुं. (पुष्प) फूल, कुसुम

पुरओ अ. (पुरतस्) आगे

पुरं-पुरा अ. (पुरस्) पहले, पूर्व में

पुरिस पुं. (पुरुष) पुरुष

पुव्व-पुरिम वि. (पूर्व) पहला, आद्य, प्रथम

पुव्व वि. (पूर्व) 70 लाख, 56 हजार वर्ष का एक पूर्व, काल विशेष

पुव्वण्ह पुं. (पूर्वाह्ण) दिन का पूर्व भाग ।

पुव्वा स्त्री : (पूर्वा) पूर्वदिशा.

पूरअ *वि. (पूरक) पूर्ति करनेवाला*
पोम्म-पउम नपुं. (पद्म) कमल
पोरुस-पोरस-पउरिस नपुं. (पौरुष) पुरुषार्थ, पुरुषत्व

फ

फरुस वि. (परुष) कठिन, कर्कश
फल नपुं. (फल) फल, लाभ
फास पु. (स्पर्श) स्पर्श.
फुल्ल नपुं. (फुल्ल) पुष्प, फूल

ब

बइल्लो दे. (बलीवर्द) बैल, वृषभ
बंघण नपुं. (बन्धन) बेड़ी, बाँधना
बंधव पुं. (बान्धव) बंधु, भाई, भ्राता
बंधु पुं. (बन्धु) बांधव, मित्र
बंभचेर-बम्हचरिअ-बम्हचेर नपुं. (ब्रह्मचर्य) ब्रह्मचर्य
बंभण पुं. (ब्राह्मण) ब्राह्मण
बंभयारि वि. (ब्रह्मचारिन्) ब्रह्मचर्य पालनेवाला
बल नपुं. (बल) शक्ति, सामर्थ्य
बलिट्ठ वि. (बलिष्ठ) सबसे बलवान, सबल
बहि-हिं-बहिया-बाहिं-बाहिर अ. (बहिस्) बाहर
बहिद्धा दे. (बहिर्धा) बाहर, मैथुन
बहिणी-भइणी स्त्री. (भगिनी) बहन
बहिर वि. (बधिर) बहरा, जो सुन न सकता हो वह ।

बहु-अ-बहुग *वि. (बहु-क) प्रचुर, प्रभूत,* अनेक, बहुत ।
बहुसो अ. (बहुशस्) अनेक बार
बाल पुं. (बाल) बालक, शिशु
बाला स्त्री. (बाला) कुमारी, लड़की
बालिआ स्त्री. (बालिका) बाला, कुमारी, लड़की
बाहा स्त्री. (बाहु) हाथ, भुजा-बाहिर-
बज्झ वि. (बाह्य). बाहर का
बाहु पुं. (बाहु) हाथ, भुजा
बिंब नपुं. (बिम्ब) बिम्ब, प्रतिमा
बुद्धि स्त्री. (बुद्धि) बुद्धि, मति, मेधा, मनीषा, प्रज्ञा
बुह पुं. (बुध) पण्डित
बोहि स्त्री. (बोधि) शुद्ध धर्म की प्राप्ति

भ

भंत वि. (भगवत्-भदन्त-भ्राजत्-भवान्त-भयान्त) भगवान ऐश्वर्यशाली, कल्याणकारक, चमकता, देदीप्यमान, भयनाशक भव=संसार का अन्त करनेवाला
भगवई स्त्री. (भगवती) पाँचवाँ अंग, भगवती सूत्र
भगवंत-भयवंत पुं. (भगवत्) भगवान, पूज्य
भज्जा स्त्री. (भार्या) स्त्री.
भट्ठ वि. (भ्रष्ट) भ्रष्ट, पतित
भड पुं. (भट) लड़ाका, योद्धा
भत्तार-भत्तु पुं. (भर्तृ) स्वामी, पति, भर्तार, वि. पोषक

भत्ति स्त्री. (भक्ति) सेवा, विनय, आदर

भद्द-भद्र वि. (भद्र) कल्याण करनेवाला, सुखी, प्यारा, लागणीशील, नपुं. कल्याण, मंगल

भमंत वि. (भ्रमत्) घूमता

भय नपुं. (भय) डर, त्रास, भीति

भरह पुं. (भरत) भगवान आदिनाथ का ज्येष्ठ पुत्र और प्रथम-चक्रवर्ती राजा

भरहखेत न. भारतक्षेत्र न. (भरतक्षेत्र) भरतक्षेत्र.

भव पुं. (भव) भव, संसार

भविअ वि. (भविक-भव्य) भव्य

भव्व-भविअ वि. (भव्य) मुक्ति योग्य, मुक्तिगामी, संसारी

भसल-भमर पुं. (भ्रमर) भमर

भस्स-भप्प पुं. (भस्मन्) राख, भस्म, ग्रह विशेष

भस्संतया स्त्री. (भस्मान्तता) राख हो जाना, जलकर भस्म होना.

भाणु पुं. (भानु) सूर्य

भायर-भाउ पुं. (भ्रातृ) भाई, बन्धु

भार पुं. (भार) भार, बोझा

भारह नपुं. (भारत) भरतक्षेत्र

भाल नपुं. (भाल) ललाट, भाल

भाव पुं. (भाव) पदार्थ, वस्तु अभिप्राय, आशय

भासा (स्त्री.) (भाषा) वाक्य, वाणी, गिरा, वचन

भावि (वि.) (भाविन्) भविष्य में होने वाला

भिक्खायरिअ वि. (भिक्षाचरक) भिक्षाचर, भिक्षु

भिक्खु पुं. (भिक्षु) भिक्षुक, साधु

भिच्च पुं. (भृत्य) नौकर

भिच्चगुण पुं. (भृत्यगुण) नौकर के गुण

भिल्ल पुं. (भिल्ल) भिल्ल

भुयग पुं. (भुजग) सर्प

भूअ पुं. नपुं (भूत) जंतु, प्राणी

भूयहिअ नपुं. (भूतहित) जीवों का उपकार

भूसण नपुं. (भूषण) आभूषण

भोइ-भोगि वि. (भोगिन्) विलासी भोगासक्त

भोग-भोअ पुं. नपुं (भोग) मनोज्ञ शब्दादि विषय, उपभोग।

भोयण नपुं. (भोजन) भोजन

म

मइ स्त्री. (मति) बुद्धि, मेधा, मनीषा

मइमत्त वि. (मतिमत्) बुद्धिशाली

मउड पुं. नपुं. (मुकुट) मुगुट

मंगल नपुं. (मङ्गल) श्रेय, कल्याण, शुभ

मंडल नपुं. (मण्डल) गोलाकार

मंत पु.नं. (मन्त्र) मन्त्र, विचार, गुप्त बात.

मंति पुं. (मन्त्रिन्) मन्त्री

मंद वि. (मन्द) आलसी, धीमा, अल्प

मंदर पुं. (मन्दर) मेरु पर्वत

मंदिर नपुं. (मन्दिर) मंदिर, जिनालय, घर

मक्कड पुं. (मर्कट) बंदर

मक्खिआ-मच्छिआ स्त्री. (मक्षिका) मक्खी

मग्ग पुं. (मार्ग) रास्ता
मघाणो पुं. (मघवन्) इन्द्र
मच्चु पुं. (मृत्यु) मरण, मौत
मच्छ पुं. (मत्स्य) मछली
मच्छर पुं. (मत्सर) ईर्ष्या, द्वेष
मच्छवहगाइ वि. (मत्स्यवधकादि) मच्छीमार
मज्ज् नपुं. (मद्य) मद्य, दारु, मदिरा
मज्जाया स्त्री. (मर्यादा) सीमा, हद, व्यवस्था, अवधि
मज्झ नपुं. (मध्य) अंतराल, मझार, बीच
मज्झण्ह पुं. (मध्याह्न) दिन का मध्यभाग
मट्टिआ स्त्री. (मृत्तिका) मिट्टी
मण पुं. (मनस्) मन, चित्त
मणपज्जव पुं. (मनः पर्यव) चतुर्थज्ञान, मन का साक्षात्कार करनेवाला ज्ञान.
मणवल्लह वि. (मनोवल्लभ) मन को प्रिय
मणंसि वि. (मनस्विन्) प्रशस्त मनवाला
मणा-मणयं-मणिअं अ. (मनाक्) अल्प, थोड़ा
मणि पुं. (मणि) मणि
मणूस पुं. (मनुष्य) मनुष्य
मणोज्ज-मणोण्ण वि. (मनोज्ञ) सुन्दर
मणोरह पुं. (मनोरथ) मनोरथ, इच्छा.
मत्त वि. (मत्त) मदयुक्त, उन्मत्त
मत्थय पुं. नपुं. (मस्तक) मस्तक सिर
मन्नु पुं. (मन्यु) क्रोध, गुस्सा
मय पुं. (मद) अभिमान, गर्व
मय-मुअ वि. (मृत) मरा हुआ
मयण पुं. (मदन) कामदेव
मरण नपुं. (मरण) मृत्यु, मरना
मरणभय (मरणभय) मरण का भय
मह-महंत वि. (महत्) बड़ा, विशाल
महप्प पुं. (महात्मन्) महात्मा
महादेवी स्त्री. (महादेवी) पटराणी
महामंति पु. (महामन्त्रिन् महामंत्री)
महावीर पुं. (महावीर) चौबीसवें तीर्थंकर
महासई स्त्री. (महासती) उत्कृष्ट शीलवाली स्त्री
महिला (महिला) स्त्री, नारी
महिलामण (महिलामनस्) स्त्रियों का मन
महिवाल पुं. (महिपाल) राजा
महिसी स्त्री. (महिषी) रानी.
महु नपुं. (मधु) मधु
महुर वि. (मधुर) मधुर, सुंदर, मिष्ट, मीठा.
महोच्छव-महोसव-महुस्सव-महूसव पुं. (महोत्सव) बड़ा उत्सव
महोसहि स्त्री. (महौषधि) श्रेष्ठ औषधि
मा-माई अ. (मिथ्या) मा, नहीं
माउसिआ-माउच्छा स्त्री. (मातृस्वसृ) मासी, माता की बहन
माण पुं. (मान) अभिमान, गर्व
माणि वि. (मानिन्) अभिमानी, गर्विष्ठ
मायरा-माआ-माउ-माइ (स्त्री.) (मातृ) माता, माँ, जननी
माया स्त्री. (माया) कपट, छल, धोखा, शाठ्य

मारुअ पुं. (मारुत) पवन
माला स्त्री. (माला) माला, हार
मांसभोइ वि. (मांसभोजिन्) मांस खानेवाला
मास पुं. (मास) माह, मास, महीना
मास-मंस नपुं. (मास) मांस
माहप्प पुं. नपुं. (माहात्म्य) महिमा, प्रभाव, महत्त्व, गौरव
माहण-बम्हण पुं. (ब्राह्मण) ब्राह्मण
मिअंक-मअंक पुं. (मृगाङ्क) चन्द्र, चांद
मिग-मअ पुं. (मृग) हिरन, हरिण, मृग
मिच्छा अ. (मिथ्या) असत्य, झूठा
मित्त पुं. नपुं. (मित्र) मित्र
मित्ती स्त्री. (मैत्री) मित्रता
मीसिअ वि. (मिश्रित) संयुक्त, मिला हुआ
मुक्क, मुत्त वि. (मुक्त) मुक्त
मुक्ख-मुरुक्ख पुं. (मूर्ख) मूर्ख, अज्ञानी, बेवकूफ
मुक्ख-मोक्ख पुं. (मोक्ष) मोक्ष
मुक्खत्थि वि. (मोक्षार्थिन्) मोक्ष का अर्थी
मुणि पुं. (मुनि) मुनि, साधु
मुणिंद पुं. (मुनीन्द्र) आचार्य
मुसं-मुसा-मूसा-मोसा अ. (मृषा) मिथ्या, असत्य, झूठ
मुह नपुं. (मुख) मुँह, वदन
मुहल-र वि. (मुखर) वाचाल, बकवादी
मुहा-मोरउल्ला अ. (मुधा) व्यर्थ, निरर्थक
मूग वि. (मूक) मूंगा, मूक, वाक्-शक्ति से हीन
मूढ वि. (मूढ) मूर्ख, मुग्ध, अज्ञानी
मूल नपुं. (मूल) मुख्य कारण, जड़
मूलसुत्त नपुं. (मूल सूत्र) सूत्र विशेष
मूसावाय-मुसावाय मोसावाय पुं. (मृषावाद) असत्य भाषण, झूठ बोलना
मेरु पुं. (मेरु) मेरु पर्वत
मेह पुं. (मेघ) मेघ, बादल
मोइअ क. भू. (मोदित) खुश थयेल
मोक्खपय न. (मोक्षपद) मोक्षपद
मोग्गर पुं. (मुद्गर) मुगरा, पुष्पवृक्ष विशेष
मोण-मउण नपुं. (मौन) मौन, वाणी का संयम, चुप्पी, मुनिपन
मोर पुं. (मयूर) मयूर, पक्षिविशेष
मोहसम वि. (मोहसम) मोहसमान, अज्ञान समान

र

रउद्द-रोद्द वि. (रौद्र) दारुण, भयंकर
रक्खण नपुं. (रक्षण) रक्षण करना
रक्खस पुं. (राक्षस) राक्षस
रज्ज नपुं. (राज्य) राज्य, राज, शासन, हुकूमत
रत्त वि. (रक्त) लाल, आसक्त,
रमणी स्त्री. (रमणी) नारी, स्त्री
रय-रअ वि. (रत) आसक्त, अनुरक्त
रयण पुं. नपुं. (रत्न) रत्न
रयय नपुं. (रजत) चांदी, रुप्य
रवि पुं. (रवि) सूर्य

रहस्स वि. (रहस्य) गुप्त, गोपनीय, तात्पर्य, भावार्थ, एकान्त का

रह पुं. (रथ) रथ, स्यन्दन, यानविशेष

रहिअ वि. (रहित) रहित, परित्यक्त, वर्जित, शून्य

राइ-रत्ति स्त्री. (रात्रि) रात्रि, निशा, रात

राग पुं. (राग) राग, स्नेह

राम पुं. (राम) राम, विशेष नाम

रायगिह नपुं. (राजगृह) राजगृह नगर

रावण पुं. (रावण) रावण, विशेष नाम

राहु पुं. (राहु) राहु, ग्रह विशेष

रिउ-उउ स्त्री. (ऋतु) वसन्तादि छह ऋतु

रिउ पुं. (रिपु) शत्रु, वैरी, दुश्मन

रिच्छ-रिक्ख पुं. (ऋक्ष) भालू, श्वापद, प्राणि-विशेष

रिसि पुं. (ऋषि) ऋषि

रुअ नपुं. (रुत) शब्द

रुक्क-ग्ग वि. (रुग्ण) रोगी

रुक्ख पुं. नपुं. (वृक्ष) पेड़, पादप

रुप्पिणी स्त्री. (रूक्मिणी) विष्णु की स्त्री

रूव पुं. नपुं. (रूप) देह की कान्ति, सुन्दरता, आकृति, रूप

रोमन्थ्-वग्गोल् (रोमन्थय्) पगुराना, चबी हुई चीज को फिरसे चबाना

रोग पुं. (रोग) रोग, व्याधि

रोस पुं. (रोष) क्रोध, गुस्सा

ल

लक्खण नपुं. (लक्षण) चिह्न, नाम, कारण, वस्तु स्वरूप

लक्खण पुं. (लक्ष्मण) राम का भाई

लग्ग वि. (लग्न) संबद्ध, संसक्त

लच्छी स्त्री. (लक्ष्मी) लक्ष्मी, संपत्ति, वैभव

लज्जालुइणी (लज्जावती) लाजवाली

लड्ड वि. (दे.) सुन्दर, अन्यासक्त

लट्ठि पुं. (यष्टि) लकड़ी, लाठी, छड़ी

लया स्त्री. (लता) लता

ललाड-णडाल नपुं. (ललाट) भाल, ललाट

ललिय वि. (ललित) सुन्दर, मनोहर

लहु-अ. वि. (लघुक) छोटा, जघन्य, तुच्छ, निःसार

लिंब पुं. (निम्ब) नीम का पेड़

लुंटिअ वि. (लुण्ठित) लूटना, बलात्कार से लेना

लुद्ध वि. (लुब्ध) लोभी, लोलुप, लम्पट

लेह पुं. (लेख) लिखना, लेखन, अक्षर-विन्यास

लोग पुं. (लोक) लोक, जगत, दुनिया, भुवन

लोगवाल पुं. (लोकपाल) इन्द्र का दिक्पाल

लोगंतिअ पुं. (लोकान्तिक) देवविशेष

लोद्धअ वि. (लुब्धक) लोभी

लोह पुं. (लोह) लोभ

व

व-वा अ. (वा) वा, अथवा, कि
वइर-वज्ज पुं. नपुं. (वज्र) वज्र, इन्द्र का शस्त्र
वक्क नपुं. (वाक्य) वाक्य
वक्खाण नपुं. (व्याख्यान) विवरण, विशेष कथन
वग्ग पुं. (वर्ग) वर्ग, समूह
वग्घ पुं. (व्याघ्र) बाघ, शेर
वच्छ पुं. (वत्स) बालक, बछड़ा
वच्छ पुं. (वृक्ष) पेड़, शाखी, द्रुम
वच्छल वि. (वत्सल) रागी, स्नेह
वच्छल्ल नपुं. (वात्सल्य) स्नेह, अनुराग, प्रेम, वात्सल्य
वज्जपाणी पुं. (वज्रपाणि) इन्द्र
वड्डयरं (बृहत्तरं) बहुत बड़ा, महान्
वणस्सइ-वणप्फइ स्त्री. (वनस्पति) वनस्पति
वणिआ-विलया स्त्री. (वनिता) स्त्री, महिला, नारी
वण्हि पुं. (वह्नि) अग्नि, आग
वत्ता स्त्री. (वार्ता) बात, कथा
वत्तार-वत्तु वि. (वक्तृ) वक्ता, बोलनेवाला
वत्थ नपुं. (वस्त्र) वस्त्र, कपड़ा
वत्थु नपुं. (वस्तु) पदार्थ, चीज
वम्मह पुं. (मन्मथ) कामदेव
वय पुं. नपुं. (व्रत) व्रत, नियम
वय पुं. नपुं. (वयस्) उम्र, आयु
वयण नपुं. (वचन) वचन
वयणिज्ज वि. (वचनीय) वाच्य, कथनीय, निन्दा योग्य
वर वि. (वर) वर, श्रेष्ठ
वराय वि. (वराक) गरीब, दीन, रंक, बिचारा
वरिस-वास पुं. नपुं. (वर्ष) वृष्टि, वर्षा, संवत्सर, साल, मेघ, बारिस, वर्ष
वरिसा-वासा स्त्री. (वर्षा) वृष्टि, पानी का बरसना, वर्षाकाल
ववसाय पुं. (व्यवसाय) निर्णय, निश्चय, अनुष्ठान, उद्यम, प्रयत्न, व्यापार, कार्य, काम
वसइ-वसहि स्त्री. (वसति) स्थान, रात्रि आश्रय, वास, निवास,
वसंत पुं. (वसंत) वसंतऋतु
वसण नपुं. (वसन) निवास, रहना
वसह पुं. (वृषभ) बैल, सांड
वसण नपुं. (व्यसन) कष्ट, विपत्ति, दुःख
वसीहूअ वि. (वशीभूत) जो अधीन हुआ हो वह
वसुदेवपुत्त (वसुदेवपुत्र) वसुदेव का पुत्र
वह पु. (वध) वध.
वहू (स्त्री.) (वधू) बहू, भार्या, नारी
वाउ (पुं.) (वायु) पवन, वात
वागरण-वायरण-वारण नपुं. (व्याकरण) व्याकरण, शास्त्र, उपदेश, उत्तर
वाणिज्ज नपुं. (वाणिज्य) व्यापार
वाणी स्त्री. (वाणी) वाणी, वचन, वाक्य

वाम वि. (वाम) सव्य, बाँया
वायणा स्त्री. (वाचना) वाचना
वायस पुं. (वायस) काक, कौआ
वाया स्त्री (वाच्-वाचा) वाणी.
वारि नपुं. (वारि) पानी, जल
वारियर पुं. (वारिचर) जलचर, मत्स्य वगै.
वावार पुं. (व्यापार) व्यापार, व्यवसाय
वावारि पुं. (व्यापारिन्) व्यापारी
वावी स्त्री. (वापी) चतुष्कोण, जलाशय विशेष
वास पुं. नपुं. (वर्ष) वर्ष, भरतादि क्षेत्र बारिश.
वासहर पुं. (वर्षधर) पर्वत विशेष
वासुदेव पुं. (वासुदेव) वासुदेव, अर्धचक्रवर्ती, त्रिखंडाधीश
वाह पुं. (व्याध) लुब्धक, बहेलिया
वाहर् (वि + आ + हृ) बोलना, कहना, आह्वान करना
वाहि पुं. (व्याधि) व्याधि, रोग, पीड़ा
वि पि अ. (अपि) पण, विरोध, विशेष, प्रतिपक्षता
विउस पुं. (विद्वस्) विद्वान
विउसग्गो (व्युत्सर्ग) त्याग
विओग पुं. (वियोग) वियोग
विंद-वुंद नपुं. (वृन्द) समूह
विंछिअ-विच्छुअ पुं. (वृश्चिक) वींछी
विंझ पुं. (विन्ध्य) विन्ध्याचल पर्वत
विक्कम पुं. (विक्रम) विक्रमराजा
विज्जत्थि पुं. (विद्यार्थिन्) विद्यार्थी
विज्जा स्त्री. विद्या, शास्त्रज्ञान, यथार्थज्ञान
विज्जाहर पुं. (विद्याधर) विद्याधर, विद्यावान
विणट्ठ वि. (विनष्ट) विनाश
विणय पुं. (विनय) विनय
विणा अ. (विना) सिवाय, अतिरिक्त, अन्य, बगैर
विणास पुं. (विनाश) नाश
विणिद्दिट्ठ वि. (विनिर्दिष्ट) विशेष प्रकार से कहा गया
विण्णाण नपुं. (विज्ञान) सद्बोध, कला, विशिष्ट ज्ञान
विण्हु पुं. (विष्णु) वासुदेव का नाम
विब्भल-विहल वि. (विह्वल) विह्वल।
विमाण पुं. नपुं. (विमान) विमान, उड्डयन
विम्हय पुं. (विस्मय) आश्चर्य
वियंभिय वि. (विजृम्भित) विकसित
वियक्खण वि. (विचक्षण) कुशल, होशियार
वियणा-वेयणा स्त्री. (वेदना) वेदना, पीड़ा, दुःख
वियार पुं. (विकार) विकार
वियार पुं. (विचार) विचार, तत्त्वनिर्णय
वियाररहिअ वि. (विकाररहित) विकाररहित, विकार बिना
विरल वि. (विरल) अल्प, थोड़ा
विरहिअ वि. (विरहित) रहित, शून्य, विरहवाला
विरुद्ध वि. (विरुद्ध) विपरीत, प्रतिकूल, उल्टा

वेरूव वि. (विरूप) कुरूप, कुत्सित रूप, भयानक रूप

वेरोह पुं. (विरोध) विरोध, प्रतिकूल, वैर

वेवत्ति स्त्री. (विपत्ति) दुःख

वेवरीअ-विवरिअ वि. (विपरीत) उल्टा, तिकूल

वेवाय पुं. (विवाद) चर्चा, झगड़ा ाग्युद्ध, कलह

वेविह वि. (विविध) अनेक प्रकार, ा, बहुविध, भाँति-भाँति

वेविहचरित्त वि. (विविधचरित्र) अलग-लग चरित्र

वेवेग पुं. (विवेक) विचार, भेद, बाँटना, वेवेक

वेस पुं. नपुं. (विष) विष, जहर, लाहल

वेसम वि. (विषम) तीक्ष्ण, अतुल्य, ेकट, भयानक

वेसमीसिअ वि. (विषमिश्रित) हरयुक्त

वेसय पुं. (विषय) पाँच इन्द्रियों के ाब्दादि विषय

ासयविस पुं. नपुं. (विषयविष) इन्द्रिय ाषय रूप विष

ासाय पुं. (विषाद) खेद, शोक, दुःख

ासाल वि. (विशाल) बड़ा

ासेस पुं. नपुं. (विशेष) विशेष प्रकार, द, असाधारण

ाहव पुं. (विभव) समृद्धि, ऐश्वर्य

ाहवि वि. (विभविन्) समृद्धिवान

ाहलिय वि. (विह्वलित) व्याकुल

विहि पुं. (विधि) विधि, अनुष्ठान

विहीण-विहूण वि. (विहीन) वर्जित, रहित

विहुर वि. (विधुर) दुःखी, व्याकुल

वीणा स्त्री. (वीणा) वीणा, वाद्यविशेष

वीयराग-वियराग पुं. वि. (वीतराग) जिन, रागरहित

वीर पुं. (वीर) वीर, पराक्रमी, शक्तिशाली, बलवान, उत्तम, श्रेष्ठ

वीसत्थ वि. (विश्वस्त) विश्वास- योग्य, विश्वासवाला

वीसाम-विस्साम पुं. (विश्राम) विश्रान्ति, विराम ।

वीसुं अ. (विष्वक्) समन्तात्, चारों तरफ

वुट्ठि स्त्री. (वृष्टि) वृष्टि, बारिस

वुड्ढत्तण नपुं. (वृद्धत्व) वृद्धावस्था

वुड्ढि स्त्री. (वृद्धि) वृद्धि, समृद्धि, अभ्युदय, उत्थान

वुत्त वि. (उक्त) कथित, प्रतिपादित कहा हुआ

वेज्ज पुं. (वैद्य) वैद्य, चिकित्सक, भिषग

वेरुलिअ-वेडूरिअ-वेडुज्ज पुं. नपुं. (वैडूर्य) वैडूर्यरत्न

वेयावच्च-वेयावडिअ नपुं. (वैयावृत्य) सेवा, शुश्रूषा

वेर-वइर नपुं. (वैर) शत्रुता, दुश्मनी, विरोध, वैमनस्य, द्रोह

वैरग्ग नपुं. (वैराग्य) वैराग्य, विरागभाव, उदासीनता, विमुखता

वेसवण-वेसमण पुं. (वैश्रवण) यक्षराज, कुबेर

वेसा स्त्री. (वेश्या) गणिका

वोसिरणं पुं. (व्युत्सर्जन) परित्याग

स

सइ-सया अ. (सदा) हमेशा, निरन्तर

सइ-सइं अ. (सकृत्) एक बार

सइंदय वि. (स-इन्द्रक) इन्द्रसहित

सइन्न-सिन्न-सेन्न नपुं. (सैन्य) सैन्य, लश्कर

सई स्त्री. (सती) पतिव्रता स्त्री

सउण पुं. (शकुन) पक्षी, चिड़िया, नपुं, शुभाशुभ निमित्त

संकला स्त्री. (शृङ्खला) सांकल, निगड़ा

संगम पुं. (सङ्गम) संगति, संगम, मेल

संघ पुं. (सङ्घ) संघ, समुदाय, समूह, श्रमणादि चतुर्विध संघ

संजम पुं. (संयम) संयम, चारित्र, व्रत, विरति, हिंसादि पापों से निवृत्ति

संजुअ वि. (संयुत) युक्त, सहित

संजोग पुं. (संयोग) सम्बन्ध, मेल-मिलाप

संति पुं. (शान्ति) शान्ति, सुख-समृद्धि, शान्ति जिन (सोलहवें तीर्थंकर)

संतिण्ण कर्म-भूत (सन्तीर्ण) तिरे हुए

संतोस पुं. (सन्तोष) संतोष संतुष्टि, प्रसन्नता, तृप्ति

संपइ अ. (सम्प्रति) इस समय, अब

संपइनरिंद पुं. (सम्प्रतिनरेन्द्र) सम्प्रति राजा

संपत्ति स्त्री. (सम्पत्ति) संपदा, ऋद्धि

संफास पुं. (संस्पर्श) स्पर्श

संबंध पुं. (सम्बन्ध) संसर्ग, संग, संगति, संयोग

संवच्छरिअ वि. (सांवत्सरिक) संवत्सर संबंधी

संवेग पुं. (संवेग) संसार से उदासीनता, संसार भीरुता, मुक्ति की अभिलाषा

संसग्ग पुं. (संसर्ग) सम्बन्ध, सम्पर्क

संसार पुं. (संसार) संसार, भव

संसारचक्क नपुं. (संसारचक्र) संसाररूपी चक्र

संहार-संघार पुं. (संहार) संहार

सकम्म पुं. नपुं. (स्वकर्मन्) अपने कर्म, निजकर्म

सकुडुंबय नपुं. (सकुटुम्बक) कुटुम्बसहित

सक्क पुं. (शक्र) इन्द्र

सक्खं अ. (साक्षात्) प्रत्यक्ष आंखों के सामने

सक्खिणो वि. (साक्षी) साक्षी, गवाही प्रत्यक्षदर्शी, निर्णायक

सगास नपुं. (सकाश) समीप, पास, निकट

सग्ग पुं. (स्वर्ग) स्वर्ग, देवलोक

सच्चिय अ. (स एव) वही

सच्च नपुं. (सत्य) सत्य, यथार्थवचन

सच्चवय वि. (सत्यवद) सत्यवादी, सत्य बोलनेवाला

सज्ज वि. (सज्ज) तैयार, युक्त

सज्जण पुं. (सज्जन) सज्जन पुरुष
सज्जा-सेज्जा स्त्री. (शय्या) शयन, पथारी
सज्झाय पुं. (स्वाध्याय) शास्त्र अध्ययन, शास्त्र मनन, चिन्तन।
सडिअ वि. (शटित) सड़ा हुआ
सढ वि. (शठ) ठग, धूर्त.
सणियं अ. (शनैस्) धीरे-धीरे।
सण्ह, सुण्ह-सुहुम वि. (सूक्ष्म) छोटा, बारीक, अल्प
सत-सय पुं. नपुं. (शत) सौ की संख्या
सद्द पुं. (शब्द) शब्द, ध्वनि, आवाज
सद्ध-सड्ढ पुं. (श्राद्ध) श्रावक, श्रद्धालु
सद्धा-सड्ढा स्त्री. (श्रद्धा) श्रद्धा, धर्मरुचि
सद्धिं (सार्धम्) सहित, साथ
सत्त वि. (सक्त) आसक्त
सत्त नपुं. (सत्त्व) बल, पराक्रम
सत्ति स्त्री. (शक्ति) सामर्थ्य, बल, पराक्रम।
सत्तु पुं. (शत्रु) शत्रु.
सत्तुंजय पुं. (शत्रुंजय) सिद्धगिरि, विमलाचल
सत्तुंजई स्त्री. (शत्रुंजयी)
सेत्तुंजी-सित्तुंजी नदी का नाम
सत्थ पुं. (सार्थ) सार्थ, समुदाय, व्यापारी समूह का नायक
सत्थ नपुं. (शस्त्र) शस्त्र, हथियार, आयुध, अस्त्र
सत्थ नपुं. (शास्त्र) शास्त्र, आगम
सन्ना स्त्री. (संज्ञा) चेष्टा, ज्ञान
सप्प पुं. (सर्प) साँप, भुजंग
सप्पाण वि. (सप्राण) प्राणसहित, अपने प्राण
सब्भाव पुं. (सद्भाव) अच्छे भाव, अस्तित्व, भावार्थ
समंता-समंतेण अ. (समन्तात्) चारों तरफ
समण पुं. (श्रमण) श्रमण, साधु
समणोवासय-ग पुं. (श्रमणोपासक) श्रावक, साधुओं का उपासक
समत्त वि. (समस्त) संपूर्ण, सब
समत्थ वि. (समर्थ) समर्थ, शक्तिवान
समय पुं. (समय) समय, काल, वक्त, अवसर, शास्त्र
समाण वि. (समान) सदृश, तुल्य, समान
समाण वि. (सत्) वर्त. कृ. विद्यमान, होता
समायरण नपुं. (समाचरण) आचरण, करना, आचरना
समावडिअ वि. (समापतित) सम्मुख आया हुआ
समाहि पुं. स्त्री. (समाधि) चित्त की प्रसन्नता, शुभध्यान, चित्त की एकाग्रता
समिद्धि-सामिद्धि स्त्री. (समृद्धि) वैभव, ऐश्वर्य
समीव वि. (समीप) निकट, पास
समीहिअ वि. (समीहित) इष्ट, इच्छित, चाहा गया
समोसरण-समवसरण पुं. नपुं. (समवसरण) समोसरण

सम्मं अ. (सम्यक्) अच्छी तरह
सम्मत्त नपुं. (सम्यक्त्व) समकित तत्त्वश्रद्धा, सम्यग्दर्शन
सयं-सइ अ. (स्वयम्) आप, निज, खुद
सयण पुं. (स्वजन) कुटुम्बीजन, सगे-संबंधी
सययं अ. (सततम्) निरन्तर, लगातार
सयल वि. (सकल) पूर्ण, सर्व
सयसहस्स पुं. नपुं. (शतसहस्त्र) लाख
सयायार पुं. (सदाचार) उत्तम आचार
सर पुं. (शर) बाण
सर पुं. नपुं. (सरस्) सरोवर
सरअ पुं. (शरद्) शरद ऋतु
सरण नपुं. (शरण) शरण, आश्रय, रक्षा
सरणत्तं नपुं. (शरणत्व) शरणपना
सरस्सई स्त्री. (सरस्वती) वाणी, भाषा, भारती, वाग्देवी
सरिच्छ-सरिक्ख वि. (सदृश) समान, तुल्य
सरीर न. (शरीर) शरीर
सरूव नपुं. (स्वरूप) स्वरूप
सरोय नपुं. (सरोज) कमल
सरोरुह नपुं. (सरोरुह) कमल
सलाहा स्त्री. (श्लाघा) प्रशंसा, गुणगान
सवण नपुं. (श्रवण) सुनना
सव्व सर्व (सर्व) सब
सव्वओ-सव्वतो-सव्वत्तो अ. (सर्वतस्) सब तरह से, सर्वत्र, सभी जगह
सव्वथ-सव्वहि-सव्वह अ. (सर्वत्र) सम्पूर्ण, सब, सभी जगह
सव्वण्णु पुं. (सर्वज्ञ) सर्वज्ञ भगवान, सब जाननेवाले
सव्वविरइ स्त्री. (सर्वविरति) पाँच महाव्रतों का पालन, सभी पाप व्यापार का त्याग
सव्वया अ. (सर्वदा) सदा, हमेशा, सदैव
सव्वहा अ. (सर्वथा) सभी तरह, सभी प्रकार का
सव्वायर (सर्वादर) सभी प्रकार के आदरपूर्वक
ससंक पुं. (शशाङ्क) चन्द्र
ससा-सुसा स्त्री. (स्वसृ) बहन, भगिनी
ससिरवि (शशिरवि) चन्द्र और सूर्य
सह अ. (सह) साथ, संग, सहित
सहल-सभल वि. (सफल) सार्थक, फलयुक्त, सफल
सहसा अ. (सहसा) अचानक, अकस्मात्, शीघ्र, जल्दी
सहा स्त्री. (सभा) सभा
सहाव पुं. (स्वभाव) प्रकृति, निसर्ग
सही स्त्री. (सखी) सहेली
साउ वि. (स्वादु) मधुर, स्वादयुक्त
साण-स पुं. (श्वन्) कुत्ता
सामन्न वि. (सामान्य) साधारण
सामाइअ नपुं. (सामायिक) सामायिक, दो घड़ी समता में रहना
सामि पुं. (स्वामिन्) स्वामी, नायक
साय नपुं. (सात) सुख

सार वि. (सार) श्रेष्ठ, उत्तम
सारहि पुं. (सारथि) सारथी, रथ हाँकनेवाला
सावग पुं. (श्रावक) श्रावक
सावय पुं. (श्वापद) शिकारी पशु
साविगा स्त्री. (श्राविका) श्राविका
सासण नपुं. (शासन) शासन, शास्त्र, आज्ञा, शिक्षण
सासय वि. (शाश्वत) नित्य, अविनश्वर
सासू स्त्री. (श्वश्रू) सास
साहम्मिअ वि. (साधर्मिक) समान- धर्मी
साहा स्त्री. (शाखा) शाखा, संतति, परम्परा
साहु पुं. (साधु) साधु, मुनि, यति
साहिज्ज-साहज्ज-साहेज्ज नपुं. (साहाय्य) मदद, सहायता
सिंघ-सीह पुं. (सिंह) सिंह, शेर, केसरी, मृगराज
सिक्खा स्त्री. (शिक्षा) शिक्षण, उपदेश, ज्ञान, दण्ड
सिक्खिउं हे. कृ. (शिक्षितुम्) पढ़ने के लिए
सिगाल पु. (शृगाल) शीयाल लोमडी
सिणेह पुं. (स्नेह) स्नेह, प्रेम
सिद्ध पुं. (सिद्ध) सिद्ध, सिद्ध भगवान
सिद्धगिरि पुं. (सिद्धगिरि) सिद्धाचल
सिद्धत्थ पुं. (सिद्धार्थ) प्रभु वीर के पिता
सिद्धराय पुं. (सिद्धराज) राजा का नाम
सिद्धहेम पुं. (सिद्धहेम) व्याकरण का नाम
सिद्धालय नपुं. (सिद्धालय) सिद्धालय, सिद्ध भगवान का स्थान, सिद्धशिला
सिद्धि स्त्री. (सिद्धि) सिद्धि, मोक्ष
सिप्प नपुं. (शिल्प) कारीगरी, चित्रकारी, कला
सिरिवद्धमाण पुं. (श्रीवर्धमान) चौबीसवें तीर्थंकर
सिरी स्त्री. (श्री) लक्ष्मी
सिलोगद्ध पुं. नपुं. (श्लोकार्ध) काव्य का आधा भाग
सिव नपुं. (शिव) कल्याण, भद्र, मोक्ष
सिविण-सुविण-सिमिण-सुमिण पुं. नपुं. (स्वप्न) स्वप्न
सिसु पुं. (शिशु) बालक, बच्चा
सिहर नपुं (शिखर) शिखर
सिहरारूढ वि. (शिखरारूढ) शिखर पर आरूढ़, उन्नत भाग पर स्थित.
सिहरि पुं. (शिखरिन्) शिखरी पर्वत
सिहरपरंपरा स्त्री. (शिखरपरंपरा) शिखरों की श्रेणी (परंपरा)
सीय वि. (शीत) जमा हुआ, मंद, सुस्त, उदासीन, आलसी, ठंडा
सीया स्त्री. (सीता) राम की पत्नी
सीयल वि. (शीतल) शीतल, ठंडा
सीयाल पुं. (शीतकाल) शीतऋतु
सील नपुं. (शील) सदाचार, उच्च चरित्र, संयम विशेष, ब्रह्मचर्य
सीस पुं. (शिष्य) शिष्य
सीस पु.न. (शीर्ष) मस्तक, सर
सुअ पुं. (सुत) पुत्र

सुक्क वि. (शुक्ल) वर्ण विशेष, श्वेत, सफेद

सुट्ठु अ. (सुष्ठु) अच्छी तरह, सुन्दर, श्रेष्ठ

सुण्हा-सुसा-ण्हुसा स्त्री. (स्नुषा) पुत्रवधू

सुत्तं-सुत्त नपुं. (सूत्र) सूत्र, आगम ग्रन्थ वि. (सुप्त) सोया हुआ

सुमिणतुल्ल-सुविणतुल्ल वि. (स्वप्नतुल्य) स्वप्न समान

सुयणदुज्जणविसेस (सुजनदुर्जन-विशेष) सज्जन-दुर्जन का भेद

सुर पुं. (सुर) देव, अमर, देवता

सुरहि वि. (सुरभि) सुगन्धयुक्त, सुगन्धी

सुवण्ण नपुं. (सुवर्ण) सुवर्ण, सोना, धातु विशेष

सुविज्ज पुं. (सुवैद्य) कुशल भिषक

सुवे अ. (श्वस्) आगामी दिन

सुसाण-मसाण नपुं. (श्मशान) श्मशान, मरघट

सुह नपुं. (सुख) सुख, आनन्द, हर्ष

सुह नपुं. (शुभ) मंगल, कल्याण

सुहा स्त्री. (सुधा) अमृत

सुहि वि. (सुखिन्) सुखी

सूर पुं. (शूर) शूर, पराक्रमी

सूरि पुं. (सूरि) आचार्य

सूल पुं. नपुं. (शूल) शूल, रोगविशेष, शस्त्र विशेष

सेणा स्त्री. (सेना) सेना, सैन्य, लश्कर

सेणावइ पुं. (सेनापति) सेनापति, सेना का नायक

सेणिअ पुं. (श्रेणिक) श्रेणिक राजा

सेवा स्त्री. (सेवा) सेवा, भक्ति, शुश्रूषा

सेस वि. (शेष) बाकी, अन्य, अवशिष्ट

सोक्ख नपुं. (सौख्य) सुख, आनन्द, हर्ष

सोग- अ. पुं. (शोक) सन्ताप, दुःख

सोत्त नपुं. (श्रोत्र) कर्ण, कान

सोम पुं. (सोम) चन्द्र

सोहण वि. (शोभन) सुन्दर

सोहा स्त्री. (शोभा) शोभा, सौन्दर्य, रमणीय

ह

हंतूण सं. भू. (हत्वा) मारकर

हत्थ पुं. (हस्त) हाथ, कर

हत्थिणाउर नपुं. (हस्तिनापुर) हस्तिनापुर, नगर का नाम

हत्थि पुं. (हस्तिन्) हाथी, गज

हद्धि-हद्धी अ. (हा धिक्) खेद, पश्चाताप, विषाद, हाय

हय पुं. (हय) घोड़ा, अश्व

हरि पुं. (हरि) इन्द्र, विष्णु

हार पुं. (हार) माला

हालिअ पुं. (हालिक) किसान

हिअय-हिअ नपुं. (हृदय) हृदय, मन, अन्तःकरण

हिय वि. (हित) हितकर

हिरी स्त्री. (ह्री) लज्जा

हेट्ठ नपुं. (अधस्) नीचे

हेम- नपुं. (हेमन्) सुवर्ण, सोना

हेमचंद पुं. (हेमचन्द्र) श्री हेमचन्द्रसूरिजी

हिन्दी-प्राकृत शब्दकोष

अ

अंग **अंग** नपुं. (अङ्ग)
अंजन **अंजण** नपुं. (अञ्जन)
अग्नि **अग्गि** पुं. (अग्नि)
अच्छी तरह **सुट्ठु** अ. सुष्ठु, **सम्मं** अ. (सम्यक्)
अजीव **अजीव** पुं. (अजीव)
अज्ञानी **अण्णाणि** वि. (अज्ञानिन्)
अतिशय **अइसय** वि. (अतिशय)
अत्यन्त **अच्चंत** वि. (अत्यन्त)
अदत्त **अदत्त, अदिण्ण** वि. (अदत्त)
अदृष्ट **दइव्व, दइव** नपुं. (दैव)
अधर्म **अहम्म** पुं. (अधर्म)
अध्याय **अज्झाय** पुं. (अध्याय)
अध्ययन **अज्झयण** नपुं. (अध्ययन)
अनर्थ **अणत्थ-ट्ठ** पुं. (अनर्थ)
अनन्तबार **अणंतखुत्तो** अ. (अनन्तकृत्वस्)
अनाज **धन्न** नपुं. (धान्य)
अनुग्रह **अणुग्गह** पुं. (अनुग्रह)
अनुमति **अणुण्णा** स्त्री. (अनुज्ञा)
अन्धकार **तिमिर** नपुं. (तिमिर)
तम पुं. नपुं. (तमस्)
अन्धा **अंध** वि. (अन्ध)
अन्यथा **अन्नह** हा अ. (अन्यथा)
अपना **निअ** वि. (निज)
अप्पकेर वि. (आत्मीय)
अब **अहुणा** अ. (अधुना)
अभिमन्यु **अहिमन्नु,** अहिमज्जु, अहिमञ्जु पुं. (अभिमन्यु)
अभिमान **मय** पुं. (मद)
अभ्यास **अब्भास** पुं. (अभ्यास)
अमर **अमर** पुं. (अमर)
हमारे जैसा **अम्हारिस** वि. (अस्मादृश)
अमावास्या **अमावस्सा** स्त्री. (अमावास्या)
अमृत **अमय**, अमिय नपुं. (अमृत)
अरिहंत **अरिहंत, अरहंत, अरुहंत** पुं. (अर्हत्)
अलंकृत **अलंकिअ** वि. (अलङ्कृत)
अशुभ (कर्म) **असुह** नपुं. (अशुभ)
असत्य **असच्च** नपुं. (असत्य)
मुसावाय, मूसावाय, मोसावाय पुं (मृषावाद)
असार **असार** वि. (असार)
अहिंसा **अहिंसा** स्त्री. (अहिंसा)

आ

आकाश **आगास** पुं. नपुं. (आकाश)
आँख **चक्खु** पुं. नपुं. (चक्षुष्)
नेत्त पुं. नपुं. (नेत्र)
आगम **आगम** पुं. (आगम)
आगे **अग्ग** नपुं. (अग्र)
पुरओ अ. (पुरतस्)
आचरण **आयार** पुं. (आचार)

आचार्य **आयरिअ**, आइरिअ पुं.
सूरि पुं. (सूरिन्)
आज्ञा **आणा** स्त्री. (आज्ञा)
आता **आगच्छंत** वर्त. कृ. (आगच्छत्)
आदेश **आएस** पुं. (आदेश)
आधि **आहि** पुं.स्त्री. (आधि)
आभूषण **भूसण** नपुं. (भूषण)
आया हुआ **आगय** कर्म. भू. (आगत)
आयुष्य **आउस**, आउ पुं. नपुं. (आयुष्)
आरम्भ **आरंभ** पुं. (आरम्भ)
आलोचना **आलोचना** स्त्री. (आलोचना)
आशातना **आसायणा** स्त्री. (आशातना)
आश्चर्य **अच्छेर** नपुं. (आश्चर्य)
आश्रय **आहार** पुं. (आधार)
आश्विन मास **आसिण** पुं. (आश्विन)
आसक्त **आसत्त** वि. (आसक्त)
रय वि. (रत)
आहार **आहार** पुं. (आहार)

इ

इनाम **पाहुड** नपुं. (प्राभृत)
पारितोसिअ वि. (पारितोषिक)
इंधर अत्थ एत्थ (अ.) अत्र
इन्द्र **इंद** पुं. (इन्द्र)
सक्क पुं. (शक्र)
ईश्वर **ईसर** पुं. (ईश्वर)
इस कारण **अओ** अ. (अत:)
इस तरह ऐसे **त्ति, इइ, इअ** अ. (इति)
इसलिए, इससे **तओ** अ. (तत:)

उ

उग्र **उग्ग** वि. (उग्र)
उत्तम **उत्तम, उत्तिम वि.** (उत्तम)
वर वि. (वर)
उत्कृष्ट **उक्किट्ठ** वि. (उत्कृष्ट)
उत्साह **उच्छाह** पुं. (उत्साह)
उद्यम **उज्जोग** पुं. (उद्योग)
उपर **उवरि, उवरिं** अ. (उपरि)
उपदेश **उवएस** पुं. (उपदेश)
उपहार **पाहुड** नपुं. (प्राभृत)
उपांग **उवंग** पुं. नपुं. (उपाङ्ग)
उपाय **उवाय** पुं. (उपाय)
उपाध्याय **उवज्झाय, ऊज्झाय, ओज्झाय** पुं. (उपाध्याय)
उसके बाद **तओ** अ.(तत:)

ऋ

ऋद्धि **इड्ढि** ऋद्धि स्त्री. (ऋद्धि)
ऋषि **रिसि** पुं. (ऋषि)

ए-ऐ

एकदम **सहसा** अ. (सहसा)
ऐसे **त्ति, इइ, इअ** अ. (इति)
और **च, य औ** अ. (च)

क

कंठ **कंठ** पुं. (कण्ठ)
कन्या **कन्ना,** कन्नगा
स्त्री. (कन्या-कन्यका)
कपटी, धूर्त **सढ** पुं. (शठ)

कपाल **भाल** नपुं. (भाल)
ललाड, **णडाल** नपुं. (ललाट)
कमल **पोम्म, पउम** नपुं. पद्म.
करने योग्य **कायव्व** वि. (कर्तव्य)
करना **समायरण** नपुं. (समाचरण)
करण नपुं. (करण)
कर्ण **कण्ण** पुं. (कर्ण)
कर्म **कम्म** नपुं. (कर्मन्)
कर्मक्षय **कम्मक्खय** पुं. (कर्म-क्षय)
कल्याण **कल्लाण** नपुं. (कल्याण)
कसौटी **निहस** पुं. (निकष)
कहाँ **कत्थ, कह, कहि, कहिं** अ. (कुत्र)
कहाँ से **कत्तो, कओ, कुदो, कुओ,** अ. (कुतः)
काम **मयण** पुं. (मदन) **काम** पुं. (काम)
कारण **कारण** नपुं. (कारण)
निमित्त नपुं. (निमित्त) **हेउ** पुं. (हेतु)
कार्य **कज्ज** नपुं. (कार्य)
काल **काल** पुं. (काल) **समय** पुं. (समय)
काव्य **कव्व** नपुं. (काव्य)
किसलिए, क्यों **किं** सर्व. (किम्)
किसान **हालिअ** पुं. (हालिक)
कीर्ति **जस** पुं. (यशस्)
कुबेर **वेसवण, वेसमण** पुं. (वैश्रवण)
कुमारावस्था **कुमारत्तण** नपुं. (कुमारत्व)
कुरूप **विरूप** वि. (विरूप)
कुत्ता **स, साण** पुं. (श्वन्)
कुशल वैद्य **सुविज्ज** पुं. (सुवैद्य)
कृत्य **किच्च** नपुं. (कृत्य)
कृपण **किवण, किविण** वि. (कृपण)
कृपा **किवा** स्त्री. (कृपा)
कृष्ण **किण्ह, कण्ह** पुं. (कृष्ण)
विण्हु पुं. (विष्णु)
केवलज्ञान **केवलनाण** नपुं. (केवलज्ञान)
केवली **केवलि** पुं. (केवलिन्)
कोई भी **कोवि** अ. (कोऽपि)
क्रोध-**कोप कोह** पुं. (क्रोध)
कोव पुं. (कोप)
कौरव **कउरव** पुं. (कौरव)
क्षमा **खमा** स्त्री. (क्षमा)
खन्ति स्त्री. (क्षान्ति)
क्षेत्र **खेत्त** नपुं. (क्षेत्र)

ख

खंड **खंड** पुं. नपुं. (खण्ड)
खुश हुआ **मोइअ** कर्म. भू. (मोदित)
तुस्सिअ-तूसिअ कर्म भू. (तुष्ट)

ग

गणधर **गणहर** पुं. (गणधर)
गति **गइ** स्त्री. (गति)
गंभीर **गंभीर** वि. (गम्भीर)
गरीब **दीण** वि. (दीन)
गरुड **गरुल** पुं. (गरुड़)
गान **गाण** नपुं. (गान)
गिरनार **उज्जयंत** पुं. (उज्जयन्त)

घ

घर **घर** पुं. (गृह)
गेह नपुं. (गेह)

घी **घय** नपुं. (घृत)
घोड़ा **आस** पुं. (अश्व)

च

चक्रवर्ती **चक्कवट्टि** पुं. (चक्रवर्तिन्)
चन्द्र **मियंक, मयंक** पुं. (मृगाङ्क) चंद. **चंद्र** पुं. (चन्द्र) **इंदु** पुं. (इन्दु)
चरण **चलण** नपुं. (चरण)
चांदी **रयय** नपुं. (रजत)
चरित्र **चरित्त** नपुं. (चरित्र)
चारित्र **संजम** पुं. (संयम)
चरित्त नपुं. (चारित्र)
चरण नपुं. (चरण)
चित्त **चित्त** नपुं: चित्त
हिअय हिअ नपुं. (हृदय)
चिह्न **चिंध, चिण्ह** नपुं. (चिह्न)
चैत्यवंदन **चीवंदण** नपुं. (चैत्यवंदन)
चोर **चोर** पुं. (चौर)
चोरी **चोरिअ** नपुं. चौर्य
चौमासा **वरिसा-वासा** स्त्री. (वर्षा)

छ

छाया **छाही,** छाया स्त्री. (छाया)

ज

जगत **जग, जय** नपुं. (जगत्)
जंगल **रण्ण, अरण्ण** नपुं. (अरण्य)
जन्म **जम्म, जम्मण** पुं. नपुं. (जन्मन्)
जब **जया** अ. (यदा)
जंबूद्वीप **जंबूद्दीव, जंबूदीव** पुं. जम्बूद्वीप
जरूर **अवस्सं** अ. (अवश्यम्)
जहरवाला **विसमीसिअ** वि. (विषमिश्रित)
जहाँ **जहिं, जहि, जह, जत्थ** अ. (यत्र)
जानकार **णायार, णाउ** वि. (ज्ञातृ)
जाल **जाल** नपुं. (जाल)
जिनबिम्ब **जिणबिंब** नपुं. (जिनबिम्ब)
जिनालय **जिणालय** नपुं. (जिनालय)
जिनेश्वर **जिणेसर, जिणीसर** पुं. (जिनेश्वर)
जिलानेवाला-**जीवाउ** पुं. नपुं. (जीवातु)
जीभ **जिब्भा, जीहा** स्त्री. (जिह्वा)
जीर्ण **खीण, छीण, झीण** वि. (क्षीण)
जीव **जीव** पुं. (जीव)
जीवदया **जीवदया** स्त्री. (जीवदया)
जीवन **जीवण, जीविअ** नपुं. (जीवन-जीवित)
जीवहिंसा **जीवहिंसा** स्त्री. (जीवहिंसा)
जीव इत्यादि **जीवाइ** पुं. (जीवादि)
जैनधर्म **जइणधम्म** पुं. (जैनधर्म)
जैसा, **इव, विव, व्व** अ. (इव) जिस तरह
जैसा, जिस तरह का **जारिस** वि. (यादृश)
ज्ञातपुत्र **नायपुत्त, नायउत्त** पुं. (ज्ञातपुत्र)

ज्यादा **बहु, बहुअ** वि. (बहु)
अईव अ. (अतीव)

ट

टूटा हुआ **तुडिअ** कर्म भू. त्रुटित)

त

तत्त्व **तत्त** नपुं (तत्त्व)
तत्त्वज्ञान **तत्तनाण** नपुं. (तत्त्वज्ञान)
तत्त्व का कथन **तत्तवत्ता** स्त्री. (तत्त्ववार्ता)
तथा **तह, तहा** अ. (तथा)
तप **तव** पुं. (तपस्)
तब **तया** अ. (तदा)
तरफ **पइ** अ. (प्रति)
तापस **तावस** पुं. (तापस)
तारनेवाला **तारण** वि. (तारक)
तारा **तारग** नपुं. (तारक)
तारा स्त्री. (तारा)
तालाब **तलाग, तलाय** नपुं. तड़ाग
तिलक **तिलग** पुं. (तिलक)
तीर्थ **तित्थ, तूह** नपुं. (तीर्थ)
तीर्थंकर **तित्थयर** पुं. (तीर्थंकर)
तो भी **तहवि** अ. (तथापि)
त्यागी **चाइ** वि. (त्यागिन्)

थ

थोड़ा **थोक्क, थोव, थेव** वि. (स्तोक)

द

दक्षिण दिशा का **दाहिणिल्ल, दक्खिणिल्ल** वि. (दाक्षिणात्य)
दर्शन **दंसण** नपुं. (दर्शन)
दही **दहि** नपुं. (दधि)
दान **दाण** नपुं. (दान)
दिन दिवस, **दिवह** पुं. नपुं. (दिवस)
दिन में **दिवा, दिआ** अ. (दिवा)
दिशा **दिसा** स्त्री. (दिशा)
दीक्षा **दिक्खा** अ. (दीक्षा)
दीपक **दीव** पुं. (दीप)
दुःख **दुह, दुक्ख** नपुं. (दुःख)
दुःखी **दुहि, दुक्खि** वि. (दुःखिन्)
दुर्जन **दुज्जण** पुं. (दुर्जन)
दुष्कर्म **पावकम्म** नपुं. (पापकर्मन्)
दूध **दुद्ध** नपुं. (दुग्ध)
देव **देव** पुं. (देव)
देवलोक **देवलोक** पुं. (देवलोक)
देश **जणवय** पुं. (जनपद)
देशना **देसणा** स्त्री. (देशना)
द्रव्य **दविअ, दव्व** नपुं. (द्रव्य)
धण नपुं. (धन)
अड्ड, अत्थ पुं. (अर्थ)
द्वेष **मच्छर** पुं. (मत्सर)
द्वार **दुआर, दार, वार** नपुं. (द्वार)

ध

धन **धण** नपुं. (धन)
धर्म **धम्म** पुं. (धर्म)
धर्मिजन **धम्मिट्ठ** पुं. (धर्मिष्ठ)

धान्य **धन्न** नपुं. (धान्य)
धीरज **धिइ** स्त्री. (धृति)
धीरे-धीरे **सणियं** अ. (शनैस्)
ध्यान **झाण** नपुं. (ध्यान)
ध्वज **धअ**, **झअ** पुं. (ध्वज)

न

नगर **नयर** नपुं. (नगर)
नट **नड** पुं. (नट)
ननन्द **नणंदा** स्त्री. (ननान्दृ)
नरक **निरय, नरय** पुं. (नरक)
नहीं तो, वरना **अन्नह-अन्नहा** अ. (अन्यथा)
नाचना **नच्चू** (नृत्य)
नाटक **नाडग, नट्ट** नपुं. (नाटक-नाट्य)
नाव **नावा** स्त्री. (नौ)
नाश **नास** पुं. (नाश)
नित्य **सासय** वि. (शाश्वत)
निदान **नियाण** नपुं. (निदान)
निर्जरा **निज्जरा** स्त्री. (निर्जरा)
निश्चल **निच्चल** वि. (निश्चल)
नीति **नाय** पुं. (न्याय)
नय पुं. (नय)
नीइ स्त्री. (नीति)
नीतिशास्त्र **नीइसत्थ** नपुं. (नीतिशास्त्र)
नेत्र **नेत्त** पुं. नपुं. (नेत्र)
नेमि (जिनेश्वर) नेमि पुं. (नेमि)
नैमित्तिक **नेमित्तिअ** वि. (नैमित्तिक)
न्याय **नाय** पुं. (न्याय)
न्यायमार्ग **नायमग्ग** पुं. (न्यायमार्ग)

प

पकड़ना **गिण्ह्** (ग्रह्)
पक्षी **पक्खि** पुं. (पक्षिन्)
पका हुआ **पक्व** वि. (पक्व)
पण्डित **अहिण्णु** वि. (अभिज्ञ)
पंडिअ पुं. (पण्डित)
बहु पुं. (बुध)
पथ्य **पच्छ** वि. (पथ्य)
परन्तु **अवि, पि, वि.** अ. (अपि)
किंतु अ. (किन्तु)
परम **परम** वि. (परम)
परलोक **परलोअ, परलोग** पुं. (परलोक)
परस्त्री **परदारा** स्त्री. (परदारा)
परस्पर **अणोण्ण, अण्णमण्ण** वि. (अन्योन्य)
परोपकारी **परोवयारि** वि. (परोपकारिन्)
पर्याय **पज्जाय** पुं. (पर्याय)
पर्वत **पव्वय, गिरि** पुं. (पर्वत, गिरि)
पर्षद् **परिसा** स्त्री. (परिषद्)
पवन **पवण** पुं. (पवन)
वाउ पुं. (वायु)
पशु **पसु** पुं. (पशु)
पश्चाताप **पच्छायाव** पुं. (पश्चाताप)
पहला **पुरं-पुरा** अ. (पुरस्-पुरा)
पुव्व, पढम वि. (प्रथम)
प्रहर **जाम, पहर** पुं. (याम, प्रहर)
पाठशाला **पाठशाला** स्त्री. (पाठशाला)
पानी **जल** नपुं. (जल)
वारि नपुं. (वारि)
उदग-दग नपुं. (उदक)

पाप **पाव** नपुं. (पाप)
दुरिअ नपुं. (दुरित) पाप
पापी **पाव** पुं. (पाप)
प्रे. (रक्षय्, पालय्)
पालन करनेवाला **पालग** वि. (पालक)
पालन किया जाता **पालिज्जंत**
कर्म. वर्त. (पाल्यमान)
पिता **पिअर, पिउ** पुं. (पितृ)
जणअ पुं. (जनक)
पुत्र **पुत्त** पुं. (पुत्र) **सुअ** पुं. (सुत)
पुरुष **पुरिस** पुं. (पुरुष)
माणव पुं. (मानव)
जण पुं. (जन)
पुष्प **पुप्फ** नपुं. (पुष्प)
पुस्तक **पुत्थय, पोत्थय** पुं. नपुं.
(पुस्तक)
गंथ पुं. (ग्रन्थ)
पूजन **अच्चण** नपुं. (अर्चन)
पूरा **सयल** वि. (सकल)
पृथ्वी **पुढवी, पुहवी** स्त्री. (पृथिवी)
पिच्छी स्त्री. (पृथ्वी)
पेड़ **वच्छ** पुं. (वृक्ष)
तरु पुं. (तरु)
प्रकाश **पयास** पुं. (प्रकाश)
प्रकाशना **पयासग** वि. (प्रकाशक)
प्रजा **पया** स्त्री. (प्रजा)
प्रतिमा **पडिमा** स्त्री. (प्रतिमा)
प्रतिक्रमण **पडिक्कमण** नपुं.
(प्रतिक्रमण)

प्रद्युम्न **पज्जुण्ण** पुं. (प्रद्युम्न)
प्रभावः **पहाव** पुं. (प्रभाव)
प्रभात **पच्चूस-ह** पुं. (प्रत्यूष)
प्रभात में **पए** अ. (प्रगे)
प्रभु **पहु** पुं. (प्रभु)
प्रमाद **पमाय** पुं. (प्रमाद)
प्रयोग **पओग** पुं. (प्रयोग)
प्रश्न **पण्ह** पुं. (प्रश्न)
प्राण **पाण** पुं. नपुं. बहुव. (प्राण)
प्राणान्ते **जीवियंत** पुं. (जीवितान्त)
प्राणी **पाणि** पुं. (प्राणिन्)
जंतु पुं. (जन्तु)
प्राप्ति **पत्ति** स्त्री. (प्राप्ति)
प्रिय **पिय** वि. (प्रिय)
प्रीति **पीइ** स्त्री. (प्रीति)

फ

फल **फल** नपुं. (फल)
फोकट, व्यर्थ **मुहा** अ. (मुधा),
मोरउल्ला अ. (दे.)

ब

बगीचा **उज्जाण** नपुं. (उद्यान)
बन्दर **कवि** पुं. (कपि)
बन्धन **बंधण** नपुं. (बन्धन)
बन्धु **बंधु** पुं. (बन्धु)
बहन **बहिणी, भगिणी** स्त्री. (भगिनी)
बहरा **बहिर** वि. (बधिर)

बहुत **बहु, बहुअ** वि. (बहु)
अईव अ. (अतीव)
बहू **बहू** स्त्री. (वधू)
बाद में **पच्छा** अ. (पश्चात्)
बरसना **वरिस्** (वर्ष)
बारिस **वरिस**, **वास** पुं. नपुं. (वर्ष)
बादल **मेह** पुं. (मेघ)
बालक **बाल** पुं. (बाल)
बाहर **बाहि**, **बाहिर** अ. (बहिस्)
बिना **विणा** अ. (विना)
बुद्धि **बुद्धि** स्त्री. (बुद्धि)
बुद्धिशाली **मइमंत** वि. (मतिमत्)
बोधि, बोहि स्त्री. (बोधि)
ब्रह्मचर्य **बम्हचेर**, **बम्हचरिअ,**
बंभचेर नपुं. (ब्रह्मचर्य)
ब्राह्मण **माहण**, **बंभण** पुं. (ब्रह्मन्)
विराजित **विराजिअ** कर्म भू. (विराजित)

भ

भगवान **भगवंत, भयवंत**
पुं. (भगवत्)
भगवती अंग **भगवई-अंग**
नपुं. *(भगवती-अङ्ग)*
भ्रमर **भसल**, **भमर** पुं. (भ्रमर) भौंरा
भय **भय** नपुं. (भय)
भरतक्षेत्र **भरहखेत** नपुं. (भरतक्षेत्र)
भव्यजीव **भव्वजीव** पुं. (भव्यजीव)
भाई **भायर**, **भाउ** पुं. (भ्रातृ)
भाव **भाव** पुं. (भाव)
भिक्षु **भिक्खु** पुं. (भिक्षु)
भूल **खलिअ** नपुं. (स्खलित)
भोग **भोग** पुं. नपुं. (भोग)
भोजन **भोयण** नपुं. (भोजन)

म

मकान **पासाअ** पुं. (प्रासाद)
घर नपुं. (गृह)
मंगल **मंगल** नपुं. (मङ्गल)
मछली **मच्छ** पुं. (मत्स्य)
मदद **साहज्ज, साहेज्ज**
नपुं. (साहाय्य)
मंदिर **मंदिर** नपुं. (मन्दिर)
चेइअ, चइत्त नपुं. (चैत्य)
मधु **महु** नपुं. (मधु)
मध्य **मज्झ** नपुं. (मध्य)
मनुष्य **जण** पु. (जन) **मणूस** पुं. (मनुष्य)
मन्त्र **मंत** पुं. नपुं. (मन्त्र)
मन्त्री **मंत** पुं. (मन्त्रिन्)
मरण, **मोत**, मृत्यु मरण नपुं. (मरण)
मर्यादा **मज्जाया** स्त्री. (मर्यादा)
मस्तक **मत्थय** नपुं. (शिरस्)
सिर नपुं. (शिरस्)
सीस पुं. नपुं. (शीर्ष)
महात्मा **महप्प** पुं. (महात्मन्)
महामन्त्री **महामंति** पुं. (महामन्त्रिन्)
महोत्सव **महोच्छव, महूसव, महोसव**
पुं. (महोत्सव)
माता **मायरा**, **माउ** स्त्री. (मातृ)
मान- **माण** पुं. (मान)
मानना **मन्न्** (मन्य)
माया **माया** स्त्री. (माया)

मारा हुआ **हय** कर्म. भू. (हत)
मार्ग **मग्ग** पुं. (मार्ग)
माला **माला** स्त्री. (माला)
मांस **मास**, **मंस** नपुं. (मांस)
मित्र **मित्त** पुं. नपुं. (मित्र)
मिथ्या **मिच्छा** अ.
मुक्त **मुक्क**, **मुत्त** वि. (मुक्त)
मुख **मुह** नपुं. (मुख)
मूक, गूँगा **मूग**, **मूअ** वि. (मूक)
मुंझाया हुआ घबराया हुआ, **विहलिअ**, **विहल** वि. (विह्वलित विह्वल)
मुनि **मुणि** पुं. (मुनि)
मुसाफिर **पहिअ** पुं. (पथिक)
मूर्ख **मुक्ख**, **मुरुक्ख** पुं. (मूर्ख)
मृत्यु **मच्चु** पुं. (मृत्यु)
मेघ **मेह** पुं. (मेघ)
मेरुपर्वत **मेरु** पुं. (मेरु)
मंदर पुं. (मन्दर)
मोक्ष **मोक्ख**, **मुक्ख** पुं. (मोक्ष)
मोक्षपद **मोक्खपय** नपुं. (मोक्षपद)
मोर **मोर** पुं. (मयूर)

य

यतिधर्म **जइधम्म** पुं. (यतिधर्म)
यन्त्र **जंत** नपुं. (यन्त्र)
यहाँ **अत्थ**, **एत्थ** अ. (अत्र)
युद्ध **जुद्ध** नपुं. (युद्ध)
युवानी **जोव्वण** नपुं. (यौवन)
योगी **जोगि** पुं. (योगिन्)
योद्धा, सैनिक **भड** पुं. (भट)
वीर पुं. (वीर)

र

रक्षण **रक्खण** नपुं. (रक्षण)
रहना **वसण** नपुं. (वसन)
रहित **रहिअ** वि. (रहित)
विरहिअ वि. (विरहित)
राक्षस **रक्खस** पुं. (राक्षस)
राख, भस्म **भप्प**, **भस्म**, पुं. नपुं. (भस्मन्)
राग **राग** पुं. (राग)
राजा **नरिंद**, नरेंद (नरेन्द्र)
निवइ पुं. (नृपति)
राज्य **रज्ज** नपुं. (राज्य)
रानी **महिसी** स्त्री. (महिषी)
रात्रि **राइ**, **रत्ति** स्त्री. (रात्रि)
रिद्धि **रिद्धि**, **इड्ढि** स्त्री. (ऋद्धि)
समिद्धि, **सामिद्धि** स्त्री. (समृद्धि)
रींछ **रिच्छ**, **रिक्ख** पुं. (ऋक्ष)
रुक्मिणी **रुप्पिणी** स्त्री. (रुक्मिणी)
रोगी **रुक्क**, **रुग्ग** वि. (रुग्ण)

ल

लक्षण **लक्खण** नपुं. (लक्षण)
लक्ष्मण **लक्खण** पुं. (लक्ष्मण)
लक्ष्मी **लच्छी** स्त्री. (लक्ष्मी)
लड़का **बाल** पुं. (बाल)
लड़की **बाला** स्त्री. (बाला)
लता **लया** स्त्री. (लता)
लेख **लेह** पुं. (लेख)
लोक **लोग**, **लोअ** पुं. (लोक)
जण पुं. (जन)

लोभ **लोह** पुं. (लोभ)
लोभी **लोद्धअ** पुं. (लुब्धक)

व

वक्त **समय** पुं. (समय)
काल पुं. (काल)
वगैरह **आइ** पुं. (आदि)
वचन **वयण** पुं. नपुं. (वचन)
वडील, बड़ा **गुरु, गुरुअ** वि. (गुरु)
वन **रण्ण**, **अरण्ण** नपुं. (अरण्य)
वण नपुं. (वन)
वनस्पति **वणस्सइ**, **वणप्फइ** स्त्री. (वनस्पति)
वर्ष **वरिस**, **वास** पुं. नपुं. (वर्ष)
वर्षधर **वासहर** पुं. (वर्षधर)
वसन्त ऋतु **वसंत** पुं. (वसंत)
वसंतरिउ स्त्री. (वसन्त-ऋतु)
वसति **वसहि, वसइ** स्त्री. (वसति)
वस्त्र **वत्थ** नपुं. (वस्त्र)
वही **सच्चिअ**, **तं चिय** अ. (स एव, तदेव)
वहाँ **तहिं, तहि, तह, तत्थ** अ. (तत्र)
वाघ **वग्घ** पुं. (व्याघ्र)
वाचाल **मुहर** वि. (मुखर)
वाणी **वाणी** स्त्री. (वाणी)
वाया स्त्री. (वाच्-वाचा)
वात्सल्य **वच्छल्ल** नपुं. (वात्सल्य)
वासुदेव **वासुदेव** पुं. (वासुदेव)
विद्याधर **विज्जाहर** पुं. (विद्याधर)
विद्यार्थी **विज्जत्थि** पुं. (विद्यार्थिन्)
विद्वान **विउस** वि. (विद्वस्)
विधाता **धायार**, **धाउ** पुं. (विधातृ)
विधि **विहि** पुं. (विधि)
विनय **विणय** पुं. (विनय)
विपरीत **विवरीअ**, **विवरिअ** वि. (विपरीत)
विमान **विमाण** पुं. नपुं. (विमान)
वियोग **विओग** पुं. (वियोग)
विरुद्ध **विरुद्ध** वि. (विरुद्ध)
विवाद **विवाय** पुं. (विवाद)
विष **विस** पुं. नपुं. (विष)
विह्वल **विब्भल**, **विहल** वि. (विह्वल)
वीतराग **वीयराग** पुं. (वीतराग)
वीर **वीर** पुं. (वीर)
वृद्धावस्था **वुड्ढत्तण** नपुं. (वृद्धत्व)
वेदना **वेयणा**, **वियणा** स्त्री. (वेदना)
वेश्या **वेसा** स्त्री. (वेश्या)
वैद्य **वेज्ज** पुं. (वैद्य)
वैयावच्च **वेआवच्च** नपुं. (वैयावृत्त्य)
वैराग्य **वेरग्ग** पुं. (वैराग्य)
वैसा **तारिस** वि. (तादृश)
व्याकरण **वागरण**, **वायरण, वारण** नपुं. (व्याकरण)
व्याख्यान **वक्खाण** नपुं. (व्याख्यान)
व्याधि **वाहि** पुं. (व्याधि)
व्यापार **वावार** पुं. (व्यापार)
व्रत **वय** पुं. नपुं. (व्रत)

श

शत्रु **सत्तु** पुं. (शत्रु)
रिउ पुं. (रिपु)
शब्द **सद्द** पुं. (शब्द)

शयन **सज्जा, सेज्जा** स्त्री. (शय्या)
शरण **सरण** नपुं. (शरण)
शरीर **सरीर** नपुं. (शरीर)
देह पुं. नपुं. (देह)
शस्त्र **सत्थ** नपुं. (शस्त्र)
शान्ति (जिन) **संति** स्त्री. (शान्ति)
शिखर **सिहर** नपुं. (शिखर)
शिष्य **सीस** पुं. (शिष्य)
शील **सील** नपुं. (शील)
शुभकर्म **सुह** नपुं. (शुभ)
श्मशान **सुसाण, मसाण** नपुं. (श्मशान)
श्रद्धा **सद्धा, सड्ढा** स्त्री. (श्रद्धा)
श्रवण **सवण** नपुं. (श्रवण)
सुनना
श्रावक **सावग** पुं. (श्रावक)
श्रेष्ठ **मह, महंत** वि. (महत्)

स

संघ **संघ** पुं. (सङ्घ)
संतोष **संतोस** पुं. (सन्तोष)
संयम **संजम** पुं. (संयम)
संसार **संसार** पुं. (संसार)
संसारचक्र **संसारचक्क** नपुं. (संसारचक्र)
सज्जन **सज्जण** पुं. (सज्जन)
सत्य **सच्च** नपुं. (सत्य)
सत्यमार्ग **सच्चमग्ग** पुं. (सत्यमार्ग)
सत्यवादी **सच्चवय** वि. (सत्यवद)
सफल **सहल, समल** वि. (सफल)
सब **सयल** वि. (सकल)
सव्व वि. (सर्व)
सब से बड़ा **जेट्ठ, जिट्ठ** वि. (ज्येष्ठ)
सभा **सहा** स्त्री. (सभा)
समर्थ **समत्थ** वि. (समर्थ)
समवसरण **समोसरण, समवसरण** नपुं. (समवसरण)
समाधि **समाहि** स्त्री. (समाधि)
समान **समाण** वि. (समान),
सरिस वि. (सदृश),
सरिच्छ, सरिक्ख वि. (सदृक्ष)
समुदाय **विंद, वुंद** पुं. (वृन्द)
वग्ग पुं. (वर्ग)
समुद्र **समुद्द** पुं. (समुद्र)
सागर पुं. (सागर)
सम्यक्त्व **सम्मत्त** नपुं. (सम्यक्त्व)
दंसण नपुं. (दर्शन)
सरस्वती **सरस्सई** स्त्री. (सरस्वती)
सरोवर **सर** पुं. नपुं. (सरस्)
सर्प **सप्प** पुं. (सर्प)
सर्वज्ञ **सव्वण्णु** वि. (सर्वज्ञ)
सर्वत्र, सब जगह **सव्वत्थ, सव्वहि, सव्वह** अ. (सर्वत्र)
सहेली, **सखी, सही** स्त्री (सखी)
साक्षात् **पच्चक्ख** वि. (प्रत्यक्ष)
सक्खं अ. (साक्षात्)
साथ में **सह** अ. (सह)
सद्धिं अ. (सार्धम्)
साधर्मिक **साहम्मिअ** वि. (साधर्मिक)
साधु **साहु** पुं. (साधु)

भिक्खु पुं. (भिक्षु)
जइ पुं. (यति)
समण पुं. (श्रमण)
सिंह **सिंघ, सीह** पुं. (सिंह)
सिद्ध **सिद्ध** पुं. (सिद्ध)
सिद्धराज **सिद्धराय** पुं. (सिद्धराज)
सिद्धहेम **सिद्धहेम** नपुं. (सिद्धहेम)
सिद्धाचल **सेत्तुंज** पुं. शत्रुञ्जय
सिद्धगिरि पुं. (सिद्धगिरि)
सिवा **विणा** अ. विना
सुन्दर **सोहण** वि. (शोभन)
मणोज्ज-मणोण्ण वि. (मनोज्ञ)
सुवर्ण **सुवण्ण** नपुं. (सुवर्ण)
सुख **सुह** नपुं. (सुख)
सुखपूर्वक **सुहेण** तृ. एकव. (सुखेन)
सुखी **सुहि** वि. (सुखिन्)
सुनकर **सुणिऊण** संबं. भू. (श्रुत्वा)
सूत्र **सुत्त** नपुं. (सूत्र)
सुअ नपुं. (श्रुत)
सत्थ नपुं. (शास्त्र)
सेना **सेणा** स्त्री. (सेना)
सेवा **सेवा** स्त्री. (सेवा)
सोनी **सुवण्णगार** पुं. (सुवर्णकार)
सोना **हेम** नपुं. (हेमन्)
स्तुति **थुइ** स्त्री (स्तुति)
स्त्री **इत्थी, थी** स्त्री. (स्त्री)
स्तोत्र **थोत्त** नपुं. (स्तोत्र)
स्थिर **थिर** वि. (स्थिर)
स्नेह **नेह**, सिणेह पुं. (स्नेह)
स्वप्न **सिमिण, सिविण, सुमिण,**
सुविण पुं. नपुं. (स्वप्न)
स्वर्ग **सग्ग** पुं. (स्वर्ग)
स्वाध्याय **सज्झाय** पुं. (स्वाध्याय)
स्वामी **सामि** पुं. (स्वामिन्)

ह

हमेशा **सइ, सया** अ. (सदा)
हमारे जैसा **अम्हारिस** सर्व (अस्मादृश)
हरण करना **हरण** नपुं. (हरण)
हल्का **लहु, लहुअ** वि. (लघु)
तुच्छ वि. (तुच्छ)
हाथ **हत्थ** पुं. (हस्त)
हाथी **हत्थि** पुं. (हस्तिन्)
हार, माला **हार** पुं. (हार)
हित **हिअ** वि. (हित)
हृदय **हिअय, हिअ** नपुं. (हृदय)
हेमचंद्रसूरि **हेमचन्द्रसूरि** पुं. (हेमचन्द्रसूरिन्)
होशियार, प्रवीण **अहिण्णु** वि. (अभिज्ञ)
निउण वि. (निपुण)

हिन्दी-प्राकृत धातुकोष

अ

अइक्कम् (अति + क्रम्) उल्लंघन करना

अइ + चर् (अति + चर्) अतिचार लगाना

अइ + वाय् (अति + पात्) जीवहिंसा करनी

अई-णी (गम्) जाना

अक्कम् (आ + क्रम्) दबाना, आक्रमण करना

अग्घ् (अर्घ्) आदर करना, सम्मान करना, किम्मत करना

अग्घ् (राज्) शोभा देना

अच्च् (अर्च्) पूजा करना

अच्छ् (आस्) बैठना

अड्-अट्ट्-(अट्) अटन करना, भटकना

अणु + जाण् (अनु + ज्ञा) अनुमति देना, सम्मति देना

अणु + भव् (अनु + भू = भव्) जानना, अनुभव करना

अणु + या-अणु + जा (अनु + या) अनुसरना

अणु + सर (अनु + सर्) अनुसरना

अणु + सास् (अनु + शास्) सीख देना, उपदेश देना, आज्ञा करना, शिक्षा करना

अप्प्-पणाम् (अर्पय्) अर्पण करना, भेंट देना

अब्भस् (अभ्यस्) अभ्यास करना सीखना

अब्भुद्धर् (अभि + उद् + धृ) उद्धार करना

अभि + नंद् (अभि + नंद) प्रशंसा करनी

अभि + निक्खम् (अभि + निष् + क्रम्) संयम के लिए घर से निकलना

अभि + सिंच् (अभि + सिञ्च्) अभिषेक करना

अरिह् (अर्ह्) लायक होना, योग्य होना, पूजा करना

अल्ली (आ + ली) आश्रय करना, आलिंगन करना, प्रवेश करना

अव + गण् (अव + गण्) अनादर करना, अपमान करना

अव + ने (अप + नी) दूर करना

अव + मन्न (अव + मन्य) अवज्ञा करनी, अपमान करना

अव + लंब् (अव + लम्ब) आश्रय लेना, सहारा लेना

अविक्ख्-अवेक्ख् (अप + ईक्ष्) अपेक्षा रखनी, परवाह करना, इच्छा करनी

अवे (अव + इ) जानना

अवे (अप + इ) दूर होना, पीछे हटना

अस् (अस्) होना

अहिज्ज् (अधि + इ) पढ़ना, अभ्यास करना ।

अहि + लस् (अभि + लष्) इच्छा करनी

आ

आइक्ख (आ + चक्ष्) कहना, उपदेश देना, समझाना

आइग्घ् (आ + घ्रा) सूंघना

आ + गच्छ् (आ + गम्) आना

आढा-आदर् (आ + दृ) आदर करना, मानना

आ + णे (आ + नी) लाना

आ + दिस् (आ + दिश्) आदेश करना, फरमाना

आ + भोय् (आ + भोगय्) देखना, विचारना, जानना

आ + रंभ-आरभ-आढव् (आ + रभ्) प्रारम्भ करना, शुरू करना

आ + राह् (आ + राध्) आराधना करना, सेवा करना

आ + लोय् (आ + लोक्) देखना, विलोकन करना

आ + लोय् (आ + लोच्) आलोचना करना, दिखाना, विचार करना

आ + सास् (आ + श्वासय्) आश्वासन देना, सान्त्वन करना

आ + हर् (आ + हृ) आहार करना

इ

इच्छ् (इष्-इच्छ) इच्छा करना, चाहना

उ

उंघ् (नि + द्रा) निद्रा, सोना

उग्घाड् (उद् + घाटय्) खोलना

उज्जम् (उद् + यम्) उद्यम करना, प्रयत्न करना

उज्झ् (उज्झ्) त्याग करना, छोड़ना

उट्ठ-उट्ठा (उत् + स्था.) उठना

उड्डे (उद् + डी) उड़ना

उदे (उद् + इ) उदय पाना

उद्दाल्-अच्छिंद् (आ + छिद्) छीन लेना

उद्धर (उद् + धृ) उद्धार करना

उन्नाम्-उल्लाल् (उद् + नामय्) ऊँचा करना, ऊपर घुमाना

उप्पज्ज् (उत् + पद्य) उत्पन्न होना

उम्मूल् (उद् + मूलय्) मूल से उखेड़ना, उखेड़ना

उल्लंघ् (उद् + लङ्घ्) उल्लंघन करना

उवज्ज् (उत्पद्य) उत्पन्न होना

उव + दंस् (उप + दर्शय्) दिखाना

उव + दिश् (उप + दिश्) उपदेश देना

उव + भुंज् (उप + भुञ्) उपभोग करना, काम में लाना

उव + यर् (उप + कृ) उपकार करना,

उव + वज्ज् (उप + पद्य) उत्पन्न होना

उव + सम् (उप + शम्) शांत होना

उव्वह् (उद् + वह्) पालन करना, धारण करना, उठाना

उव्विव् (उद् + विज्) उद्वेग करना, खिन्न होना

उवे (उप + इ) पास में जाना

ए

ए (इ) जाना, पाना
ए (आ + इ) आना
एस् (आ + इष्) खोजना, शुद्ध भिक्षा की खोज करना

ओ

ओंघ् (नि + द्रा) सोना, नींद करना

क

कंख्-मह् (काङ्क्ष्) चाहना
कंप् (कम्प्) काँपना, हिलना
कढ् (क्वथ्) उबालना, तपाना
कप्प् (क्लृप्) समर्थ होना, कल्पना करना, छेदना
कर् (कृ) करना
करिस्-कड्ढ्-(कृष्) खींचना, निकालना
कह् (कथ्) कहना
किण् (क्री) खरीदना
किम्म् (क्लम्) खिन्न होना, क्लान्त होना
कीड्-कील् (क्रीड्) क्रीड़ा करनी
कुज्झ् (क्रुध्-क्रुध्य) क्रोध करना
कुण् (कृ) करना
कुप्प् (कुप्-कुप्य) कोप करना
कुव्व् (कृ-कुर्व) करना, बनाना

ख

खंड् (खण्डय्) तोड़ना, टुकड़ा करना, विच्छेद करना
खण् (खन्) खोदना
खम् (क्षम्) क्षमा करना, माफी मांगना, सहन करना
खल् (स्खल्) रोकना, अटकाना, गिरना, भूलना, टपकना
खा-खाय् (खाद्) भोजन करना, खाना, जीमना
खिंस् (खिंस्) बुराई करना, गर्हा करना
खिज्ज् (खिद्) अफसोस करना, खेद करना
खिव् (क्षिप्) फेंकना
खुभ्-खुब्भ् (क्षुभ्) क्षोभ पाना, डरना घबराना

ग

गंठ-गंथ् (ग्रन्थ्) गूँथना, रचना, बनाना
गच्छ् (गम्) गमन करना, जाना
गण् (गण्) गिनना, आदर करना
गम् (गमय्) ले जाना, गुजारना, पसार करना, व्यतीत करना
गरिह् (गर्ह्) निंदा करना, घृणा करना
गल् (गल्) गलना, सड़ना, समाप्त होना
गवेस् (गवेषय्) गवेषणा करना, खोजना
गह् (ग्रह्) ग्रहण करना, लेना, जानना
गा (गै) गाना, आलापना

गिज्झ् (गृध-गृध्य) आसक्त होना, लंपट होना
गिण्ह् (ग्रह) ग्रहण करना
गिला (ग्लै) ग्लानि पाना, खिन्न टोना मुरझाना.

घ

घोट्ट् (पा) पीना, पान करना

च

चक्कम्म् (भ्रम्) घूमना, भटकना, भ्रमण करना
चक्ख् (आ + स्वाद्) स्वाद लेना चखना
चड्-आ-रोह् (आ + रूह्) चढ़ना, ऊपर बैटना, आरूढ़ होना
चय् (त्यज्) त्याग करना
चय्-तर्-सक्क् (शक्) समर्थ होना
चर् (चर्) गमन करना, चलना, जाना, भक्षण करना, सेवना
चल्-चल्ल् (चल्) चलना, गमन करना
चव् (च्यु) मरना, जन्मान्तर में जाना
चव् (कथ्) कहेना बोलना
चिइच्छ्-चिगिच्छ् (चिकित्स्) दवा करना, इलाज करना
चिंत्-परि + चिंत् (चिन्त्) चिन्ता करना, विचार करना
चिट्ठ् (स्था + तिष्ठ्) बैटना, स्थिति करना
चिण् (चि) इकट्ठा करना
चुक्क्-भुल्ल् (भ्रंश्) चूकना, भूल करना, भ्रष्ट होना, रहित होना
चोप्पड्-मक्ख् (म्रक्ष्) स्निग्ध करना, घी-तैल लगाना
चोर् (चोरय्) चोरी करना

छ

छड्ड् (मुच्) वमन करना, छोड़ना, त्याग करना
छज्ज् (राज्) शोभना, चमकना
छिंद् (छिद्) छेदना
छिव्-छिह् (स्पृश्) स्पर्श करना, छूना

ज

जंप् (कथ्, जल्प्) कहना, बोलना
जग्ग्-जागर् (जागृ) जागना, नींद से उठना
जण् (जनय्) उत्पन्न करना, पैदा करना
जम्म् (जन्) उत्पन्न होना
जय् (जि-जय्) जय पाना, जीतना
जय् (यत्) यत्न करना, मेहनत करना
जर् (जृ) जीर्ण होना, पुराना होना, बूढ़ा होना
जव् (जप्) जाप करना
जा (जन्) उत्पन्न होना
जा (या) जाना, गमन करना
जाण्-मुण् (ज्ञा) जानना

जाय् (याच्) प्रार्थना करनी, मांगना
जाव्-जव् (यापय्) गमन करना, गुजारना, शरीर का परिपालन करना
जिण् (जि) जीतना
जिव् (जीव्) जीना, प्राण धारण करना
जीव् (जीव्) जीना, प्राण धारण करना
जीह् (लज्ज्) शर्मिन्दा होना, लज्जा करना, शरमाना
जुंज्-जुज्झ् (युञ्-युज्य) लड़ना, युद्ध करना
जे (जि) जीतना, जय पाना
जेम् (भुञ्) भोजन करना
जोय् (दृश्) देखना
जोय् (द्योत्) प्रकाशना

झ

झड् (शद्) सड़ना, गिरना, टपकना झपट मारना
झर् (क्षर्) झरना, टपकना
झा (ध्यै) ध्यान करना

ठ

ठव् (स्थापय्) स्थापना करना
ठा (स्था) खड़ा रहना

ड

डर्-तस् (त्रस्) डरना, भयभीत होना
डंस्-डस् (दंश्) डसना, काटना
डह् (दह्) जलाना, दग्ध करना
डे (डी) उड़ना

ढ

ढक्क्-छाय् (छादय्) ढकना
ढिक्क् (गर्ज्) सांड का गरजना

ण

णज्ज् (ज्ञा) जानना
णिमज्ज्-णुमज्ज् (नि + मज्ज्) डूबना
णी-णीण् (गम्) जाना, गमन करना
णे (नी) ले जाना
ण्हव् (ण्हु) छुपाना
ण्हा (स्ना) स्नान करना, नहाना

त

तच्छ्-छोल्ल् (तक्ष्) छीलना, काटना
तण् तड्ड् (तन्) विस्तार करना, बिछाना.
तर् (तृ) तरना
तव् (तप्) तपना
ताड्-ताल् (ताडय्) ताड़न करना, पीटना
तुड्-तुट्ट् (त्रुट्-तुड्) टूटना, अलग होना
तुवर् (त्वर्) त्वरा करना, शीघ्रता करना
तूस्-तुस्स् (तुष्-तुष्य) संतोष पाना, खुश होना

थ

थक्क् (स्था) रहना, बैठना, स्थिर होना
थुण् (स्तु) स्तुति करनी

द

दंड् (दण्डय्) शिक्षा करनी, सजा करना, निग्रह करना
दंस् (दंश्) डसना
दक्ख्-दच्छ् (दृश्) देखना
दम् (दम्) दमन करना, निग्रह करना
दरिस् (दृश्-दर्श) देखना
दा-दे (दा) दान देना
दा, दे (दा) दान देना, देना
दाव्-दंस्-दक्खव्-दरिस् (दर्शय) दिखाना, बताना
दिंत्त (ददत्) देता हुआ
दिप्प् (दीप्) चमकना, तेज होना
दुगुच्छ्-दुगुंछ्-जुगुच्छ् (जुगुप्स्) घृणा करना, निंदा करनी
दुह्-दोह् (दुह्) दोहना
दूम् (दू-दावय्) दुःख देना, संताप उत्पन्न करना
दूस्-दुस्स् (दुष्-दुष्य) दोषित करना
देक्ख् (दृश्) देखना

ध

धर् (धृ) धारण करना, पकड़ना
धरिस् (धृष्) प्रगल्भता करना, ढिठाई करना, एकत्र होना
धा (धा) धारण करना
धा-धाय्-धाव् (धाव्) दौड़ना, शुद्ध करना, धोना
धुण्-धुव् (धू) कँपाना, फेंकना

न

नच्च् (नृत्-नृत्य) नाचना
नम्-नव् (नम्) नमन करना, नमस्कार करना
नज्झ् (नह्य) बांधना
नट्ट (नट्) नाचना.
नस्स्-नास् नश् (नश्य) नष्ट होना
नासव्-पलाव्-नास् (नाशय्) पलायन होना, भागना, नष्ट करना
निअ-निअच्छ् (दृश्) देखना
निंद् (निन्द्) बुराई करना
निगिण्ह्-निग्गह् (नि + ग्रह्) पकड़ना निग्रह करना, शिक्षा करना, अटकाना
निज्जर् (नि + जृ) क्षय करना, नष्ट करना, कर्म का क्षय करना
निज्झर् (क्षि) क्षीण होना
निण्हव् (नि + ह्नु) अपलाप करना छुपाना
निद्दा (नि + द्रा) निद्रा लेना, नींद करना
निप्पज्ज्-निप्फज्ज् (निष्पद्य) निपजना, सिद्ध होना
निम्माण् निम्मव् (निर् + मा) बनाना, रचना
नि + वड् (नि + पत्) नीचे गिरना
निवट्ट्-निअट्ट् (नि + वृत्) पीछे फिरना
निव्विज्ज् (निर् + विद्य) निर्वेद पाना, विरक्त होना
नीसर्-निस्सर्-निहर्-नीहर् (निस् + सर्) निकलना

नीसस्-निस्सस्-झंख् (निर् + श्वस्) निश्वास लेना, श्वास को नीचा करना
नीसार-निस्सार (निर् + सारय) बाहर निकलना
ने (नी) ले जाना

प

पउस्स्-पउस् (प्र + द्विष्) द्वेष करना
पक्खिव् (प्र + क्षिप्) डालना
पज्जुवास् (पर्युपास्) सेवा-भक्ति करनी
पट्ठव-पट्ठाव (प्र + स्थापय्) भेजना, प्रस्थान करना, प्रारम्भ करना
पड् (पत्) गिरना, पतित होना
पडिक्कम् (प्रति + क्रम्) निवृत्त होना, पीछे हटना
पडिवज्ज् (प्रति + पद्य) स्वीकार करना, अंगीकार करना
पढ् (पठ्) पढ़ना, अभ्यास करना
पण्णव्-पन्नव् (प्र + ज्ञापय्) प्ररूपणा करनी, उपदेश देना
पत्ति-पत्तिअ (प्रति + इ) विश्वास करना, आश्रय करना
पत्तिआव् (प्रति + आयय्) विश्वास कराना, प्रतीति कराना
पत्थ्-पच्छ् (प्र + अर्थय्) प्रार्थना करना
प + भाव् (प्र + भावय्) प्रभावना करनी
प + मज्ज् (प्र + मृज्) मार्जन करना साफ-सुथरा करना
पमज्ज् (प्र + माद्य) प्रमाद करना भूलना
प + माय् (प्र + मद्-माद्) प्रमाद करना, भूलना
पम्हस् (वि + स्मृ) भूलना, विस्मरण करना
पय् (पच्) पकाना, पाक करना
पया (प्र + जनय्) जन्म देना, उत्पन्न करना
प + यास् (प्र + काश्) चमकाना, प्रकाशित करना
परावट्ट् (परा + वृत्) आवृत्ति करना, (बदलना, पलटना) परिवर्तन होना
परिआल् (वेष्टय्) लपेटना, वेष्टन करना
परिक्ख्-परिच्छ् (परि + ईक्ष्) परीक्षा करना, परखना
परिचय्-परिच्चय् (परि + त्यज्) परित्याग करना
परिचिंत् (परि + चिन्तय्) चिन्तन करना
परि + तप्प् (परि + तप्य) पश्चाताप करना, संतप्त होना, गरम होना
परि + देव् (परि + देव्) विलाप करना
परि + निव्वा (परि + निर् + वा) शान्त होना, सर्व कर्म रहित होना
परिव्वय् (परि + व्रज्) दीक्षा लेनी
परिहर् (परि + हृ) त्याग करना
परि + हा-परि + धा (परि + धा) पहनना, धारण करना
पलाव् (नाशय्) भगाना, नष्ट करना
पलोट्ट् (प्र + लुट्) लोटना, करवट लेना
पलोट्ट्-पलट्ट्-पल्हत्थ् (पर्यस्) फेंकना, पलटना, विपरीत होना

प + वज्ज् (प्र + पद्य) स्वीकार करना
प + वट्ट्-प + यट्ट् (प्र + वृत्) प्रवृत्ति करनी
प + विस् (प्र + विश्) प्रवेश करना
पव्वय् (प्र + व्रज्) प्रव्रज्या लेनी, दीक्षा लेनी
पव्वाव (प्र + व्राजय्) दीक्षित करना, संन्यास देना
प + संस् (प्र + शंस्) प्रशंसा करना, श्लाघा करना
प + सम् (प्र + शम्) अत्यंत शान्ति प्रशान्ति
प + सव् (प्र + सू) जन्म देना, प्रसव करना, उत्पन्न करना
प्रहर् (प्र + हृ) प्रहार करना
पहुप्प् (प्र + भू) समर्थ होना
पा (पा) पीना, पान करना
पाउब्भव् (प्रादुस् + भू) प्रकट होना
पाल् (पालय्) पालन करना
पालाव् प्रे. (पालय्) पालन कराना.
पाव् (प्र + आप्) प्राप्त करना
पास-पस्स् (दृश्, पश्य) देखना
पिव-पिज्ज् (पा-पिब) पीना
पीड्-पील् (पीड्) हैरान करना, दबाना, दुःख देना
पीण् (प्रीण्) खुश करना, प्रेम उपजाना
पुच्छ् (पृच्छ्) पूछना
पुण् (पू) पवित्र करना
पुलोअ-पुलअ (दृश्) देखना
पूज्-पूय्-(पूजय्) पूजा करना
पूर् (पूरय्) पूर्ण करना, भरना, पूर्ति करना
पूस्-पुस्स (पुष्-पुष्य) पोषण करना
पेक्ख्-पिक्ख्-पेच्छ् (प्र + ईक्ष्) देखना

फ

फाड्-फाल (पाटय्) फाड़ना, चीरना
फास्-फरिस् (स्पृश्) स्पर्श करना
फुट्ट् फुड् (स्फुट्-भ्रंश) फूटना, टूटना, विकसना, खिलना
फेड् (स्फेटय्) विनाश करना, दूर करना

ब

बंध् (बन्ध्) बाँधना, नियंत्रण करना
बव्-बुव् (ब्रू) बोलना, कहना
बहुमाण् (बहुमानय्) सम्मान करना
बाह् (बाध्) विरोध करना, रोकना, पीड़ा करना
बीह् (भी) डरना, भय पाना
बुक्क् (गर्ज्) गरजना, गर्जना करना
बुज्झ् (बुध्-बुध्य) जानना, समझना
बुड्ड् (मस्ज्) डूबना
बुहुक्ख् (बुभुक्ष्) खाने की इच्छा करना
बोल्ल् (कथ्) बोलना
बोह् (बोध्) जानना, समझना, ज्ञान करना

भ

भंज् (भञ्) भाँगना, तोड़ना
भज्ज् (भ्रस्ज्) पकाना, भूनना
भण् (भण्) कहना, बोलना, प्रतिपादन करना

भम्-भम्म् (भ्रम्) भ्रमण करना, घूमना
भर् (भृ) भरना, धारण करना
भव् (भू) होना, प्राप्त करना
भस्-बुक्क् (भष्) भूंकना, श्वान का बोलना
भा (भा) चमकना, दीपना, प्रकाशना
भाव् (भावय्) चिंतन करना
भास् (भाष्) कहना, बोलना
भास्-भिस् (भास्) शोभना, चमकना
भिंद् (भिद्) भेदना, चीरना, फाड़ना
भुंज् (भुञ्) खाना, जीमना
भुल्ल् (भ्रंश्) भूलना, गिरना, च्युत होना
भूस् (भूषय्) सजावट करना, शोभना

म

मंत् (मन्त्रय्) विचार करना
नि + मंत् (निमन्त्रय्) निमंत्रण करना, बुलाना
मंत पुं. नपुं. (मन्त्र) मन्त्र, विचार, गुप्त बात
मग्ग् (मार्गय्) मांगना, ढूंढ़ना
मज्ज्-मच्च् (मद्) अभिमान करना
मन्न् (मन्-मन्य) मानना, विचारना
मर् (मृ) मरना
मरिस् (मृश्) विचारना, सोचना
मरिस् (मृष्) सहन करना, क्षमा देना
माण् (मानय्) सम्मान करना, आदर करना
मिला (म्लै) म्लान होना, निस्तेज होना
मुंच्-मुय् (मुच्-मुञ्च्) छोड़ना
मुज्झ् (मुह्-मुह्य्) मोह करना, घबराना
मुण् (ज्ञा) जानना
मुव्वहइ (उद् + वहति) वह धारण करता है ।
मेल् (मुच्) छोड़ना

र

रंज् (रञ्) *रंग लगाना, खुशी करना*
रक्ख् (रक्ष्) रक्षण करना, पालन करना
रम् (रम्) क्रीड़ा करना, आनन्द मानना, संभोग करना
रक्खाव् प्रे. (रक्षय्) पालन कराना.
रय् (रचय्) बनाना, निर्माण करना
रव् (रु) शब्द करना, आवाज करना
राय्-वि + राय् (राज्-वि + राज्) शोभना, चमकना
रुंध्-रुज्झ्-रुंभ् (रुध्) रोकना, अटकाना
रुच्च्-रोय् (रुच्) रुचना, पसन्द पड़ना
रुव्-रोव् (रुद्) रोना, रुदन करना
रुह्-रोह् (रुह्) उगना, बढ़ना, उत्पन्न होना, चढ़ना
रुस्-रुस्स्-(रुष्-रुष्य) क्रोध करना, रोष करना
रेह् (राज्) शोभना, सुन्दर लगना, दीपना, चमकना
रोमन्थ, वग्गोल (रोमन्थय्) पगुराना, चबाई हुई चीज को पुनः चबाना, जुगाली करना.

ल

लज्ज् (लस्ज्-लज्ज्) शर्मिन्दा होना, शरमाना

लव् (लप्) बोलना, कहना

लह्-लभ् (लभ्) प्राप्त करना

लिंप् (लिप्) लीपना, चुपड़ना

लिह् (लिह्) चाटना

लिह्-लेह् (लिख्) लिखना

लुण् (लू) काटना

लुब्भ (लुभ्य) लोभ करना, आसक्ति करना

लुह् (मृज्) धोना, साफ करना, पोंछना

व

वंच् (वञ्च्) ठगना

वंद् (वन्द्) वंदन करना, प्रणाम करना

वक्खाण् (व्याख्यानय्) विवरण करना, कहना, स्पष्ट समझाना

वच्च् (व्रज्) जाना

वज्ज् (वर्जय्) त्याग करना

वज्जर् (कथ्) कहना, बोलना

वट्ट् (वृत्-वर्त्) बरतना, होना, आचरण करना

वड्ढ् (वृध्-वर्ध्) बढ़ना

वण्ण्-वन्न् (वर्णय्) वर्णन करना

वय् (वद्) बोलना, कहना

वर् (वृ-व्) सगाई करना, संबन्ध करना, पसन्द करना

वरिस् (वृष्) वृष्टि करनी, बरसना

वलग्ग् (आ + रुह्) चढ़ना, आरोहण करना

ववस् (व्यवृ + सो) प्रयत्न करना, चेष्टा करना, निर्णय करना

वस् (वस्) वास करना, रहना

वसीकुण्-वसीकर् (वशी + कृ) वश में करना

वह् (वह्) ले जाना, ढोना

वागर् (वि + आ + कृ) प्रतिपादन करना, कहना

वाच् (वाचय्) पढ़ना, पढ़ाना

वाहर् (वि + आ + कृ) बोलना कहना बुलाना.

वाया (वाच्-वा) वचन, वाणी

विउव्व (वि + कृ) बनाना, करना, दिव्य सामर्थ्य से उत्पन्न करना

विक्किण्-विक्के (वि + क्री) बेचना

विज्ज् (विद्-विद्य) होना, अस्तित्व होना

विज्झ्-विंध् (व्यध्-विध्य) बींधना भेदना

विढव् (अर्ज) उपार्जन करना, प्राप्त करना

विणास् (वि + नाशय्) नष्ट करना, क्षय करना, विध्वंस करना

विण्णव् (वि + ज्ञपय्) विनंति करनी, प्रार्थना करनी

वियस् (वि + कस्) विकास होना

विरम् (वि + रम्) अटकना, निवृत्त होना, विराम लेना

वि + राय (वि + राज्) शोभना, चमकना

विलव् (वि + लव्) विलाप करना, रोना

विलस् (वि + लस्) विलास करना
विवाह् (वि + वाह्य) विवाह करना
वि + सीय् (वि + सीद्) खेद करना
विहर् (वि + हृ) विहार करना
वि + हे (वि + धा) करना, बनाना
वीसम्-विस्सम् (वि + श्रम्) विश्रान्ति लेना
वीसर्-विस्सर् (वि + स्मृ) भूल जाना
वीसस् (वि + श्वस्) विश्वास करना, भरोसा करना
वुक्क्-भस् (भष्) भसना, भोंकनां
वेढ् (वेष्ट्) लपेटना, वेष्टित करना
वेव् (वेप्) कांपना, हिलना
वोल् (गम्) जाना, गति करना, उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना
वोल् (अति + क्रम्) उल्लंघना, अतिक्रमण करना
वोसिर् (वि + उत् + सृज्) त्याग करना, छोड़ना

स

संगच्छ् (सम् + गम्) मिलना, स्वीकार करना
सं + चिण् (सं + चि) जमा करना
सं + जम् (सं + यम्) संयम लेना, प्रयत्न करना, बाँधना
सं + जय् (सं + यत्) अच्छी प्रवृत्ति करना
सं + जल् (सं + ज्वल्) जलना, क्रोध करना, आक्रोश करना
सं + दिस् (सं + दिश्) संदेश देना, समाचार पहुँचाना
सं + ध-सं + धा (सं + धा) जोड़ना, सांधना, अनुसंधान करना
सं + पज्ज् (सम्पद्य) प्राप्त करना
सं + प + मज्ज् (सम् + प्र + मृज्) साफ करना निर्मल करना
सं + भर्-सम्हर् (सं + स्मृ) स्मरण करना, याद करना
संहर् (सं + हृ) संहार करना, अपहरण करना, विनाश करना
सक्क् (शक्) समर्थ होना
सड् (सद्) खिन्न होना, क्षय होना
सद्दह् (श्रद् + धा) श्रद्धान करना, विश्वास करना
सन्नाम् (आ + दृ) आदर करना
समाण्-समाव् (सम् + आप्) समाप्त करना, पूरा करना
समायर् (सम् + आ + चर्) करना, आचरण करना
समारंभ् (समा + रंभ्) प्रारम्भ करना, हिंसा करना
सर् (सृ) सरकना, जाना, खिसक जाना
सर् (स्मृ) याद करना, सोचना, स्मरण करना
सलह् (श्लाघ्) प्रशंसा करनी
सव् (शप्) शाप देना, आक्रोश करना
सव् (सू) जन्म देना

सह् (सह्) सहन करना
सह् (राज्) शोभा देना
साह् (कथ्) कहना
साह् (साद्य) सिद्धकरना, बनाना, आधीन करना
सिंच् (सिञ्च्) सींचना, छिड़कना
सिक्ख् (शिक्ष्) सीखना, पढ़ना
सिज्ज् (स्विद्) पसीना होना
सिज्झ् (सिध्-सिध्य) सिद्ध होना, निष्पन्न होना, बनना
सिढिल् (शिथिलय्) शिथिल करना
सिणिज्झ् (स्निह्य) स्नेह करना
सिलाह् (श्लाघ्) प्रशंसा करनी, स्तुति करनी
सिलेस् (श्लिष्) भेटना, आलिंगन करना
सिब्ब् (सीब्) सीना, सिलाई करना
सिह् (स्पृह्) इच्छा करना, चाहना
सीस्-सिस्स् (शिष्) हिंसा करना, वध करना, शेष करना, शेष रखना, भेट करना
सीस् (कथय्) कहना
सुण्-हण् (श्रु) सुनना, श्रवण करना
सुमर् (स्मृ) स्मरण करना, संभालना
सुव्-सोव् (स्वप्) सोना, शयन करना विश्रान्ति लेनी
सुह् (सुखय्) सुखी करना
सूय् (सूचय्) सूचना करनी
सूस्-सुस्स् (शुष्-शुष्य) सूखना
सेव् (सेव्) सेवा करनी
सोय्-सोच् (शुच्-शोच्) शोक करना सन्ताप करना
सोल्ल् (पच्) पकाना
सोह् (शोभ्) शोभना, चमकना
सोह् (शोधय्) शुद्धि करनी, गवेषणा करनी

ह

हक्क् (नि + सिध्) निषेध करना
हण् (हन्) मारना, वध करना, काटना
हर् (हृ) हरण करना, छीनना
हरिस् (हृष्-हर्ष्) खुश होना, प्रसन्न होना
हव् (हु) होम करना
हव्-भव्-हुव् (भू-भव्) होना
हस्-(हस्) हँसना
हिंड् (हिण्ड्) जाना, भ्रमण करना
हिंस् (हिंस्) हिंसा करनी
हील् (हेलय्) तिरस्कार करना, निन्दा करनी, अवज्ञा करना
हुण् (हु) होम करना
हो (भू) होना

हिन्दी प्राकृत धातुकोष

अ

अनुग्रह करना **अणुगिण्ह्, अणुग्गह्**
अनुसरना **अणु + सर्** (अनु + सृ)
अपमान करना **अव + मन्न** (अव + मन्य)

आ

आनन्द उपजाना **पीण्** (प्रीण्)
आराधना करना **आ + राह्** (आ + राध्)
आवृत्ति करनी **परा + वट्ट** (परा + वर्त्)
आशा रखनी **अविक्ख्**, अवेक्ख् (अप + ईक्ष्)

उ

उड़ना **उड्डे** (उद् + डी)
उद्धार करना **उद्धर्** (उद् + धृ)
उद्यम करना **उज्जम्** (उद् + यम्)
उपदेश देना **उव + दिस्** (उप + दिश्)
उल्लंघना **अइक्कम्** (अति + क्रम्)

क

कँपना **कंप्** (कम्प्)
कमाना **अज्ज्**, विढव् (अर्जू)
करना **कर्**, कुण् (कृ)
काटना **छिंद** छिद्
कोप करना **कुप्प्** (कुप्य)
क्षय करना **निज्जर्** (निर् + जृ)

ख

खड़े रहना **ठा** (स्था)
खाना **भुंज्** (भुञ्)
खेड़ना **करिस्** (कृष्)

ग

ग्रहण करना **गिण्ह्**, गह् (ग्रह्)
गूंथना **गंथ्**, **गंद्** (ग्रन्थ्)

च

चाहना **इच्छ्** (इष्-इछ्)

छ

छिड़कना **सिंच्** (सिञ्च्)
छीनना **उद्दाल्** (आ + छिद्)
छोड़ना **मुंच्** (मुञ्च्)

ज

जानना बोह्, **बुज्झ्** (बुध्-बुध्य)
जलाना **डह्** (दह्)
जीतना **जिण्** (जि)
जीना **जीव्**, जिव् (जीव्)

झ

झुकना **नम्-नव्** (नम्)

ड

डूबना **णिमज्ज्**, **णुमज्ज्** (नि + मस्ज्)

डसना **डस्, डह्** (दंश्)
डालना **पक्खिव्** (प्र + क्षिप्)

त

तपास करना **मग्ग्** (मार्गय्)
तरना **तर्** (तॄ)
त्याग करना **चय्** (त्यज्)

द

दण्ड करना **दंड्** (दण्डय्)
दूर करना **अव + णे** (अप + नी)
देखना **पास्, पस्स** (पश्य)
देना **दा, दे** (दा)

ध

धारण करना **परि + हा, परि + धा** (परि + धा)
धिक्कार होना **धिद्धी** अ. (धिक्-धिक्)
धि अ. (धिक्)

न

नमन करना, **नम्-नव्** (नम्) झुकना
नमस्कार करना **नमंस्** (नमस्य)
नष्ट होना **नस्स्, नास्** (नश्य)
नाश करना **नास्** (नाशय्)
निकलना **निस्सर्,** नीहर् (निस्सर्)
निन्दा करना **निंद्** (निन्द्)
निर्वेद पाना **निविज्ज्** (निर् + विद्य)

प

पढ़ना **भण्, पढ्** (भण्, पठ)
परीक्षा करनी **परिक्ख्, परिच्छ्** (परि + ईक्ष्)
पसन्द आना **रुच्च्, रोच** (रुच्)
प्राप्तकरना **पाव्** (प्र + आप्)
पार पाना **पारंगच्छ्** (पारङ्गच्छ)
पालन करना **पाल्** (पालय्)
पालन कराना **रक्खाव**, पालाव प्रे. (रक्षय्, पालय्)
पीड़ना **पील्, पीड्** (पीडय्)
पीना **पा, पिव्** (पा-पिब्)
पूछना **पुच्छ्** (पृच्छ्)
पूजा करना **अच्च्** (अर्च्)
पैदा करना **अज्ज्** (अर्ज्)
प्रवृत्ति करनी **पवट्ट**, पयट्ट (प्र + वर्त्)
प्रवेश करना **प + विश्** (प्र + विश्)

फ

फाड़ना **फाड्,** फाल् (पाटय)
फेंकना **खिव्** (क्षिप्)

ब

बचाना **रक्ख्** (रक्ष्)
बढ़ना **वड्ढ्** (वर्ध्)
बेचना **विक्किण्, विक्के** (वि + क्री)
बैठना **उव + विस्** (उप + विश्)
बोध पाना **बुज्झ्** (बुंध्य)
बरसना **वरिस्** (वर्ष्)

भ

भजना, **जपना,** सेव् (सेव्)

भटकना **भम्** (भ्रम)
भय पाना **बीह्** (भी)
भरना **भर्** (भृ-भर)
भसना **भस्**, बुक्क (भष्)
भोजन करना **भुंज्** (भुञ्)

म

मारना **ताड्, ताल्** (ताडय्)
मिलना **लह्** (लभ्)
मुर्झाना दुविधा में पड़ना **मुज्झ्** (मुह्य्)

र

रक्षण करना **रक्ख्** (रक्ष्)
रचना, बनाना **रय्** (रचय्)
रहना **वस्** (वस्)
रुचना, पसन्द आना **रुच्च्, रोच्** (रुच्)

ल

लज्जा आना **लज्ज्** (लज्ज्)
लड़ना **जुज्झ्** (युद्य्-युध्य्)
लाना **आ + णे** (आ + नी)
ले जाना **ने** (नी)
लोटना, लेटना **पलोट्ट** (प्र + लुठ्)

व

वंदन करना **वंद्** (वन्द्)
वध करना **हिंस्** (हिंस्)
वर्जना **वज्ज्** (वर्ज्)
विचार करना **मरिस्** (मर्श) मंत् (मन्त्रय्)
विश्रान्ति लेनी **वीसम्, विस्सम्** (वि + श्रम्)
विश्वास रखना **वीसस्, विस्सस्** (वि + श्वस्)
विहार करना **वि + हर्** (वि + हर्)
वृष्टि करनी **वरिस्** (वर्ष्)

श

शुरू करना **आ + रंभ्,** आरभ्, आढव् (आ + रभ्)
शोधना, खोजना **मग्ग्** (मार्गय्)
शोभना, सुन्दर लगना **सोह** (शोभ्)
वि + राय् (वि + राज्)
श्रद्धा रखनी **सद्दह** (श्रद् + धा)

स

संचय करना **सं + चिण्** (सम् + चि)
सहन करना **खम्** (क्षम्) **सह्** (सह्)
सिद्ध होना **सिज्झ्** (सिध्य्)
सुनना **सुण्** (श्रु)
सूंघना **आइग्घ्** (आ + घ्रा)
सूखना **सूस्, सुस्स्** (शुष्य्)
स्तुति करनी **थुण्** (स्तु)

ह

हनना, कत्ल करना **हण्** (हन्)
हुक्म करना **आ + दिस्** (आ + दिश्)

परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. का हिन्दी साहित्य

1. वात्सल्य के महासागर
2. सामायिक सूत्र विवेचना
3. चैत्यवन्दन सूत्र विवेचना
4. आलोचना सूत्र विवेचना
5. श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र विवेचना
6. कर्मन् की गत न्यारी
7. आनन्दघन चौबीसी विवेचना
8. मानवता तब महक उठेगी
9. मानवता के दीप जलाएं
10. जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है
11. चेतन ! मोहनींद अब त्यागो
12. युवानो ! जागो
13. शांत सुधारस-हिन्दी विवेचना भाग-1
14. शांत सुधारस-हिन्दी विवेचना भाग-2
15. रिमझिम रिमझिम अमृत बरसे
16. मृत्यु की मंगल यात्रा
17. जीवन की मंगल यात्रा
18. महाभारत और हमारी संस्कृति-1
19. महाभारत और हमारी संस्कृति-2
20. तब चमक उठेगी युवा पीढी
21. The Light of Humanity
22. अंखियाँ प्रभुदर्शन की प्यासी
23. युवा चेतना
24. तब आंसू भी मोती बन जाते है
25. शीतल नहीं छाया रे.(गुजराती)
26. युवा संदेश
27. रामायण में संस्कृति का अमर सन्देश-1
28. रामायण में संस्कृति का अमर सन्देश-2
29. श्रावक जीवन-दर्शन
30. जीवन निर्माण
31. The Message for the Youth
32. यौवन-सुरक्षा विशेषांक
33. आनन्द की शोध
34. आग और पानी-भाग-1
35. आग और पानी-भाग-2
36. शत्रुंजय यात्रा (द्वितीय आवृत्ति)
37. सवाल आपके जवाब हमारे
38. जैन विज्ञान
39. आहार विज्ञान
40. How to live true life ?
41. भक्ति से मुक्ति (पांचवी आवृत्ति)
42. आओ ! प्रतिक्रमण करे (चौथी आवृत्ति)
43. प्रिय कहानियाँ
44. अध्यात्मयोगी पूज्य गुरुदेव
45. आओ ! श्रावक बने
46. गौतमस्वामी-जंबुस्वामी
47. जैनाचार विशेषांक
48. हंस श्राद्ध व्रत दीपिका
49. कर्म को नहीं शर्म
50. मनोहर कहानियाँ
51. मृत्यु-महोत्सव
52. Chaitya-Vandan Sootra
53. सफलता की सीढ़ियाँ
54. श्रमणाचार विशेषांक
55. विविध-देववंदन (चतुर्थ आवृत्ति)
56. नवपद प्रवचन
57. ऐतिहासिक कहानियाँ
58. तेजस्वी सितारें
59. सन्नारी विशेषांक
60. मिच्छामि दुक्कडम
61. Panch Pratikraman Sootra
62. जीवन ने तुं जीवी जाण (गुजराती)
63. आवो ! वार्ता कहुं (गुजराती)
64. अमृत की बुंदे
65. श्रीपाल मयणा
66. शंका और समाधान भाग-1
67. प्रवचनधारा
68. धरती तीरथ'री
69. क्षमापना
70. भगवान महावीर
71. आओ ! पौषध करें
72. प्रवचन मोती
73. प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह
74. श्रावक कर्तव्य-1
75. श्रावक कर्तव्य-2
76. कर्म नचाए नाच
77. माता-पिता
78. प्रवचन रत्न
79. आओ ! तत्वज्ञान सीखें
80. क्रोध आबाद तो जीवन बरबाद
81. जिनशासन के ज्योतिर्धर
82. आहार : क्यों और कैसे ?
83. महावीर प्रभु का सचित्र जीवन
84. प्रभु दर्शन सुख संपदा
85. भाव श्रावक
86. महान ज्योतिर्धर
87. संतोषी नर-सदा सुखी
88. आओ ! पूजा पढाएँ !
89. शत्रुंजय की गौरव गाथा
90. चिंतन-मोती
91. प्रेरक-कहानियाँ
92. आई वडीलांचे उपकार
93. महासतियों का जीवन संदेश
94. श्रीमद् आनंदघनजी पद विवेचन
95. Duties towards Parents
96. चौदह गुणस्थान
97. पर्युषण अष्टाह्निका प्रवचन
98. मधुर कहानियाँ
99. पारस प्यारो लागे
100. बीसवीं सदी के महान् योगी
101. बीसवीं सदी के महान् योगी की अमर-वाणी
102. कर्म विज्ञान
103. प्रवचन के बिखरे फूल
104. कल्पसूत्र के हिन्दी प्रवचन
105. आदिनाथ-शांतिनाथ चरित्र
106. ब्रह्मचर्य
107. भाव सामायिक
108. राग म्हणजे आग (मराठी)
109. आओ ! उपधान-पौषध करें !
110. प्रभो ! मन-मंदिर पधारो
111. सरस कहानियाँ
112. महावीर वाणी
113. सदगुरु-उपासना
114. चिंतन रत्न
115. जैन पर्व-प्रवचन
116. नींव के पत्थर
117. विखुरलेले प्रवचन मोती
118. शंका-समाधान भाग-2
119. श्रीमद् प्रेमसूरीश्वरजी
120. भाव-चैत्यवंदन
121. Youth will shine then
122. नव तत्त्व-विवेचन
123. जीव विचार विवेचन
124. भव आलोचना
125. विविध-पूजाएँ
126. गुणवान् बनों
127. तीन-भाष्य
128. विविध-तपमाला
129. महान् चरित्र
130. आओ ! भावयात्रा करें
131. मंगल-स्मरण
132. भाव प्रतिक्रमण-1
133. भाव प्रतिक्रमण-2
134. श्रीपाल-रास और जीवन
135. दंडक-विवेचन
136. आओ ! पर्युषण-प्रतिक्रमण करें
137. सुखी जीवन की चाबियाँ
138. पांच प्रवचन
139. सज्झायों का स्वाध्याय
140. वैराग्य शतक
141. गुणानुवाद
142. सरल कहानियाँ
143. सुख की खोज
144. आओ संस्कृत सीखें भाग-1
145. आओ संस्कृत सीखें भाग-2
146. आध्यात्मिक पत्र
147. शंका-समाधान (भाग-3)
148. जीवन शणगार प्रवचन
149. प्रात: स्मरणीय महापुरुष (भाग-1)
150. प्रात: स्मरणीय महापुरुष (भाग-2)
151. प्रात: स्मरणीय महासतियाँ (भाग-1)
152. प्रात: स्मरणीय महासतियाँ (भाग-2)
153. ध्यान साधना
154. श्रावक आचार दर्शक
155. अध्यात्माचा सुगंध (मराठी)
156. इन्द्रिय पराजय शतक
157. जैन-शब्द-कोष
158. नया दिन-नया संदेश
159. तीर्थ यात्रा
160. महामंत्र की साधना
161. अजातशत्रु अणगार
162. प्रेरक प्रसंग
163. The way of Metaphysical Life
164. आओ ! प्राकृत सीखें भाग-1

SHUBHAY Cell : 98205 30299 Tel.: 022-65373779